श्रीः

शनिशान्त्यनुष्ठानपद्धति

(शनिशान्त्यनुष्ठान की सम्पूर्ण विधियों का समावेश)

व्याख्याकार

पं0 अशोक कुमार गौड 'वेदाचार्य'

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

197

शनिशान्त्यनुष्ठानपद्धतिः

(शनिशान्त्यनुष्ठान की सम्पूर्ण विधियों का समावेश)

'अशोकेन्दु' हिन्दी टीका से विभूषित

व्याख्याकार

पं० अशोक कुमार गौड वेदाचार्य

अध्यक्ष—भारतीय कर्मकाण्ड मण्डल, वाराणसी

चौखम्बा विद्याभवन

वाराणसी

प्रकाशक

चौखम्बा विद्याभवन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
चौक (बैंक ऑफ बड़ौदा भवन के पीछे)
पो. बा. नं. 1069, वाराणसी - 221 001
दूरभाष—2420404

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण 2008
मूल्य : 150/= रुपए

अन्य प्राप्तिस्थान :

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर
पो. बा. नं. 2113, दिल्ली - 110 007
दूरभाष—23856391

चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस
4697/2, 21-ए. अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली
दूरभाष : 32996391

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
के. 37/117, गोपालमन्दिर लेन
पो० बा० नं० 1129, वाराणसी-221 001
दूरभाष-2335263

पुरुवाक्

कश्यपगोत्रीय, परम वैष्णव, नीलपरिधानधारी, धनुष और शूलयुक्त, भास्वर मुकुट मण्डित, सूर्य और छाया के पुत्र शनि जिनका वाहन गृध्र है। जो आतंक के निधि व चतुर्भुज, गम्भीर प्रवृत्ति के हैं, जिनकी दिव्य दृष्टि से इस संसार का समस्त व्यवसाय संचालित होता है, जो मनुष्य के अन्तर्मन के स्वामी भी हैं और दृढ़ निश्चय, गम्भीर कठिन कार्यों को करने की क्षमता प्रदान करते हैं। दुर्बल, कमजोर व लम्बा शरीर, वर्ण साँवला, पीतनेत्र, मोटे-मोटे दाँत, आलसी, वायु प्रकृति से युक्त, जिनके शरीर पर रोयें और बाल भी हैं, ऐसे नपुंसक जाति के यह शनिग्रहदेव हैं।

व्याकरण शास्त्र के अनुसार 'शनैश्चर' शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार से है—**शनैः = मन्दं = चरति = गच्छति इति शनैश्चरः ॥**

पृथ्वी, आकाश, पाताल, वायु आदि सभी तत्वों की रचना के बाद चतुर्मुख ब्रह्माजी ने देवी-देवताओं की रचना की। जिसमें प्रत्यक्ष देवता सूर्य भी आते हैं। इन्हीं भगवान् सूर्य के पुत्र शनि हैं। इनकी बहन का नाम यमुना और भाई का नाम यमराज है। बाल्यावस्था से ही शनि क्रोधी, नटखट और चंचल स्वभाव के थे। अपने किसी भाईयों के साथ मेल-मिलाप करना इन्हें रास नहीं आता था। जब इनके पिता ने अपने पुत्रों को अपना राज्य बाँट दिया तो शनिदेव अपने पिताश्री के इस कार्य से सन्तुष्ट नहीं हुए, क्योंकि वे तो एकछत्र राज्य करना चाहते थे। यह विचार कर उन्होंने ब्रह्माजी की तपस्या करनी प्रारम्भ कर दी। इनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी प्रकट हुए और उन्हें वरदान माँगने को कहा। तब इन्होंने कहा—हे ब्रह्मदेव! यदि आप वर देने के इच्छुक हैं, तो यही वर दें कि जिसपर मेरी शुभ दृष्टि पड़े उसका उद्धार हो जाए और जिसपर मेरी अशुभ दृष्टि पड़े उसका सर्वनाश हो जाए। 'तथाऽस्तु' कहकर ब्रह्माजी अन्तर्धान हो गए।

भगवान् सूर्य के पुत्रों में अपनी भीषणता के लिए एकमात्र शनिदेव ही सर्वोपरि हैं, क्योंकि सत्यवादी हरिश्चन्द्र भी शनि के मारक प्रभाव से स्वयं को नहीं बचा सके। इतना ही नहीं राजा नल, श्रीराम, पाँचों पाण्डव भी

समयानुसार इनसे पीड़ित हुए। महाराजा दशरथ के समय इस भूतल पर बारह वर्ष का घोरतम दुर्भिक्ष पड़नेवाला था। अत: रथारूढ़ होकर वे नक्षत्रलोक में जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने शनि से वार्ता की, जब अनुकूलता प्राप्त न हुई तो उन्होंने शनि पर आक्रमण कर दिया। शनि उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा व वीरता से अत्यधिक प्रभावित हुए, उन्होंने वर भी देना चाहा, किन्तु दशरथ ने कहा कि सूर्यादि के होते हुए आप कभी शकटभेदन न करें। शनि ने 'तथाऽस्तु' कहकर उन्हें वचन दे दिया, क्योंकि शनि मूलत: स्वयं श्रीहरि के परमोपासक, अतिनम्र और धर्मपरायण हैं।

शनि की क्रूर दृष्टि का प्रभाव सर्वविदित है। इनके आक्रान्त से मनुष्य तो क्या देवता भी नहीं बच पाए। भगवान् शिव पर जब इन्होंने अपनी कुदृष्टि डाली तो उन्हें भी इन्होंने बैल बनाकर जंगल की घास चरवा दी। इन्हीं की कुदृष्टि पड़ने से माता पार्वती के पुत्र गणेश का मस्तक कट कर गिर गया। लंकापति महाराजा रावण पर अपनी कुदृष्टि डालकर उसे भी नितान्त असहाय बनाकर उनका समूल नष्ट कर दिया। राजा विक्रमादित्य भी इनके दुष्प्रभावों से बच न पायें।

ऐसे शनिदेवता के कुप्रभावों को कम करने व उनको प्रसन्न करने के लिए मैंने '**शनिशान्त्यनुष्ठानपद्धतिः**' नामक इस पुस्तक का निर्माण किया है। यदि शनि से पीड़ित जन इस अनुष्ठान को करेंगे, तो उन्हें नि:सन्देह लाभ होगा।

इस पुस्तक के लेखन में मेरे प्रिय बन्धु पं० श्री रविशंकर शर्मा, व्याकरणाचार्य व मेरे अग्रजतुल्य पं० बसन्त ओझा ने जो सहयोग दिया है, उसके लिए मैं उनका सदैव आभारी रहूँगा। यदि इस पुस्तक में कोई त्रुटि हो गई हो तो, मुझे अवश्यमेव सूचित करने की कृपा करें। जिससे कि मैं द्वितीय संस्करण में उन त्रुटियों को समाप्त करने की चेष्टा कर सकूँ।

भवदीय :
अशोक कुमार गौड

भारतीय कर्मकाण्ड मण्डल,
म०म०पा० विद्याधर गौड लेन,
डी० ७/१४, सकरकन्द गली, वाराणसी
दूरभाष : ६५३४९८६, ९७९२३५३७४५

विषयानुक्रमणिका

विषय पृष्ठ सं.

भूमिपूजनम् ९
शनिपीठ १३
शनिकुण्ड १५
प्रायश्चित्तम् १९
दशदानम् ३५
मङ्गलस्नानम् ४१
जलयात्रा ४४

शनिशान्त्यनुष्ठानप्रारम्भः

प्रयोगारम्भः ४९
स्वस्तिवाचनम् ५०
संकल्पः ५३
गणपतिपूजनम् ५४
कलशपूजनम् ६७
स्वस्तिपुण्याहवाचनम् ७६
अभिषेकः ८२
षोडशमातृकापूजनम् ८३
वसोर्धारापूजनम् ८८
आयुष्यमन्त्रजपः ९१
नान्दीश्राद्धम् ९३
आचार्यादिवरणम् ९८
एकतन्त्रेणवरणसंकल्पः ९९
यजमानरक्षाबन्धनमन्त्राः ९९
यजमानतिलककरणम् ९९
मण्डपप्रदक्षिण मन्त्राः ९९
मण्डपद्वारभूमिपूजनमन्त्राः १०१
मधुपर्कम् १०२
ब्राह्मणप्रार्थनाः १०४
मण्डपप्रवेशः १०५
दिग्रक्षणम् १०७
पञ्चगव्यनिर्माणमन्त्राः १०९

विषय पृष्ठ सं.

भूमिप्रोक्षणमन्त्राः १०९
मण्डपाङ्गवास्तुपूजनम् ११०
मण्डपपूजनम् १३२
तोरणपूजनम् १४२
द्वारपूजनम् १४५
अष्टदलनिर्माणविधिः १६१
लिङ्गतोभद्रस्थापनं पूजनं च (कृताकृतम्) १६२
कलशस्थापनम् १७४
न्यासः १७४
पीठपूजनम् १७५
शनिअभिषेकः १७६
अग्न्युत्तारणम् १७७
प्राणप्रतिष्ठापनम् १७९
नेत्रोन्मीलनम् १८३
प्रधानपूजनम् १८४
अग्निस्थापनम् २०२
ग्रहादिस्थापनम् २१२
नवग्रहपूजनम् २२५
असङ्ख्यातरुद्रकलश स्थापनं पूजनं च २२८
असङ्ख्यातरुद्रपूजनम् २२८
चतुःषष्टियोगिनीस्थापनम् २३२
चतुर्वेदोक्तादिमन्त्रैर्योगिनीस्थापनम् २४७
योगिनीपूजनम् २८७
क्षेत्रपालस्थापनम् २९१
क्षेत्रपालपूजनम् ३०१
कुशकण्डिकाः ३०५
वराहुतिः ३१०
ग्रहादिहवनम् ३११
शनिमन्त्रस्य न्यासः ३१६

विषय	पृष्ठ सं.
प्रधानाहुतिः	३१६
शनिसहस्रनामावल्या हवनम्	३१७
योगिनीहोमः	३३६
क्षेत्रपालहोमः	३४४
लिङ्गतोभद्रदेवताहोमः (कृताकृतम्)	३५१
अग्निपूजनमन्त्रः	३६०
स्विष्टकृद्धवनञ्च	३६०
नवाहुतिः	३६०
बलयः	३६१
वलिदानम्	३६२
क्षेत्रपालवलिदानम्	३६४
पूर्णाहुतिः	३६७
वसोर्धाराहवनम्	३६९
अग्नेःप्रदक्षिणम्	३७२
भस्मधारणम्	३७३
पूर्णपात्रदानम्	३७३
श्रेयोदानम्	३७३
अवभृथस्नानम्	३७४
छायापात्रदानसंकल्पः	३७९
तिलपात्रदानसंकल्पः	३७९
आचार्यादिभ्यो दक्षिणादानम्	३८०
भूयसीदक्षिणासंकल्पः	३८०
कपिलागोदानसंकल्पः	३८०
ब्राह्मणभोजनसंकल्पः	३८०
उत्तरपूजनम्	३८०
मण्डपप्रधानपीठादिदानसंकल्पः	३८०
अथाभिषेकः	३८१
क्षमा-प्रार्थना	३८३
देवविसर्जनम्	३८३
यजमानरक्षाबन्धनम्	३८४

विषय	पृष्ठ सं.
यजमानपत्नीरक्षाबन्धनम्	३८४
यजमानतिलककरणम्	३८४
यजमानायाशीर्वादः	३८५
यजमानपत्न्या आशीर्वादः	३८५

परिशिष्टो भागः

विषय	पृष्ठ सं.
शनिसहस्रनामस्तोत्रम्	३८९
श्रीशनिस्तवराजस्तोत्रम्	४०५
श्रीशनैश्चरस्तोत्रम्	४०७
शनिकवचम्	४०८
शनिमृत्युञ्जयस्तोत्रम्	४०९
शन्योष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	४१७
शनिसहस्रनामावल्याः जपविधिः	४१९
शन्यष्टोत्तरशतनामावल्याः जपविधिः	४३८
शन्यष्टोत्तरशतनामावल्या हवनम्	४४०
शनिप्रतिष्ठायां विहितन्यासाः	४४२
श्रीशनिदेवव्रतकथा	४५२
शनिदेव के दोष निवारणार्थ कथा	४५८
शनि की शापग्रस्त दृष्टि पड़ने से गणेश का सिरच्छेदन	४६४
शनि के पैर टूटने की कथा	४६७
नवग्रहयागन्यासाः	४७०
नवग्रहयागहवनमन्त्राः	४७१
सूर्ययागन्यासः	४७५
सूर्ययागहवनमन्त्राः	४७६
महामृत्युञ्जययागन्यासः	४७८
महामृत्युञ्जययागहवनमन्त्राः	४७९
हनुमद्यागन्यासः	४८८
हनुमद्यागहवनमन्त्राः	४८९
शनिविषये विशेषविचारः	४९३
शनिशान्त्यनुष्ठान सामग्री	४९५

॥ इति विषयानुक्रमणिका ॥

मंगलाचरणम्

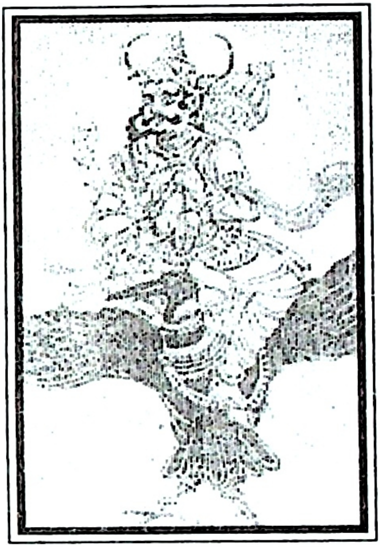

नत्वा साम्बं शिवं शान्तं शान्त्यनुष्ठानपद्धतिः।
क्रियते शनिपूजार्थं गौडेनाशोकशर्मणा॥

शनियन्त्रम्

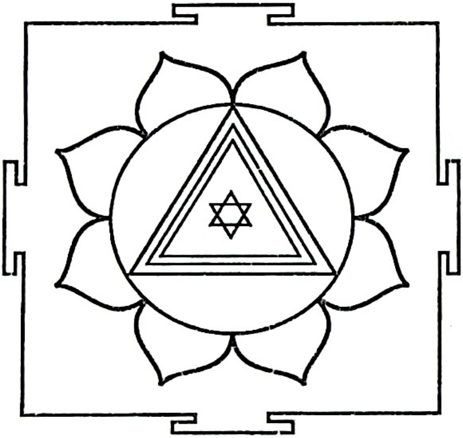

शनिशान्त्यनुष्ठानपद्धतिः

भूमिपूजनम्

कुण्डमण्डपनिर्माण के पूर्व आचार्य सहित ब्राह्मणादि स्वस्तिवाचन करके भूमि, कूर्म, अनन्त और वराह की पूजा यजमान और उसकी पत्नी से करवाने के पहले मण्डप के आगे या उत्तरदिशा अथवा ईशानकोण में कुशा या कम्बल के आसन पर उनको बैठाकर निम्न संकल्प करावें–

देशकालौसङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) करिष्यमाण शनिशान्त्यनुष्ठानोपयोगि मण्डपायतनादि-निर्मातुं भूमिकूर्मानन्तवराविश्वकर्मणां पूजनं करिष्ये। तदङ्गत्त्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनादिकमाचरिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये।

आचार्य निम्न दो श्लोकों और मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से भूमिपूजन करायें—

चतुर्भुजां शुक्लवर्णां कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।
शंखपद्मपरां चक्रशूलयुक्तां धरां भजे॥ १॥
आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोकधारिणि।
पृथिवि त्वं ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिनन्दिता॥ २॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ इस मन्त्र से पूजन करके पुनः—**ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि**

विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृर्ठ०ह पृथिवीं मा हिर्ठ०सीः॥ आचार्य इस मन्त्र से पुष्पाञ्जलि प्रदान करवाके यजमान से निम्न श्लोक का उच्चारण करावें—

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
दंष्ट्राग्रैर्लोलया देवि यज्ञार्थं प्रणमाम्यहम्॥

यजमान साष्टांग प्रणाम कर ताँबे के पात्र में गौ दूध, जल, कुशा, जौ, तिल, अक्षत, सरसों, फूल और सुवर्णादि लेकर घुटनों के बल भूमि पर लेटे और आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करें—

ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शंकरेण च।
पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्देन श्रवणेन च॥
यमेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगषिया।
सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च मनो रूपं च पूजिते॥
उद्धृतासि वराहेण सशैलवनकानने।
मण्डपं कारयामद्य त्वदूर्ध्वं शुभलक्षणम्।
गृहाणार्घ्यमिमं देवि प्रसन्ना वरदा भव॥

यजमान अर्घ्य प्रदान करके हाथ जोड़े और आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके उससे प्रार्थना करावें—

उपचारानिमांस्तुभ्यं ददामि परमेश्वरि।
भक्त्या गृहाण देवेशि त्वामहं शरणं गतः॥

आचार्य निम्न वाक्य का यजमान से उच्चारण करवाते हुए पूजा निवेदित कर बलि समर्पित करावें—

ॐ सपरिवारायै भूम्यै नमः, इमं महाबलिं समर्पयामीति गन्ध-पुष्प-पायससक्तुलाजैः सघृतैः सदीपैर्महाबलिं समर्पयामि।

आगे दिए हुए श्लोकों का आचार्य उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करावें—

नन्दे नन्दय वासिष्ठे वसुभिः प्रजया सह।
जय भार्गवदायादे प्रजानां जयमावह॥
पूर्णे गिरिशदायादे पूर्णकामं कुरुष्व मे।
भद्रे काश्यपदायादे कुरुभद्रां मतिं मम॥
सर्वबीजसमायुक्ते सर्वरत्नौषधावृते।
रुचिरे नन्दने नन्दे वासिष्ठे रम्यतामिह॥
प्रजापतिसुते देवि चतुरस्त्रमहीयसि।
सुभगे स्तुवते देवि गृहे काश्यपि रम्यताम्॥
पूजिते परमाचार्यैर्गन्धमाल्यैरलङ्कृते।
भवभूतिकरी देवि गृहे भार्गवि रम्यताम्॥
अव्यक्ते चाहते पूर्णे शुभे चांगिरसःसुते।
इष्टदे त्वं प्रयच्छेष्टं त्वां प्रतिष्ठापयाम्यहम्॥
देशस्वामि पुरस्वामि गृहस्वामि परिग्रहे।
मनुष्यधनहस्त्यश्वपशुवृद्धिप्रदा भव॥

आचार्य पंचोपचार से पूजा करवाने के उपरान्त निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से अनन्तदेव का पूजन करावें—**ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥ ॐ अनन्ताय नमः॥**

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके कूर्मदेवता का पूजन यजमान से करावें—**ॐ यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धया त्वम्। तस्मै देवा अधिब्रवन्नयं च ब्रह्मणस्पतिः॥ ॐ कूर्माय नमः॥**

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से विश्वकर्मा का पूजन करावें—**ॐ विश्वकर्मन्हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः॥**

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके वाराह का पूजन यजमान से करावें—

ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णौ गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिठ०हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः ॥

प्रार्थना

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं भूमिदेवि नमोस्तु ते॥

'ॐ पृथिवीकूर्मानन्तादिपूजाविधौ यन्यूनातिरिक्तं तत्सर्वं परिपूर्णमस्तु'।

क्षमाप्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

शनि पीठ

चार अंगुल, चार यव, चार यूका और चार लिक्षा का एक गोलाकार वृत्त बनाकर उस वृत्त के ठीक मध्य से एक जीवा अर्थात् लम्बी रेखा छः अंगुल, तीन यव और ५ यूका की (या ६।६।५।) देने से धनुषाकार पीठ बन जाता है।

अथवा—६ अंगुल, ३ यव और ५ यूका की दक्षिणोत्तर एक जीवा रेखा दे। तदनन्तर ७ अंगुल, १ यव और तीन यूका के नाप की रस्सी या प्रकाल द्वारा मापने से धनुषाकार शनि पीठ हो जाता है। या—७। १। ३ की दक्षिणोत्तर रेखा दे। तदनन्तर ६। ३। ५ को देने से धनुषाकार शनि पीठ बन जाता है।

(शनि पीठ)

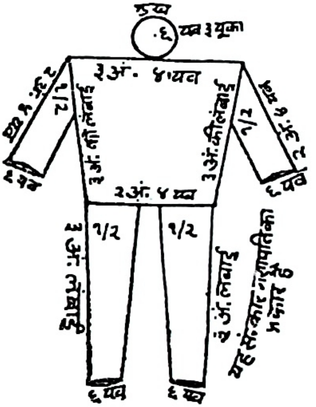
६ यव ३ यूका
३ अं. ४ यव
३ अं. की लंबाई
३ अं. की लंबाई
१/२
१/२
६ यव
६ यव
२ अं. ४ यव
१/२
१/२
३ अं. लंबाई
३ अं. लंबाई
यह संस्कार गणपति का प्रकार है
६ यव
६ यव

अथवा—६ यूका, ५ यव और २ अंगुल का वृत्त बनाकर उस वृत्त के ठीक मध्य से ६ यूका, ५ यव और ३ अंगुल की एक लम्बी रेखा देने से शनि पीठ बन जाता है।

प्रकारान्तर पक्ष—२ अंगुल, ५ यव, ४ यूका और ४ बालाग्र का एक गोलाकार वृत्त बनाकर उस वृत्त के भीतर ठीक मध्य में—३ अंगुल, ६ यव और ४ यूका के परिमाण से ज्या देने से शनि पीठ बन जाता है।

प्रकारान्तर पक्ष—एक वृत्त ४ अंगुल, ४ यव, ४ यूका और ४ लिक्षा का बनाकर उस वृत्त में एक चतुरस्त्र बनावे। (उस चतुरस्त्र की भुजा ६। ३। ५ होगी और कोटी भी ६। ३। ५ होगी। अर्थात्—बराबर का चतुरस्त्र बनेगा)। तदनन्तर वृत्त में जो चतुरस्त्र बना है उस चतुरस्त्र से बाहर और वृत्त के भीतर पूर्व दिशा, पश्चिम दिशा, दक्षिण दिशा और उत्तर दिशा में जो जगह निकलती है। उन जगहों में तीन जगहों को (अर्थात्—वृत्त के सहित जगहों को और चतुरस्त्र की तीन रेखाओं को मिटाने से धनुषाकार शनि पीठ बन जायगा।

अथवा—२ अंगुल की भुजा और ३ अंगुल की कोटी बनाकर शनि पीठ बनाया जा सकता है। यह लघुपीठमाला का मत है।

[1]**प्रकारान्तर**—१. मुख का व्यास छः यव तीन यूका होगा। अर्थात्—छः यव और तीन यूका का एक गोलाकार वृत्त बनावे। उसी में आँख, कान आदि बनावे। २. तदनन्तर दक्षिणोत्तर लम्बी रेखा तीन अंगुल और चार यव की करें। उसी को पूर्व का भू कहते हैं। ३. फिर मध्य की लम्बाई तीन अंगुल की होती हुई अन्त में सकरी होगी। ४. कन्धे की चौड़ाई एक अंगुल और दो यव की होगी। ५. हाथ की लम्बाई सवा दो अंगुल की होगी। ६. कटी भाग की लम्बाई दक्षिणोत्तर दो अंगुल चार यव की होगी। ७. जाँघ की एक अंगुल दो यव की होगी। ८. चरण की लम्बाई तीन अंगुल की होगी। ९. चरण का भाग ६ यव का होगा।

---

१. सार्धत्रयाङ्गुलमिता ३। ४। पूर्वभागे भूः। तत्पश्चिमे भागे सार्धाङ्गुलद्वयमित २। ४ मुखम्। मध्ये—त्र्यङ्गुलमितो लम्वः। तत्पश्चिमभागे चरणौ कार्यौ। सपादमेकाङ्गुला भूः १। २। षडयवोन्मितं ६ मुखम्। त्र्यङ्गुलमितो लंबः ३। एतादृशां दक्षिणचरणः। तथैव वामः। सपादमेकाङ्गुला १। २ भूः। षड्यवोन्मितं मुखम्, सार्धद्वयमिताङ्गुलो लम्वः। एतादृशो दक्षिणहस्तः। तथैव वामः। तत्पूर्वभागे षड्यवयूकात्रय ६। ३ मितेन। कर्कटेन वृत्तं तच्छिरः। एवं कृते सति द्वाविंशत्यङ्गुलक्षेत्रफलात्मकं २२ नराकृतिः शनिमण्डलं भवति। क्षेत्रफल—(क) उदरक्षेत्रफल ९ अंगुल। (ख) मुख का क्षेत्रफल २ अंगुल। (ग) चरण का क्षेत्रफल ६ अंगुल। (घ) हाथ का क्षेत्रफल ५ अंगुल। कुल क्षेत्रफल जोड़ में २२ होगा।

शनि कुण्ड

मध्य केन्द्र से २९। २। ५ के आधे से (१४। ५। २) से एक गोलाकार वृत्त बनाकर उस वृत्त के दक्षपार्श्व को केन्द्र मानकर दक्षिण दिशा को केन्द्र मानकर प्रथम वृत्त के आधे से प्रकाल घुमाने से अर्थात् प्रथम वृत्त के मध्य में पिनसिन रखे दक्षिण दिशा में प्रकाल का शंकु रखकर घुमा देने से दूसरा वृत्त बनेगा। तात्पर्य यह है कि दूसरे वृत्त का आधा भाग प्रथम वृत्त के आधे में चला जायगा। फिर उन दोनों वृत्तों में ज्या दक्षिणोत्तर मध्य से दे। तदनन्तर दोनों वृत्तों के बाहर मध्य हिस्से से ४ अंगुल, ७ यव और १ यूका बायीं तरफ और ४ अंगुल, ७ यव और १ यूका दाहिनी तरफ बढ़ा दे। इस पूर्ण रेखा का नाप ५३। ५। ७ होगा और केवल दोनों तरफ का मिलाकर षष्ठांश ९। ६। १ होगा। अर्थात्—५३। ५। ७ से—९। ६। १ घटा देंगे, तो भीतर वृत्तों की ज्या का नाप ४३। ७। ६ होगा। फिर बायें वृत्त के आठ भाग बराबर-बराबर के करे। १. पूर्व दिशा को मुख कहे। २. अग्निकोण को अंश (स्कंध) कहे। ३. दक्षिण दिशा को पार्श्व कहे। ४. निर्ऋतिकोण को श्रोणी कहे। ५. पश्चिम दिशा को पुच्छ कहे। वायव्यकोण को श्रोणी (कटी) कहे। ६. उत्तर दिशा को पार्श्व कहे। ईशान को अंश स्कन्ध कहे। इसी प्रकार दाहिने वृत्त में भी आठ भाग की कल्पना करे।

तदनन्तर—बायें पार्श्व में बढ़ी रेखा (४। ७। १) के अन्तिम सिरे से एक टेढ़ी रेखा दे, जो अंश और पार्श्व का जो मध्य है उसमें मिले। वैसे ही दाहिने

नोट—कुण्डरत्नावली में जो १ श्लोक है उसकी जगह 'मध्याद् व्यासाग्नि ३ भागे स्वरविलवविहीने कृते' ऐसा पढ़ा जाय तो अच्छा मालूम होता है। व्यास २९। २। ४ का तृतीयांश निकाल कर ९। ६। १ को द्वादशांश—अर्थात् स्वमति व्यास का (२९। २। ४) का जो द्वादशांश हो उसको तृतीयांश में घटा दे तो ७। २। ५ होगा।

[(२) २९। २। ४ का आधा १४। ५। २ को २९। २। ४ में जोड़ेंगे तो ४३। ७। ६ होगा। अर्थात्—सार्द्धव्यासार्ध होगा। उसमें षष्ठांश जोड़ेंगे तो ९। ६। १ को ५३। ५। ७ होगा। इतनी बड़ी वृत्तों में और बाहर ज्या होगी। २९। २। ४ का चतुर्थांश ७। २। ५ होगा।]

तरफ रेखा (४।७।१) के अन्तिम सिरे से अंश और पार्श्व का जो मध्य हो, उस मध्य रेखा में मिला दे। फिर कारीगर से कहकर कुण्डरत्नावली के नकशे (सिद्धरूप को) को दिखाकर ऊपरी भाग में अर्थात् पार्श्व और अंश के मध्य में जो रेखा टेढ़ी दी है वहाँ से धनुष के रूप को कुछ उठा दे और दूसरी तरफ वृत्त के ऊपरी भाग से स्कन्ध और पार्श्व के मध्य वाली टेढ़ी रेखा से धनुष का आकार बनावे। फिर सब नीचे के भाग को मिटा देने से धनुपाकार कुण्ड बन जाता है। यही पक्ष उत्तम है।

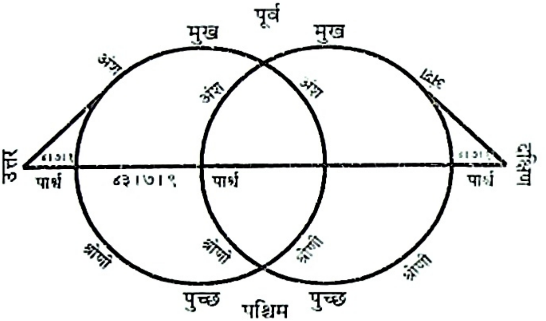
पूर्व
मुख
मुख
अंश
अंश
अंश
अंश
उत्तर
४।७।१
पार्श्व
४३।७।१
पार्श्व
४।७।१
पार्श्व
दक्षिण
श्रोणी
श्रोणी
श्रोणी
श्रोणी
पुच्छ
पश्चिम
पुच्छ

(शनि कुण्ड)

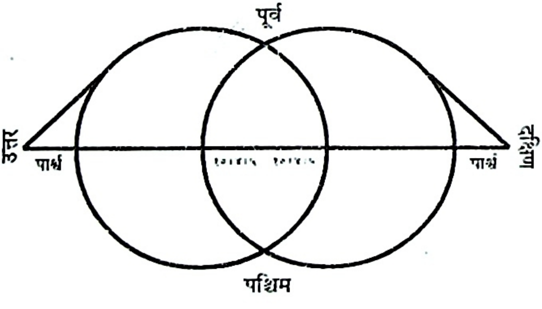
पूर्व
उत्तर
पार्श्व
१०।४।५
१०।४।५
पार्श्व
दक्षिण
पश्चिम

मध्यकेन्द्र से—दक्षिण दिशा की तरफ १०।४।५ अंगुल हटाकर एक चिह्न करे। इस चिह्न से एक वृत्त १४।५।२ का बनावे। तदनन्तर मध्य केन्द्र

से दक्षिण दिशा की तरफ १०।४।५ अंगुल हटकर १४।५।२ का वृत्त बनावे। तदनन्तर वृत्त के बराबर-बराबर के आठ भाग करे। १. पूर्व दिशा—मुख होगी। २. अग्निकोण अंश (स्कंध) होगा। ३. दक्षिण दिशा—पार्श्व। ४. निर्ऋति कोण—श्रोणी। ५. पश्चिम दिशा—पुच्छ। ६. वायव्यकोण—श्रोणी कटी। ७. उत्तर दिशा—पार्श्व। ८. ईशान कोण—अंश (स्कंध) होगा। इसी प्रकार बायें वृत्त में भी कल्पना करे। तदनन्तर वृत्त के भीतर ठीक मध्य से एक रेखा दक्षिणोत्तर लम्बी सीधी दे। फिर वृत्त के बायीं तरफ (दक्षिणोत्तर लम्बी रेखा के अन्तिम सिरे से) दक्षिण दिशा से एक रेखा लम्बी—४।७।१ बढ़ा दे। वैसे ही उत्तर दिशा से एक लंबी रेखा ४।७।१ बढ़ा दे।

तदनन्तर—दक्षिण दिशा में पार्श्व और स्कंध के मध्य में चिह्न कर—४।७।१ वाली रेखा के अन्तिम सिरे से एक रेखा टेढ़ी ले जाकर पार्श्व और स्कंध के मध्य चिह्न में मिला दे। वैसे ही उत्तर दिशा में पार्श्व और स्कंध के मध्य में चिह्न कर ४।७।१ वाली रेखा के अन्तिम सिरे से एक रेखा टेढ़ी ले जाकर पार्श्व और स्कंध के मध्य चिह्न में मिला दे। ऐसा करने से धनुषाकार कुण्ड बन जायगा। इसमें यह बात ध्यान रखना चाहिये कि कारीगर से कहकर पार्श्व और स्कंध के मध्य में जो टेढ़ी रेखा दे वहाँ से ऊपर की ओर (ऊपर के

(शनि कुण्ड)

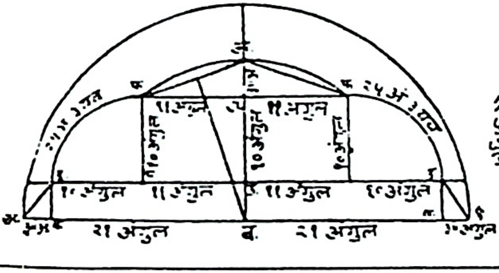
उ.
क
क
२५ अंगुल
११ अंगुल
११ अंगुल
१० अंगुल
१० अंगुल
१० अंगुल
१० अंगुल
११ अंगुल
११ अंगुल
१० अंगुल
अ.
२१ अंगुल
ब.
२१ अंगुल
१० अंगुल

(आगन्तुक चतुरस्र प्रदर्शनार्थ हेतुम्)

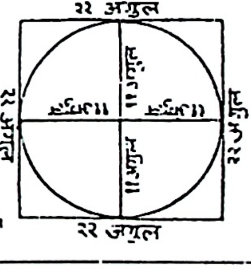
२२ अंगुल
२२ अंगुल
११ अंगुल
११ अंगुल
११ अंगुल
११ अंगुल
२२ अंगुल
२२ अंगुल

नोट—व्यास २९।२।४ होगा, उसका आधा १४।५।२ होगा, व्यास का तृतीयांश ९।६।१ है। इसका द्वादशांश ०।६।४, तृतीयांश और द्वादशांश का जोड़ १०।४।५ होगा।

भाग में) अर्थात् पूर्व दिशा की ओर धनुष के रूप का आकार कुछ उठाकर बनावे। यह व्यवस्था दक्षिण ओर की हुई। वैसे ही उत्तर भाग की भी व्यवस्था कारीगर से करा ले। पुनः पश्चिम वृत्त का भाग मिटा दे।

अ ब = २४॥ अंगुल, अ क = ३॥ अंगुल, क ब = २१ अंगुल, क इ उ ब = संग्राहार्धफलम् = ७३ अंगुल ४ यव, इ प क = वृत्तपादफलम्= ७८। ४, प च ज त्रिभुजफलम् -- अ क इ त्रिभुज फल = कोणांशफलम् अंगुल २५। यव ३। ज्यास्पृक् सूत्रान्तश्चतुरस्रम् = प फ ज उ तत्फलम् अर्थात्--चतुरस्रफलम् = ११०। यह आधे का फल है अर्थात् मध्य से साढ़े चौबीस अंगुल का एक आधा चाप बनावे। इसका फल— २८७। ३ होगा। उसी मध्य से दूसरी तरफ साढ़े चौबीस का आधा चाप बनावे। उसका फल भी २८७। ३ होगा। दोनों चार का फल ५७६ होगा। मध्य से जो एक रेखा पूर्व पश्चिम होगी, वह १७ अंगुल की होगी। अर्थात्—प और उ व्यासार्धवृत्तम्। एतत् वृत्तबहिर्गतं यद् चतुरस्रं तदेवागन्तुकं समचतुरस्रम्। तत्रैको भुजः २२ अगु०। ४८४ = २२ × २२ = आगन्तुक चतुरस्रफलम्। ३८० = वृत्तफलम्। यस्य व्यासः = २२। १०४ (१)

विशेष—शनिपीठ व शनिकुण्ड के निर्माण की विधि मेरे पिताश्री स्व० पं० दौलतराम गौड वेदाचार्य के ग्रन्थ से यहाँ उद्धृत की गई है।

प्रायश्चित्तम्[१]

शनिशान्तिअनुष्ठान को करने की इच्छा वाले मनुष्य (यजमान) प्रथम दिन से पूर्व किसी शुभ दिन में प्रतिष्ठा के अधिकार की सिद्धि के लिये छः वर्षीय, तीन वर्षीय या डेढ़ वर्षीय क्रमशः एक सौ अस्सी, नब्बे, पैंतालीस संख्या की गायों के मूल्य के समान द्रव्य सामने रखकर प्रायश्चित्त करे। शक्ति हो तो भींगे वस्त्र में चार, सात, बारह, अट्ठारह, चौबीस अथवा अट्ठाईस धर्माधिकारी सभ्यों की प्रदक्षिणा करे और निम्न श्लोकों का उच्चारण करे—

ॐ समस्तसम्पत्समवाप्तिहेतवः समुत्थितागःकुलधूमकेतवः।
अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥
आपद्घनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः।
समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्तयो रक्षन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥
विप्रौघदर्शनात्सद्यः क्षीयन्ते पापराशयः।
वन्दनान्मङ्गलावाप्तिरर्चनादच्युतं पदम्॥
आधिव्याधिहरं नृणां मृत्युदारिद्र्यनाशनम्।
श्रीपुष्टिकीर्तिदं वन्दे विप्रश्रीपादपङ्कजम्॥

उसके बाद ब्राह्मण उससे पूछें—

किन्ते कार्यं वदास्माकं किं वा मृगयसे द्विज।
तत्त्वतो ब्रूहि तत्सर्वं सत्यं हि गतिरात्मनः॥
(सत्येन द्योतते सूर्यः सत्येन द्योतते शशी।
सत्येन द्योतते वह्निः सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥)

---

[१] (क) महत्कर्म समुत्कर्तुं प्रायश्चित्तं समाचरेत्। पूर्वेद्यर्वे प्रकुर्वीत सायाह्ने वाऽपराह्णके॥
(प्रतिष्ठेन्दु)

(ख) धर्मकार्यं महत्कुर्तं यदीच्छेद्दशभिर्दिनैः। प्रायश्चित्तं यथावित्तं प्राक् कार्यं तेन शुद्धये॥
षडब्दं चतुरब्दं वा त्र्यब्दं द्व्यब्द तथैव वा। गो-हिरण्यादिदानं वा कृत्वा कर्म समारभेत्॥
(परशुरामकारिका)

यद्यागतोऽस्यसत्येन न त्वं शुद्ध्यसि कर्हिचित्।
स्वल्पं वाऽथ प्रभूतं वा धर्मविद्भ्यो निवेदयेत्।
रहस्यकृतपापानि उपांशुं न च संस्मरेत्॥
अस्माकं चैव सर्वेषां सत्यमेव परं बलम्।
यदि चेद्रक्षसे सत्यं नियतं प्राप्स्यसे शुभम्॥

ऐसा पूछने पर गन्ध, अक्षत और पुष्प से सभ्यों (ब्राह्मणों) की पूजा करके गौ एवं वृष के मूल्य को उनके सामने रखकर यजमान यह संकल्प करे—

ॐ तत्सत् करिष्यमाणप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन इदं गोवृषनिष्क्रय-द्रव्यं सभ्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृज्ये। सभ्य अर्थात् ब्राह्मण लोग उस द्रव्य को आपस में विभाजित कर लेवें।

तदुपरान्त प्रायश्चित्त करनेवाला यजमान यह कहे—**अमुकस्य मम जन्मप्रभृति अद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञात - कामाकाम -सकृदसकृत्कृत - कायिक - वाचिक - मानसिक - सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट - भुक्ताभुक्त-पीतापीत-सकलपात-काति-पातकोप-पातक-लघुपातक-सङ्करीकरण-मलिनीकरणा-पात्रीकरण-जातिभ्रंशकर-प्रकीर्णक-पातकानां मध्ये संभावितानां पापानां निरासार्थमनुगृह्य प्रायश्चित्तमुपदिशन्तु भवन्तः। (पुत्रादिश्चेदाचरति तदा ममास्य पित्रादेः इति वाच्यम्।)**

ब्राह्मणप्रार्थना

आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं भवद्वशमिदं जगत्।
यक्षरक्षःपिशाचादिसदेवासुरमानुषम् ॥
सर्वे धर्मविवेक्तारो गोप्तारः सकला द्विजाः।
मम देहस्य संशुद्धिं कुर्वन्तु द्विजसत्तमाः॥
मया कृतं महाघोरं ज्ञातमज्ञातकिल्विषम्।
प्रसादः क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छत।
पूज्यैः कृतः पवित्रोऽहं भवेयं द्विजसत्तमैः॥

(पुत्रादिश्चेत्प्रायश्चित्तकर्ता तदा अस्मच्छब्दस्थाने 'अस्य', 'एतत्कृतम्', 'प्रसादः क्रियतामस्य', 'पवित्रोऽयं भवेच्च' इत्यादिवाच्यम्) ततः 'मामनुगृह्णन्तु भवन्तः' इत्युक्त्वा पुनः प्रणमेत्। (मामित्यत्र 'एतम्' इत्यन्यकर्तृके) ततो गन्धाक्षतपुष्पैः पुस्तकं सम्पूज्य गोमूल्यं निबन्धपूजात्वेन निवेदयेदित्याचारः। ततोऽनुवादकं सम्पूज्य तस्मै दक्षिणां दद्यात्। ततः—अनुवादकस्याग्रे—'अमुकशर्मणस्तव' जन्मप्रभृत्यद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञातकामाकाम- सकृदसकृत्कृत - कायिक - वाचिक - मानसिक - सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट - भुक्ताभुक्त - पीतापीत-सकलपातकातिपातकोप-पातक-लघुपातक-सङ्करीकरण-मलिनीकरणापात्रीकरण-जातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासार्थं सभ्यैरुपदिष्टं षडब्दत्र्यब्दसार्द्धाब्दान्यतमं सर्वप्रायश्चितं गोनिष्क्रयद्रव्यदानप्रत्याम्नायद्वारा पूर्वाङ्गोत्तराङ्गयुतं त्वयाऽऽचरितव्यं तेन तव (पित्रादेः) शुद्धिर्भविष्यति तेन त्वं कृतार्थो भविष्यसि (तव पित्रादिः कृतार्थो भविष्यति) इति ब्रूहि इति वदेत् ततः सभ्येन प्रेरितोऽनुवादकः—(इत्येनमुपदेशं प्रायश्चित्तिनं प्रति त्रिर्ब्रूयादिति मयूखे) 'भवदनुग्रहः' इति वदेत् पर्षदं विसृजेच्च।

सङ्कल्पः

यजमान के दायें हाथ में कुश, यव, तिल और जल देकर आचार्य निम्न संकल्प करावें—

श्रीमदनन्तवीर्यस्य आदित्यनारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणस्य महाजलौघमध्ये परिभ्रममाणानामनेककोटिब्रह्माण्डानामेकतमे अव्यक्तमहदहङ्कारपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डयोर्मध्ये आधारशक्तिवराहकूर्मानन्ताद्यष्टदिग्गजोपरि प्रतिष्ठिते सप्तपातालोपरिभागे सप्तान्तलोकषट्कस्याधोभागे महाकालायमानशेषस्य सहस्त्रफणामणिमण्डितेदिग्दन्तिदन्तशुण्डादण्डोत्तम्भिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षुसुरासर्पिदधि-

क्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बूप्लक्षशाल्मलिकुशक्रौञ्चशाकपुष्करसप्तद्वीपमण्डिते कांस्यताम्र-गभस्तिनागगन्धर्वचारणभारतादिनवखण्डखण्डिते भारतवर्षे भरतखण्डे अयोध्या - मथुरा - माया - काशी - काञ्च्यवन्ती- द्वारावती - कुरुक्षेत्र - पुष्करादिनानातीर्थयुक्तकर्मभूमौ (मध्य-रेखायाः पूर्वदिग्भागे भागीरथ्याः पश्चिमे) जगत्स्रष्टुः परार्द्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे तस्य प्रथमवर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो द्वितीययामे तृतीयमुहूर्ते प्रथमघटिकायां सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे बौद्धावतारे विक्रमशके वर्तमानेऽमुकनाम्नि संवत्सरे उत्तरायणे वसन्तऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थे सूर्ये अमुकराशिस्थे देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशिष्टे देशे काले च अमुकशर्मणो मम जन्मप्रभृति अद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञातकामाकामसकृदसकृत्कृत कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्टभुक्ताभुक्त-पीतापीतसकलपातकातिपातकोप - पातकलघुपातकसङ्करी-करणमलिनीकरणापात्रीकरणजातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये संभावितानां पापानां क्षयद्वारा शनिशान्त्यनुष्ठानकर्माधिकारार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं (पर्षदुपदिष्टं) षडब्दत्र्यब्दसार्द्धादान्यतमं प्रायश्चित्तं पूर्वोत्तराङ्गयुतं गोमूल्यदानरूपप्रत्याम्नायद्वाराऽहमाचरिष्ये।

उपरोक्त प्रधान प्रतिज्ञा संकल्प करके पुनः यह संकल्प करे—**प्रारीप्सितप्रायश्चित्तस्याङ्गत्वेन केशश्मश्रुनखानि वापयिष्ये (वप्स्ये)।**

निम्न श्लोक का उच्चारण करके शिखा को ऊपर करके नीचे तथा चारो ओर के केशों का वपन करे—

ॐ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च।
केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात्केशान् वपाम्यहम्॥

तदुपरान्त—

ॐ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुवसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते॥
ॐ अन्नाद्याय ब्यूहध्वर्ठ० सोमो राजाऽयमागमत्।
स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च॥

उपरोक्त मन्त्रों से बारह अंगुल के अपामार्ग आदि के काष्ठ के द्वारा पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख होकर, मुख की दुर्गन्धि के नाश के लिए दन्तधावन करके चुपचाप मार्जनात्मक स्नान करे। तदुपरान्त निम्न संकल्प करें—

करिष्यमाणप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन यजमानशरीरसम्बन्धसमस्तपापक्षयार्थं भस्मादिभिर्दशविधस्नानानि करिष्ये। ऐसा संकल्प करके वहाँ पहले श्रौत या स्मार्त भस्म स्नान करे अथवा उसके अभाव में अन्य भस्म को लेकर बायें हाथ में रखकर दाहिने हाथ से ढँककर—**ॐ अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म स्थलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वर्ठ० हवा इदं भस्म मन एतानि चक्षूंसि भस्मानि।** इस मन्त्र से भस्म का अभिमन्त्रण करके कहें—**ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम्—शिरसि। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्र प्रचोदयात्—मुखे। ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः शर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः—हृदये। ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः—गुह्ये। ॐ सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः—पादयोः।** 'ॐ' इस

प्रणव के द्वारा मस्तक से लेकर पैर तक सभी अंग में भस्म लपेटे। उसके बाद शुद्ध गोबर लेकर—

ॐ अग्रमग्रचरन्तीनामोषधीनां रसं वने।
तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्॥
यन्मे रोगं च शोकं च नुद गोमय सर्वदा।

इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके सूर्य को दिखावें—**ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषुरीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।**

इस मन्त्र से दक्षिण हाथ से गृहीत गोमय के द्वारा सिर से नाभि पर्यन्त और बायें हाथ से गृहीत गोमय के द्वारा नाभि से पैर तक लेप करे। देश के भेद से मन्त्र की आहुति होती है। उसके पश्चात् मिट्टी लेकर निम्न श्लोकों का उच्चारण करे—

ॐ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे।
शिरसा धारयिष्यामि रक्ष मां त्वं पदे पदे॥ १॥
उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
मृत्तिके ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिवन्दिता॥ २॥
मृत्तिके हर मे पापं यद्दैवं यच्च मानुषम्।
मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्।
त्वया हतेन पापेन जीवामि शरदां शतम्॥ ३॥

पुनः—**ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतर्ठ० सपर्यत॥ दूरे दृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय सर्ठ० सत॥** इस मन्त्र से सूर्य को दिखाकर। **ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढमस्यपार्ठ० सुरे स्वाहा॥** इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए गोबर का लेपन करे। इसके बाद जल से स्नान करे। **ॐ आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। विश्वर्ठःहि**

रिप्रम्प्रवहन्ति देवीः ॥ इस मन्त्र से नदी आदि में डुबकी लगावे—**ॐ उदिदाभ्यः शुचिरा पूतऽएमि ॥** इस मन्त्र से उन्मंजन करे।

नदी के अभाव में—**ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥** इस मन्त्र से स्नान करे। शक्ति के अभाव में—**ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥ १ ॥ ॐ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिवमातरः ॥ २ ॥ तस्माऽअरङ्ग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा चनः ॥ ३ ॥**

उपरोक्त तीन मन्त्रों से क्रमानुसार यजमान मार्जन करे। पुनः गायत्री मन्त्र से गोबर की तरह गोमूत्र भी शरीर में लपेटे, पुनः पूर्व की तरह गोबर लपेटे।

इस मन्त्र का उच्चारण करके दधि लपेटे—**ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ॥ भवा वाजस्य सङ्गथे ॥** पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करके दधि लपेटे—**ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूꣳषि तारिषत् ॥** इस मन्त्र का उच्चारण करके घृत लपेटे—**ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्य मृतमसि धाम नामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥ इति घृतमनुलिप्य ॥** इस मन्त्र का उच्चारण करके कुशा के जल से स्नान करे—**ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे शिवनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥** उसके बाद नाभिमात्र जल में बैठे हुए स्नान और तर्पण करें।

तदुपरान्त यजमान नवीन यज्ञोपवीत धारण करके पूर्वाभिमुख होकर अक्षत और जल लेकर—**ॐ ब्रह्मादिदेवांस्तर्पयामि। ॐ भूर्देवांस्तर्पयामि। ॐ भुवर्देवांस्तर्पयामि। ॐ स्वर्देवांस्तर्पयामि। ॐ भूर्भुवः स्वर्देवांस्तबर्पयामि।** इन मन्त्रों से एक-एक अंजलि देवतीर्थ से प्रदत्त कर, उत्तर मुख होकर माला की तरह जनेऊ को धारण कर यव और जल से प्राजापत्यतीर्थ से—**ॐ कृष्णद्वैपायनादि-**

ऋषींस्त०। ॐ भूऋर्षींस्त०। ॐ भुवः ऋषींस्त०। ॐ स्वर्ऋषींस्त०। ॐ भूर्भुवः स्वर्ऋर्षींस्त०। इन नाममन्त्रों के द्वारा यजमान दो-दो अंजलि जल देकर, दक्षिणाभिमुख होकर, अपसव्य होकर पितृतीर्थ से तिल और जल के द्वारा—**सोमं, पितृमन्तं, यमं अग्निष्वात्तं कव्यवाहनादीस्त०। भूः पितृँस्त०। भुवः पितृँस्त०। स्वः पितृँस्त०। भूर्भुवः स्व पितृँस्त०।** इस प्रकार से तर्पण करके नदी के किनारे आकर निम्न श्लोक का उच्चारण करके तट पर एक अंजलि जल छोड़े—

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तोयेन तृप्ता यान्तु पराङ्गतिम्॥

निम्न श्लोक का उच्चारण करके तीर पर वस्त्र निचोड़कर सव्य होवे—

ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्॥

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यक्ष्म का तर्पण करें—

यन्मया दूषितं तोयं शरीरमलसंभवात्।
तद्दोषपरिहारार्थं यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम्॥

पुनः निम्न श्लोक का उच्चारण करे—

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्मया दुष्कृतं कृतम्।
तत्क्षमस्वाखिलं देवि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते॥

अब यजमान धुले हुए वस्त्रों को धरण करके—**ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।** इन तीन नाममन्त्रों का उच्चारण करके आचमन करे। इसके उपरान्त—**ॐ ऋषिकेशाय नमः। ॐ गोविन्दाय नमः** का उच्चारण करके अपने हाथों को शुद्ध जल से धोवे। तदुपरान्त भस्म से त्रिपुण्ड या चन्दन आदि से उर्ध्वपुण्ड करके पार्वण विधि से विष्णुश्राद्ध का संकल्प करे। या शालिग्राम शिला पर श्वेत चन्दन आदि से भगवान् विष्णु की षोडशोपचार पूजा करके यह संकल्प करे—**'ब्राह्मणचतुष्टयं च सम्पूज्य ब्राह्मणचतुष्टयं विष्णूद्देश्येन भोजयिष्ये'—ब्राह्मणचतुष्टयपर्याप्तं भोजनमिष्टलड्डु कर्-**

कम् आमान्नं तन्निष्क्रयं वा दास्ये। इति तेन श्रीभगवान् पापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्। यही प्रायश्चिताङ्ग विष्णुश्राद्ध है, ऐसा कहा जाता है।

संकल्पः—ततः प्रायश्चित्ताधिकारसिद्ध्यर्थं प्रारीप्सितप्रायश्चित्तपूर्वाङ्गतया विहितगोदानप्रत्याम्नायत्वेन यथाशक्ति गोमूल्यं सुवर्णादिद्रव्यं वह्न्यादिदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे इति दत्वा, महाव्याहृतिभिराज्येनाष्टोत्तरशतमष्टाविंशति वा होमं करिष्ये।

स्थण्डिल पर तीन कुशाओं से तीन बार परिसम्मूहन करके गोबर और जल से तीन बार लीपे, स्रुवे से उत्तरोत्तर क्रम से प्रागग्र तीन रेखा स्थण्डिल तक अथवा प्रादेशमात्र करके अनामिका व अंगूठे से, जिस क्रम से रेखा की गई है। उसी क्रम से रेखाओं पर से मिट्टी उठाकर ईशानकोण में फेके, मणिकपात्र के रहने पर उसके जल से, उसके अभाव में कमण्डलु के जल से न्युब्ज हाथ से जल छिड़के, इस प्रकार पञ्चभूसंस्कारों को करके कांस्यपात्र में स्थित 'विधि' नामक लौकिक अग्नि को वेदी पर स्वाभिमुख स्थापित करें। स्थापित करने का मन्त्र निम्न है—

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह॥ इस मन्त्र से अग्नि की स्थापना करके अग्नि से उत्तर आचार्य और ब्रह्मा का यजमान निम्न संकल्प का उच्चारण करके वरण करे—**अद्य अमुकोऽहं प्रायश्चित्तहोमकर्मणि आचार्यब्रह्मणोः पूजनपूर्वकं वरणं करिष्ये।** ऐसा संकल्प करके गन्ध, अक्षत और पुष्प से आचार्य और ब्रह्मा की पूजा करके वरण सामग्री लेकर इस संकल्प के द्वारा आचार्य का वरण करे—**देशकालौ संकीर्त्य, करिष्यमाणामुकहोमकर्मणि आचार्यकर्मणि आचार्यकर्मकर्तुमाचार्यत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोस्मीति प्रत्युक्तिर्ब्रह्मणः।** वरण के पश्चात् यजमान निम्न श्लोक का उच्चारण करके आचार्य की प्रार्थना करे—

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत॥

तदुपरान्त यजमान निम्न संकल्प का उच्चारण करके ब्रह्मा का वरण करे—**देशकालौ संकीर्त्य, प्रायश्चित्तहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणादिब्रह्मकर्मकर्तुं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीतिप्रतिवचनम्।**

ब्रह्माणं प्रार्थयेत्

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदधरो विभुः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥ १॥
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं यज्ञोयं विधिपूर्वकम्॥ २॥
अस्मिन् होमकर्मणि त्वं मे आचार्यो भव।
अहं भवानीति प्रत्युक्तिः त्वं मे ब्रह्मा भव॥ ३॥

भवानीति प्रत्युक्तिः। इति वरणं विधाय अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनं पीठं कुशैराच्छाद्य अग्नेरुत्तरतः पूर्वं वृत्तं ब्रह्माणं तत्रोपवेश्य प्रतिनिधिभूत आचार्य आत्मासनमग्नेः पश्चात्, यजमानासनञ्चाग्नेरुत्तरतः प्रागग्रैः कुशैः सम्पाद्य अग्नेरुत्तरतः पश्चिमभागे एकमासनं पूर्वभागे द्वितीयमासनं प्रागग्रैः कुशैः कल्पयित्वा प्रणीतापात्रं द्वादशाङ्गुलदीर्घं चतुरङ्गुलखातं सव्यहस्ते कृत्वा दक्षिण हस्तोद्धृतपात्रस्थजलेनापूर्य दर्भैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य पश्चिमासने निधाय आलभ्य पूर्वासने निदध्यात्। पूर्वादिदिक्षु प्रागग्रैरुदगग्रैश्च त्रिभिस्त्रिभिश्चतुर्भिश्चतुर्भिर्वा कुशैरग्निं परिस्तरेत्। पुरस्ताद्दक्षिणतः पश्चादुत्तरतः। तत्र पुरस्तात् पश्चाच्च उदगग्रैः, दक्षिणत उत्तरतश्च प्रागग्रैः। ततः अर्थवन्ति वस्तुनो अग्नेः पश्चिमतः प्राक्संस्थानि प्राग्बिलान्युदगग्राणि, उत्तरतश्चेत् उदक्संस्थानि उदग्बिलानि प्रागग्राणि कार्यक्रमेण द्वन्द्वमासादयेत्। पवित्रच्छेदनानि त्रीणि कुशतरुणानि, द्वे पवित्रे साग्ने अनन्तर्गर्भे, प्रोक्षणीपात्रम्, आज्यस्थाली, सम्मार्जनकुशाः त्रयः पञ्च वा, उपयमनकुशास्त्रिप्रभृतयस्त्रयोदशपर्यन्ताः, समिधस्तिस्रः पालाश्यः प्रादेशमात्र्यः, स्रुवः खादिरः, गव्यमाज्यम्, पूर्णपात्रं षट्पञ्चाशदधिकमुष्टिशतद्वयं तण्डुलपूरितं वा, बहुभोक्तुः पुरुषाहारपरिमितं वा,

कर्मोपयोगिनी दक्षिणा, गौर्ब्राह्मणस्य वरः, इत्युक्तो वरो वा। एतानि वस्तूनि अग्नेः पश्चात् प्राक्संस्थानि स्थापयेत्। पात्रासादनानन्तरमुपकल्पनीयानि सुवर्ण-रजत-ताम्र-पद्मपलाशादिपात्रं, यज्ञियकाष्ठं, हरितानि सप्ताधिकानि कुशपत्राणि, पञ्चगव्यं च, गोमूत्रादि पृथक् पृथगिति। तत्र पात्राणि प्राग्बिलान्युदगग्राणि स्थापयेत्। त्रिभिर्दर्भैः द्वे प्रच्छिद्य प्रादेशमात्रे पवित्रे कुर्यात्। प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतासन्निधौ निधाय तत्र पात्रान्तरेण हस्तेन वा प्रणीतोदकमासिच्य पवित्राभ्यामुत्पूय पवित्रे प्रोक्षणीषु निधाय दक्षिणेन हस्तेन प्रोक्षणीपात्रमुत्थाय सव्ये कृत्वा तदुदकं दक्षिणेनोच्छाल्य (दक्षिणहस्तमुत्तानं कृत्वा मध्यमानामिकाङ्गुल्योर्मध्यपर्वभ्यां जलस्योच्छालनं कृत्वा) प्रणीतोदकेन प्रोक्षेदिति प्रोक्षणीसंस्कारः। पवित्राभ्यां प्रोक्षणीभिरद्भिः आज्यस्थालीमुत्तानहस्तेन देवतीर्थेन संप्रोक्ष्य, सम्मार्जनकुशान्, उपयमनकुशान्, समिधः तिस्रः, स्रुवम्, आज्यम्, पूर्णपात्रम्, दक्षिणाश्च सादनक्रमेणैकैकशः संप्रोक्ष्य, असञ्चरे अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं सपवित्रं स्थापयेत्। आसादितमग्नेः पश्चान्निहितायामाज्यस्थाल्यामाज्यं गृहीत्वा अग्नावारोपयेत्। अधिश्रिते आज्ये ज्वलदुल्मुकमाज्यस्य समन्ताद् भ्रामयेत्। दक्षिणेन स्रुवमधोमुखं प्राञ्चं प्रतप्य सव्ये कृत्वा सम्मार्जनकुशाग्रैर्मूलतोऽग्रपर्यन्तम्, कुशमूलैः अधस्ताद्भागे अग्रमारभ्य मूलपर्यन्तम् सम्मार्जनकुशान् अग्नौ प्रहरेत्। ततः प्रणीतोदकेन स्रुवमभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य कराभ्यां सम्मार्ज्य आत्मनो दक्षिणतः कुशोपरि निदध्यात्। आज्यमुत्तार्य उत्तरतः स्थापयित्वा अग्नेः पश्चात् आनयेत्। अङ्गुष्ठाभ्याम् अनामिकाभ्यां च धृताभ्याम् उदगग्राभ्याम् पूर्वपवित्राभ्याम् आज्यं उत्पूय अवेक्ष्य अपद्रव्यनिरसनं कृत्वा प्रोक्षणीश्च पूर्वपवित्राभ्याम् उत्पूय तासु पवित्रे निदध्यात् उपयमनकुशान् दक्षिणेनादाय वामहस्ते कृत्वा पवित्रे प्रणीतासु

निदध्यात्। ततः विधिनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव इति प्रतिष्ठाप्य ध्यायेत्—

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं सर्वतोमुखम्॥ १॥
सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षि शिरोमुखः।
विश्वरूपो महानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु॥ २॥

विधिनाम्ने अग्नये नमः। इति संपूज्य रेखाः पूजयेत्—पूर्वरेखायाम्, ॐ ब्रह्मणे नमः। मध्यरेखायाम्—ॐ विष्णवे नमः। उत्तररेखायाम्—ॐ रुद्राय नमः। ततो अग्निजिह्वापूजनम्—ॐ कराल्यै नमः—ॐ धूमिन्यै नमः—ॐ श्वेतायै नमः—ॐ लोहितायै नमः—ॐ महालोहितायै नमः—ॐ सुवर्णायै नमः—ॐ पद्मरागायै नमः। इस प्रकार सातो जिह्वाओं की पूजा करके यजमान दाहिने घुटने को मोड़कर ब्रह्मा से आरभ्य करके प्रज्वलित अग्नि में मौन होकर घृत द्वारा स्रुवे से हवन करे—ॐ प्रजापतये स्वाहा—इति मनसा ध्यायन् हविर्द्रव्यमग्नौ प्रक्षिप्य इदं प्रजापतये न मम—इति त्यागं मनसा कृत्वा हुतशेषं प्रोक्षणीपात्रे क्षिपेत्, एवं सर्वत्र। ततः—ॐ इन्द्राय स्वाहा-इदमिन्द्राय न मम। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा-इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा-इदं सोमाय न मम। इत्याज्यभागौ च हुत्वा। ततः—अष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिः वाऽऽज्याहुतीनां व्यस्तसमस्ताभिर्महाव्याहृतिहोमः—ॐ भूः स्वाहा—इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा—इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा—इदं सूर्याय न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा—इदं प्रजापतये न मम। एवं सप्तवारं कृते अष्टाविंशतिराहुतयः।

ब्रह्मकूर्चहोमः—सुवर्णादिपात्रे गायत्र्या गोमूत्रम्—ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ गोमयम्॥ ॐ आप्यायस्वसमे तु ते विश्वतः सोम

वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ दुग्धम्॥ ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूꣳषि तारिषत्॥ दधि॥ ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्य मृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजमसि॥ घृतम्॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ इस प्रकार कुशोदक का संग्रह करके 'प्रणव' से आलोडित करके यज्ञीय काष्ठ के द्वारा मथकर पुनः 'प्रणव' से अभिमन्त्रित करके सात से अधिक हरे दर्भ (कुश) पत्र से पञ्चगव्य द्वारा होम करे—**मन्त्राश्च**—ॐ इरावती धेनुमती हि भूतः सूयवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्त्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा॥ इदं पृथिव्यै न मम॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्॥ समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ इदं विष्णवे न मम॥ ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ इदं रुद्राय न मम॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः स्वाहा॥ इदमद्भ्यो न मम॥ ॐ अग्नये स्वाहा—इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा—इदं सोमाय न मम। ॐ तत्सवितुर्व० स्वाहा—इदं सवित्रे न मम। ॐ स्वाहा—इदं परमेष्ठिने न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा—इदं प्रजापतये न मम। इति हुत्वा पञ्चगव्यमिश्राज्येन—ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा—इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥ इति स्विष्टकृद्धोमः॥

उसके बाद—**भो विप्रा व्रतग्रहणं करिष्ये**—ऐसी ब्राह्मणों से प्रार्थना करे—**ॐ कुरुष्व**—ऐसी ब्राह्मणों से आज्ञा पाकर हुतशेष पञ्चगव्य को प्रणव

से शब्द न करते हुए पान करे। इस दिन दूसरा आहार छोड़ दे, अशक्ति में दूध आदि का आहार करे, उसके बाद रात्रि बिताकर दूसरे दिन अथवा उसी दिन देयद्रव्य की पूजा करके कुशा, यव, तिल और जल लेकर यह संकल्प करे—**देशकालौ स्मृत्वा मम (पित्रादेः) जन्मप्रभृत्यद्य यावत् इत्यादि निरासार्थं इत्यन्तमुल्लिख्य इमानि अशीत्यधिकनवतिपञ्चचत्वारिंशत् अन्यतमसङ्ख्याककृच्छ्रप्रत्याम्नायभूतानां गवां मूल्यभूतानि पूर्वोक्तान्यतमसङ्ख्याकानि सुवर्णनिष्काणि, तदर्धानि, तदर्धार्धानि वा चन्द्रदैवतानि पणद्वित्रिंशत्कानि वा सूर्यदैवतानि कार्षापणानि वा ब्राह्मणेभ्यो यथाकालं दास्ये। ॐ तत्सत् न मम—इति सङ्कल्प्य दद्यात्।**

पुनः—**ॐ भूः स्वाहा—इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा-इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा—इदं सूर्याय न मम। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः॥ यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषार्ठ०सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥ ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठा अस्या उषसा व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणर्ठ० रराणो वीहि मृडीकर्ठ० सुहवो नऽएधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥ ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजर्ठ० स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे न मम॥ ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। ते भिर्न्नोऽ अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वैर्मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥ ॐ उदुत्तमं वरुणं पाशमस्मदवाधमं विमध्यमर्ठ० श्रथाय।**

अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा॥ इदं प्रजापतये न मम॥ ततः—बर्हिर्होमं स्वाहा इति मन्त्रेण कुर्यात्। इदं प्रजापतये न मम। ततः संस्रवप्राशनमवघ्राणं वा कृत्वा द्विराचम्य अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिं स्वाहा इति कुर्यात्। ततः प्रणीताविमोकमग्नेः पश्चिमतः कुर्यात्। ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्—प्रायश्चित्तहोमकर्मणःसाङ्गफलप्राप्तये साद्गुण्यार्थं पूर्णपूरणार्थं च इदं पूर्णपात्रं सद्रव्यं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ तत्सत् नमम्। ततः अग्निं प्रार्थयेत्—ॐ सदस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिं मेधामया सिषर्ठ० स्वाहा॥ यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते॥ तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥ मेधाम्मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः॥ मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा॥

तदुपरान्त—**प्रायश्चित्तोतराङ्गविष्णुश्राद्धसंपत्तये ब्राह्मणचतुष्टयाय पक्कान्नंआमान्नं तन्निष्क्रयं वा दास्ये।** इस प्रकार संकल्प करके विष्णुश्राद्ध के अनुकल्प भूत अन्न आदि को देकर—**प्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गत्वेन विहितगोदानप्रत्याम्नायत्वेन यथाशक्तिगोमूल्यं तुभ्यं संप्रददे।**

इस प्रकार उत्तरगोदान करके वायव्य म उत्तराङ्गभूत अग्नि का पूजन निम्न मन्त्र का उच्चारण करके करे—**ॐ अग्नेनय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोद्ध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽ उक्तिं विधेम॥**

निम्न श्लोक का उच्चारण करके पूजन करें—

श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं बलं श्रियम्।
आयुष्यं द्रव्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥

अब त्र्यायुषकरण करे, जिसकी विधि यह है—अनामिका अंगुली के द्वारा स्रुवे में लगे घी और भस्म को निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपने शरीर के अंगों पर लगावे—**ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः—ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्—ग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्—दक्षिणबाहुमूले। ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्—हृदि।**

होमाङ्गदक्षिणासङ्कल्पः—प्रायश्चित्तहोमकर्मणः साङ्गलप्राप्तये सादगुण्यार्थं च इमां दक्षिणामाचार्याय तुभ्यं संप्रददे। कृतस्य प्रायश्चित्तकर्मणः सादगुण्यार्थं पञ्चदश ब्राह्मणान् यथोपपन्नेन भोजयिष्यामि। अस्मिन् प्रायश्चित्तकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं भूयसीं दक्षिणामन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये।

निम्न श्लोकों व मन्त्र का उच्चारण करते हुए अग्निदेव का विसर्जन करे—

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥ १॥
भो भो वह्ने महाशक्ते सर्वकर्मप्रसाधक।
कर्मान्तरेऽपि संप्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम्॥ २॥
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ ३॥

ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा। एष ते यज्ञपते सहसूक्त वाकः सर्ववीरतं जुषस्व स्वाहा॥ ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे॥

तदुपरान्त तिलक, रक्षाबन्धन, घृतछायादर्शन और आशीर्वाद मन्त्र पाठ आदि करें।

दशदानम्[१]

स्वर्णयुक्त सींगोंवाली, चाँदी से अलंकृत खुरोंवाली, ताम्र से सुशोभित पृष्ठवाली, मुक्ता से युक्त पुच्छवाली, कांसे के दोहन पात्रवाली गाय को नवीन वस्त्र से अलंकृत करके तथा गंधादि के द्वारा पूजित कर निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए कर्ता गौ की पूजा करें—**सवत्सायै गवे नमः**। इस नाममन्त्र से गाय की पूजा करके निम्न मन्त्र से प्रार्थना करें—

ॐ इरावती धेनुमती हि भूतर्ठ० सूयवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवे ते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा॥

ब्राह्मणवरणसंकल्पः—करिष्यमाणगोदानकर्मणि एभिः वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं गोदानप्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

ॐ यदाबन्धन्दाक्षायणा हिरण्यर्ठ० शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्मान्जरदष्टिर्यथासम्॥

उपरोक्त दो मन्त्रों का उच्चारण करके 'ॐ स्वस्ति' ऐसा ब्राह्मण कहे, यहाँ कुछ लोग गोपुच्छ तर्पण भी करते हैं। (इसलिए) यजमान के दायें हाथ में त्रिकुश, जल, अक्षत, द्रव्य और गोपुच्छ देकर आचार्य निम्न संकल्प करावे—

देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) कृतानेकपापक्षयपूर्वकं मम गृहे उत्तरोत्तरशुभफलप्राप्त्यर्थं च इमां सवत्सां गां रुद्रदैवत्यां स्वर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां ताम्रपृष्ठां मुक्तालाङ्गूलयुतां कांस्यदोहनवस्त्रायुगच्छन्नां गोरोमसङ्ख्यसहस्त्रावछिन्नगोलोकवास कामः गोत्राय शर्मणे तुभ्यमहं संप्रददे।

---

१. गो-भू-तिल-हिरण्याज्य-वासो-धान्य-गुडानि च। रौप्यं लवणमित्येपं दशदानं प्रकीर्तितम्॥
(हेमाद्री--प्रायश्चित्तप्रकरणे)

उसके बाद निम्न प्रार्थना करें—

यज्ञसाधनभूताया विश्वस्याघौघनाशिनी।
विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा॥
गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

उसके बाद इस कामस्तुति को पढ़ें—

ॐ कोदात्कस्माऽअदात्कामोदात्कामायादात्। कामो दाता कामः प्रतिग्रहीताकामैतत्ते॥ पुनः **ॐ स्वस्ति** कहें। उसके बाद दान की प्रतिष्ठा करे, इस संकल्प के द्वारा—**कृतैतन् गोदानकर्मणः साङ्गतासंपत्तये गोत्राय शर्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।** यजमान प्रदक्षिणा करे और आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवे व्यवस्थिता।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु॥

भूदानम्—आचार्य पूर्व की तरह वरणादि करवाके यजमान से निम्न संकल्प करावे—**अद्येत्यादि गोत्रः शर्मा गोत्राय शर्मणे सालङ्कृताय षष्टिसहस्त्रवर्षमितं वैकुण्ठे विष्णुलोकावाप्तिकामः इमां भूमिं सस्योद्भवां सवृक्षफलपुष्पाद्युपेतां विष्णुदैवतां तुभ्यमहं संप्रददे॥** ब्राह्मण के हाथ में दे। ब्राह्मण भूमि की प्रदक्षिणा करते हुए दान लें और **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे शिवनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥** इस मन्त्र का उच्चारण करें और '**ॐ स्वस्ति**' कहकर निम्न प्रार्थना करे—

सर्वेषामाश्रया भूमिर्वराहेण समुद्धृता।
अनन्तसस्यफलदा अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥
यस्यां रोहन्ति बीजानि वर्षाकाले महीतले।
भूमेः प्रदानात्सकला मम सन्तु मनोरथाः॥

प्रार्थना के पश्चात् यजमान आचार्य सहित ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करे।

तिलदानम्—आचमन से लेकर भूतोत्सादन पर्यन्त कर्म करके तीन द्रोण (पवने तेरह सेर एक पल) अथवा यथाशक्ति तिलों को आगे किसी पात्र या बर्तन

में रखकर कुशा, यव आदि लेकर यह संकल्प करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा श्रीविष्णुप्रीतये तिलदानं करिष्ये।** ऐसी प्रतिज्ञा करके यजमान ब्राह्मण की पूजा करके तिलों को पोंछकर—

विष्णोर्देहसमुद्भूताः कुशाः कृष्णतिलास्तथा।
धर्मस्य रक्षणायार्थमेत्प्राहुर्दिवौकसः॥

इस प्रकार पूजा करके '**विष्णुप्रीतये तत्**' पूर्वोक्त का उल्लेख करके—**इमान् द्रोणत्रयद्रोणद्वयएकद्रोणान्यतमपरिमितान् तिलान् प्रजापतिदेवान् सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** ऐसा कहकर ब्राह्मण के हाथ में जलादि देकर—

महर्षेर्गोत्रसंभूताः काश्यपस्य तिलाः स्मृताः।
तस्मादेषां प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु॥

ऐसा कहकर तिलद्रोण का स्पर्श करे। तिलपात्र दान को सोलह पल से निर्मित अथवा यथाशक्ति निर्मित ताम्रपात्र में रखकर यथाशक्ति उसमें सुवर्ण रखकर—

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च।
तिलपात्रप्रदानेन तानि नश्यन्तु मे सदा॥

पूर्वोक्त विधि से उपरोक्त मन्त्रविशेष को पढ़ते हुए यथाशक्ति सुवर्ण अथवा उसका मूल्य दक्षिणादान की प्रतिष्ठा की सिद्धि के लिए दे। तिल का मूल्य तिल के परिमाण के अनुसार संकल्प करे।

हिरण्यदानम्—यजमान आचमन से लेकर भूतोत्सादन पर्यन्त गोदान की तरह करके कुश, यव, तिल और जल हाथ में लेकर यह संकल्प करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, अक्षयस्वर्गकामः, पापक्षयकामः, पितृतारणकामः, ईश्वरप्रीतिकामो वा सुवर्णदानं करिष्ये।** ऐसी प्रतिज्ञा करके पुनः यह संकल्प करे—**तदङ्गत्वेन ब्राह्मणस्य पूजनपूर्वकं वरणं सुवर्णस्य पूजनं च करिष्ये।** संकल्प के उपरान्त गन्ध आदि के द्वारा ब्राह्मण की पूजा करके पूर्व की तरह वरण करके सुवर्ण का प्रोक्षण करके निम्न श्लोक का उच्चारण करे—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

पुनः यजमान देशकाल का पूर्व की तरह उच्चारण करके तथा उद्देश्य का उच्चारण करके यह संकल्प करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, इदं कर्षमात्रं सुवर्णमग्निदैवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** ऐसा कहकर—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

इस दानवाक्य का यजमान उच्चारण करके ब्राह्मण के हाथ में कुश और जल के साथ सुवर्ण देवे, उसके बाद सुवर्णदान की दक्षिणा प्रदान करने के लिए निम्न संकल्प करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, सुवर्णदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिदं सुवर्णमग्निदैवतं दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।** यह कहकर दक्षिणा देवें और ब्राह्मण इस यजु का उच्चारण करे—**ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥** पुनः ब्राह्मण यह कहें—'**ॐ स्वस्ति**' **अग्निदैवतायै सुवर्णं प्रतिगृह्णामि,** यह कहकर ब्राह्मण दान ले ले। इसके उपरान्त इस मन्त्र का उच्चारण करके कामस्तुति पढ़े—**ॐ कोदात्कस्माअदात्कामोदात्कामायादात्। कामो दा ता कामः प्रतिग्रहीता कामै तत्ते॥**

आज्यदानम्—चार सेर, दो सेर या एक सेर घृत सामने रखकर पूर्व की तरह दान की प्रतिज्ञा करके ब्राह्मण की पूजा करके और वरण करके घृत का प्रोक्षण करके, पूजा करके यजमान यह संकल्प करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वाराविष्णुप्रीतये इदमाज्यं विष्णुदैवतं (मृत्युञ्जयदैवम्) तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** सुवर्ण की दक्षिणा या उसका मूल्य, दानप्रतिष्ठा की सिद्धि के लिए निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान प्रदान करे—

कामधेनोः समुद्भूतं देवानामुत्तमं हविः।
आयुर्वृद्धिकरं दातुं राज्यं पातु सदैव माम्॥

वस्त्रदानम्—सूक्ष्मतन्तु से बने हुए दो हाथ से ज्यादा चौड़ा और आठ हाथ के लम्बे जिनका किनारा कटा न हो, ऐसे नये दो वस्त्र आगे रखकर पूर्व की तरह दान, प्रतिज्ञा, ब्राह्मणपूजन, वरण, वस्त्रप्रोक्षण एवं पूजन आदि करके यजमान यह

संकल्प करके ब्राह्मण को प्रदान करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, मम-(पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इदं वासोयुग्मं बृहस्पतिदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ॐ तत्सत् न मम।** इस संकल्प को पढ़कर देवें।

निम्न श्लोक को यजमान पढ़कर वस्त्र देवें—

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

सुवर्ण की दक्षिणा अथवा उसका मूल्यदान प्रतिष्ठा सिद्धि के लिए यजमान ब्राह्मण (आचार्य) को प्रदान करे।

धान्यदानम्—सतहत्तर सेर सोलह पल धान। सामने रखके दानप्रतिज्ञा आदि पूर्व की तरह करके धान्य का प्रोक्षण और पूजन करके यह संकल्प करें—**देशकालौ संकीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इदं धान्यं प्रजापतिदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** इस संकल्प को पढ़कर देवें। निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान धान्य का दान करें—

अमुकदेवतामयं धान्यं सर्वोत्पत्तिकरं महत्।
प्राणिनो जीवनोपायमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

दान की प्रतिष्ठा सिद्धि के लिए सुवर्ण अथवा उसका मूल्य आचार्य को देवें। धान्य का मूल्य परिमाण के अनुसार करना चाहिए।

गुडदानम्—तीन सेर अथवा यथाशक्ति गुड़ को आगे रखकर दानप्रतिज्ञा आदि पूर्व की तरह करके गुड़ का प्रोक्षण और पूजन करके यजमान यह संकल्प करें—**देशकालौ संकीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इमं गुडं सोमदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** इस संकल्प को पढ़कर देवें। निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान गुड़ का दान करें—

यथा देवेषु विश्वात्मा प्रवरश्च जनार्दनः।
सामवेदस्तु वेदानां महादेवस्तु योगिनाम्॥

प्रणवः सर्वमन्त्राणां नारीणां पार्वती यथा।
तथा रसानां प्रवरः सदैवेक्षु रसो मतः।
मम तस्मात्परालक्ष्मीं ददस्व गुड सर्वदा॥

दान की प्रतिष्ठा सिद्धि के लिए सुवर्ण अथवा उसका मूल्य आचार्य को देवें। गुड़ का मूल्य परिमाण के अनुसार करना चाहिए।

रजतदानम्—तीन पल अथवा एक पल या यथाशक्ति चाँदी को आगे रखकर दान-प्रतिज्ञा आदि पूर्व की तरह करके रजत का प्रोक्षण और पूजन करके यह संकल्प यजमान करें—**देशकालौ संकीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इदं रजतचन्द्रदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** इस संकल्प को पढ़कर देवें।

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान रजत का दान करें—

प्रीतिर्यतः पितृणां च विष्णुशङ्करयोः सदा।
शिवनेत्रोद्भवं रौप्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

दान की प्रतिष्ठा सिद्धि के लिए सुवर्ण अथवा उसका मूल्य आचार्य को देवें। रजत का मूल्य परिमाण के अनुसार करना चाहिए।

लवणदानम्—सतहत्तर सेर सोलह पल अथवा यथाशक्ति लवण को आगे रखकर दानप्रतिज्ञा आदि पूर्व की तरह करके लवण का प्रोक्षण और पूजन करके यजमान यह संकल्प करें—**देशकालौ संकीर्त्य, मम (पित्रादेः) सङ्कल्प्यपापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इदं लवणं सोमदैवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे।** इस संकल्प को पढ़कर देवें। निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान लवण का दान करें—

यस्मादन्नरसाः सर्वे नोत्कृष्टा लवणं विना।
शंभोः प्रीतिकरं यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

दान की प्रतिष्ठा सिद्धि के लिए सुवर्ण अथवा उसका मूल्य आचार्य को देवें। लवण का मूल्य परिमाण के अनुसार करना चाहिए।

मंगलस्नानम्

शनिशान्तिअनुष्ठान के आयोजन में प्रथम दिन या अन्य दिन या उसी दिन नित्यक्रिया करके कर्ता अपनी धर्मपत्नी के साथ उपवास रखे तथा आचार्य इस संकल्प को कर्ता से करवाके तदुपरान्त मंगलस्नान करावे—**संकल्पः—** **देशकालौ सङ्कीर्त्य, करिष्यमाण शनिशान्त्यनुष्ठाननिमित्तं सपत्नीकोऽहं मङ्गलस्नानं करिष्ये।**

इसके बाद यथायोग्य सर्वौषधि आदि सुगन्धित चूर्णों से और आँवले आदि के सुगन्धित तैल से शरीर पर लेपन कर यजमान स्नान करके आचमन कर मन्त्र के साथ नये ऊपर एवं नीचे के वस्त्रों को धारण करे। उन वस्त्रों को धारण करवाने के लिए आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करे—

ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि। शतं च जीवामि शरदः पुरूचो रायस्पोषमभिसंव्यायिष्ये॥ इस मन्त्र से अधोवस्त्र पहनकर यजमान दो बार आचमन करे। तदुपरान्त—

यशसा मा द्यावा पृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती।
यशो भगश्च माऽविदधद्यशो मा प्रतिपद्यताम्॥

यदि यजमान को नवीन वस्त्र धारण न करवाना हो तो आचार्य मन्त्र का उच्चारण न करे। पत्नी का भी वस्त्र धारण और कंचुकी (चोली) आदि का धारण बिना मन्त्र के ही आचार्य को करवाना चाहिए। (इसी प्रकार संस्कार्य का भी यथासम्भव वस्त्रधारण होना चाहिए) प्रत्येक वस्त्र के धारण पर दो बार आचमन करना चाहिए। सौभाग्य कुमकुम आदि के द्वारा तिलक करना चाहिए। तदुपरान्त गोबर से लिपी हुई रंगवल्ली स्वस्तिक आदि से अलंकृत, शुभ वस्त्र से आच्छादित पवित्र भूमि पर श्रीपर्णी आदि प्रशस्त काठ के पीढ़े पर अथवा कम्बल या कुशा आदि के आसन पर स्वयं पूर्वाभिमुख बैठकर अपने पीढ़े के समान दो पीठों पर पत्नी एवं संस्कार्य को बिठावें। अपने दाहिने पत्नी होगी और पत्नी के दाहिने संस्कार्य होगा। सभी कर्मों के आरम्भ में किये जानेवाले कर्म की निर्विघ्नता सिद्धि

के लिए कुलाचार के अनुसार गणेश अथवा गणेशाम्बिका की पूजा करे। वह इस प्रकार है—शिखा बाँध करके, कच्छा बाँध करके हाथ में कुश लेकर आगे दिए हुए श्लोक का उच्चारण करके पूजन-सामग्री एवं अपने ऊपर यजमान जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ १ ॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥ २ ॥

उपरोक्त दो यजुर्मन्त्रों से दाहिने एवं बायें हाथ की अनामिका अंगुली के मूल में अथवा मध्य में क्रमशः पवित्र धारण करके स्मार्तविधि से आचमन करें। वह स्मार्तविधि इस प्रकार से है—आचमन के लिए विहित पात्र में जल लेकर अंगूठे और कनिष्ठिका को पृथक् कर शेष मिली हुई तीन अंगुलियों से युक्त हाथ द्वारा उड़द डूबने भर जल लेकर तीन बार पीवे। तदुपरान्त हाथ को धोकर अंगों का स्पर्श करें, उसका क्रम इस प्रकार से है—अंगूठे के मूल से दो बार मुँह का स्पर्श करके मिली हुई तीन अंगुलियों वाले हाथ से चेहरे का स्पर्श करें। अंगूठा और तर्जनी से दोनों नासिकाओं को अंगूठा और अनामिका से दोनों आँखों को, उन्हीं दोनों से कानों को, कनिष्ठिका और अंगूठे से नाभि को, हाथ के तलवे से हृदय को, सभी अंगुलियों से सिर को, हाथ के अगले भाग से कंधों को स्पर्श करें। एक के लिए एक बार आचमन करके पुनः दूसरी बार तीन आचमन करके पूर्व की तरह अंगों का स्पर्श करें। यह स्मार्त आचमन है। पौराणिक आचमन में तो केशव आदि निम्न चौबीस नामों का उच्चारण करें—**ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ मधुसूदनाय नमः। ॐ त्रिविक्रमाय नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ पद्मनाभाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ वासुदेवाय नमः।**

ॐ प्रद्युम्नाय नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ नारसिंहाय नमः। ॐ अच्युताय नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ उपेन्द्राय नमः। ॐ हरये नमः। ॐ प्रजापतये नमः। ॐ हिरण्यगर्भाय नमः। ॐ कृष्णाय नमः।

आचार्य निम्न क्रमानुसार यजमान से प्राणायाम करावें—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो३म्।

उपरोक्त मन्त्र को नौ बार यजमान पढ़े। यहाँ पहले अंगूठे से दाहिनी नाक का स्पर्श करके मौन होकर नेत्रों को बन्द करके नाभि में स्थित चतुर्भुज भगवान् का ध्यान करते हुए बायीं नासिका से धीरे-धीरे श्वाँस को खींचते हुए तीन बार मन्त्र की आवृत्ति करते हुए पूरक प्राणायाम करे। इसके पश्चात् अंगूठे से दक्षिण नासिका को और अनामिका एवं कनिष्ठिका अंगुली से बायीं नाक को बन्द करके श्वाँस को रोककर हृदय में चतुर्मुख ब्रह्माजी का ध्यान करके तीन बार उपरोक्त मन्त्र को पढ़ते हुए कुम्भक प्राणायाम करे। पुनः दाहिनी नाक से अंगूठे को हटाकर अनामिका अंगुली व कनिष्ठिका अंगुली से बायें नाक को बन्द करके श्वाँस को दाहिनी नाक से धीरे-धीरे छोड़ते हुए ललाट में भगवान् शिव का ध्यान करके उपरोक्त मन्त्र को तीन बार पढ़ते हुए रेचक प्राणायाम करे। इसके पश्चात् यजमान रक्षादीप प्रज्वलित करे तथा आचार्य और ब्राह्मण 'हरिः ॐ आ नो भद्रा०' आदि वैदिक मंगल मन्त्रों का उच्चारण करे। तदुपरान्त मन्त्र की समाप्ति के पश्चात् यजमान का आचार्य तिलक करें।

जलयात्रा[1]

ब्राह्मणों से आज्ञा प्राप्त कर सपत्नीक यजमान सुहागिन स्त्रियों और ब्राह्मणों को साथ लेकर आठ या नौ कलश लेकर जलाशय को जाये और वहाँ हाथ-पैर धोकर आसन पर बैठे तथा प्राणायामादिक करे, तदुपरान्त आचार्य निम्न संकल्प करावें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, करिष्यमाण शनिशान्त्यनुष्ठानाङ्गभूतत्वेन जलयात्रां करिष्ये। तदङ्गत्वेन गणपतिवरुणादीन् षोडशोपचारैः पूजयेत्।

इसके बाद मण्डल के दक्षिण, पश्चिम और उत्तर में पूर्व की तरह तीन कलशों का स्थापन और पूजन करे। इसी प्रकार ईशानकोण से लेकर वायव्यकोण तक चारो कोने में चार कलशों की तथा उनके मध्य में वरुण की पूजा करें। आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावे-

एह्येहि यादोगणवारिधिनां गणेन पर्जन्यसहाप्सरोभिः।
विद्याधरेन्द्रामरगीयमानः पाहि त्वमस्मान् भगवन्नमस्ते॥
तीक्ष्णायुधं तीक्ष्णगतिं दिगीशं चराचरेशं वरुणं महान्तम्।
प्रचण्डपाशाङ्कुशवज्रहस्तं भजामि देवं कुलवृद्धिहेतोः॥
आवाहयाम्यहं देवं वरुणं यादसां पतिम्।
प्रतीचीशं जगत्प्राणसेवितं पाशहस्तकम्॥

इन मन्त्रों से कलश पर वरुण का आवाहन करके पूजन करें। उसके बाद जलमाताओं की पूजा करें। उसका क्रम यह है कि—अग्निकोण में वस्त्र से ढँकी हुई भूमि पर अक्षत का सातपुञ्ज दक्षिण से उत्तर की ओर बनावें। उनपर-

जलमातृणां पूजनम्—ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्म्यै नमः कूर्मिमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः

---

[1] शान्तिकं पौष्टिकं वापि जलयात्रां विना बुधः। कुरुते यदि वा मोहात्कर्म तस्य च निष्फलम्॥
तडागादिप्रतिष्ठासु देवतायतनादिषु। लक्षहोमे कोटिहोमेऽयुतहोमे तथैव च॥
व्रतोत्सर्गे महादाने यज्ञे वा वितते शुभे। जलयात्रां पुरा कृत्वा श्रेष्ठं कर्म समाचरेत्॥
(यज्ञ-मीमांसा)

वाराहीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दर्दुर्यै नमः दर्दुरीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मकर्यै नमः मकरीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥ ॐ भूर्भुवः स्वः जलूक्यै नमः जलूकीमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तन्तूक्यै नमः तन्तुकीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥ ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ꣳ प्रतिष्ठ ॥ इस मन्त्र का उच्चारण करके प्रतिष्ठापन करें।

पुनः—**ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्याद्यावाहितमातरः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत्।**

तदुपरान्त '**ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्याद्यावाहित जलमातृभ्यो नमः**' यह कहकर पञ्चोपचार से पूजन करें। तदुपरान्त जीव माताओं का पूजन वहीं सात अक्षतपुञ्जों का बनाकर निम्न क्रम से करें—

जीवमातृणां पूजनम्—ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्यै नमः कुमारीमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥ ॐ भूर्भुवः स्वः धनदायै नमः धनदामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥ ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दायै नमः नन्दामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विमलायै नमः विमलामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मङ्गलायै नमः मङ्गलामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अचलायै नमः अचलावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ꣳ प्रतिष्ठ ॥
इस मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य प्रतिष्ठापन करावे।

पुनः—**ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्याद्यावाहितजीवमातृकाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत्।** तदुपरान्त '**ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्याद्यावाहित जीवमातृभ्यो नमः**' यह कहकर पञ्चोपचार से पूजन करें।

पुन स्थलमातृकाओं का पूजन करें। वहीं आगे सात अक्षतपुञ्जों को बनाकर-

स्थलमातृणां पूजनम्—ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्यै नमः ऊर्मिमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥ ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥ ॐ भूर्भुवः स्वः महामायायै नमः महामायामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पानदेव्यै नमः पानदेवीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वारुण्यै नमः वारुणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥ ॐ भूर्भुवः स्वः निर्मलायै नमः निर्मलामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गोधायै नमः गोधामावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य प्रतिष्ठापन करावें—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठ॰ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ॥

पुनः—**ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्याद्यावाहितस्थलमातृकाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत्।**

तदुपरान्त '**ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्याद्यावाहितस्थलमातृभ्यो नमः**' यह कहकर पञ्चोपचार से पूजन करें।

इस समय कुछ लोग सप्तसागर के पूजन की इच्छा करते हैं। वह इस प्रकार से है—अक्षतपुञ्जों पर—**ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारदुपाठ॰ सुन सममृतत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः॥**

उपरोक्त मन्त्र से आवाहन करवाके पञ्चोपचार के द्वारा यजमान से पूजा करावें। पुनः आचार्य इन्द्रादि दशदिक्पालों का यजमान से आवाहन करवा के पूजन करावें। इस समय कुछ लोग दिक्पाल बलि भी करते हैं, पुनः आचार्य निम्न क्रम द्वारा जलाशय स्थित वरुण का पूजन निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से करावें।

ॐ उरुꣳहि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्था मन्वेत वाऽ उ। अपदेपादा प्रति धातवेकरुतापवक्ता हृदया विधश्चित्॥ नमो वरुणायाभिष्ठितो वरुणस्य पाशः॥ इस मन्त्र से आवाहन करके '**ॐ वरुणाय नमः**' इस नाममन्त्र से पूजन करवाने के बाद निम्न वैदिक मन्त्र या नाममन्त्र का आचार्य उच्चारण करके यजमान से बारह आहुति प्रदान करावें—

मन्त्र—**ॐ अद्भ्यः स्वाहा वार्भ्यः स्वाहोदकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा स्त्रवन्ताभ्यः स्वाहा स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा कूप्याभ्यः स्वाहा सूर्द्याभ्यः स्वाहा धार्याभ्यः स्वाहार्णवाय स्वाहा समुद्राय स्वाहा सरिराय स्वाहा॥**

नाममन्त्र के पक्ष में—**ॐ अद्भ्यः स्वाहा। ॐ वार्भ्यः स्वाहा। ॐ उदकाय स्वाहा। ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा। ॐ स्त्रवन्तीभ्यः स्वाहा। ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा। ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा। ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा। ॐ धार्ष्याभ्यः स्वाहा। ॐ अर्णवाय स्वाहा। ॐ समुद्राय स्वाहा। ॐ सागराय स्वाहा।** इन मन्त्रों से हवन करें।

तदुपरान्त आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके वरुण देवता को यजमान से प्रणाम करावें—

ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभायः सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥

आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करके यजमान से वरुण देवता की प्रार्थना करावें—

ॐ प्रतीचीश नमस्तुभ्यं सर्वाघौघनिषूदन।
पवित्रं कुरु मां देवः सर्वकार्येषु सर्वदा॥
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यावान्विधिरनुष्ठितः।
स सर्वस्त्वत्प्रसादेन पूर्णं भवत्वपांपते॥

उपरोक्त कर्म के पश्चात् यजमान सुहागिन स्त्रियों को सौभाग्यद्रव्य, ताम्बूल और चना आदि देकर ब्राह्मणों को यथाशक्ति दक्षिणा देवें।

पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य कलशों को उठाकर सुवासिनियों के हाथ में देवें—**ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वे महे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदा न वऽ इन्द्र प्राशूर्भवा शचा॥** आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न मंत्र का उच्चारण करें—**ॐ यथे मां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यार्ठ० शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च॥ प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु॥**

आचार्य और ब्राह्मण 'स्वस्तिवाचन' का उच्चारण करते हुए गीत, वाद्य से युक्त होकर सुवासिनियों को आगे करके मण्डप की ओर प्रस्थान करें। आधे मार्ग में आने पर आचार्य वहाँ थोड़ी भूमि का लेपनकर क्षेत्रपाल की पूजा यजमान से करवाके पुनः बलि की पूजा यजमान से करवाके निम्न क्रम से बलि प्रदान करावें— **ॐ नमो भगवते क्षेत्रपालाय भासुराय त्रिनेत्रज्वालामुख अवतर अवतर कपिल पिङ्गल ऊर्ध्व केश-जिह्वा लालन छिन्दि-छिन्दि, भिन्धि-भिन्धि, कुरु-कुरु, चल-चल, ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं बलिं गृहाण स्वाहा।** तत्पश्चात् सपत्नीक यजमान, बन्धु, ज्ञाति से समन्वित होकर मण्डप की ओर प्रस्थान करें। मण्डप के पश्चिमद्वार के समीप में जाकर पूर्ववत् सभी दोष के शमन के लिए क्षेत्रपाल को बलि देनी चाहिए। उसके बाद मण्डप के पश्चिमद्वार पर आकर स्थित हुए यजमान की सुवासिनियाँ आरती करके पश्चिमद्वार से ही मण्डप के मध्य में ले जावें।

[१]शनिशान्त्यनुष्ठानप्रारम्भः

आचार्य भूमिपूजन, शनिपीठ व शनिकुण्ड का निर्माण करके प्रायश्चित्त इत्यादि कर्मों के उपरान्त यजमान को उसकी धर्मपत्नी के साथ कुशा या कम्बल के आसन पर बैठावे। पुनः आचार्य निम्न तीन नामों का उच्चारण करते हुए यजमान से तीन बार आचमन करावें—

ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः।

निम्न मंत्र का उच्चारण करके यजमान को कुशा की पवित्री धारण करवाके आचार्य प्राणायाम करावें—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

निम्न श्लोक का उच्चारण कर यजमान के ऊपर और अनुष्ठान सामग्री की पवित्रता हेतु कुशा से आचार्य जल छिड़कें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

निम्न विनियोग व निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से आसन शुद्धि कर्म आचार्य करावें—**ॐ पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता आसनपवित्र करणे विनियोगः।**

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान की शिखा का बन्धन करावें—

ब्रह्मभावसहस्रस्य रुद्रभावशतस्य च।
विष्णोः संस्मरणार्थं हि शिखाबन्धं करोम्यहम्॥

---

[१] शनि देवता का यह अनुष्ठान शुक्लपक्ष के किसी भी शनिवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। विशेष कष्ट आने पर कृष्णपक्ष में भी किया जा सकता है। यह अनुष्ठान ८ दिन का होता है। अर्थात् शनिवार से प्रारम्भ होकर और अगले शनिवार को इस अनुष्ठान की पूर्णाहुति होती है। जिन लोगों पर शनिदेव की अकृपा है, उन्हें इस अनुष्ठान को अवश्य ही करना चाहिए।

यजमान घृतपूरित दीप को भूमि पर अक्षत छोड़कर स्थापित कर प्रज्वलित करे और आचार्य निम्न श्लोक द्वारा उससे प्रार्थना करावें—

भो दीप! देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

स्वस्तिवाचनम्

हरिः ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे॥ १ ॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳ रातिरभि नो निवर्तताम्। देवानाꣳ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ २ ॥ तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भग मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुणꣳ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ ३ ॥ तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणु तन्धिष्ण्या युवम्॥ ४॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ५ ॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ६ ॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह॥ ७॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ८ ॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ ९ ॥ अदिति-

द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ १०॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ११॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ ॐ शान्तिः सुशान्तिः सर्वारिष्ट-शान्तिर्भवतु॥ १२॥

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातापितृचरण कमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ कुल देवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः। ॐ गुरुचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय ॐ महागणाधिपतये नमः।

पौराणिकश्लोकाः

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥ १ ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥ २ ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥ ३ ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥ ४ ॥

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥ ५ ॥
वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्य समप्रभ!।
अविघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥ ६ ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते॥ ७ ॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥ ८ ॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥ ९ ॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥ १० ॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ ११ ॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥ १२ ॥
स्मृते सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥ १३ ॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनः॥ १४ ॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥ १५ ॥
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्मार्थसिद्धये॥ १६ ॥

[१]संकल्पः

यजमानः जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्याः अमुकतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे[२] अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) मम जन्मकुण्डल्याम् अरिष्टस्थानस्थितशनिग्रहस्य शनिमहादशायाः शनिग्रहस्यतृतीयदृष्टिजन्यमारकभावावलोकितमारकत्वजन्यपीडानिवारणार्थं सूर्यपुत्रशनिग्रहप्रसन्नार्थं च शनिशान्त्यनुष्ठानं करिष्ये।

तदङ्गविहितं गणपतिपूजनपूर्वकं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनम् आयुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणानि च करिष्ये।

---

१. अ-सङ्कल्पेन विना कर्म यत्किञ्चित्कुरुते नरः। फलं चाप्यल्पकं तस्य धर्मस्यार्द्धक्षयो भवेत्॥
(भविष्यपुराण)

ब-सङ्कल्पमूलः कामो वै यज्ञाः सङ्कल्पसम्भवाः। व्रतानि यमधर्माश्च सर्वे सङ्कल्पजाः स्मृताः॥
(मनु० २।३)

२. मास-पक्ष-तिथीनाञ्च निमित्तानां च सर्वशः। उल्लेखनमकुर्वाणो न तस्य फलभाग्भवेत्॥
(देवलः)

गणपतिपूजनम्

आवाहनम्

आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा का आवाहन यजमान से करावें—

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वां निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भ धमा त्वमजासि गर्भ धम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कां पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्ये नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठापनम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा का प्रतिष्ठापन यजमान से करावें—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ठ० समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

आसनम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से आसन प्रदान करावें—

ॐ पुरुष एवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥

अलङ्कार समायुक्तं मुक्तामणि विभूषितम्।
दिव्य सिंहासनं चारू प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से पाद्य अर्पित करावें—

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

गौरी सुत! नमस्तेऽस्तु शङ्कर प्रियकारक!।
भक्त्या पाद्यं मया दत्तं गृहाण प्रणतप्रिय!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा के ऊपर यजमान से अर्घ्य चढ़वायें—

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥

व्रतं उद्दिश्य विघ्नेशं गन्ध-पुष्पादि संयुतम्।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं सर्वसिद्धि प्रदायकम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से आचमनीय जल प्रदान करवायें—

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥

सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण विघ्नेश्वर!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नानम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान द्वारा स्नान करावे—

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रेवायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान द्वारा पञ्चामृत से स्नान करावें—

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि। पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान द्वारा शुद्ध जल से स्नान करावे—

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः ॥

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक-स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से वस्त्र प्रदान करवायें—

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः। तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाद्ध्यो मनसा देवयन्तः ॥

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जा निवारिणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से उपवस्त्र प्रदान करवायें—

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपठं० संव्ययस्व विभावसो॥

शीतवातोष्ण-संत्राणं लज्जायाः रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। अथवा ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रोपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि। अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से गणेश व अम्बा के ऊपर यज्ञोपवीत चढ़वायें—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

गन्धम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से गन्ध प्रदान करवायें—

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥

गन्ध कर्पूर-संयुक्तं कुङ्कुमेन सुवासितम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्॥

कनिष्ठामूलगताङ्गुष्ठयोगेन गन्धमुद्रां प्रदर्श्य अनामिकया ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

रक्तचन्दनम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से रक्तचन्दन प्रदान करवायें—

ॐ अꣳ शुनाते अꣳ शुः पृच्यतां परुषापरुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥

रक्तचन्दन संमिश्रं पारिजात समुद्भवम्।
मयादत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्ध-संयुतम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, रक्तचन्दनं समर्पयामि।

अक्षतान्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से अक्षत प्रदान करवायें—

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालाम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से पुष्पमाला प्रदान करवायें—

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा ऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि गृहाण विघ्नेश्वर!॥

तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

दूर्वाम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से दूर्वा चढ़वायें—

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्त्व पूजार्थं गृहाण गणनायक॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से नानापरिमलद्रव्य चढ़वायें—

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमार्ठ०सं परि पातु विश्वतः॥

नानापरिमलैर्द्रव्यैनिर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अवीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से सिन्दूर चढ़वायें—

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वा। घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

धूपम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से धूप दिखवायें—

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितमर्ठ० सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

तर्जनीमूलयोरङ्गुष्ठयोगेन धूपमुद्रां प्रदर्श्य ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं समर्पयामि।

दीपम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से दीप दिखवायें—

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्तया दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते॥

मध्यमाङ्गुष्ठयोगेन दीपमुद्रां प्रदर्श्य ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (दोनों हाथों को धोवे)

नैवेद्यम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से नैवेद्य प्रदान करवायें--

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः सम-वर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२ अकल्पयन्॥

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥ १॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥ २॥

अनामामूलयोरङ्गुष्ठयोगेन नैवेद्यमुद्रां प्रदर्श्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत् तद्यथा—अङ्गुष्ठप्रदेशिनी मध्यमाभिः—ॐ प्राणाय स्वाहा॥ १॥ अङ्गुष्ठ-मध्यमानामिकाभिः ॐ अपानाय स्वाहा॥ २॥ अङ्गुष्ठानामिका-कनिष्ठिकाभिः ॐ व्यानाय स्वाहा॥ ३॥ कनिष्ठिका तर्जन्यङ्गुष्ठैः ॐ समानाय स्वाहा॥ ४॥ साङ्गुष्ठाभिः सवाङ्गुलिभिः ॐ उदानाय स्वाहा॥ ५॥ इति प्रदर्श्य ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं समर्पयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि।

आचमनीयजलम्

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से आचमनीयजल प्रदान करवायें—

गणाधिप! नमस्तुभ्यं गौरीसुत गजानन!।
गृहाण आचमनीयं त्वं सार्वसिद्धि प्रदायकम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

ताम्बूलम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से ताम्बूल प्रदान करवायें—

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वठ० हसः॥

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखशुद्ध्यर्थं ताम्बूलपत्रं पूगीफलं च समर्पयामि।

ऋतुफलानि

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से ऋतुफल प्रदान करवायें—

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धवि॥

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

दक्षिणाम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से दक्षिणा चढ़वायें—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थेद्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनम्

आचार्य निम्न मन्त्रों व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा की यजमान से आरती करवायें—

ॐ आ रात्रि पार्थिवर्ठ० रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदार्ठ०सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वे षं वर्तते तमः॥ १॥

ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरर्ठ० सर्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसनयभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वनं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥ २॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कर्पूरनीरजनं समर्पयामि।

पुष्पांजलिम्

आचार्य निम्न मन्त्रों व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से पुष्पांजलि अर्पित करवायें—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥ ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिती॥ तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मयादत्तो गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा क
यजमान से प्रदक्षिणा करवायें—

ॐ ये तीर्त्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषाठं० सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणापदे पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घ्यम्—आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा को यजमान से विशेष अर्घ्य प्रदान करवायें—

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्य रक्षक।
भक्तानां भयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥ १॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।
अनेन सफलार्घेण फलदोऽस्तु सदा मम॥ २॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना

आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा की यजमान से प्रार्थना करवायें—

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय।
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय।
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥ १॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय।
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय।
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते॥ २॥

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः॥ ३॥
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक!॥ ४॥
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ ५॥
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेव॥ ६॥

इति गणेशाम्बिकयोः पूजनं कृत्वा पूर्व वदर्घपात्रे गन्धादि कृत्वा—

ॐ रूपं देहि जयं देहि सौभाग्यं देहि देवि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे॥

'ॐ अम्बिकायै नमः' इति विशेषार्घं समर्पयामि। 'अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम' इति जलं प्रक्षिपेत्। 'आचरितगणेशाम्बिकापूजनविधौ यन्न्यूनातिरिक्तं तत्परिपूर्णमस्तु।'

कलशपूजनम्

आचार्य **ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥** इस वैदिक मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से जिस स्थान पर कलश स्थापित करवाना हो, वहाँ की भूमि का स्पर्श करवा के वहाँ कुंकुमादि से पवित्र भूमि पर अष्टदलपद्म का निर्माण करावें।

यजमान ने भूमि का जहाँ स्पर्श किया हो वहाँ आचार्य एक किलो सप्तधान्य निम्न मंत्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए छोड़वायें—

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि॥

यवोऽसि धान्यराजस्त्वं सर्वोत्पत्तिकरः शुभः।
प्राणिनां जीवनोवायः कलशाधः क्षिपाम्यहम्॥

आचार्य धान्य पुञ्ज पर निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से कलश स्थापित करवायें—

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा-विशताद्रयिः॥

कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकला।
सङ्गृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन उच्यते!॥

कलश में शुद्ध जल को यजमान से आचार्य निम्न मन्त्र और श्लोक का उच्चारण करते हुए भरवायें—

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदनयसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद॥

आपस्त्व मसि देवेश! ज्योतिषांपतिख्यय!।
भूतानां जीवनोपायः कलशे पूरयाम्यहम्॥

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से कलश में गन्ध छोड़वायें—

ॐ त्वां गन्धर्वाअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥

श्री खण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुगन्धाय कलशे संक्षिपाम्यहम्॥

आचार्य कलश में सर्वौषधि निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से छोड़वायें—

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रूणामहर्ठ० शतं धामानि सप्त च॥

सर्वौषधयः सुगन्धाढ्या दिव्यवृष्टि समुद्भवा।
कलशाप्यायन मङ्गलाय क्षिपाम्यहम्॥

आचार्य कलश में दूर्वा निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से छोड़वायें—

ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती पुरुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥

दूर्वे! ह्यमृत सम्पन्ने शतमूले शताङ्कुरे।
शतं मे हर पापानि शतमायुः विवर्धिनी॥

आचार्य कलश में पञ्चपल्लव निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से छोड़वायें—

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्॥

यज्ञीयवृक्ष सम्भूतान् पल्लवान् सरसाञ्छुमान्।
अलङ्काराय पञ्चैतान् कलशे संक्षिपाम्यहम्॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए कलश में सप्तमृत्तिका यजमान से छोड़वायें—

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म स प्रथाः॥

आचार्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए कलश में पूगीफल यजमान से छोड़वायें—

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः॥

इदं फलं मया सम्यक् प्रक्षिपेत् कलशे यतः।
तेनायं कलशः सम्यक् फलवानस्तु सर्वदा॥

आचार्य कलश में पञ्चरत्न निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से छोड़वायें—

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे॥

रत्नगर्भामवादूर्मी रत्नगर्भाढ्य भूधरा।
कलशोरत्नगर्भः स्यात् तस्माद्रत्नापहंक्षिपेत्॥

आचार्य कलश में हिरण्य निम्न मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से छोड़वायें—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदं कलशे संक्षिपाम्यहम्॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से दो वस्त्रों के द्वारा कलश को चारों ओर से वेष्टित करावे—

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपꣳ संव्ययस्व विभावसो॥

आचार्य आगे दिए हुए मन्त्र व श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से ताम्र के पात्र में अक्षत भरवाकर कलश के ऊपर स्थापित करवायें—

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जꣳ शतक्रतो॥

धानपूर्णं इदं पात्रं स्थपितं कलशे यतः।
तेनायं कलशः पूर्णः पूर्णाः सन्तु मनोरथाः!॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए कलश के ऊपर अपने अभिमुख लालवस्त्र आदि से वेष्टित नारिकेल फल का स्थापन यजमान से करावे—

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए स्थापित कलश में अंग के सहित सपरिवार सायुध-सशक्तिक वरुण का आवाहन व स्थापन यजमान से करावें—

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मा न आयुः प्रमोषीः॥

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि भो वरुण! इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो भव।

यजमान '**ॐ अप्पतये वरुणाय नमः**' इस नाममन्त्र से आवाहन कर उस कलश पर ही देवताओं का निम्न श्लोकों से आवाहन करें।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ १॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥ २॥
कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥ ३॥
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥ ४॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥ ५ ॥
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ॥ ६ ॥
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥ ७ ॥
कलशाधिष्ठात्र्यो विष्ण्वादिदेवताः सुप्रतिष्ठिताः भवन्तु ।

ॐ मनो जूति० इस मन्त्र का उच्चारण करके प्राणप्रतिष्ठा करावें, तदुपरान्त निम्न क्रम से वरुणदेवता की षोडशोपचार पूजा यजमान से करावें ।

वरुणपूजनम्

ध्यानम्

आश्रित्य यं भवति धन्यतरा प्रतीची रत्नाकरत्वमुपयाति पयःसमूहः ।
पाशश्च यस्य भवपाशविनाशकारी तं पाशधारिणमहं हृदि चिन्तयामि ॥
ॐ वरुणाय नमः, ध्यानं समर्पयामि ।

आवाहनम्

यद् दृष्टिकोणरहिता वसुधा सदैव वन्ध्येव भाति विफलोकृतबीजशक्तिः ।
तं वारिवारिणमहं वरुणं सदैव धाराधरं सुखकरं प्रियमाह्वयामि ॥
ॐ वरुणाय नमः, आवाहनं समर्पयामि ।

आसनम्

अयि विभो शरणागतवत्सल यदपि हीनमिदं भवतां कृते ।
तदपि भक्तजनं खलु वीक्ष्य मां समुचितं प्रियमासनमास्यताम् ॥
ॐ वरुणाय नमः, आसनं समर्पयामि ।

पाद्यम्

अहो मदीय खलु पुण्यसञ्चितं श्रीमद्भिरद्यावधि रक्षतोऽस्मि यत् ।
अकिञ्चनोऽहं भवतां कृते यदि तथापि पाद्यार्घ्यमिदं प्रगृह्यताम् ॥
ॐ वरुणाय नमः, पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यम्

विमलचम्पकपुष्पसमन्वितं त्रिविधतापविनाशननायकम्।
प्रियकर प्रियमर्घ्यमिदं विभो परिगृहाण जलाधिप पाशभृत्॥
ॐ वरुणाय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

कस्तूरिकासुरभिचन्दनवासवासि स्वेलालवङ्गलवलीपरिपूरितं च।
मध्याह्नसूर्यप्रतिविम्बमिवप्रकामं दत्तं गृहाण वरमाचमनं मयेदम्॥
ॐ वरुणाय नमः, आचमनीजलं समर्पयामि।

पञ्चामृतम्

सौवर्णपात्रधृतप्रीतिविवर्धकेन पञ्चामृतेन मधुना पयसा घृतेन।
मिश्रीकृतेन सितया च शुभया च दध्ना देवो दधातु हृदये करुणामयेऽस्मिन्॥
ॐ वरुणाय नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

कङ्कोलपत्रहरिचन्दनवासितेन काश्मीरजेन घनसारसमन्वितेन।
एलालवङ्गललवलीविमलोदकेन स्नानं कुरुष्व भगवन् सुनिवेदितेन॥
ॐ वरुणाय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम्

ब्रह्माण्डमेतद्द्वययाऽप्यखण्डं संपन्नमेभिवसनैस्तनोषि।
तस्मै प्रदेयः विमु वस्त्रखण्डस्तथापि भावो मम रक्षणीयः॥
ॐ वरुणाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

आलिङ्ग्यते यस्य शताग्रभागं पूता विमुक्ता वपुषोऽधमास्ते।
यज्ञोपवीतं किमु तस्य पूर्त्यै दीयेत भक्तेषु समर्थनाय॥
ॐ वरुणाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उत्तरीयम्

श्रद्धातुरो यत्र मनस्तु सूत्रं भक्तिं च वेमानमवातताम।
हृत्कौलिकः सुविमलोत्तरीयं तनोमि तत्ते तनुकल्पवल्याम्॥
ॐ वरुणाय नमः, उत्तरीयं समर्पयामि।

गन्धम्

अमन्दगन्धं विकिरन्ति यत्र वृन्दारकाः पृच्छति तत्र को माम्।
मयाऽपि हे नाथ हृदोपनीतं द्रव्यं सुगन्धं विमलं गृहाण॥
ॐ वरुणाय नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतम्

पुष्पाक्षतानक्षतपुष्पराशिरादाय तुभ्यं समुपस्थितोऽस्मि।
एतर्हिं लज्जानतमस्तकोऽस्मि द्रुतं गृहीत्वा कुरु मां कृतार्थम्॥
ॐ वरुणाय नमः, अक्षतं समर्पयामि।

पुष्पम्

आसेचनं पेलवपादयुग्मं कृते कठोरः कुसुमोपहारः।
धाष्ट्र्योद्भवं मे पराधमेनं क्षमस्व दीनस्य हि त्यदीमबन्धो॥
ॐ वरुणाय नमः, पुष्पं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यम्

निखिलभुवनमध्ये विस्तृता यस्य कीर्तिः सुरनरमुनिवन्द्यो वन्दनीयप्रभावः।
स खलु वरुणदेवो भक्तिपूर्वं प्रदत्तं भुविभयहारी अङ्गरागं दधातु॥
ॐ वरुणाय नमः, नानापरिमलद्रव्यं समर्पयामि।

धूपम्

कर्पूरकुङ्कुमसुगन्धि-सुगन्धितं हि कस्तूरिचन्दनरसैः परिवर्धितं तम्।
विज्ञैर्बुधैश्च विबुधैः समुपासितं त्वं धूपं गृहाण सुरभिं परिपावनं च॥
ॐ वरुणाय नमः, धूपं समर्पयामि।

दीपम्

तमोनाशकं दीप्तिदीप्तं प्रदीपं प्रभाभासुरं भासयन्तं गृहान्तः।
स्फुरज्ज्योतिषं वर्तियुक्तं सुदीपं जगद्देवदेवत्वमङ्गीकुरुष्व॥
ॐ वरुणाय नमः, दीपं समर्पयामि। (हस्तौ प्रक्षाल्य)

नैवेद्यम्

सौवर्णपात्रे समलङ्कृतेऽस्मिन् यथायथं तद्विनिवेशितं च।
सुस्वादुशीतं मधुरं नवं च नैवेद्यमङ्गीकुरु देव-देव॥
ॐ वरुणाय नमः, नैवेद्यं समर्पयामि।

ताम्बूलम्

**एलालवङ्गलवलीक्रमुकादियुक्तं सुस्वादुगन्धिसुरभिं सुमनोहरं च।
भूपः प्रयाणसमये प्रियमादृत ताम्बूलरागमुररी कुरु देव-देव॥
ॐ वरुणाय नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।**

दक्षिणाम्

**भूसुरैः सुरसमैरखिलैर्या वन्दितामृतभुजैः समुपास्या।
तां गृहाण निजभक्तनिवेद्यां दक्षिणां सुमनसापि च मुद्राम्॥
ॐ वरुणाय नमः, द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।**

नीराजनम्

**कस्तूरिकुङ्कुमसुगन्धिसुगन्धितेन एलालवङ्गघनसारसमन्वितेन।
सौवर्णपात्रघृतगोमयवर्धकेन नीराजनामपि करोमि तवात्तिथेयीम्॥
ॐ वरुणाय नमः, कर्परनीराजनं समर्पयामि।**

प्रदक्षिणाम्

**समागतानां भवपाशनाशिनां भवादृशानां त्रयतापहारिणाम्।
विधीयते या विदुषां गृहे सदा प्रदक्षिणां दक्षिण ते करोमिनु॥
ॐ वरुणाय नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।**

पुष्पाञ्जलिम्

**ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥
हे पाश! भृद्वरुण नाथजलेश देव दीने दयां मयि विधेहि सदा सुदेव।
नातः परं किमषि याचयितव्यमस्ति पुष्पाञ्जलिं ननु गृहाण सदा मदीयम्॥
ॐ वरुणाय नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
''अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम''**

कलशप्रार्थना

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ! विधृतो विष्णुना स्वयम्॥ १॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥ २॥

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्राविश्वेदेवाः सपैतृकाः॥ ३॥

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत् प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!।
सान्निध्यं कुरु देवेश! प्रसन्नो भव सर्वदा॥ ४॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥ ५॥

पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
पुण्याहवाचनं यावत् तावत्त्वं सन्निधो भव॥ ६॥

स्वस्तिपुण्याहवाचनम्

दोनों घुटनों को पृथ्वी पर मोड़ कर कमल के तुल्य अपनी अञ्जली को सिर पर रखकर यजमान अपने दायें हाथ में स्वर्णादि के जल से पूर्ण कलश को अपने मस्तक से स्पर्श कर आचार्य सहित ब्राह्मणों से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।
तेनाऽऽयु:प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु॥

ब्राह्मण कहें-**अस्तु दीर्घमायुः**। उसके पश्चात् निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए कहें—

ॐ त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्॥

तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।

पुनः ब्राह्मण कहें-**पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।**

यजमान ब्राह्मणों के हाथ में जल देते हुए कहें—**शिवा आपः सन्तु।**

ब्राह्मण प्रत्युत्तर में कहें—**सन्तु शिवा आपः।** यजमान कहें—**सौमनस्य-मस्तु।** ब्राह्मण कहें—**अस्तु सौमनस्यम्।** यजमान कहें—**अक्षताः पान्तु, गन्धाः पान्तु।** ब्राह्मण कहें—**आयुष्यमस्तु।** यजमान कहें—**पुष्पाणि पान्तु।** ब्राह्मण कहें—**श्रीरस्तु।** यजमान कहें—**ताम्बूलानि पान्तु।** ब्राह्मण कहें—**ऐश्वर्यमस्तु।** यजमान कहें—**दक्षिणाः पान्तु।** ब्राह्मण कहें—**आरोग्यमस्तु।**

यजमान आचार्य व ब्राह्मणों से निम्न वाक्य कहे—**दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चाऽऽयुष्यं चाऽस्तु।**

ब्राह्मण कहें—**तथाऽस्तु।**

यजमान यज्ञस्थल पर उपस्थित सभी ब्राह्मणों से कहें—**यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कार-मादिं कृत्वा, ऋग्यजुः सामाऽथर्वाऽऽशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।**

ब्राह्मण कहें—**वाच्यताम्।** यजमान पुनः कहे—**व्रतजपनियम-तपः-स्वाध्याय क्रतुशमदयादानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।** ब्राह्मण कहें—**समाहितमनसः स्मः।** यजमान कहे—**प्रसीदन्तु भवन्तः।** ब्राह्मण कहें—**प्रसन्नाः स्मः।**

तदुपरान्त यजमान को आचार्य घुटने मुड़वाकर भूमि पर बैठाये और कमल के समान हस्ताञ्जलि करवाकर जल से पूर्ण कलश को धारण करवाये तथा उसके सामने दो मृत्तिकापात्र भूमि पर स्थापित करवाये (दाहिने और बायें) प्रथम दाहिने पात्र में जरा-जरा सा जल गिरवाते हुए निम्न वाक्यों का उच्चारण करें—

ॐ शान्तिरस्तु, ॐ पुष्टिरस्तु, ॐ वृद्धिरस्तु, ॐ ऋद्धिरस्तु, ॐ अविघ्नमस्तु, ॐ आयुष्यमस्तु, ॐ आरोग्यमस्तु, ॐ शिवमस्तु, ॐ शिवं कर्माऽस्तु, ॐ कर्म समृद्धिरस्तु, ॐ धर्म समृद्धिरस्तु, ॐ वेद समृद्धिरस्तु, ॐ शास्त्र समृद्धिरस्तु, ॐ धनधान्य समृद्धिरस्तु, ॐ इष्ट सम्पदस्तु, ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु, ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु।

आचार्य द्वितीय बायें पात्र में यजमान से निम्न वाक्योच्चारण द्वारा जल गिरवायें—**यत्पापं रोगोऽशुभमकल्याणं तत् दूरे प्रतिहतमस्तु। अन्तः यच्छ्रेयस्तदस्तु। उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु।** आचार्य प्रथम दाहिने पात्र में यजमान से इन वाक्योच्चारण द्वारा जल गिरवायें-**उत्तरोत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु। उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। तिथिकरण - मुहूर्त - नक्षत्र - ग्रह - लग्नाधि - देवताः प्रीयन्ताम्। तिथिकरणे-समुहूर्ते-सनक्षत्रे सग्रहे-सलग्ने-साधिदैवते प्रीयेताम्। दुर्गा पाञ्चाल्यौ प्रीयताम्। अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। वशिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। माहेश्वरीपुरोगा मातरः प्रीधन्ताम्। अरुन्धती पुरोगाः एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्। श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। माहेश्वरी प्रीयताम्। भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। भगवन्तौ विघ्न-**

विनायकौ प्रीयेताम्। सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। सर्वाः इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्।

आचार्य बायें पात्र में यजमान से निम्न वाक्योच्चारण द्वारा जल गिरवायें—

हताश्च ब्रह्मद्विषः। हताश्च परिपन्थिनः। हताश्च विघ्नकर्तारः। शत्रवः पराभवं यान्तु। शाम्यन्तु घोराणि। शाम्यन्तु पापानि। शाम्यन्त्वीतयः।

आचार्य दाहिने पात्र में यजमान से निम्न वाक्योच्चारण द्वारा जल गिरवायें—

शुभानि वर्द्धन्ताम्। शिवा आपः सन्तु। शिवा ऋतवः सन्तु। शिवा अग्नयः सन्तु। शिवा आहुतयः सन्तु। शिवा वनस्पतयः सन्तु। शिवा अतिथयः सन्तु। अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां। योगक्षेमो नः कल्पताम्।

शुक्राङ्गावारक बुध - बृहस्पति - शनैश्चर - राहु - केतु सोमादित्यरूपाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्।

भगवान् नारायणः प्रीयन्ताम्। भगवान् पर्जन्यः प्रीयन्ताम्। भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयन्ताम्।

पुरोनुवाक्या यत्पुण्यं तदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट् कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

तदुपरान्त आचार्य जलपूर्ण कलश को यजमान से भूमि पर रखवा दें और प्रथम दाहिने पात्र के जल से यजमान और उसके परिवार के लोगों का अभिषेचन करें तथा द्वितीय बायें पात्र के जल को वहाँ से कहीं अन्यत्र ले जाकर गिरवा दें या कहीं रखवा दें।

यजमान निम्न श्लोक व वाक्यों को ब्राह्मणों से कहे—

ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्यसपरिवारस्य शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण तीन बार निम्न वाक्य व श्लोक यजमान से कहें—

ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः।
पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥

यजमान निम्न श्लोक व वाक्य ब्राह्मणों से कहें—

पृथिव्यमुद्धृतायांयान्तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुम्बस्यसपरिवारस्य शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण तीन बार निम्न वाक्य व मन्त्र यजमान से कहें—

ॐ कल्याणम्, ॐ कल्याणम्, ॐ कल्याणम्।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यार्ठ० शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्धयतामुप मादो नमतु॥

यजमान निम्न श्लोक व वाक्य ब्राह्मणों से कहें—

सागरस्य च या लक्ष्मीर्महाक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्यसपरिवारस्य शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण प्रत्युत्तर में तीन बार निम्न वाक्य व मन्त्र कहें—

ॐ कर्म ऋध्यताम्, ॐ कर्म ऋध्यताम्, ॐ कर्म ऋध्यताम्।

ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्या अध्यारुहामाविदाम देवान्स्वर्ज्योतिः॥

यजमान निम्न श्लोक व वाक्य ब्राह्मणों से कहें—

स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या पुण्य-कल्याण-वृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्यसपरिवारस्य शनिशान्त्यनुष्ठानाख्यकर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण प्रत्युत्तर में तीन बार निम्न वाक्य व मन्त्र कहें—

ॐ आयुष्मते स्वस्ति, ॐ आयुष्मते स्वस्ति, ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

यजमान निम्न श्लोक व वाक्य ब्राह्मणों से कहें—

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्यसपरिवारस्य शनिशान्त्यनुष्ठानाख्यकर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण प्रत्युत्तर में तीन बार निम्न वाक्य व मन्त्र कहें—

ॐ अस्तु श्रीः, ॐ अस्तु श्रीः, ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥

यजमान पुनः निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

मृकण्डसूनोरायुर्यद्ध्रुव - लोमशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्॥

ब्राह्मण कहें-**शतं जीवन्तु भवन्तः।**

ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥

यजमान निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

शिव-गौरी-विवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि॥

ब्राह्मण कहें–**ॐ अस्तु श्रीः।**

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय। पशूनाꣳ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा॥

यजमान निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः॥

ब्राह्मण कहें–**ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।**

ब्राह्मण निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम्॥

यजमान निम्न श्लोक का उच्चारण करें–

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः॥

ब्राह्मण कहें–**आयुष्मते स्वस्ति।**

ॐ प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम्। येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु॥

पुनः ब्राह्मण कहें–**स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु।** यजमान कहे–**अस्मिन्-पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिरुपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।** ब्राह्मण कहें–**अस्तु परिपूर्णः।** पुनः यजमान कहें–**स्वस्तिवाचनकर्मणः समृद्धिरस्तु।** ब्राह्मण निम्न वाक्य का उच्चारण करें—**अस्तु।**

निम्न संकल्प करके यजमान ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करें—

स्वस्तिवाचनकर्मणः समृध्यर्थं दक्षिणां स्वस्तिवाचकेभ्यो विप्रेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।

अभिषेकः

आचार्य और ब्राह्मण हाथ में कुशादि लेकर प्रधानकलश के जल को किसी चौड़े मुख के पात्र में लेकर दूर्वा और पञ्चपल्लव द्वारा उसी जल से उत्तराभिमुख कम्बलासन पर बैठे हुए यजमान व उसके वाम भाग में बैठी हुई उसकी पत्नी का निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अभिषेक करें—

ॐ शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्चश्मश्रूणि। राजा मे प्राणो अमृतर्ठ० सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्॥ १ ॥ जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड् भामः। मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः ॥ २ ॥ बाहू मे बलमिन्द्रियर्ठ० हस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम॥ ३ ॥ पृष्ठीर्मे राष्ट्रमुदरमर्ठ०सौ ग्रीवाश्चश्रोणी। ऊरू अरत्नी जानुनी विशो मेऽङ्गानि सर्वतः ॥ ४ ॥ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्घाभ्यां पद्भ्यां घर्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः ॥ ५ ॥ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ ६ ॥ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित्॥७॥ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ ८ ॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ॥ ९ ॥ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ॥ १० ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ११ ॥ संकल्पः— कृतस्याभिषेककर्मणः समृद्ध्यर्थं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।

यजमान अभिषेक की दक्षिणा प्रदान करके दो बार आचमन करें, और उसकी धर्मपत्नी दायीं ओर बैठ जावे।

षोडशमातृकापूजनम्

आचार्य षोडशमातृका का पूजन करवाने के लिए यजमान से निम्न संकल्प करवावें—

संकल्प—देशकालौ सङ्कीर्त्य, करिष्यमाण शनिशान्त्यनुष्ठानकर्माङ्गत्वेन षोडशमातृकापूजनं करिष्ये।

आचार्य प्रारम्भ में चौबीस अङ्गुल विस्तार में तथा अट्ठाईस अङ्गुल लम्बाई में छः अङ्गुल ऊँचे लाल वस्त्र बिछे काष्ठ के पीठ पर उत्तर से दक्षिण फिर पूर्व से पश्चिम की ओर पाँच-पाँच रेखा करने से सोलह कोष्ठ निर्मित कर उसमें प्रथम कोष्ठ का दो भाग करे इस प्रकार सत्रह कोष्ठ में सोने-चाँदी आदि प्रतिमाओं में अथवा पट्टादि लिखित मूर्तियों में पूगीफलों में या अक्षतपूंजों में गणेश सहित सोलह माताओं का निम्न क्रम से पूजन करे—

'ॐ गणानां त्वा॰ से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर प्रथम अक्षतपुंज पर गणेशजी के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ॰ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ॰ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ॰ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ ॐ गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

द्वितीयकोष्ठादौ क्रमेण—

'ॐ आयं गौ॰ से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर द्वितीय अक्षतपुंज पर गौरी के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ ॐ गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

'ॐ हिरण्यरूपा॰ से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर तृतीय अक्षतपुंज पर पद्मा के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ हिरण्यरूपा उषसो विरोक उभाविन्द्रा उदिथः सूर्यश्च। आरोहतं वरुण मित्र गर्तं ततश्चक्षाथामदितिं दितिं च मित्रोऽसि वरुणोऽसि॥ ॐ पद्मायै नमः। पद्मामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

'ॐ निवेशनः० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर चतुर्थ अक्षतपुंज पर शची के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ निवेशनः सङ्गमनो वसूनां विश्वा रूपाभिचष्टे शचीभिः। देव इव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम्॥ ॐ शच्यै नमः शचीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

'ॐ मेधां मे० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर पंचम् अक्षतपुंज पर मेधा के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥ ॐ मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

'ॐ सविता त्वा० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर षष्ठम् अक्षतपुंज पर सावित्री के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ सविता त्वा सवानाठं० सुवतामग्निगृंहपतीनाठं० सोमा वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाच इन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम्॥ ॐ सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

'ॐ विज्यं धनुः० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर सप्तम अक्षतपुंज पर विजया के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२॥ उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥ ॐ विजयायै नमः विजयामावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

'ॐ बह्वीना पिता० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर अष्टम अक्षतपुंज पर जया के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य। इषुधिः संकाः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः॥ ॐ जयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

'ॐ इन्द्र आसां० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर नवम् अक्षतपुंज पर देवसेना के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्॥ ॐ देवसेनायै नमः देवसेनामावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

'ॐ पितृभ्यः० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर दसम अक्षतपुंज पर स्वधा के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥ ॐ स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥

'ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर एकादश अक्षतपुंज पर स्वाहा के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा॥ ॐ स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि॥ ११॥

'ॐ आपो अस्मान्मातरः० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर द्वादश अक्षतपुंज पर मातृ के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। विश्वर्ठ०हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि। दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवार्ठ०शग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन्॥ ॐ मातृभ्यो नमः मातृमावाहयामि स्थापयामि॥ १२॥

'ॐ रयिश्च मे० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर त्रयोदश अक्षतपुंज पर लोकमाता के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभु च मे प्रभु च मे पूर्णं च मे पूर्णतरं च मे कुयवं च मेऽक्षितं च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ॐ लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि॥ १३॥

'ॐ यत्प्रज्ञानमुत० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर चतुर्दश अक्षतपुंज पर धृति के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंच न कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥ ॐ धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि॥ १४॥

'ॐ अङ्गान्यात्० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर पञ्चदश अक्षतपुंज पर पुष्टि के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ अङ्गान्यात्मन्भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात्सरस्वती। इन्द्रस्य रूपꣳ शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः॥ ॐ पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि॥ १५॥

'ॐ जातवेदसे० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर षोडश अक्षतपुंज पर तुष्टि के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदहातिवेदः। सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेवसिन्धुं दुरिताक्यग्निः॥ ॐ तुष्ट्यै नमः तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि॥ १६॥

'ॐ प्राणाय स्वाहा० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर सप्तदश अक्षतपुंज पर अपनी कुलदेवी के लिये अक्षत छोड़े—

ॐ प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥ ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि॥ १७॥

॥ इति पीठे गणेशपूर्वक संस्थाप्य पूजनं कुर्यात्॥

उपरान्त निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान प्रार्थना करे—

ॐ आयुरारोग्यमैश्वर्य्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥

इति मन्त्रेण नारिकेलादिफलं समर्प्य कृताञ्जलिः गणपतिपूर्वकगौर्यादिषोडशमातृणामर्चनविधौ यन्यूनमतिरिक्तं वा तत् सर्वं मातृणां प्रसादात्परिपूर्णमस्तु।

ततः—अनया पूजया गणपतिपूर्वकगौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम्।

वसोर्धारापूजनम्

आचार्य वसोर्धारा का पूजन करवाने के लिए यजमान से निम्न संकल्प करवावें—

संकल्प—देशकालौ सङ्कीर्त्य, करिष्यमाण शनिशान्त्यनुष्ठान-कर्माङ्गत्वेन वसोर्धारापूजनं करिष्ये।

षोडशमातृका के समीप में सप्तघृतमातृका का निर्माण किया जाता है। आग्नेयकोण में किसी वेदी या लकड़ी के पीढ़े पर प्रादेशमात्र स्थान में सबसे पहले रोली या सिन्दूर से स्वस्तिक का निर्माण करे और उस पर 'श्रीः' लिखे। तदुपरान्त उसके नीचे रोली आदि के द्वारा एक बिन्दु, उसके नीचे दक्षिणोत्तर दो बिन्दु, उसके नीचे दक्षिणोत्तर तीन, उसके नीचे चार, उसके नीचे पाँच, उसके नीचे छः तथा उसके नीचे सात बिन्दुओं का क्रम से निर्माण कर नीचे वाले सात बिन्दुओं में गौ घृत या दुग्धादि से सप्तधारा उदक् संस्थ प्रादेश मात्र निम्न क्रम से करें।

'ॐ वसोः पवित्रमसि० से सुप्वा' पर्यन्त मन्त्र का उच्चारण कर घृतधारा कर 'ॐ कामधुक्षः' इसे पढ़कर गुड़ के चूरे से सातों घृतधाराओं को एक में मिला दे—

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्र-धारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥

'ॐ मनसः काममाकूतिं० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर पहली धारा अक्षत पर छोड़कर श्री का आवाहन व स्थापन करे—

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय। पशूनाꣳ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा॥ ॐ श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि॥ १ ॥

'ॐ श्रीश्च ते० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर लक्ष्मी का आवाहन व स्थापन करे—

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

'ॐ भद्रं कर्णेभिः० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर धृति का आवाहन व स्थापन करे—

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ॐ धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

'ॐ मेधां मे० से स्थापयामि' का उच्चारण कर मेधा का आवाहन व स्थापन करे—

ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥ ॐ मेधायै नमः। मेधामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

'ॐ प्राणाय स्वाहा० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर स्वाहा का आवाहन व स्थापन करे—

ॐ प्राणाय स्वाहा, पानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, चक्षुषे स्वाहा, श्रोत्राय स्वाहा, वाचे स्वाहा, मनसे स्वाहा॥ ॐ स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

'ॐ आयं गौः० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर प्रज्ञा का आवाहन व स्थापन करे—

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ ॐ प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

'ॐ पावका नः० से स्थापयामि' तक का उच्चारण कर सरस्वती का आवाहन व स्थापन करे—

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवति। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ ॐ सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

आवाहन कर, प्राण स्थापन पूर्ण कर, कर्म अर्चन समाप्त कर निम्न प्रार्थना करे—

ॐ श्रीर्लक्ष्मीधृतिमेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः॥

'**ॐ वसोर्धारादेवताभ्यो नमः**' इस नाममन्त्र को पढ़कर आवाहन करे, तदुपरान्त प्राणप्रतिष्ठा के लिए इस मन्त्र का उच्चारण करें—**ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठ० समिमं द धातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३प्रतिष्ठ॥**

निम्न श्लोक का उच्चारण करके प्रार्थना करे—

यदङ्गत्वेन भो देव्यः! पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्॥

अनया पूजया वसोर्धारादेवताः प्रीयन्ताम्।

आयुष्यमन्त्रजपः

यजमान और उसकी पत्नी तथा पुत्र, पौत्रादि के दीर्घायु के लिए आचार्य उससे निम्न संकल्प करावें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, करिष्यमाण शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणोऽमङ्गलनाशार्थमायुष्यमन्त्रजपं करिष्ये।

आचार्य और सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्रों व पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करे—

ॐ आयुष्यं वर्चस्यर्ठ० रायस्पोषमौद्भिदम्। इदर्ठ० हिरण्यं वर्चस्व जैत्रायाविशतदुमाम्॥ १ ॥ ॐ न तद्रक्षार्ठ०सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजर्ठ० ह्येतत्। यो बिभर्त्ति दाक्षायणर्ठ० हिरण्यर्ठ० स देवेषु कृणुते दीर्ग्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्ग्घमायुः॥ २ ॥ ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यर्ठ० शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम्॥ ३ ॥

भावार्थ—आयु, तेज और धन की बढ़ोत्तरी के लिये या सुवर्ण प्रकाश के लिये अन्न से संयुक्त इस सुवर्ण को जीतने के लिये मेरे में रखा॥ १ ॥ उस सुवर्ण को राक्षस और पिशाच (कदापि) नहीं ले सकते, क्योंकि यह देवताओं का प्रथम तेज है। जो इसको अलंकार रूप से धारण करता है, वह देवलोक में दीर्घायु को प्राप्त करता है। अर्थात् देवताओं के साथ बहुत समय तक रहता है। वही मृत्युलोक में अपनी अवस्था को दीर्घकालीन कर मनुष्यों की आयु से अधिक जीवित रहता है॥ २ ॥ दक्ष वंश से उत्पन्न शोभन मन वाले ब्राह्मण जिस सुवर्ण को अनेकानेक सेना युक्त राजा के लिये बाँधते हैं, उसी सुवर्ण को सौ वर्ष की आयु के निमित्त (मैं) अपने देह में धारण करता हूँ, क्योंकि इस सुवर्ण के बन्धन से मैं दीर्घजीवी होते हुए ही वृद्धावस्था को प्राप्त करूँगा, जरावस्थारुपी शरीर प्राप्त होगा॥ ३ ॥

पौराणिक श्लोकों द्वारा आयुष्यमन्त्रपाठ

यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥ १ ॥
दीर्घा नागा तथा नद्यः समुद्रा गिरयो दिशः।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम्॥ २ ॥
सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च।
अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम्॥ ३ ॥

यजमान निम्न संकल्प करके आयुष्यमन्त्रपाठ की दक्षिणा आचार्य सहित ब्राह्मणों को प्रदान करे—

कृतैतत् आयुष्यमन्त्रपाठकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं विप्रेभ्यो दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।

भावार्थ—सात कल्पान्त जीवियों को पूर्व में देवताओं ने जिस आयु को प्रदत्त किया था। उससे युक्त होकर हम भी जीवित रहें॥ १ ॥ दीर्घजीवी नाग, नदियाँ, समुद्र, पर्वत और दिशाएँ, जिस अनन्त आयु से युक्त रहते हैं, उस अनन्त आयु से युक्त होकर हम भी जीवित रहें॥ २॥ सत्य एवं विनाशरहित पञ्च (महा) भूत जैसी अविनाशी आयु से युक्त रहते हैं, उसी प्रकार की आयु से युक्त होकर हम भी जीवित रहें॥ ३॥

नान्दीश्राद्धम्[1]

आचार्य नान्दीश्राद्ध को प्रारम्भ करवाने से पूर्व पूर्वाभिमुख बैठे यजमान से निम्न संकल्प करावें—

देशकालौ संकीर्त्य, करिष्यमाण शनिशान्त्यनुष्ठानकर्माङ्गत्वेन साङ्कल्पिक नान्दीश्राद्धमहं करिष्ये।

आचार्य पूर्व दिशा की ओर विश्वेदेव के आसन स्थान पर कुशा उत्तराग्र रक्खे तथा तीन आसन दक्षिण पूर्वाग्र क्रमानुसार रखें। आसनों की दूरी अधिक न हो, केवल आसन एक दूसरे से आपस में सटे न रहें। पश्चात् यजमान से उन स्थापित आसनों पर आचार्य विश्वेदेव सहित उसके पितरों की पूजा निम्न प्रकार सव्य से ही आरम्भ करवायें, आचार्य यजमान से ही उसके मस्तक तथा श्राद्धसामग्री पर पवित्रीकरण हेतु निम्न श्लोक द्वारा जल छिड़कवायें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आचार्य पादप्रक्षालनार्थ के लिए निम्न क्रमानुसार यजमान से जल प्रदान करवायें—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादवनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः

---

[1] अ–एकविंशत्यहर्यज्ञे विवाहे दश वासराः। त्रिषट् चौलोपनयने नान्दीश्राद्धं विधीयते॥

(निर्णयसिन्धु)

ब–यज्ञोद्वाहप्रतिष्ठासु मेखलाबन्धमोक्षयोः। पुत्रजन्म–वृषोत्सर्गे वृद्धिश्राद्धं समाचरेत्॥

(विष्णुपुराण)

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। इत्युक्त्वा सर्वत्र पात्रे सकुशयवाक्षतजलं प्रक्षिपेत्।

तदुपरान्त यजमान के पितरों के निमित्त आसन आचार्य निम्न क्रम से प्रदान करवायें—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः। मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः।

यजमान से पितरों के निमित्त जल, वस्त्र, यज्ञोपवीत, रोली, अक्षत, पुष्प, धूप, नैवेद्य, ऋतुफल, ताम्बूल, लवङ्ग, इलायची, सुपारी तथा सुगन्धित इत्र आदि निम्न क्रमानुसार आचार्य प्रदान करवायें—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

यजमान से विश्वेदेव सहित पितरों के निमित्त भोजन निष्क्रय की दक्षिणा निम्न क्रमानुसार आचार्य प्रदान करवायें—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्त आमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्त आमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्त आमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमृतरूपेण सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातामह-प्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तम् आमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

यजमान से निम्न क्रमानुसार दुग्धादिसहित यवादि आचार्य प्रदान करवायें—

स-क्षीरयवकुशजलदानम्—ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। ततः 'अघोराः पितरः सन्तु' इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्।

यजमान से जल, पुष्प, अक्षतादि निम्न क्रमानुसार आचार्य प्रदान करवायें—

ॐ शिवा आपः सन्तु, ॐ सौमनस्यमस्तु, ॐ अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु।

यजमान से उसके सभी पितरों के निमित्त दाहिने हाथ के अँगूठे की तरफ से निम्न वाक्य द्वारा आचार्य जलधारा अर्पण करवायें—

ॐ अघोराः पितरः सन्तु।

यजमान से दोनों हाथ जुड़वाकर उसके पितरों की आगे दिए हुए वैदिक मन्त्रों से आचार्य प्रार्थना करावें—

ॐ गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देयं च नोऽस्तु।

अन्नं च नो बहु भवेद तिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चनः॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु।

शनिशान्तिअनुष्ठानस्थल पर उपस्थित आचार्य सहित सभी ब्राह्मण यजमान को निम्न वाक्य द्वारा आशीर्वाद प्रदान करें—**सन्त्वेताः सत्या आशिषः।**

यजमान से विश्वेदेव सहित पितरों के निमित्त आँवला, मुनक्का, यव तथा आदी मूलादि अलग-अलग निम्न क्रमानुसार आचार्य वितरण करवाये—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यव-मूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं [1]द्राक्षाऽऽमलक-यवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।

माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही।
पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः॥
मातामहस्तत्पिता च प्रमातामह कस्तथा।
एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयक्षन्तु च मङ्गलम्॥

---

[1] द्राक्षामलकमूलानि यवांश्चापि निवेदयेत्। तान्येव दक्षिणां चैव दद्यात् विप्रेपु सर्वदा॥

(ब्रह्मपुराण)

भावार्थ—'द्राक्षा, आँवला और मूल तथा जौ भी नान्दीश्राद्ध में निवेदित करें, उन्हीं को (द्राक्षा, आँवला, मूल आदिको) और द्रव्य दक्षिणा को ब्राह्मणों के लिए सदा दें।'

आचार्य निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ इडामग्ने पुरुदर्ठ० सर्ठ० सनिङ्गोः शश्वत्तमर्ठ० हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्त्वस्मे॥ १॥ ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ२ ॥ इयक्षते॥ २॥

आचार्य तथा ब्राह्मणों से नान्दीश्राद्ध की सम्पन्नता हेतु यजमान निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए पूछें—**अनेन किं नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्?**

आचार्य व ब्राह्मण यजमान से निम्न वाक्य कहें—**निश्चितं सुसम्पन्नम्।**

विसर्जनम्

ॐ वाजेवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः॥ १॥ अनुव्रजनम्—ॐ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमेद्यावापृथिवी विश्वरूपे। आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमो अमृतत्वेन गम्यात्॥ २॥

ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।

यजमान निम्न वाक्य आचार्य सहित ब्राह्मणों से कहे—

मयाऽऽचरितेऽस्मिन् साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीगणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।

यजमान द्वारा कहे गये वाक्यों का प्रत्युत्तर आचार्य और ब्राह्मण निम्न वाक्य द्वारा दें—**अस्तु परिपूर्णः।**

अनेन साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धेन नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्ताम्।

आचार्यादिवरणम्

आचार्यवरण—यजमान आचार्य को उत्तर मुख आसन पर बैठाकर चन्दन, अक्षत तथा पुष्पादि से उनकी पूजा करें, तदुपरान्त यजमान अपने दाहिने हाथ में जल, अक्षत और देयद्रव्य को लेकर निम्न सङ्कल्प वाक्य का उच्चारण करके आचार्य के हाथ में दे दें—

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकप्रवरान्वितः अमुकशर्माऽहम् अमुकगोत्रोत्पन्नममुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणमस्मिन् शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वां वृणे।

आचार्य कहें-**वृतोऽस्मि**। यजमान निम्न श्लोक का उच्चारण करे—

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

ब्रह्मावरण—आचार्य का वरण करने के पश्चात् यजमान अपने दायें हाथ में वरणद्रव्य लेकर निम्न संकल्प का उच्चारण करके इस यज्ञ में जो ब्रह्मा बने हों, उनके हाथ में देवें—

अस्मिन् शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।

ब्रह्मा कहें—**वृतोऽस्मि**। यजमान निम्न श्लोक द्वारा ब्रह्मा की प्रार्थना करें—

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदविशारदः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम!॥

आचार्य और ब्रह्मा के वरण के पश्चात् यजमान अन्य ब्राह्मणों का वरण उनके पद के अनुसार करे।

विशेष—अनन्तदेव प्रभृति नागरगण 'आचार्य' का ही वरण सर्वप्रथम स्वीकार करते हैं। पंचगौण भी अनन्तदेव के मतानुसार सर्वप्रथम 'आचार्य' का वरण करते हैं। यही क्रम सर्वमान्य है। किन्तु हेमाद्रि का मत है कि सदस्य का सबसे पहले वरण करें और त्रिविक्रम का मत है कि ब्रह्मा का सबसे पहले वरण होना चाहिए। किन्तु हेमाद्रि व त्रिविक्रम का मत सर्वमान्य नहीं है।

(अथवा)

एकतन्त्रेणवरणसंकल्पः

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्याः अमुकतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः नानागोत्रान् नानानामधेयान् शर्मणः आचार्यादिब्राह्मणान् युष्मान् वृणे[1]।

यजमानरक्षाबन्धनमन्त्राः—ॐ यदाबन्धन् दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्य मानाः। तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥

यजमानतिलककरणम्—ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पति र्दधातु॥

मण्डपप्रदक्षिणामन्त्राः—आचार्य सहित जिन ब्राह्मणों का वरण किया गया हो, वे सभी मण्डप की प्रदक्षिणा के समय निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें—

हरिः ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ १॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं

---

[1] वरणं नाम करिष्यमाणकर्मस्वरूपश्रावणपूर्वकं स्वयमप्रवृत्तानामाचार्यादिकर्मसु कर्तृत्वेनाभ्यर्थम्।

तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥ २ ॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ ३ ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ४॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ ५ ॥ ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये। वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ ॥ ६ ॥ यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु। शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ॥ ७ ॥ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ ८ ॥ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ९ ॥ कस्त्वा सत्यो मदानां मर्ठ०हिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु॥ १०॥ अभी षु णः सखीनामविता जरितृणाम्। शतं भवास्यूतिभिः ॥ ११ ॥ कया त्वं न ऊत्याभि प्रमन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्य आभर॥ १२ ॥ इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥ १३ ॥ शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः ॥ १४॥ शं नो वातः पवतार्ठ० शं नस्तपतु सूर्यः। शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु॥ १५ ॥ अहानि शं भवन्तु नः शर्ठ० रात्रीः प्रति धीयताम्। शं नऽ इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं नऽ इन्द्रावरुणा रातहव्या। शं नऽ इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः॥ १६ ॥ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः ॥ १७॥

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म स प्रथाः ॥ १८ ॥ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽ ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे ॥ १९ ॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ॥ २० ॥ तस्माऽ अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ॥ २१ ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ २२ ॥ दृते दृर्ठ० ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ २३ ॥ दृते दृर्ठ०ह मा ।ज्योके सन्दृशि जीव्यासं ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम ॥ २४ ॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव ॥ २५ ॥ नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे। नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे ॥ २६ ॥ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योभयं नः पशुभ्यः ॥ २७ ॥ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽयस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥ २८ ॥ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतर्ठ० शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ २९ ॥

आचार्य मण्डपप्रवेश के समय मण्डपद्वार की भूमि का पूजन निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से करावें—

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृर्ठ०ह पृथिवीं मा हिर्ठ०सीः ॥ १ ॥ मही

द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः ॥ २ ॥ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म स प्रथाः ॥ ३ ॥ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः ॥ ४ ॥

मधुपर्कम्

अपनी शाखा द्वारा ही मधुपर्क करने के लिए यजमान निम्न संकल्प करे—

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) करिष्यमाण शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणि वृतान् ऋत्विजो मधुपर्केणार्चयिष्ये।

यजमान सभी ब्राह्मणों को पंक्तिबद्ध बैठा दे, उपरान्त ही पारस्करगृह्यसूत्र के अनुसार उनका पूजन कर प्रार्थना करे—

साधु भवन्तः आसतामर्चयिष्यामो भवतः-इत्यर्घ्यान्प्रत्याह। 'ॐ अर्चय' इति सर्वे प्रतिब्रूयुः। वेण्याकारं पञ्चविंशतिदर्भमयमुष्टिं विष्टरापरपर्यायं गृहीत्वा—विष्टरा विष्टरा विष्टराः—इति दातुरन्येनोक्ते प्रतिगृह्यन्ताम्—इति पात्रोक्ते ॐ प्रतिगृह्णामि—इति। ऋत्विग्भिः सम्यक्तया तं प्रतिगृह्य उत्तराग्रं निधाय—ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः। इमं तमभि तिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति॥ इति मन्त्रेण तदुपर्युपविशेयुः। ततो दाता पाद्यपात्रं गृहीत्वा—'पाद्यानि पाद्यानि पाद्यानि—प्रतिगृह्यन्ताम्। इति प्रतिगृह्णीम इत्युक्त्वा ऋत्विजः प्रतिगृह्य'—ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमसीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः ॥ इति मन्त्रेण दक्षिणवामपादयोर्युगपन्निनयेयुः। दाता च क्रमेण दक्षिणवामपादौ प्रक्षालयेत्। ततोऽर्घपात्रमादाय "अर्घा अर्घा अर्घाः" इत्यनेनोक्ते "प्रतिगृह्यन्ताम्" इति दात्राऽऽवेदिते "प्रतिगृह्णीमः" इत्युक्त्वा—"ॐ आपः स्थ युष्माभिः सर्वान्कामान्

वाप्नवानि'' इति तत्प्रतिगृह्य—ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वा न्योनिमभिगच्छत। अरिष्टास्माकं वीरामापराचेति मत्पयः॥ इति निनयन्नभिमन्त्रयेत्। ततो दात्रा आचमनीयपात्रे गृहीते ''आचमनीयान्याचमनीयान्याचमनीयानि'' इत्यनेनोदीरिते 'प्रतिगृह्यन्ताम्' इति दात्रोक्ते तत्पात्रं प्रतिगृह्य—ॐ आमागन्यसा सर्ठ० सृजवर्चसा। तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम्॥ इतिसकृन्मन्त्रेण द्विस्तूष्णोमाचामेयुः। ततो दात्रा मधुपर्कं समादाय 'मधुपर्का मधुपर्का मधुपर्काः' इत्यनेनोदीरिते 'प्रतिगृह्यन्ताम्' इति दाताऽभिहिते दातृहस्तस्थमेव समुद्घाटित मधुपर्कं—ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुणा प्रतीक्ष्ये। ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ इति प्रतिगृह्य तत्पात्रसव्यहस्ते कृत्वा अपिधानमपनीय दक्षिणहस्तस्यानामिकया सकृन्मिश्रीकृत्य अङ्गुष्ठोपकनिष्ठिकाभ्यां किञ्चिन्मधुपर्कं गृहीत्वा—ॐ नमः श्यावाश्यायान्नशने यद्घु आक्तिं तत्ते निष्कृन्तामिति मन्त्रेण बहिः प्रक्षिपेत्। एवमेव पुनरपि वारद्वयं मिश्रणं निरसनं च कार्यम्। ततः पात्रं भूमौ निधाय अनामिकाङ्गुष्ठेन—ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमर्ठ० रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योन्नादोसानि॥ इति मन्त्रावृत्त्या त्रिः प्राश्नाति। मन्त्रवत्प्राशनमनुच्छिष्ठत्वात्। शेषं शिष्यादिभ्यो दद्यादनुच्छिष्टत्वात्। शेषं शिष्यादिभ्यो दद्यादनुच्छिष्टत्वात् अथवा स्वयमेव सर्वं पात्रेणैव पिबेत्। जले प्रक्षिपेद्वा। ततः शुद्ध्यर्थमाचमनम्। ततः—ॐ वाङ्म आस्ये अस्तु—इति तर्जनीमध्यमाऽनामिकाभिमुखं स्पृशेत्। जलं स्पृष्ट्वा ॐ नसोर्मे प्राणः अस्तु—इति नासिके युगपत् तर्जन्यङ्गुष्ठेन स्पृशेत्। 'ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुः अस्तु' इति अनामिकाङ्गुष्ठेन युगपच्चक्षुषी। 'कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु' इति मन्त्रावृत्त्या तथैव दक्षिणोत्तरौकर्णौ।

'ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु' इति अङ्गुल्यग्रैर्मन्त्रा-वृत्त्याबाहू। 'ॐ ऊर्वोर्मे ओजः अस्तु' इति पाणिभ्यां युगपदूरू। 'ॐ अरिष्टाऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु' इति शिरः प्रभृत्यङ्गानि पाणिभ्यामालभेत्। ततो द्विराचामेत्। पुनः 'गावो गावो गावः' यह दाता कहे। ऋत्विजश्च—ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनाꣳ स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः। प्रनु वोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदितिं वधिष्ट इति पठेयुः। मम चाऽमुष्य च पाप्माहतः। ततः आचारात्—इमानि माधुपर्किकाणि पात्राणि नानादेवतानि इमानि माधुपर्किकीर्गाश्च ऋत्विग्भ्योऽहं संप्रददे। यह कहकर देवें। अस्य मधुपर्ककर्मणो यन्न्यूनमतिरिक्तं च तत्सर्वं परिपूर्णमस्तु। अस्तु परिपूर्णम्। पुनः सर्वान् प्रार्थयेत्—

अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम्॥
ब्राह्मणाः सन्तु शास्तारः पापात्पान्तु समाहिताः।
वेदानां चैव दातारः पातारः सर्वदेहिनाम्॥
जपयज्ञैस्तथा होमैर्दानैश्च विविधैः शुभैः।
देवानां च पितृणां च तृप्त्यर्थं याजकाः स्मृताः॥
येषां देहे स्थिता वेदाः पावयन्ति जगत्त्रयम्।
ते मां सततं जपयज्ञे व्यवस्थिताः॥
अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।
देवध्यानपरा नित्यं प्रसन्नमनसः सदा॥
अदुष्टभाषणा सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः।
ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि॥

मण्डपप्रवेशः

यजमान अपनी पत्नी व पुत्र, पौत्रादि तथा आचार्य और ब्राह्मणों के साथ मंगलघोष बाजे आदि द्वारा तथा आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्रों का उच्चारण करके स्वस्तिवाचन करें—

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह॥ ७॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ८॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ ९॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ १०॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ११॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥

घोष से युक्त हो और कलश हाथ में लेकर सधवा स्त्रियों को आगे कर गणेश-अम्बा, वरुण कलश, मातृ पीठादियों से युक्त हो महामण्डप की प्रदक्षिणा कर पश्चिमद्वार पर प्राङ्गमुख खड़ा होकर निम्न श्लोकों का उच्चारण कर ध्यान करें—

ॐ चतुर्भुजां शुक्लवर्णां कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।
शङ्खपद्मधरां चक्रशूलहस्तां धरां भजे॥

आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोकधारिणी।
पृथिवि ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिवन्दिता॥

'ॐ भूम्यै नमः' इस वाक्य का उच्चारण करने के उपरान्त यजमान निम्न श्लोक का उच्चारण कर प्रणाम करें—

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
दंष्ट्राग्रैर्लीलया देवि यज्ञार्थं प्रणमाम्यहम्॥

आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से अर्घ्य प्रदान करावें-

ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शङ्करेण च।
पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्दवैश्रवणेन च॥
यमेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगीषया।
सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च धनं रूपं च पूजिता।
गृहाणार्घमिमं देवि सौभाग्यं च प्रयच्छ मे॥

ॐ भूम्यै नमः, अर्घं समर्पयामि। यजमान गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य से भूमि का पूजन करें-

ॐ उपचारानिमां तुभ्यं ददामि परमेश्वरि।
भक्त्या गृहाण देवेशि त्वामहं शरणं गतः॥

आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करावें-

ॐ नन्दे नन्दस्य वसिष्ठे वसुभिः प्रजया सह।
जय भार्गवदायादे प्रजानां जयमावह॥
पूर्णे गिरिश दायादे पूर्णं कामं कुरुष्व मे।
भद्रे काश्यपदायादे कुरु भद्रां मतिं मम॥
सर्वबीजसमायुक्ते सर्वारत्नौषधीवृते।
रुचिरे नन्दने नन्दे वसिष्ठे रम्यतामिह॥
प्रजापतिसुते देवि चतुरस्रे महीयसि।
सुभगे सुव्रते देवि यज्ञे भार्गवि रम्यताम्॥

देशस्वामि पुरस्वामि गृहस्वामि परिग्रहे।
मनुष्यधनहस्त्यश्व - पशुवृद्धिकरी भव॥

आचार्य और ब्राह्मणों के साथ द्वारपालों से आज्ञा लेकर पञ्चांग देवताओं के साथ मण्डप के पश्चिमद्वार पर जावे और भूमिपूजा करके तथा सूर्यार्घ्य देकर मण्डप की प्रदक्षिणा कर शंखघोष के साथ यजमान पश्चिमद्वार से और उसकी पत्नी दक्षिणद्वार से मण्डप में प्रवेश करे। मण्डप में प्रवेश करने के उपरान्त अग्न्यायतन की प्रदक्षिणा कर अग्निकोण में गोधूम गेहूँ के ऊपर कुम्भ का स्थापन करके निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

आचार्य निम्न वाक्य एवं मन्त्रों का उच्चारण यजमान से करावें—**ॐ देवा आयान्तु यातुधाना अपयान्तु विष्णो देवयजनं रक्षस्व।**

आचार्य निम्न दो मन्त्रों का उच्चारण करें—**ॐ इयं वेदिः परोअन्तः पृथिव्याअयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः। अयठ० सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम॥ १॥ ॐ सुभूः स्वयंभूः प्रथमोन्तर्महत्यर्णवे। दधे हगर्भमृत्वियं यतो जातः प्रजापतिः॥ २॥**

यजमान के बायें हाथ में आचार्य पीली सरसों और धान का लावा देकर निम्न वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करें—

ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे निष्ट्यो यममात्यो निचरवानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि॥ १॥ रक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवनयामि

वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणौ वां वलगहना उपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवाः स्थ॥ २॥ रक्षसां भागोऽसि निरस्तꣳ रक्ष इदमहꣳ रक्षोऽभितिष्ठामीदमहꣳ रक्षोऽवबाध इदमहꣳ रक्षोऽधमं तमो नयामि। घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथां वायो वेस्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्॥ ३॥ रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत्॥ ४॥

आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से सभी दिशाओं में पीली सरसों को छिड़कवायें—

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥ १॥
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ २॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ ३॥
भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः।
स्थानादस्माद्व्रजन्त्वन्यत् स्वीकरोमि भुवम् त्विमाम्॥ ४॥
भूतानि राक्षसा वाऽपि यत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु शान्तिकं तु करोम्यहम्॥ ५॥

पञ्चगव्यनिर्माणमन्त्राः

आचार्य एक चौड़े मुख के पात्र में पञ्चगव्य का निर्माण निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए करें—

गोमूत्रम्—ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्। गोमयम्—ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ पयः—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवावाजस्य सङ्गथे॥ दधि—ॐ दधिक्राव्णो अकारिषञ्जिष्णो-रश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूꣳषितारिषत्॥ आज्यम्—ॐ तेजोऽसिशुक्रमस्यमृतमसिधामनामासिप्रियन्देवा-नामनाधृष्टन्देवजनमसि॥ कुशोदक—ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम्॥

भूमिप्रोक्षणमन्त्राः

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ इति कुशोदकमादाय 'ॐ' इति प्रणवेन यज्ञकाष्ठेनालोड्य। ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ १॥ ॐ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते ह नः। उशतीरिव मातरः॥ २॥ ॐ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ ३॥ इति त्रिभिर्मन्त्रैः कुशैः कर्मभूमि प्रोक्षेत्॥

मण्डपाङ्गवास्तुपूजनम्

यजमान और उसकी धर्मपत्नी को यज्ञ के आचार्य गुरु मण्डप के नैर्ऋत्यकोण में हस्त मात्र की वेदी के समीप ले आवे। उन दोनों को आसन पर प्राङ्गमुख बैठाकर आचमन एवं प्राणायाम करावें। तदुपरान्त आचार्य निम्न संकल्प यजमान से करावें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् कर्मणि कुण्डमण्डपादिषु हीनाधिकाङ्गतादि-वास्तुदोषसूचितसर्वारिष्टनिवर्हणार्थं शनिशान्त्यनुष्ठानाङ्गभूतं मण्डपाङ्ग-वास्तुपूजनं करिष्ये।

आचार्य और ब्राह्मण निम्न श्लोक का उच्चारण करे—

ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा॥

इति मन्त्रावृत्त्या आग्नेयादितश्चतुरः शङ्कून् संरोप्य ततः—

ॐ अग्निभ्योप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥ १॥
ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥ २॥
ॐ वायव्याधिपतिश्चैव वायव्यां ये च राक्षसाः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥ ३॥
ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चानन्ये तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥ ४॥

उपरोक्त श्लोकों का उच्चारण करते हुए क्रमानुसार आचार्य अपने पार्श्व में माषभक्त बलि यजमान से प्रदान करवाकर वेदी के ऊपर बिछे हुए वस्त्र पर स्वर्ण की शलाका से पूर्व अग्रभाग वाली दो-दो अंगुल की नौ रेखा का निर्माण आचार्य करके निम्न नाम मन्त्रों से उनका पूजन यजमान से करावें—

१. ॐ लक्ष्म्यै नमः, २. ॐ यशोवत्यै नमः, ३. ॐ कान्तायै नमः, ४. ॐ सुप्रियायै नमः, ५. ॐ विमलायै नमः, ६. ॐ शिवायै नमः, ७. ॐ सुभगायै नमः, ८. ॐ सुमत्यै नमः, ९. ॐ इडायै नमः।

तत उदगग्राः प्राक्संस्था नवरेखाकार्याः—**१. ॐ धान्यायै नमः, २. ॐ प्राणायै नमः, ३. ॐ विशालायै नमः, ४. ॐ स्थिरायै नमः, ५. ॐ भद्रायै नमः, ६. ॐ जयायै नमः, ७. ॐ निशायै नमः, ८. ॐ विरजायै नमः, ९. ॐ विभवायै नमः।**

'**ॐ रेखादिभ्यो नमः**' इति पंचोपचारैः पूजयेदिति प्रतिष्ठासरणौ विशेषः। मध्य के चार पदों को एक-एक करके उनके कोणों में रेखा देकर वर्णित किये गये रंगों से पद भरें। फिर उनके देवताओं का आवाहन निम्न क्रम से करें।

बाह्यपंक्तौ ईशानपदस्य दक्षिणेऽर्द्धपदे प्रथमकोष्ठे रक्तवर्णे वास्तोः शिरसि—**ॐ तमीशानं जगतस्तस्थषुस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधेरक्षिता पायुरब्धः स्वस्तये॥ शिखिने नमः शिखिनमावाहयामि स्थापयामि।**

तद्दक्षिणे सार्धपदे पीतवर्णे द्वितीयकोष्ठके दक्षिणनेत्रे—**ॐ शन्नो वातः पवतार्ठ० शन्नस्तपतु सूर्यः। शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु॥ पर्जन्याय नमः पर्जन्यमावाहयामि स्थापयामि।**

तद्दक्षिणे द्विपदे पीतवर्णे तृतीयकोष्ठके दक्षिणश्रोत्रे—**ॐ मर्माणि ते वर्मणाच्छादयामि सोमस्त्वाराजामृते नानुवस्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवा मदन्तु॥ जयन्ताय नमः जयन्तमावाहयामि स्थापयामि।**

तद्दक्षिणे द्विपदे पीतवर्णे चतुर्थे दक्षिणांसे—**ॐ आयात्विन्द्रो वस ऽउपन ऽइह स्तुतः सधमादस्तु शूरः। ववृधानस्तविषीर्य्यस्य पूर्वीर्द्यौर्न्न क्षत्रमभि भूति पुष्यात्॥ कुलिशायुधाय नमः कुलिशायुधमावाहयामि स्थापयामि।**

तद्दक्षिणे द्विपदे रक्तवर्णे पञ्चमे दक्षिणबाहौ—**ॐ बणमहाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्य ऽतेद्धादेव महाँ असि॥ सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।**

तद्दक्षिणे द्विपदे शुक्लवर्णे षष्ठे दक्षिणबाहावेव—**ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥ सत्याय नमः सत्यमावाहयामि स्थापयामि।**

तद्दक्षिणे सार्द्धपदे कृष्णवर्णे सप्तमे दक्षिणकूर्परे—**ॐ आत्वाहार्षमन्तरभूद्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः। विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत्॥ भृशाय नमः भृशमावाहयामि स्थापयामि।**

तद्दक्षिणे अर्द्धपदे कृष्णवर्णे अष्टमे दक्षिणबाहौ—**ॐ यावङ्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्॥ आकाशाय नमः आकाशमावाहयामि स्थापयामि।**

तत्पश्चिमे अर्द्धपदे धूम्रवर्णे नवमे दक्षिणबाहावेव—**ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणोरथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये॥ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।**

तत्पश्चिमे सार्द्धपदे रक्तवर्णे दशमे दक्षिणमणिबन्धे—**ॐ पूषन्तव्रतेवयन्नरिष्ष्येम कदाचन। स्तोतारस्त ऽइह स्मसि। पूष्णे नमः पूषणमावाहयामि स्थापयामि।**

तत्पश्चिमे द्विपदे शुक्लवर्णे एकादशे दक्षिणपार्श्वे—**ॐ तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततꣳ संजभार। यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै॥ वितथाय नमः वितथमावाहयामि स्थापयामि।**

तत्पश्चिमे द्विपदे पीतवर्णे द्वादशे दक्षिणपार्श्वे एव—**ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभा नवो विप्रा नविष्ठया मती योजा निन्द्रते हरी॥ गृहक्षताय नमः गृहक्षतमावाहयामि स्थापयामि।**

तत्पश्चिमे द्विपदे कृष्णवर्णे त्रयोदशो दक्षिणोरौ—**ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्र॥ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।**

तत्पश्चिमे द्विपदे रक्तवर्णे चतुर्दशे दक्षिणजानौ—**ॐ गन्धर्वस्त्वाविश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽईडितः। इन्द्रस्य बाहुरसिदक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः॥ मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तान्ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड इडितः॥ गन्धर्वाय नमः गन्धर्वमावाहयामि स्थापयामि।**

तत्पश्चिमे सार्द्धपदे कृष्णवर्णे पञ्चदशे दक्षिणजङ्घायाम्—**ॐ सौरी बलाका शार्गः सृजयः शयाण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै शारिः पुरुषवावश्वाविद्धौमीशार्दूलोवृकः पृदाकुस्ते मन्यवे सरस्वते शुकः पुरुषवाक्॥ भृङ्गराजाय नमः भृङ्गराजमावाहयामि स्थापयामि।**

तत्पश्चिमे अर्द्धपदे पीते षोडशे दक्षिणस्फिचि—**ॐ मृगो न भीमः कुचरोगिरिष्ठाः परावतऽआजगन्ध्या पर स्याः। सृकठ॰ सठ॰ शाय पविमिन्द्रतिग्मं विशत्रून्ताढिविमृधो नुदस्व॥ मृगाय नमः मृगमावाहयामि स्थापयामि।**

तदुत्तरे अर्द्धपदे रक्ते सप्तदशे पादयोः—**ॐ उशन्तस्त्वानिधीमह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशत आवहपितृन्हविषे अत्तवे॥ पितृगणेभ्यो नमः पितृगणान् आवाहयामि स्थापयामि।**

तदुत्तरे सार्द्धपदे रक्ते अष्टादशे वामस्फिचि—**ॐ द्वेविरूपे चरतः स्वर्त्थे ऽअन्यान्या वत्समुपधापयेते। हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रो अन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः॥ दौवारिकाय नमः दौवारिकमावाहयामि स्थापयामि।**

तदुत्तरे द्विपदे शुक्ले एकोनविंशे वामजङ्घायाम्—**ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा ऽउपश्रिताः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्नमसि॥ सुग्रीवाय नमः सुग्रीवमावाहयामि स्थापयामि।**

तदुत्तरे द्विपदे रक्ते विंशे वामजानौ—**ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥ पुष्पदन्ताय नमः पुष्पदन्तमावाहयामि स्थापयामि।**

तदुत्तरे द्विपदे शुक्ले एकविंशे वामोरौ—**ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके॥ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि।**

तदुत्तरे द्विपदे पीते द्वाविंशे वामपार्श्वे—**ॐ यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनो दिन्द्रियाय। इमन्तꣳ शुक्रं मधुमन्तमिन्दुꣳ सोमꣳ राजानमिह भक्षयामि॥ असुराय नमः असुरमावाहयामि स्थापयामि।**

तदुत्तरे सार्द्धपदे कृष्णे त्रयोत्रिंशे वामपार्श्वे एव—**ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः॥ शोषाय नमः शोषमावाहयामि स्थापयामि।**

तदुत्तरे अर्द्धपदे पीते चतुर्विंशे वाममणिबन्धे—**ॐ एतत्ते रुद्राऽवसन्तेन् परो मूजवतो ऽतीहि। अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवास**

अहिर्ठ॰ सन्नः शिवोतीहि॥ पापाय नमः पापमावाहयामि स्थापयामि।

तत्पूर्वे अर्द्धपदे रक्ते पञ्चविंशे वामबाहौ—ॐ द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित। आसां प्रजानां मेषां पशूनां माभेर्मा रोङ्मो च नः किञ्चनाममत्॥ रोगाय नमः रोगमावाहयामि स्थापयामि।

तत्पूर्वे सार्द्धपदे रक्ते पड्विंशे वामबाहावेव—ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुञ्ज्यायाहेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान्पुमार्ठ॰ सम्परि पातु विश्वतः॥ अहये नमः अहिमावाहयामि स्थापयामि।

तत्पूर्वे द्विपदे रक्ते सप्तविंशे—ॐ अवतत्य धनुष्ट्वर्ठ॰ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्यशल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥ मुख्याय नमः मुख्यमावाहयामि स्थापयामि।

तत्पूर्वे द्विपदे कृष्णे अष्टाविंशे वामप्रवाहौ—ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टङ्ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥ भल्लाटाय नमः भल्लाटमावाहयामि स्थापयामि।

तत्पूर्वे द्विपदे शुक्ले ऊनत्रिंशे वामप्रबाहावेव—ॐ सोमर्ठ॰ राजानमवसेग्निमन्वारभामहे। आदित्यान्विष्णुर्ठ॰ सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिर्ठ॰ स्वाहा॥ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।

तत्पूर्वे द्विपदे कृष्णे त्रिंशे वामांसे—ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ सर्पेभ्यो नमः सर्पान् मावाहयामि स्थापयामि।

तत्पूर्वे सार्द्धपदे पीते एकत्रिंशे वामश्रोत्रे—ॐ इड ऽएह्यदित ऽएहि काम्या ऽएत। मयि वः कामधरणं भूयात्॥ अदित्यै नमः अदितिमावाहयामि स्थापयामि।

तत्पूर्वे अर्द्धपदे पीते द्वात्रिंशे वामनेत्रे—ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिस्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ दित्यै नमः दितिमावाहयामि स्थापयामि।

मध्यमपदेषु ईशानपदोत्तरार्द्धे पदे शुक्ले—त्रयस्त्रिंशे मुखे तृतीयपङ्क्तिस्थे—ॐ अप्स्वग्नेसधिष्ठव सौषधीरनु रुध्यसे। गर्भे सञ्जायसे पुनः॥ अद्भ्यो नमः अप आवाहयामि स्थापयामि।

आग्नेयपदोत्तरार्द्धे शुक्ले चतुस्त्रिंशे दक्षिणहस्ते तृतीयपङ्क्तिस्थे—ॐ हस्त आधाय सविताबिभ्रदभ्रिर्ठ० हिरण्ययीम्। अग्नेर्जोतिर्न्निचाय्य पृथिव्या अद्ध्या भरदानुष्टुभेन च्छन्दसाङ्गिरस्वत्॥ सावित्राय नमः सावित्रमावाहयामि स्थापयामि।

नैर्ऋत्यपदोत्तरार्द्धे शुक्ले पञ्चत्रिंशे मेढ्रे तृतीयपङ्क्तिस्थे—ॐ अषाढं युत्सु पृतनासु पप्रिर्ठ० स्वर्षामप्स्वां वृजनस्य गोपाम्। भरेषुजार्ठ० सुक्षितिर्ठ० सुश्रवसञ्जयन्तन्त्वामनुमदेम सोम॥ जयाय नमः जयमावाहयामि स्थापयामि।

वायव्यपदोत्तरार्द्धे रक्ते षट्त्रिंशे वामहस्ते तृतीयपङ्क्तिस्थे—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।

पूर्वपदद्वये कृष्णे सप्तत्रिंशे दक्षिणस्तने तृतीयपङ्क्तिस्थे—ॐ यदद्य सूरऽ उदिते नागा मित्रो ऽअर्य्यमा। सुवाति सविता भगः॥ अर्यम्णे नमः अर्यमणमावाहयामि स्थापयामि।

आग्नेयपददक्षिणार्द्धे रक्ते अष्टत्रिंशे दक्षिणहस्ते तृतीयपङ्क्तिस्थे—**ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्नऽ आसुव॥ सवित्रे नमः सवितारमावाहयामि स्थापयामि।**

तत् पश्चिमे पदद्वये शुक्ले ऊनचत्वारिंशे जठरे दक्षिणे तृतीयपङ्क्तिस्थे—**ॐ विवस्वन्नादित्यैष तेसोमपीथस्तस्मिन्नमत्स्व। श्रदस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वाममश्नुतः।पुमान् पुत्रो जायते विन्दते वस्वधा विश्वाहारप एधते गृहे॥ विवस्वते नमः विवस्वतमावाहयामि स्थापयामि।**

नैर्ऋत्यपदपूर्वार्द्धे रक्ते चत्वारिंशे वृषणयोः तृतीयपङ्क्तिस्थे—**ॐ सबोधि सूरिर्म्मघवा वसुपते वसुदावन्। युयोध्यस्मद्द्वेषाꣳ सि विश्वकर्मणे स्वाहा॥ विबुधाधिपाय नमः विबुधाधिमावाहयामि स्थापयामि।**

उत्तरे पदद्वये शुक्ले एकचत्वारिंशे जठरे वामे तृतीयपङ्क्तिस्थे—**ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोवो देवस्य सानसि। द्युम्नञ्चित्रश्रवस्तमम् मित्राय नमः मित्रमावाहयामि स्थापयामि।**

वायव्यपददक्षिणार्द्धे रक्ते द्विचत्वारिंशे वामहस्ते तृतीय-पङ्क्तिस्थे—**ॐ नाशयित्री बलासस्यार्शसऽ उपचितामसि। अथो शतस्य यक्ष्माणाम्पाकारोरसि नाशनी॥ राजयक्ष्मणे नमः राजयक्ष्माणमावाहयामि स्थापयामि।**

तत्प्राक्पदद्वये रक्ते—**ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥ पृथ्वीधराय नमः पृथ्वीधरमावाहयामि स्थापयामि।**

तत्प्राग् ईशानकोणदक्षिणार्धपदे एकपदे वा उरसि—ॐ आते वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात्। अग्ने त्वाङ्कामयागिरा॥ आपवत्साय नमः आपवत्समावाहयामि स्थापयामि।

ततो मध्यपदचतुष्टये वास्तोः हृदये पीते—ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्याऽउपमाऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मोत्तरे—ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः। यस्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदेशं चतुष्पदे॥ वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

ततो मण्डलाद्बहिः ईशान्यां धूम्रे—ॐ यन्ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध पाशङ्ग्री वास्वविचृत्यम्। तन्तेविष्याम्म्यायुषोनमद्ध्यादथैतम्पितुमद्धि प्रसूतः॥ नमोभूत्यै ये दं चकार॥ चरक्यै नमः चरकीमावाहयामि स्थापयामि।

आग्नेय्यां रक्तम्—ॐ अक्षराजाय कितवं कृतायादिनवदर्शन्त्रेतायै कल्पिनन्द्वापरायाधिकल्पिनमास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोघातङ्क्षुधे यो गाविकृन्तन्तं भिक्षमाणऽ उपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने शैलगम्॥ विदार्यै नमः विदारीमावाहयामि स्थापयामि।

नैर्ऋत्यां पीते—ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यन्दिशां जत्रवोऽदित्यै भसजीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षम्पुरीततानभऽ उदर्येण चक्रवाकौ मत स्नाभ्यन्दिवं वृकाभ्याङ्गिरीन्प्लाशिभिरुपला—

न्लीन्हावल्मीकान् क्लोमभिग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्त्रवन्ती ह्रदान्कुभिभ्यार्ठ० समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना ॥ पूतनायै नमः पूतनामावाहयामि स्थापयामि।

वायव्यां कृष्णे—ॐ यस्यास्ते घोरऽ आसजुहोम्येषां बन्धानामवसर्जनाय। यान्त्वा जनो भूमिरिति प्रमन्दते निर्ऋतिन्त्वाहं परिवेद विश्वतः॥ पापराक्षस्यै नमः पापराक्षसीमावाहयामि स्थापयामि।

ततः पूर्वादिदिक्षु स्कन्दादीन्स्थापयेत्। पूर्वे रक्ते—ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽ उद्यन्तन्त्समुद्र दुतवा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽ उपस्तुत्यं महिजातन्ते अर्वन्॥ स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

दक्षिणे कृष्णे—ॐ यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा। सुवाति सविता भगः॥ अर्यम्णे नमः अर्यमणमावाहयामि स्थापयामि।

पश्चिम रक्ते—ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा संदिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा सर्ठ० हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा॥ जृम्बकाय नमः जृम्भकमावाहयामि स्थापयामि।

उत्तरे पीते—ॐ का स्विदासीत्पूर्वचित्तिः किꣳ स्विदासीद् बृहद्वयः। का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदा सीत्पिशङ्गिला॥ पिलिपिच्छाय नमः पिलिपिच्छमावाहयामि स्थापयामि।

ततः पूर्वादिदिक्षु इन्द्रादीन् दशदिक्पालानावाहयेत्—पूर्वे पीते—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

आग्नेये रक्ते—ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

याम्ये कृष्णे—ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि।

नैर्ऋत्ये नीले—ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सातऽ इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

पश्चिमे श्वेते—ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणे हबोध्युरुशꣳ समान आयुः प्रमोषीः॥ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

वायव्ये धूम्रे—ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि।

उत्तरे श्वेते—**ॐ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि।**

ऐशान्यां श्वेते—**ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि।**

ईशानेन्द्रयोर्मध्ये ब्रह्मणि श्वेते—**ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः सर्ठ० सते स्तुवते धायि पज्रऽ इन्द्रज्येष्ठाऽ अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः॥ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।**

निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये अनन्तं कृष्णम्—**ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥ अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।**

'ॐ मनोजूतिर्जू०' मन्त्र और **'अस्यै प्राणाः'** इस श्लोक का उच्चारण कर प्राणप्रतिष्ठा करावें।

वास्तुदेवतापूजनम्

ध्यानम्

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमी वो भवा नः।
यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्

समस्तप्रत्यूहसमुच्चयस्य विनाशकाः श्रीप्रदवास्तुदेवाः ।
आवाहनं तो वितनोमि भक्त्या शिख्यादिका भव्यकरा भवन्तु ॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, वास्तुमावाहयामि स्थापयामि ।

आसनम्

चित्रप्रभाभासुरमच्छशोभं मयार्पितं शोभितमासनं च ।
शिख्यादिका भव्यकरा भजन्तु भवन्तु मेऽभीष्टकराः सहाङ्गैः ॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, आसनं समर्पयामि ।

पाद्यम्

कस्तुरिकासुरभिचन्दनयुक्तमेलाचम्पालवङ्गघनसारसुवासितं च ।
पाद्यं ददामि जगदेकनिवास वास्तुदेवाः सदा सुखकराः प्रतिमानयन्तु ॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यम्

सौजन्यसौख्यजननीजननीजनानां येषां कृपैव वसुधा वसुधारिणी मे ।
ते सर्वदेवगुण पूरितवास्तुदेवा अर्घं सुखेन विलं मम धारयन्तु ॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, अर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमनीयम्

कङ्कोलपत्रहरिचन्दनपुष्पयुक्त मेलालवङ्गलवलीघनसारसारम् ।
दत्तं सदैव हृदये कुरुणाशयेऽस्मिन् देवा भजन्तु शुभमाचनीयमम्भः ॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, आचमनीयं समर्पयामि ।

स्नानम्

गङ्गा-सरस्वती-रेवा-पयोष्णी-नर्मदाजलैः ।
स्नापितोऽसि मया देव ततः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, स्नानं समर्पयामि ।

पञ्चामृतस्नानम्

विमलगाङ्गजलेन युतं पयो घृतासितादधिसर्पिरूपान्वितम्।
प्रियतरं भवतां परिगृह्णत यदि कृपा भवतां मयि सेवके॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

जले समादाय विचित्र पुष्पाण्यच्छानि नव्यानि निपातितानि।
स्नानं विधेयं विबुधाः समन्तादागत्य युष्माभिरिहाङ्गणे मे॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम्

अनर्ध्यरत्नैरतिभासितानि चेतोहराण्यद्भूतचिन्तितानि।
शुभानि वस्त्राणि निवेदितानि गृह्णन्तु हार्देन च वास्तुदेवाः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

कोशेयसूत्रविहितं विमलं सुचारुवेदोक्तरीतिविहितं परिपावनं च।
साङ्गा निवेदितमिदं लघुवास्तुदेवा यज्ञोपवीत मुररी क्रियतां प्रसन्नाः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

त्रिविधतापविनाशविचक्षणाः परमभक्तियुतेन निवेदितम्।
सुरनुता उपवस्त्रमिदं नवं सुरभितं परिगृह्णत मेऽधुना॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

गन्धम्

शिख्यादयो मलयजातसुगन्धराशिं सप्रेमगृह्णत सुशीतलम्छशोभम्।
सन्तापविस्ततिहरं परमं पवित्रं द्रागर्पितं मम मनोरथपूरकाः स्युः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतान्

शिख्यादयः केसरकुंकुमाक्तान् भक्तया मया स्नेहसमर्पितांश्च।
गृह्णन्तु देवा द्रुतमक्षतान्मे सर्वान्तरायान् विनिवर्तयध्वम्॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पम्

बहुविधं परितो हि समाहृतं समुचितं मकरन्दसमन्वितम्।
विकसितं कुसुमं विनिवेदितं कुरुत मे सफलं नयानञ्चलैः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, पुष्पं समर्पयामि।

रक्तसूत्रम्

सौभाग्यसौन्दर्यविवर्द्धनानि शोणश्रियाऽऽनन्दविवर्धनानि।
श्रीरक्तचूर्णानि मयाऽर्पितानि शिख्यादयोगृह्णत वास्तुदेवाः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, रक्तसूत्रं समर्पयामि।

धूपम्

लवङ्गपाटीरसुगन्धपूर्णं नरासुराणामपि सौख्यदं च।
लोकत्रये गन्धमयं मनोज्ञं गृह्णन्तु धूपं मम त्रास्तुदेवाः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, धूपं माघ्रापयामि।

दीपम्

सद्वर्तिको घोरतमोपहन्ता दीपो मया सत्वरमर्पितो वः।
प्रज्वालितो वह्निशिखासमेतः शिख्यादयो वेदविधानयुक्तः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्

सिद्धान्तकर्पूरविराजमानं सौरभ्यसान्द्रेण सुशोभमानम्।
नैवेद्यमेतस्सरसं पवित्रं स्वीकृत्य मामत्र कृतार्थयन्तु॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, नैवेद्यं समर्पपयामि।
(नैवेद्यान्ते आचमनीयजलं समर्पयामि)

ताम्बूलम्

शिख्यादिकाः खलु समेत्य गृहं मदीयं भक्त्यार्पितं परमगन्धयुतं सुरम्यम्।
एलालवङ्गबहुलं क्रमुकादियुक्तं ताम्बूलकं भजत मंडपवास्तुदेवाः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणाः

दैवासुरैर्नित्यमशेषकाले प्रगीयगानाः प्रभवः पुराणाः।
गृह्णन्तु सद्यः खलु दक्षिणां मे ध्यानेन भक्ते मयि वर्तितव्यम्॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

आर्तिक्यम्

नीराजना सौख्यमयी सदैव गाढान्धकारानपि दूरकर्त्री।
अशेषपापैः परिपूरितस्य शुद्धिं करोति प्रियमानवस्य॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, आर्तिक्यं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

प्रदक्षिणाः सन्ति प्रदक्षिणास्तथा पदे-पदे दुखविनाशिका अपि।
जन्मान्तरस्यापि विनाशकारिकाः पापस्य याश्चित्तविवर्धितस्य॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

शिख्यादिका मे खलु वास्तुदेवा गृह्णन्तु पुष्पांजलिमव शीघम्।
पीडाहरा भव्यकरा विशाला भवन्तु भूपालनतत्पराश्च॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रार्थना

जानामि नोऽर्चनविधिं परमं क्षमध्वं लोकार्तिपुञ्जमतुलं क्षपयन्तु नित्यम्।
शिख्यादिकाः सुविमलाः सुखमाकिरन्तु कुर्वन्तु दूरमनिशं दुरितान् समन्तात्॥

अग्न्युत्तारणम्

ताम्रकलश का पूर्वोक्त स्थापनविधि द्वारा स्थापन व पूजन यजमान से करवाने के पश्चात् उस कलश के ऊपर सुवर्ण की वास्तुप्रतिमा का अग्न्युत्तारण निम्न संकल्प यजमान से करवाकर आचार्य करावें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्यां वास्तुमूर्तौ अवघातादिदोषपरिहारार्थमग्न्युत्तारणं देवतासान्निध्यार्थं च प्राणप्रतिष्ठा करिष्ये।

वास्तुदेवता की मूर्ति को किसी शुद्ध पात्र में आचार्य रखकर घृत से उनका अंजन कर उस मूर्ति के ऊपर निरन्तर पंचामृत की धारा निम्न मन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से प्रदान करावें—

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव॥ १॥

ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव॥ २॥

ॐ उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि। सेमं नो यज्ञं पावकवर्णर्ठ० शिवं कृधि॥ ३॥

ॐ अपामिदं न्ययनर्ठ० समुद्रस्य निवेशनम्। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव॥ ४॥

ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च॥ ५॥

ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२ ॥ इहावह उप यज्ञर्ठ० हविश्च नः॥ ६॥

ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन्नुच उषसौ न भानुना। तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः ॥ ७ ॥

ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव ॥ ८ ॥

ॐ नृषदे वेडप्सुषदे बेड्वर्हिषदे वेड्वनसदे वेट् स्वर्विदेवेट् ॥ ९ ॥

ॐ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानार्ठ० संवत्सरीणमुपभाग मासते। अहुतादो हविषो यज्ञे अस्मिन्त्स्वय पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥ १० ॥

ॐ ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्न्ये ब्रह्मणः पुर एतारो अस्य। येभ्यो नऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या अधि स्नुषु ॥ ११ ॥

ॐ प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव ॥ १२ ॥

आचार्य वास्तुप्रतिमा को यजमान के बाएँ हाथ में रखवाकर उसके दायें हाथ से प्रतिमा को ढँकवावें। पुनः निम्न प्राणसंचार मन्त्रों का उच्चारण कर प्राणप्रतिष्ठा करावें—

ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्याः वास्तुमूर्तेः प्राणा इह प्राणाः। ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्याः वास्तुमूर्तेः जीव इह स्थितः। ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्याः वास्तुमूर्तेः वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वा-घ्राणपाणिपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

आचार्य निम्न प्राणप्रतिष्ठा के मंत्र और श्लोक का उच्चारण करें–

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं द धातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मां हेतिति कश्चन॥

वास्तुदेवता की प्रतिमा को यजमान से कलश के ऊपर स्थापित करवाके आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए वास्तुप्रतिमा का आवाहन और पूजन यजमान से करावें––

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमी वो भवा नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥
'वास्तुपुरुषाय नमः', वास्तुपुरुषमावाहयामि।

आवाहन और पूजन करने के उपरान्त निम्न दो श्लोकों का उच्चारण आचार्य करके यजमान से अर्घ्य प्रदान करावें—

ॐ पूज्योऽसि त्रिषु लोकेषु यज्ञरक्षार्थहेतवे।
त्वद्विना नहि सिध्यन्ति यज्ञदानान्यनेकशः॥ १॥
अयोने भगवन् भर्गललाटस्वेदसम्भव।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वास्तोः स्वामिन्नमोऽस्तु ते॥ २॥

पायसबलिदानम्

आचार्य '**ॐ शिखिने एष पायस बलिर्न मम**' से प्रारम्भ कर '**ॐ अनन्ताय एष पायस बलिर्न मम**' तक के नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से पायसबलि प्रदान करवायें–

१. ॐ शिखिने एष पायस बलिर्न मम। २. ॐ पर्जन्याय एष पायस बलिर्न मम। ३. ॐ जयन्ताय एष पायस बलिर्न मम। ४. ॐ कुलिशायुधाय एष पायस बलिर्न मम। ५. ॐ सूर्याय एष पायस बलिर्न मम। ६. ॐ सत्याय एष पायस बलिर्न मम। ७. ॐ भृशाय एष पायस बलिर्न

मम। ८. ॐ आकाशाय एष पायस बलिर्न मम। ९. ॐ वायवे एष पायस बलिर्न मम। १०. ॐ पूषणे एष पायस बलिर्न मम। ११. ॐ वितथाय एष पायस बलिर्न मम। १२. ॐ गृहक्षताय एष पायस बलिर्न मम। १३. ॐ यमाय एष पायस बलिर्न मम। १४. ॐ गन्धर्वाय एष पायस बलिर्न मम। १५. ॐ भृङ्गराजाय एष पायस बलिर्न मम। १६. ॐ मृगाय एष पायस बलिर्न मम। १७. ॐ पितृभ्यो एष पायस बलिर्न मम। १८. ॐ दौवारिका एष पायस बलिर्न मम। १९. ॐ सुग्रीवाय एष पायस बलिर्न मम। २०. ॐ पुष्पदन्ताय एष पायस बलिर्न मम। २१. ॐ वरुणाय एष पायस बलिर्न मम। २२. ॐ असुराय एष पायस बलिर्न मम। २३. ॐ शेषाय एष पायस बलिर्न मम। २४. ॐ पापाय एष पायस बलिर्न मम। २५. ॐ रोगाय एष पायस बलिर्न मम। २६. ॐ अहये एष पायस बलिर्न मम। २७. ॐ मुख्याय एष पायस बलिर्न मम। २८. ॐ भल्लाटाय एष पायस बलिर्न मम। २९. ॐ सोमाय एष पायस बलिर्न मम। ३०. ॐ सर्पेभ्यो एष पायस बलिर्न मम। ३१. ॐ आदित्यै एष पायस बलिर्न मम। ३२. ॐ दित्यै एष पायस बलिर्न मम। ३३. ॐ अद्भ्यो एष पायस बलिर्न मम। ३४. ॐ आपवत्साय एष पायस बलिर्न मम। ३५. ॐ अर्य्यमणे एष पायस बलिर्न मम। ३६. ॐ सावित्राय एष पायस बलिर्न मम। ३७. ॐ सवित्रे एष पायस बलिर्न मम। ३८. ॐ विवस्वते एष पायस बलिर्न मम। ३९. ॐ वबुधाधिपाय एष पायस बलिर्न मम। ४०. ॐ जयन्ताय एष पायस बलिर्न मम। ४१. ॐ मित्राय एष पायस बलिर्न मम। ४२. ॐ राजयक्ष्मणे एष पायस बलिर्न मम। ४३. ॐ रुद्राय एष पायस बलिर्न मम। ४४. ॐ पृथ्वीधराय एष पायस बलिर्न मम। ४५. ॐ ब्रह्मणे एष पायस बलिर्न मम। ४६. ॐ चरक्यै एष पायस बलिर्न मम। ४७. ॐ विदार्य्यै एष पायस बलिर्न मम। ४८. ॐ पूतनायै एष पायस बलिर्न मम। ४९. ॐ पापराक्षस्यै एष पायस बलिर्न मम। ५०. ॐ स्कन्दाय एष पायस बलिर्न मम। ५१. ॐ अर्य्यमणे एष पायस बलिर्न मम। ५२. ॐ जृम्भकाय एष पायस बलिर्न मम।

५३. ॐ पिलि-पिच्छाय एष पायस बलिर्न मम। ५४. ॐ इन्द्राय एष पायस बलिर्न मम। ५५. ॐ अग्नये एष पायस बलिर्न मम। ५६. ॐ यमाय एष पायस बलिर्न मम। ५७. ॐ निर्ऋतये एष पायस बलिर्न मम। ५८. ॐ वरुणाय एष पायस बलिर्न मम। ५९. ॐ वायवे एष पायस बलिर्न मम। ६०. ॐ सोमाय एष पायस बलिर्न मम। ६१. ॐ ईश्वराय एष पायस बलिर्न मम। ६२. ॐ ब्रह्मणे एष पायस बलिर्न मम। ६३. ॐ अनन्ताय एष पायस बलिर्न मम।

प्रधानपुरुष को आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से बलि प्रदत्त करवावे—

नानापक्वान्नसंयुक्तं नानागन्धसमन्वितम्।
बलिं गृहाण देवेश वास्तुदोषप्रणाशक॥
ॐ वास्तुपुरुषाय एष बलिर्न मम।

निम्न श्लोक का आचार्य उच्चारण करके नारिकेल व सुवर्ण वास्तुपुरुष को यजमान से समर्पित करवावे—

नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वदोषहरो भव।
शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे॥

निम्न श्लोक का आचार्य उच्चारण करके वास्तुदेवता को यजमान से प्रणाम करवावे—

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिश्रद्धाविवर्जितम्।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥

आचार्य और ब्राह्मण निम्न रक्षोघ्नसूक्त व पवमानसूक्त का उच्चारण करते हुए यजमान और उसकी धर्मपत्नी से दुग्धयुक्त जलधारा अलग-अलग कमण्डलु से प्रदान करवावें।

ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजे वामवाँऽइभेन। तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः॥ १॥ ॐ तव भ्रमास आशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः।

तपूर्ठ०ष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसन्दितो विसृज विष्वगुल्काः ॥ २ ॥ ॐ प्रति स्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः। यो नो दूरे अघशर्ठ०सो यो अन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरादधर्षीत् ॥ ३ ॥ ॐ उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्यमित्राऽँओषतात्तिग्महेते। यो नो अरातिर्ठ० समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम् ॥ ४ ॥ ॐ ऊर्ध्वो भव प्रतिविध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने। अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून्। अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि ॥ ५ ॥

ॐ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा। पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥ १ ॥ ॐ अग्न आयुर्ठ०षि पवस आसुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ २ ॥ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥ ३ ॥ ॐ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतुँ२ ॥ रनु ॥ ४ ॥ ॐ यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा। ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥ ५ ॥ ॐ पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा ॥ ६ ॥ ॐ उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। मां पुनीहि विश्वतः ॥ ७ ॥ ॐ वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्व्यस्तन्वो वीतपृष्ठाः। तया मदन्तः सधमादेषु वयर्ठ० स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ८ ॥

मण्डपपूजनम्

यजमानः जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं शनिशान्त्यनुष्ठानाङ्गभूतं मण्डपदेवानां स्थापनं पूजनं करिष्ये।

आचार्य यज्ञमण्डप के सोलह स्तम्भों के देवताओं का पूजन निम्न मन्त्रों व श्लोकों एवं वाक्यों का क्रमानुसार उच्चारण करके यजमान से करवायें—

प्रथम—ततः रक्तवर्णं मध्यवेदीशानस्तम्भे—

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

गन्धादिधि सम्पूज्य नमस्कारः—

वेदाधाराय वेदाय यज्ञगम्याय सूरये।
कमण्डल्वक्षमालास्रुक्स्रुवहस्ताय ते नमः॥

प्रार्थना

कृष्णाजिनाम्बरधर - पद्मासन-चतुर्भुजः।
जटाधारः जगद्धातः प्रसीद कमलोद्भवः॥

ॐ सावित्र्यै०, ॐ वास्तुदेवतायै०, ॐ ब्राह्म्यै०, ॐ गङ्गायै०, इमाह सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता। ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्वि ह्वयामहे॥

स्तम्भशिरसि—ॐ नागमात्रे नमः—ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ शाखाबन्धनानि पूजयेत्—ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ अनेन कृतार्चनेन मध्यवेदीईशकोणस्थितस्तम्भाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्ताम्॥

द्वितीय—ततो मध्यवेदाग्नेयकोणस्तम्भे कृष्णवर्णं विष्णु पूजयेत्—

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥

विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः। विष्णुमावाहयामि। गन्धादिभिः सम्पूज्य नमस्कारः—

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते पुरुषोत्तम।
नमस्ते सर्वलोकात्मन् विष्णवे ते नमो नमः॥

प्रार्थना

देवदेव जगन्नाथ विष्णो यज्ञपते विभो।
पाहि दुःखाम्बुधेरस्मान्भक्तानुग्रहकारक॥

ॐ लक्ष्म्यै०, ॐ आदित्यै०, ॐ वैष्णव्यै०, ॐ वसुदायै०। सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण०॥ स्तम्भशिरसि—ॐ नागमात्रे नमः। ॐ आयङ्गौः। ॐ यतोयतः॥

तृतीय—नैऋत्यकोणेस्तम्भं श्वेतं शंकरं पूजयेत्—

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥

शम्भो इहागच्छेह तिष्ठ शम्भवे नमः शम्भुं० सम्पूज्य नमस्कारः—

वृषवाहनाय देवाय पार्वतीपतये नमः।
वरदायार्द्धकायाय नमश्चन्द्रार्द्धमौलिने॥

प्रार्थना

पञ्चवक्त्र-वृषारूढ-त्रिलोचन सदाशिव।
चन्द्रमौले महादेव मम स्वस्तिकरो भव॥

ॐ गौर्यै०, ॐ माहेश्वर्यै०, ॐ शोभनायै०, ॐ भद्रायै० इति सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण०॥ स्तम्भशिरसि—नागमात्रे। ॐ आयङ्गौ०। ॐ अतस्त्वां पूजयाम्येव नित्यं मे वरदो भव॥ ॐ यतोयतः॥

चतुर्थ—वायव्यकोणे पीतस्तम्भे इन्द्रं पूजयेत्—

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

ॐ भू० इन्द्रेहागच्छे तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमा० गन्धाक्षत पुष्पाणि सम्पूज्य नमस्कारः—

पुरन्दर नमस्तेऽस्तु व्रजहस्त नमोऽस्तु ते।
शचीपते नमस्तुभ्यं नमस्ते मेघवाहन॥

प्रार्थना

देवराज गजारूढ पुरन्दर शतक्रतो।
वज्रहस्त महाबाहो वाञ्छितार्थप्रदो भव॥

ॐ इन्द्राण्यै०, ॐ आनन्दायै०, ॐ विभूत्यै०, ॐ अदित्यै० सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण०॥ स्तम्भशिरसि—नागमात्रे नमः। ॐ आयङ्गौ०। ॐ यतोयतः०॥

पञ्चम्—ततो बाह्यै ईशानाद्वारभ्यद्वादशस्तम्भान् पूजयेत्। ईशानेरक्तस्तम्भे सूर्यम्—

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥

सूर्येहागच्छेहतिष्ठ सूर्याय०, सूर्यमा०। सम्पूज्य नमस्कारः—

ॐ नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरिञ्चिनारायणशङ्करात्मने॥

प्रार्थना

पद्महस्त रथारूढ पद्मासन सुमङ्गल।
क्षमाङ्कुरु दयालो त्वं ग्रहराज नमोऽस्तु ते॥

ॐ सौर्य्यै०, ॐ भूत्यै०, ॐ सावित्र्यै०, ॐ मङ्गलायै०। सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण०॥ स्तम्भशिरसि—नागमात्रे नमः। ॐ आयङ्गौ०। ॐ यतोयतः०॥

षष्ठम्—ईशानपूर्वयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे गणेश—

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भ धम्॥

गणपते इहागच्छेह तिष्ठ गणपते नमः, गणःपतिमा०। सम्पूज्य च नमस्कारः—

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः॥

प्रार्थना

लम्बोदर महाकाय सततं मोदकप्रियः।
गौरीसुत गणेश त्वं विघ्नराज प्रसीद मे॥

ॐ सरस्वत्यै०, ॐ विघ्नहराय०, ॐ जयायै० सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण०॥ स्तम्भशिरसि—नागमात्रे नमः। ॐ आयङ्गौ०। ॐ यतोयतः०॥

सप्तम्—पूर्वाग्नेययोर्मध्ये कृष्णवर्णस्तम्भे यमम्—

ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु। पृथिव्याः सꣳ स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि॥

यमेहागच्छेह तिष्ठ यमाय नमः, यममां सम्पूज्य नमस्कारः—

ईषत्पीन नमस्तेऽस्तु दण्डहस्त नमोऽस्तु ते।
महिषस्थ नमस्तेऽस्तु धर्मराज नमोऽस्तु ते॥

प्रार्थना

धर्मराज महाकाय दक्षिणाधिपते यम।
रक्तेक्षण महाबाहो मम पीडां निवारय॥

ॐ सन्ध्यायै०, ॐ आञ्जन्यै०, ॐ क्रूरायै०, ॐ नियन्त्रै०, सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण०॥ स्तम्भशिरसि—ॐ नागमात्रे नमः। ॐ आयङ्गौः। ॐ यतोयतः॥

अष्टम्—आग्नेयकोणे कृष्णवर्णस्तम्भे नागराजम्

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

ॐ भू० नागराजेहागच्छेह तिष्ठ नागराजाय०, नागराजमा० सम्पूज्य नमस्कारः—

नमः खेटकहस्तेभ्यो त्रिभोगेभ्यो नमो नमः।
नमो भीषणदेवेभ्यः खड्गधृग्भ्यो नमो नमः॥

प्रार्थना

खड्गखेटधराः सर्प्पाः फणामण्डलमण्डिताः।
एकभोगाः साक्षश्रोता वरदाः सन्तु मे सदा॥

ॐ मध्यसन्ध्यायै०, ॐ घरायै०, ॐ पद्मायै०, ॐ महापद्मायै०, सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण०॥ स्तम्भशिरसि—ॐ नागमात्रे नमः। ॐ आयङ्गौः। ॐ यतोयतः॥

नवम्—अग्निदक्षिणयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे स्कन्दम्—

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥

ॐ भू० स्कन्देहागच्छेह तिष्ठ स्कन्दाय नमः, स्कन्दमा०। सम्पूज्य नमस्कारः—

नमः स्कन्दाय शैवाय घण्टाकुक्कुटधारिणे।
पताकाशक्तिहस्ताय षण्मुखाय च ते नमः॥

प्रार्थना

मयूरवाहनस्कन्द गौरीसुत षडानन।
कार्तिकेय महाबाहो दयां कुरु दयानिधे॥

ॐ पश्चिमसन्ध्यायै०, सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण०॥ स्तम्भशिरसि—ॐ नागमात्रे नमः। ॐ आयङ्गौः। ॐ यतोयतः॥

दशम्—दक्षिणनैर्ऋत्ययोर्मध्ये धूम्रस्तम्भे वायुम्—

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये॥

ॐ भू० वायो इहागच्छेह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमा० सम्पूज्य नमस्कारः—

नमो धरणिपृष्ठस्थ समीरण नमोस्तु ते।
धूम्रवर्ण नमस्तेऽस्तु शीघ्रगामिन्नमोस्तु ते॥

प्रार्थना

धावन्धरणिपृष्ठस्थ ध्वजहस्त समीरण।
दण्डहस्त मृगारूढ वरं देहि वरप्रद॥

ॐ वायव्यै०, ॐ गायत्र्यै०, ॐ मध्यसन्ध्यायै०। सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण०॥ स्तम्भशिरसि—ॐ नागमात्रे नमः। ॐ आयङ्गौः। ॐ यतोयतः॥

एकादश—नैर्ऋत्ये पीतस्तम्भे सोमम्—

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥

ॐ भू० सोमेइहागच्छेह तिष्ठ सोमाय०, सोममा०। सम्पूज्य नमस्कारः—

अत्रिपुत्र नमस्तेऽस्तु नमस्ते शशिलाञ्छन।
श्वेताम्बर नमस्तेऽस्तु ताराधिप नमोऽस्तु ते॥

प्रार्थना

अत्रिपुत्र निशानाथ द्विजराज सुधाकर।
अश्वारूढ गदाहस्त वरं देहि वरप्रद।

ॐ सावित्र्यै०, ॐ अमृतकलायै०, ॐ पश्चिमसन्ध्यायै०। सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण०॥ स्तम्भशिरसि—ॐ नागमात्रे नमः। ॐ आयङ्गौः। ॐ यतोयतः॥

द्वादश—नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे वरुणम्—

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥

ॐ भू० वरुणेहागच्छेह तिष्ठ वरुणाय०, वरुणमा०। सम्पूज्य नमस्कारः—

वरुणाय नमस्तेऽस्तु नमः स्फटिकदीप्तये।
नमस्ते श्वेतहाराय जलेशाय नमो नमः॥

प्रार्थना

शङ्खस्फटिकवर्णाभ श्वेतहाराम्बरावृत।
पाशहस्त महाबाहो दयां कुरु दयानिधे॥

ॐ वारुण्यै०, ॐ पाशधारिण्यै०, ॐ वृहत्यै०। सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण०॥ स्तम्भशिरसि—ॐ नागमात्रे नमः। ॐ आयङ्गौः। ॐ यतोयतः॥

त्रयोदश—पश्चिमवायव्यान्तराले श्वेतस्तम्भे अष्टवसून्—

ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वाऽऽदित्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम्। वयन्तु वयोऽक्तꣳ०

रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ वशापृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह। चक्षुष्पा अग्नेऽसि चक्षुर्म्मे पाहि॥

ॐ भू० वसव इहागच्छतेह तिष्ठति वसुभ्यो नमः, वसुमावा०। सम्पूज्य नमस्कारः—

नमस्करोमि देवेशान्नानावस्त्रविराजितान्।
शुद्धस्फटिकसंकाशान्दिव्यायुधधरान्वसून्॥

प्रार्थना

दिव्यवस्त्रा दिव्यदेहा पुष्पमालाविभूषिताः।
वसवोऽष्टौ महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा॥

ॐ विनतायै०, ॐ अणिमायै०, ॐ भूत्यै०, ॐ गरिमायै०। सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण०॥ स्तम्भशिरसि—ॐ नागमात्रे नमः। ॐ आयङ्गौः। ॐ यतोयतः॥

चतुर्थदश—वायव्ये पीतस्तम्भे धनदम्—

ॐ सोमो धेनुर्ठ० सोमो अर्वन्तमाशुर्ठ० सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्यर्ठ० सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै॥

ॐ भू० धनदेहागच्छेह तिष्ठ धनदाय नमः, धनदमा०। सम्पूज्य नमस्कारः—

यक्षराज नमस्तेऽस्तु नमस्ते नरयानग।
पीताम्बर नमस्तेऽस्तु गदापणे नमोऽस्तु ते॥

प्रार्थना

दिव्यदेह धनाध्यक्ष पीताम्बर गदाधर।
उत्तरेश महाबाहो वाञ्छितार्थफलप्रद॥

सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण०॥ स्तम्भशिरसि—ॐ नागमात्रे नमः। ॐ आयङ्गौः। ॐ यतोयतः॥

पञ्चदश—उत्तरवायव्ययोरन्तराले पीतस्तम्भे गुरुम्—

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

ॐ भू० बृहस्पते इहागच्छेह तिष्ठ, बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमा०। सम्पूज्य नमस्कारः—

ब्रह्मपुत्र नमस्तेऽस्तु पीतध्वज नमोऽस्तु ते।
पूजितोऽसि यथाशक्त्या दण्डहस्त बृहस्पते।
क्रूरग्रहाभिभूतस्य शान्तिं देवगुरो कुरु॥

ॐ पौर्णमास्यै०, ॐ सावित्र्यै०। सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण०॥ स्तम्भशिरसि—ॐ नागमात्रे नमः। ॐ आयङ्गौः। ॐ यतोयतः॥

पोडश—उत्तरेशानयोर्मध्ये रक्तस्तम्भे विश्वकर्माणम्—

ॐ विश्वकर्मन्हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्॥

ॐ भू० विश्वकर्मन्निहागच्छेह तिष्ठ विश्वकर्मणे नमः, विश्वकर्माणमा०। सम्पूज्य नमस्कारः—

नमामि विश्वकर्माणं द्विभुजं सर्वदर्शितम्।
त्रैलोक्यसूत्रकर्तारं महाबलपराक्रमम्॥

प्रार्थना

प्रसीद विश्वकर्मस्त्वं शिल्पशास्त्रविशारद।
सदण्डपाणे द्विभुज तेजोमूर्तिधर प्रभो॥

ॐ सिनीवाल्यै०, ॐ सावित्र्यै०, ॐ वास्तुदेवता०। सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्—

ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता। ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्वि ह्वयामहे॥

एतावत्कर्म मण्डपान्तः स्थित्वा कर्तव्यमिति प्रतिष्ठासारिणी इति मण्डपे षोडशस्तम्भपूजा रुद्रकल्पद्रुमप्रतिष्ठाभास्कराद्युक्ता। स्तम्भशिरसि वलिकासु—ॐ नागमात्रे नमः।

सर्वेषां नागराजानां पातालतलवासिनाम्।
नागमातर आयान्तु भवन्तु सगणाः स्थिराः॥

ॐ आयङ्गौः० इति सम्पूज्य नमस्कारः—

नमोऽस्तु वलिकाबन्ध सुदृढत्वं शुभास्पदम्।
एनं महामण्डपन्तु रक्ष रक्ष निरन्तरम्॥

ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥

प्रार्थना

शेषादिनागराजानः समस्ता मम मण्डपे।
पूजाङ्गृह्णन्तु सततं प्रसीदन्तु ममोपरि॥

ततो भूमिस्पर्शः—ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳ० ह पृथिवीं मा हिꣳ० सीः॥

भूमिभूमिमवगान्माता यथा मातरमप्यगात्।
भूयास्म पुत्रैः पशुभिर्यो नो द्वेष्टि स भिद्यताम्॥

सपत्नीक यजमान दोनों हाथों में रक्तवर्ण के पुष्पों को लेकर निम्न श्लोक का उच्चारण कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें-

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज॥

ॐ नृसिंह उग्ररूप ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा। **ॐ नमः शिवाय**—इन नामों का यजमान उच्चारण करके पुष्पाञ्जलि को मण्डप की भूमि में छोड़े।

तोरणपूजनम्

यजमान से आचमन व प्राणायाम करवाने के उपरान्त आचार्य देशकाल का उससे स्मरण करवाते हुए निम्न संकल्प करावें—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणि पूर्वादितोरणपूजाङ्करिष्ये।**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से मौलीबन्धन करावें—

सुदृढं तोरण पूर्वे अश्वत्थं काञ्चनप्रभम्।
रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुशोभितम्॥

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ऋग्वेदाधिष्ठिताय सुदृढतोरणाय नमः।

उपरोक्त मन्त्र और वाक्य का आचार्य उच्चारण करके गन्धादि के द्वारा यजमान से पूजा करवाके महात्रिशूल के श्रृंगों (नोंक) पर प्रदक्षिणा क्रम से निम्न नाममन्त्रों द्वारा पूजन करावें—**ॐ इन्द्रराहुभ्यां नमः। ॐ धात्रे नमः। ॐ भगबृहस्पतिभ्यां नमः।** आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव॥

वहाँ कलशस्थापनविधि से कलश की प्रतिष्ठा करवाके आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण यजमान से करवाके पूजन करवायें—**ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ अध्वराय नमः। ॐ मध्येमेधापतये नमः।** यजमान को दक्षिण की ओर ले जाकर आचमन करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके आचार्य मौलीबन्धन करावें—

औदुम्बरं च विकटं याम्ये तोरणमुत्तमम्।
रक्षार्थञ्चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुखाय नः॥

ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्त्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशर्ठ० सो ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्विर्यजमानस्य पशून्पाहि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सुभद्रतोरणाय नमः, सुभद्रतोरणमावाहयामिस्था०। ॐ भूर्भुवः स्वः विकटतोरणाय नमः, विकटतोरणमावाहयामिस्थापयामि।

यहाँ भी त्रिशूल के नोंक पर प्रदक्षिण क्रम से आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजन करावें—**ॐ सूर्यपूषाभ्यां, सूर्यपूषाणौ। मध्येमित्राय०। ॐ वरुणाङ्गारकाभ्यां०।** आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव॥

वहाँ पर भी पूर्वविधि से कलश स्थापित करवाके कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण यजमान से करवाते हुए आचार्य पूजन करावें—**ॐ पर्जन्याय नमः। ॐ अशोकाय नमः। मध्ये—ॐ धरायै नमः।** यजमान को पश्चिम दिशा की ओर ले जाकर आचमन करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके आचार्य उससे मौलीबन्धन करावें—

प्लाक्षं च पश्चिमे भीमं तोरणं स्वर्णसन्निभं।
रक्षार्थञ्चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुखाय नः॥

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि॥ ॐ सुभीमतोरणाय नमः। ॐ सुकर्मतोरणाय नमः।

इस प्रकार से पूजन करवाके वहाँ भी त्रिशूल के नोंक पर प्रदक्षिण क्रम से आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से पूजन करावें—**ॐ अर्यमशुक्राभ्यां नमः। अर्यमशुक्रौ०। मध्ये—ॐ अंशवे नमः। अंशुम्०। ॐ विवस्वद्बुधाभ्यां नमः। विवस्वद्बुधौ०।**

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव॥

आचार्य वहाँ भी एक कलश यजमान से स्थापित करवाके कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करवाके पूजन करावें—**ॐ अनिलाय०। ॐ अनलाय०। मध्ये—ॐ वाक्पतये नमः।** यजमान को उत्तर दिशा की ओर ले जाकर आचमन करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके आचार्य उससे मौलीबन्धन करावें—

न्यग्रोधतोरणमिव उत्तरे च शशिप्रभम्।
रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुशोभितम्॥

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः॥ ॐ सुहोत्रतोरणाय०। ॐ सुप्रभतोरणाय नमः।

पूजन करवाके आचार्य वहाँ भी त्रिशूल के नोक पर प्रदक्षिण क्रम से निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करवाके यजमान से पूजन करावें—**ॐ त्वष्ट्रसोमाभ्यां नमः। ॐ सवितृकेतुभ्यां नमः। ॐ विष्णुशनिभ्यां नमः।** निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव॥

आचार्य वहाँ भी एक कलश यजमान से स्थापित करवाके कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करवाके उससे पूजन करवावें—**ॐ प्रत्यूषाय नमः। ॐ प्रभासाय नमः। मध्ये—ॐ विघ्नेशाय नमः।** आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

तोरणाधिष्ठिता देवाः पूजिता भक्तिमार्गतः।
ते सर्वे मम यज्ञेऽस्मिन् रक्षां कुर्वन्तु वः सदा॥

द्वारपूजनम्

आचार्य पूरब की ओर यजमान को ले जाकर शुद्ध आसन पर बैठाकर उससे आचमन एवं प्राणायाम करवाके निम्न संकल्प करावें—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणि पूर्वादिद्वारपूजाङ्करिष्ये।**

आयाहि वज्रसङ्घातपूर्वद्वारकृपाधिप।
ऋग्वेदाधिपते तुभ्यं सुशोभन नमोऽस्तु ते॥

आचार्य दो कलशों को समीप में ही यजमान से स्थापित करवाके, पहले दक्षिण कलश के ऊपर-'**ॐ प्रशान्ताय नमः**' दूसरे वामकलश के ऊपर—'**ॐ शिशिराय नमः**' उसके बाद मध्य में तीसरे कलश के ऊपर—'**ॐ ऐरावताय नमः**' का उच्चारण करवाके गन्धादि से पूजन करावें। तदुपरान्त निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्पपल्लवसंयुतम्।
सरत्नं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन्कलशद्वयम्॥

तदुपरान्त आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ द्वारश्रियै नमः॥ १॥ इति ऊर्ध्वं अधःदेहल्यै नमः॥ २॥ दक्षिण-शाखायाम्—ॐ गणेशाय नमः॥ ३॥ वामशाखायाम्—ॐ स्कन्दाय नमः॥ ४॥ द्वारकलशयोः—ॐ गंगायै नमः॥ १॥ ॐ यमुनायै नमः॥ २॥** पुनः दोनों ऋग्वेदियों की पूजा इस मन्त्र से करें—

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥

ॐ कर्मनिष्ठा तपोयुक्ता ब्राह्मणाः वेदपारगाः।
जपार्थं चैव सूक्तानां यज्ञे भवतऋत्विजौ॥

मध्य कलश के ऊपर—

एह्येहि सर्वामरसिद्धिसाद्ध्यैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश।
संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरन्नो भगवन्नमस्ते॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा

धात्विन्द्रः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

आचार्य निम्न मन्त्र और श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से पीतध्वज एवं पताका का स्पर्श करवावें—

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनो निमिषऽ एकवीरः शतꣳ सेना अजयत्साकमिन्द्रः॥

इमां पताकां पितां च ध्वजं पीतं सुशोभम्।
आलभामिसुरेशाय शचीप्रित्यै नमो नमः॥

आचार्य ध्वजपताका के मध्य में निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजन करावें—**ॐ हेतुकराय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः।** आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः।
शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलयः

माषभक्तबलिं देव गृहाणेन्द्रः शचीपतेः।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ नमो भगवते इन्द्राय सकलसुराणामधिपतये सवाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय तत्पार्षदेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो इन्द्र स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयतां न मम।

आचार्य अग्निकोण में यजमान को लाकर पहले की तरह स्थापन करवाके तथा आचमन करवाके कलश के ऊपर निम्न वाक्यों का उच्चारण करके पूजन करावें—**ॐ पुण्डरीकाय नमः। ॐ अमृताय नमः।**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके उससे नमस्कार करावें—

एह्येहि सर्वामरहव्यवाह मुनिप्रवर्य्यैरभितोऽभिजुष्टः।
तेजोवता लोकगणेन सार्द्धं ममाध्वरं पाहि कवे नमस्ते॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके कर्ता से प्रार्थना करवायें—

सप्तार्चिषं च बिभ्राणमक्षमालां कमण्डलुं।
ज्वालमालां कुरु रक्तं शक्तिहस्तमजासनं॥

ॐ त्वन्नो अग्ने तव देवपायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तो कस्य तनये गवामस्य निमेषठं० रक्षमाणस्तव व्रते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

उपरोक्त मन्त्र और वाक्य से पूजा करवाके ध्वजपताका का स्पर्श यजमान से करवाके निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण आचार्य करें—

पताकामग्नये रक्तां गन्धमाल्यादिभूषिताम्।
स्वाहायुक्ताय देवाय ह्यालभामि हविर्भुजे॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ२॥ आसादयादिह॥

आचार्य ध्वज और पताका की निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करवाके यजमान से पूजा करावें—**ॐ कुमुदाय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः।** आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके कर्ता से नमस्कार करावें—

आग्नेयपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः।
धूम्रकेतुरजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलयः

इमं माषबलिं देव गृहाणाग्ने हुताशन।
यज्ञसरक्षाणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अग्ने स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन अग्निः साङ्गः सपरिवारः सशक्तिकः प्रीयताम्।

आचार्य यजमान को दक्षिण की ओर ले जाकर आचमन करावें और उसी से द्वारकलशों को स्थापित करावें तथा पूजा करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके उससे नमस्कार करावें—

नमस्ते धर्मराजाय त्रेतायुगाधिपाय च।
यजुर्वेदादिदेवाय सुभद्रं द्वारदक्षिणे॥

आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाम वाक्यों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ पर्जन्याय नमः। ॐ अशोकाय नमः।** मध्य कलश पर—**ॐ वामनाख्यदिग्गजाय नमः।** आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें—

सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्पपल्वसंयुतम्।
सरत्नं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन्कलशद्वयम्॥

ततो द्वारोर्ध्वे—ॐ द्वारस्यै नमः। अधः—ॐ देहल्यै नमः। द्वारशाखयोः—ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। द्वारकलशयोः—ॐ गोदावर्य्यै नमः। ॐ कृष्णायै नमः।

उपरोक्त नाममन्त्रों से पूजा करवावें। पुनः आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें—

वैवस्वत महादेव नमस्ते धर्मसाक्षिक।
शिवाज्ञयाऽपिहितो देवः दिशः रक्ष भवानिह॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके दोनों यजुर्वेदियों की पूजा यजमान से करावें—

ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्त्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशर्ठ० सो ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वियर्जमानस्य पशून्पाहि॥

उसके बाद मध्यकलश के ऊपर—

एह्येहि वैवस्वत धर्मराजः सर्वामैरर्चित धर्ममूर्ते।
शुभाशुभानन्दशुचामधीश शिवाय नः पाहि मखं नमस्ते॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः यमं साङ्गं सपरिवारमावाहयामि।

आचार्य उपरोक्त मन्त्र और वाक्य का उच्चारण करके ध्वजपताका का स्पर्श कर्ता से करवाके निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करें—

कृष्णवर्णां पताकाञ्च कृष्णवर्णध्वजं तथा।
अंतकायालभामीह क्रतुकर्मणि साक्षिणे॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥

इमां पताकां रम्यां च ध्वजं माल्यादिभूषितम्।
यमदेव गृहाण त्वं प्रसीद करुणाकर॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके कर्ता से प्रार्थना करवायें—

यमस्तु महिषारूढो दण्डहस्तो महाबलः।
धर्मसाक्षी विशुद्धात्मा तस्मैः नित्यं नमो नमः॥

बलयः

इमं माषबलिं देव गृहाणान्तक वै यम।
यज्ञ सरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो यम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन यमः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम।

नैर्ऋत्यकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके कलश की स्थापना करवाके उसके ऊपर निर्ऋति का आवाहन निम्न मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

निर्ऋत्तिं खड्गहस्तं च सर्वलोकैकपावनम्।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजयेम् प्रतिगृह्यताम्॥

आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ कुमुदाय नमः। ॐ दुर्ज्जयाय नमः।**

कलश की पूजा करके—

एह्येहि रक्षोगणनायकस्त्वं विशालवेतालपिशाचसङ्घैः।
ममाध्वं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वर त्वं भगवन्नमस्ते॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतिं साङ्गं सपरिवारं सा० आवाहयामि।

आचार्य उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण करके कर्ता से पूजा करवाके ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

पताकानिर्ऋतिश्चैव नीलवर्णं ध्वजं तथा।
पिशाचगणनाथाय आलभामि ममाध्वरे॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥

आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से ध्वजपताका की पूजा करावें—**ॐ कुमुदाय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः।** आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके उससे प्रार्थना करवायें—

सर्वप्रेताधिपो देवो निर्ऋतिर्नीलविग्रहः।
करे खड्गधारौ नित्यं निर्ऋतये नमो नमः॥

बलयः

इमं माषबलिं यक्षो गृहाण निर्ऋतिप्रभो।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो निर्ऋते बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो

भव। अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम।

पश्चिम दिशा में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके पुनः कलश की स्थापना व पूजा करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके प्रार्थना करावें—

नमोऽस्तु कामरूपाय पश्चिमद्वारश्रिताय च।
सामवेदाधिपस्त्वं हि नाम्ना कल्याणकारक॥

आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ भूतसञ्जीवनाय नमः। ॐ अमृताय नमः। मध्यमकलशे—ॐ अनन्ताख्यदिग्गजाय नमः। द्वारोर्ध्वं—द्वारश्रियै नमः। अधः—देहल्यै नमः। द्वारशाखयोः—ॐ नन्दिन्यै नमः। ॐ चण्डायै नमः। द्वारकलशयोः—ॐ रेवायै नमः। ॐ ताप्यै नमः।**

आचार्य दो सामवेदियों की पूजा निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से करावें—**ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि॥**

इस प्रकार पूजा करके मध्य कलश में—

एह्येहि यादोगणवारिधीनां गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभिः।
विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० स मा न आयुः प्रमोषीः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणं साङ्गं सपरिवारं आवाहयामि ॐ वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः।

आचार्य ध्वजपताका का स्पर्श यजमान से करवाके निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करें—

श्वेतवर्णां पताकां च ध्वजं श्वेतमयं शुभम्।
वरुणाय जलेशाय ह्यालभामि सुखाश्रये॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमर्ठ० श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके कर्ता से प्रार्थना करावें—

पाशहस्तस्तु वरुणः साम्भसाम्पतिरीश्वरः।
शमन्नयाप्सु विघ्नानि नमस्ते पाशपाणये॥

बलयः

इमं माषबलिं देवः गृहाण जलधीश्वर।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वरुण बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन नमो भगवते सकलजनानामधिपतये न मम।

वायव्यकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके कलश की स्थापना करावें। आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके गन्धादि से पूजन करावें—
ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ सिद्धार्थाय नमः।

कलश के ऊपर—

एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय मृगाधिरूढः सह सिद्धसङ्घैः।
प्राणाधिपः कालकवेः सहाय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुं आवाहयामि स्थापयामि।

आचार्य ध्वजपताका का स्पर्श यजमान से आगे दिए हुए श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

पताकां वायवे धूम्रां धूम्रवर्णध्वजं तथा।
आलभाम्यनुरूपाय प्राणदाय हिताय च॥

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान् सोमपीतये॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें—

अनाकारो महौजाश्च सर्वगन्धवः प्रभु।
तस्मै पूज्याय जगतो वायवेऽहं नमामि च॥

बलयः

माषभक्तबलिं वायो मया दत्तं गृहाण भो।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वायु बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन नमो भगवते वायवे सकलप्राणानामधिपतये प्रीयतां न मम।

आचार्य उत्तर दिशा में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके दोनों द्वारकलशों की स्थापना व पूजा करवाने के उपरान्त निम्न श्लोक का उच्चारण करके नमस्कार करावें—

नमस्ते दिव्यरूपत्वमथर्वाधिपते प्रभो।
कलावधिपतिर्नाम्ना मङ्गलश्चोत्तराननः॥

आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान ले पूजा करावें—ॐ धनदाय नमः। ॐ श्रीप्रदाय नमः। मध्यकलशे सार्वभौम-दिग्गजाय नमः। सम्पूज्य द्वारोर्द्ध्वे—ॐ द्वारश्रियै नमः। अधः—ॐ देहल्यै नमः। द्वारशाखयोः—ॐ महाकालाय नमः। ॐ भृङ्गिणे नमः। द्वारकलशयोः—ॐ नर्मदायै नमः। ॐ ताप्यै नमः।

आचार्य इस मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से दोनों अथर्ववेदियों की पूजा करावें—ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः॥

मध्य कलश में—

एह्येहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्वं नक्षत्रगणेन सार्धम्।
सर्वौषधिःभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

ॐ वयर्ठ७ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत। प्रजावन्तः सचेमाहि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः। सोममावाहयामि स्थापयामि।

आचार्य कर्ता से ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

हरितवर्णां पताकां च हरिद्वर्णमयं ध्वजम्।
कुबेराय लभाम्येव पूजये च सदार्थिना॥

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके कर्ता से प्रार्थना करवायें--

गौरोपमपुमान्स्थूलः सर्वौषधिरसादयः।
नक्षत्राधिपतिः सोमस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलयः

इमं माषभक्तबलिं देव गृहाण त्वं धनप्रदः।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो सोम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन नमो भगवते सोमाय सकलकोशाधिपतये प्रीयतां न मम।

आचार्य ईशानकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके कलश स्थापित करावें—**ॐ सुप्रतीकाय नमः। ॐ मङ्गलाय नमः।**

पूजन करवाके कलश के ऊपर—

एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलकपालखट्वाङ्गधरेण सार्धम्।
लोकेश भूतेश्वर यज्ञसिध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥

ॐ ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

आचार्य यजमान से ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां गन्धभूषिताम्।
आलभामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें—

सर्वाधिपो महादेव ईशानः शुक्ल ईश्वरः।
शूलपाणिर्विरूपाक्षः तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलयः

इमं माषबलिं देव गृहाणेशानशङ्करः।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो ईशानं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन ईशानः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम।

ईशानकोण और पूर्व दिशा के मध्य में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके उससे कलश को स्थापित करवाके कलश के ऊपर—

एह्येहि विष्ण्वाधिपते सुरेन्द्रलोकेन सार्द्धं पितृदेवताभिः।
सर्वस्य धातास्यमितप्रभावो विशाध्वरन्नः सततं शिवाय॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शर्ठ०सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणं मावाहयामि स्थापयामि।

आचार्य यजमान से ध्वजपताका का स्पर्श आगे दिए हुए श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

पद्मवर्णां पताकां च पद्मवर्णध्वजं तथा।
आलभामि सुरेशाय ब्रह्मणेनन्तशक्तये॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें--

पद्मयोनिश्चतुर्मूर्त्ति वेदव्यासपितामहः।
यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्रस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलयः

इमं माषबलिं ब्रह्मन् गृहाण कमलासन।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो ब्रह्मन् बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यायुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन नमो भगवते ब्रह्मणे सकलवेदशास्त्रतत्वज्ञानाधिपतये प्रीयतां न मम।

आचार्य नैर्ऋत्यकोण और पश्चिम दिशा के मध्य में कर्ता को ले जाकर आचमन करवाके कलश की स्थापना करावें तथा इस नाममन्त्र से वरुण की पूजा करावें— **ॐ वरुणाय नमः।** इस प्रकार से पूजा करवाके पुनः कलश के ऊपर—

एह्येहि पातालधरामरेन्द्रनागाङ्गनाकिन्नरगीयमान।
यक्षोरगेन्द्रामरलोकसङ्घैरनन्त रक्षाध्वरमस्मदीयम्॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छानः शर्म सप्रथाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः। अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

आचार्य यजमान से ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

मेघवर्णां पताकां च मेघवर्णध्वजं तथा।
आलभामि ह्यनन्ताय धरणीधारिणे नमः॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें—

घनवर्णां पताकेमां ध्वजं गन्धविभूषितम्।
स्थापयामि प्रसन्नाय अनन्ताय नमो नमः॥

बलयः

इमं माषबलिं शेष गृहाणानन्तपन्नग।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अनन्त बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यायुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयतां न मम।

आचार्य ईशानकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवावें और उससे महाध्वज का पूजन इस प्रकार से करावें। अत्यन्त ऊँचा दण्ड हो दस हाथ या सोलह

हाथ लम्बा महाध्वज हो, विचित्र वर्ण हो, किनारे पर छोटे-छोटे घुँघरू लगे हों, तीन हाथ चौड़ा, सात हाथ लम्बा अथवा पाँच हाथ चौड़ा, दस हाथ लम्बा महाध्वज बनावें।

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढा- नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

ततो मण्डपषोडशवलिकासु—ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। वंशे— ॐ किन्नरेभ्यो नमः। मण्डपपृष्ठदेशे—ॐ पन्नगेभ्यो नमः।

उपरोक्त मन्त्र व नाममन्त्रों से पूजा करवाके आचार्य निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से उसका स्पर्श करावें—

इमं विचित्रवर्णन्तु महाध्वजविनिर्मितम्।
महाध्वजञ्चालभामि महेन्द्राय सुप्रीतये॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

अमुं महाध्वजं चित्रं सर्वविघ्नविनाशकम्।
महामण्डपमध्ये तु स्थापयामि सुरार्चने॥

ॐ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतार्ठ० शर्ध उग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां धोषो देवानां जयतामुदस्थात्॥

अनया पूजया इन्द्रः प्रीयताम्।

इसके पश्चात् सोलह वल्लियों पर—**ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।** बाँसों पर—**ॐ किन्नरेभ्यो नमः।** मण्डप पृष्ठ पर—**ॐ पन्नगेभ्यो नमः।** (सम्पूज्य आलभेत्) का उच्चारण करवाके पूजा करवाके पुनः उसके पश्चात् मण्डप से बाहर पूर्व में लेप करवाके भूमि पर यजमान को बैठाकर आचार्य वहाँ अष्टदल बनावें। इन्हीं आठों दलों पर आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करवायें—

त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च।
ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु तानैव॥ १॥
देवदानवगन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च॥ २॥
सर्वे ममाधरे रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विताः।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च क्षेत्रपालौ गणैः सह।
रक्षन्तु मण्डपं सर्वे घ्नन्तु रक्षांसि सर्वतः॥ ३॥

आचार्य अक्षत पुञ्जों पर पूर्व आदि क्रम से निम्न वाक्यों का उच्चारण करके यजमान से आवाहन करावें—

ॐ त्रैलोक्यस्थैभ्यः स्थावरेभ्यो नमः त्रैलोक्य स्थावरानावाहयामि। ॐ त्रैलोक्य स्थरेभ्यश्चरेभ्यो नमः त्रैलोक्य चरानावाहयामि। ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं मावाहयामि। ॐ विष्णवे नमः विष्णुं मावाहयामि। ॐ शिवाय नमः शिवमावाहयामि। ॐ देवेभ्यो नमः देवानावाहयामि। ॐ दानवेभ्यो नमः दानवानावाहयामि। ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः गन्धर्वानावाहयामि। ॐ यक्षेभ्यो नमः यक्षनावाहयामि। ॐ राक्षसेभ्यो नमः राक्षसानावाहयामि। ॐ पन्नगेभ्यो नमः पन्नगानावाहयामि। ॐ ऋषिभ्यो नमः ऋषीनावाहयामि। ॐ मुनिभ्यो नमः मुनिनावाहयामि। ॐ गोभ्यो नमः गावः आवाहयामि। ॐ देवमातृभ्यो नमः देवमातृ आवाहयामि।

उपर्युक्त दिए गए नाममन्त्रों से आवाहन व पूजन यजमान से करवाने के उपरान्त आचार्य इन्द्रादि दशलोकपालों के लिए घृत व भात की बलि निम्न वाक्य का उच्चारण करके उससे प्रदान करें—**ॐ नमो भगवते इन्द्राय पूर्वदिग्वासिभ्यः इन्द्रपार्षदेभ्योदिगीशमातृगणक्षेत्रपालादिभ्योबलिरयमुपतिष्ठतु स्वाहा।**

यजमान अपने दोनों हाथों में लाल पुष्पों को लेवें और आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए उससे पुष्पाञ्जलि प्रदान करावें—

नन्दे नन्दय वासिष्ठे वसुभिः प्रजया सह।
जय भार्गवदायादे प्रजानां विजयावह॥ १॥

पूर्णे गिरिशदायादे पूर्णकर्म कुरुष्व माम्।
भद्रे काश्यपिदायादे कुरु भद्रां मतिं मम॥ २॥
सर्वबीजौषधियुक्ते सर्वरत्नौषधिवृते।
रुचिरे नन्दने नन्दे वासिष्ठे नन्दतामिह॥ ३॥
प्रजापतिसुते देवि चतुरस्त्रे महीयसि।
सुव्रते सुभगे देवि गृहे काश्यपि रम्यताम्।
पूजिते परमाचार्यैर्गन्धमाल्यैरलङ्कृते॥ ४॥
भवभूतिकरे देवि गृहे भार्गवि रम्यताम्।
अव्यये चाक्षते पूर्णे मुनेरङ्गिरसः सुते।
मनुष्यधेनुहस्त्यश्व पशुवृद्धिकरी भव॥ ५॥

आचार्य आग्नेयादि लोकपालों का बलिदान करावें। इसके पश्चात् बाँस के पात्र पर सभी भूतों के लिए निम्न संकल्प का उच्चारण करके कर्ता से बलि प्रदत्त करावें—

देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) अस्मिन् शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणि मण्डपपूजाङ्गविहितं मातृगण-क्षेत्रपालप्रीतये भूत-प्रेत-पिशाचादि निवृत्त्यर्थं सार्वभौतिकबलिदानं करिष्ये।

संकल्प के पश्चात् नये बाँस के सूप में अधिक मात्रा में उड़द और भात की बलि रक्खें और निम्न मन्त्र से सभी भूतों की गन्धादि से पूजा यजमान से करावें—

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु तेनो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें—

अधश्चैव तु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः।
सपत्नीपरिवाराश्च प्रतिगृह्णत्विमं बलिम्॥ १॥
नक्षत्राधिपतिश्चैव नक्षत्रैः परिवारितः।
स्थानं चैव पितृणां तु सर्वे गृह्णन्त्विमं बलिम्॥ २॥
ये केचित्विह लोकेषु आगता बलिकाङ्क्षिणः।
तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः॥ ३॥

बलिं गृहणन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा ।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥ ४ ॥
असुरा यातुधानाश्च पिशाचामातरोगणाः ।
शाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥ ५ ॥
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा नागा विद्याधरा नगाः ।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ॥ ६ ॥
जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ।
मा विघ्ना मा च ये पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ॥ ७ ॥
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च देवाभूतगणास्तथा ।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं बलिं वै सार्वभौतिकम् ॥ ८ ॥

(अनेन सार्वभौतिकबलिदानेन सार्वभौतिकाधिपती रुद्रः प्रीयतां न मम ।)

तदुपरान्त यजमान हाथ-पैर धोकर पूर्व द्वार से मण्डप में प्रवेश करके दक्षिण दिशा की ओर आसन पर बैठकर यथाविहित कर्म करें ।

अष्टदलम्

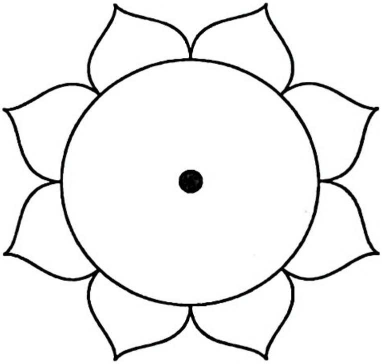

आचार्य लकड़ी के पीढ़े पर या एक समकोण चौकी पर काला वस्त्र बिछाकर एक अष्टदल का निर्माण काले तिल से करें । इस अष्टदल का निर्माण 'ॐ शन्नोदेवी०' इस मन्त्र का उच्चारण करके ही करें और इसी पर शनि देवता की मूर्ति को उनके वाहन सहित स्थापित करें ।

(कृताकृतम्)

लिङ्गतोभद्रस्थापनं पूजनं च

यजमानः—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणि ब्रह्मादिमण्डलदेवतास्थापनं पूजनं च करिष्ये।

संकल्प के पश्चात् अक्षत लेकर ब्रह्मादि देवताओं का आवाहन करें-

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे व्यम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न आयुः प्रमोषीः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि ॥ ९ ॥

ॐ सुगा वो देवाः सदना अकर्म य आजग्मेदꣳ सवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवीꣳष्यस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः, अष्टवसुनावाहयामि स्थापयामि ॥ १० ॥

ॐ रुद्राः सꣳसृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे। तेषां भानुरजस्त्र इच्छुक्रो देवेषुरोचते ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः, एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि ॥ ११ ॥

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येतिसुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः। आवोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्यादर्ठ० होश्चिद्यावरिवोवित्तरात् आदित्येभ्यस्त्वा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः, द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि॥ १२॥

ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः, अश्विनौमावाहयामि स्थापयामि॥ १३॥

ॐ विश्वेदेवासआगत शृणुता म इमर्ठ०हवम्। एदम्बर्हिर्निषीदत। उपयामगृहीतोऽसिविश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यएष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सपैतृकविश्वान्देवानावाहयामि स्थापयामि॥ १४॥

ॐ अभि त्यं देवर्ठ०सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवर्ठ० रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्। ऊर्ध्वायस्याऽमतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपास्वः। प्रजाभ्यसत्वा प्रजास्त्वानुप्राणन्तु प्रजास्त्वमनुप्राणिहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः, सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि॥ १५॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टकुलनागेभ्यो नमः, अष्टकुलनागानावाहयामि स्थापयामि॥ १६॥

ॐ ऋताषाड़्ऋतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम। स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः, गन्धर्वाप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि॥ १७॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूउपस्त्यं महि जातन्ते अर्वन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि॥ १८॥

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतꣳ सेना अजयत्साकमिन्द्रः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय नमः, नन्दीश्वरमावाहयामि स्थापयामि॥ १९॥

ॐ यत्ते गात्रादग्निपच्यमानादभिशूलं निहतस्यावधावति। मा तद्भूम्यामाश्रिषन्मा तृणेषु देवेभ्यस्तदुशद्भ्यो रातमस्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय नमः, शूलमावाहयामि स्थापयामि॥ २०॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः, महाकालमावाहयामि स्थापयामि॥ २१॥

ॐ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च। शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यꣳहाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादिभ्यो नमः, दक्षादिमावाहयामि स्थापयामि॥ २२॥

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि॥ २३॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳ सुरे स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥ २४॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि॥ २५॥

ॐ परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वत ते ब्रवीमि मा नः प्रजाꣳ रीरिषो मोत वीरान्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः, मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि॥ २६॥

ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि॥ २७॥

ॐ अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे। गर्भे सन् जायसे पुनः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अपः आवाहयामि स्थापयामि॥ २८॥

ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवोविमहसः। स सुगोपातमो जनः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः, मरुतः आवाहयामि स्थापयामि॥ २९॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः, पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३०॥

ॐ पंचनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः, गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि॥ ३१॥

ॐ समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शंभूर्मयोभूरभि मा वहि स्वाहा। मारुतोऽसि मरुतां गणः शंभूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छुंभूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः, सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि॥ ३२॥

ॐ परि त्वा गिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः। वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि स्थापयामि॥ ३३॥

ॐ गणानान्त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम आहमजानि गर्धमात्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि॥ ३४॥

ॐ त्रिशर्ठ०द्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते। प्रतिवस्तोरह द्युभिः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३५ ॥

ॐ महाँ२ ॥ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३६ ॥

ॐ वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च म इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३७ ॥

ॐ इड एह्यदित एहि काम्या एत। मयि वः काम धरणं भूयात् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३८ ॥

ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिर्ठ०हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः, खड्गमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३९ ॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः, पाशमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४० ॥

ॐ अर्ठ०शुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपार्ठ० शुश्च मेऽन्तर्यामश्च म ऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च म आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अङ्कुशाय नमः, अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४१ ॥

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः, गौतममावाहयामि स्थापयामि ॥ ४२ ॥

ॐ अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य मनो वैश्वकर्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मौ त्रिष्टुभः स्वारर्ठ० स्वारादन्तर्यामोन्तर्यामात्पंचदशः पञ्चदशाद्बृहद् भरद्वाज ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः, भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४३ ॥

ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्रर्ठ० सौवर्ठ० शरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभ ऐडमैडान्मन्थी मन्थिन एकविर्ठ०श एकविर्ठ० शाद्वैराजं विश्वामित्र ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४४ ॥

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः, कश्यपमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४५ ॥

ॐ अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी जगत्या ऋक्सममृक्समाच्छुक्रः शुक्रात् सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्निर्ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः, जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४६ ॥

ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रम् गायत्रादुपार्ठ०शुरुपार्ठ०शोस्त्रिवृत्त्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वशिष्ठाय नमः, वशिष्ठमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४७ ॥

ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्। अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४८ ॥

ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४९ ॥

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५० ॥

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्य्यै नमः, कौमारीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५१॥

ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५२॥

ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृक्काभ्यां गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीहावल्मीकान्क्लोमभिग्लौंभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान् कुक्षिभ्यार्ठ० समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५३॥

ॐ समख्ये देव्या धिया संदक्षिणयोरुचक्षसा। मा म आयुः प्रमोषीर्मो अहं तव वीरं विदेय तव देवि संदृशि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः, चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि॥ ५४॥

ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५५॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५६॥

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः, वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५७॥

पूर्वे—ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असिताङ्ग भैरवाय नमः, असिताङ्गभैरवमावाहयामि स्थापयामि॥ ५८॥

अग्निकोणे—ॐ श्वित्रऽआदित्यानामुष्ट्रोघृणीवान्वार्ध्रीनमस्ते मत्याऽअरण्याय सृमरो रुरूरौद्रः क्वयिः कुटरुर्द्रात्यौ हस्ते व्वाजिनाङ्का-मायपिकः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः रुरुभैरवाय नमः, रुरुभैरवम् मावाहयामि स्थापयामि॥ ५९॥

दक्षिणे—ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः, शङ्कराय च मयस्कराय च नमः, शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः संहारभैरवाय नमः, संहारभैरवम् मावाहयामि स्थापयामि॥ ६०॥

नैऋत्ये—ॐ या ते रुद्र शिवातनूरघोरापापकाशिनी। तयानस्तन्वाशन्तमयागिरिशन्तमिचाकशीहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरवम् मावाहयामि स्थापयामि॥ ६१॥

पश्चिमे—ॐ उन्नतऽऋषभोवामनस्तऽऐन्द्रावैष्णवाऽउन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठस्तऽऐन्द्राबार्हस्पत्याः शुकरूपा वाजिनः। कल्माषाआग्निमारुताः श्यामः पौष्णाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः उन्मत्तभैरवाय नमः। उन्मत्तभैरवम् मावाहयामि स्थापयामि॥ ६२॥

वायव्याम्—ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वा क्षित्याऽउन्नयामि। समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कपालभैरवाय नमः, कपालभैरवम् मावाहयामि स्थापयामि॥ ६३॥

उत्तरदिशि—ॐ उग्रश्च भीमद्ध्वान्तश्च धुनिश्च॥ सासह्वाँश्चाभियुग्वाचव्विक्षिपः स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणभैरवाय नमः, भीषणभैरवम् मावाहयामि स्थापयामि॥ ६४॥

ईशानदिशि—ॐ रुद्राः सर्ठ० सृज्जय पृथिवींबृहः ज्योतिसमीधिरे॥ तेषांभानुरजस्त्रऽइच्छुक्रो देवेषु रोचते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः संहारभैरवाय नमः, संहारभैरवम् मावाहयामि स्थापयामि॥ ६५॥

इस प्रकार से लिङ्गतोभद्रमण्डल के देवताओं का आवाहन करके मध्य में कलश स्थापित कर पूजन करें।

विशेष—शास्त्रों के मतानुसार शनिशान्तिअनुष्ठान कर्म में अष्टदल का ही निर्माण करना चाहिए। चूँकि कुछ विद्वानों का कथन है कि शनिदेवता का पूजन रुद्रसूक्त से करवाया जाता है। अतः इनके शान्तिअनुष्ठान में लिङ्गतोभद्र का निर्माण होना चाहिए। इसलिए इस पुस्तक में प्रथम विधि के अन्तर्गत अष्टदल का निर्माण और द्वितीय विधि के अन्तर्गत लिङ्गतोभद्रमण्डल का निर्माण किया गया हैं। अतः विद्वान् जिस विधि को उत्तमोत्तम समझते हों, उस विधि को अंगीकार करें। इस विषय में शनिशान्तिअनुष्ठान करवाने वाले आचार्य का मत ही सर्वोपरि होगा।

कलशस्थापनम्

आचार्य अष्टदल के मध्य में—'**ॐ मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरिमभिः॥**' इत्यादि पूर्वोक्त कलशस्थापन विधि से ताम्रकलश स्थापित कर उसपर वरुण देवता का पूजन यजमान से करावें।

शनियन्त्रम्

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

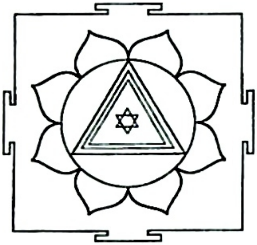

यन्त्रनिर्माणविधिः—आचार्य ताम्बे की थाली या ताम्बे के पत्र पर अष्टगन्ध से अनार की कलम द्वारा इस यन्त्र का निर्माण करें और इस यन्त्र को प्रधान के पास रख दें।

न्यासः

विनियोगः—शन्नोदेवीरिति मन्त्रस्य दध्यङ्ङाथर्वणऋषिः गायत्री छन्दः शनिर्देवता आपोबीजं वर्तमान इति शक्तिः शनैश्चरप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—ॐ दध्यङ्ङाथर्वण ऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे। ॐ शनैश्चराय नमः हृदये। ॐ आपोबीजाय नमः गुह्ये। ॐ वर्तमानशक्तये नमः पादयोः।

करन्यासः—ॐ शन्नोदेवीः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ अभीष्टय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ आपोभवन्तु मध्यमाभ्यां नमः। ॐ पीतये अनामिकाभ्यां नमः। ॐ शंय्योः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अभिस्त्रवन्तु नः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—ॐ शन्नोदेवीः हृदयाय नमः। ॐ अभिष्टये शिरसे स्वाहा। ॐ आपोभवन्तु शिखायै वषट्। ॐ पीतये कवचाय हुम्। ॐ शंय्योः नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अभिस्त्रवन्तु नः अस्त्राय फट्।

मन्त्रन्यासः—ॐ शन्नो शिरसि। ॐ देवीः ललाटे। ॐ अभीष्टये मुखे। ॐ आपो हृदये। ॐ भवन्तु नाभौ। ॐ पीतये कट्याम्। ॐ शंय्योः ऊर्वोः। ॐ अभिस्त्रवन्तु जान्वोः। ॐ नः पादयोः।

ध्यानम्

नीलद्युतिः शूलधरः किरीटी गजस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तु मह्यं वरदो महात्मा॥

पीठपूजनम्

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तुः नः॥

ॐ आधारशक्त्यै नमः। ॐ मूल प्रकृत्यै नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ वराहाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ सुवर्णमण्डलाय नमः। ॐ रत्नसिंहाय नमः। ॐ धर्माय नमः। ॐ अधर्माय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ अज्ञानाय नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ अवैराग्याय नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः। ॐ अनैश्वर्याय नमः। ॐ ऋग्वेदाय नमः। ॐ यजुर्वेदाय नमः। ॐ सामवेदाय नमः। ॐ अथर्ववेदाय नमः। ॐ कृतयुगाय नमः। ॐ त्रेतायुगाय नमः। ॐ द्वापराय नमः। ॐ कलियुगाय नमः। ॐ मन्दराय नमः। ॐ पारिजाताय नमः। ॐ सन्तानाय नमः। ॐ कल्पवृक्षाय नमः। ॐ मूलप्रकृत्यै नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ नालाय नमः। ॐ पत्रेभ्यो नमः। ॐ पद्मेभ्यो नमः। ॐ यक्षेभ्यो नमः। ॐ केसरेभ्यो नमः। ॐ दलेभ्यो नमः। ॐ कर्णिकायै नमः। ॐ शनिमण्डलाय नमः। ॐ सोममण्डलाय नमः। ॐ वह्निमण्डलाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ सत्वाय नमः। ॐ रजसे नमः। ॐ तमसे नमः। ॐ आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः।

ॐ परमात्मने नमः। ॐ चिदात्मकाय नमः। ॐ भूः पुरुषाय नमः। ॐ भुवः पुरुषाय नमः। ॐ स्वः पुरुषाय नमः। ॐ भूर्भुवः स्व पुरुषाय नमः। ॐ शनये नमः।

आचार्य निम्न मन्त्र का और पुरुषसूक्त का उच्चारण करते हुए यजमान से सपरिवार, सवाहन सहित शनिदेवता का अभिषेक तेल के द्वारा करावें—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तुः नः॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ १॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ २॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिर्ठ०सीः पुरुषं जगत्॥ ३॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठ० सुमना असत्॥ ४॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहीर्ठ०श्च सर्व्वान् जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव॥ ५॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनर्ठ० रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषार्ठ० हेड ईमहे॥ ६॥ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥ ७॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥ ८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥ ९॥ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२। उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥ १०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव

ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥ ११॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्॥ १२॥ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥ १३॥ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ १४॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥ १५॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषुमा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ १६॥

अग्न्युत्तारणम्

आचार्य यजमान से शनि देवता की लोहे की प्रतिमा का अग्न्युत्तारण करवाने के लिए निम्न सङ्कल्प करावें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) अस्याः लौहमयशनिप्रतिमायाः अवघातादिदोषपरिहारार्थं देवतासान्निध्यार्थं च अग्न्युत्तारणं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य, लोहमयीं शनिप्रतिमां सुवर्ण-रजत-ताम्रादिपात्रे निधाय घृतेनाभ्युक्ष्य तदुपरि दुग्धयुतां जलधारां दद्यात्।

अग्न्युत्तारणमन्त्राः—ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव॥ १॥ ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव॥ २॥ ॐ उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि। सेमं नो यज्ञं पावकवर्णꣳ

शिवं कृधि ॥ ३ ॥ ॐ अपामिदं न्ययनर्ठ० समुद्रस्य निवेशनम्। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव ॥ ४ ॥ ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ ५ ॥ ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२ ॥ इहावह उप यज्ञर्ठ० हविश्च नः ॥ ६ ॥ ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन्नुच उषसो न भानुना। तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणेन ततृषाणो अजरः ॥ ७ ॥ ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे। अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव ॥ ८ ॥ ॐ नृषदे वेडप्सुषदे बेड्वर्हिषदे वेड्वनसदे वेट् स्वर्विदेवेट् ॥ ९ ॥ ॐ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानार्ठ० संवत्सरीणमुप भागमासते। अहुतादो हविषो यज्ञे अस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥ १० ॥ ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्ये ब्रह्मणः पुरएतारो अस्य। येभ्यो नऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या अधि स्नुषु ॥ ११ ॥ ॐ प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः। अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव ॥ १२ ॥

आचार्य अग्न्युत्तारण करवाने के उपरान्त यजमान से लौहमयी शनिदेवता की प्रतिमा को जलपात्र से बाहर निकलवाकर नूतन वस्त्र से पोंछवाकर शनि यन्त्र के ऊपर बायें हाथ से रखवाकर दायें हाथ से आच्छाद्य कर प्राणप्रतिष्ठा करावें।

प्राणप्रतिष्ठापनम्

आचार्य शनि देवता की प्रतिमा के मस्तक या हृदय का स्पर्श यजमान से करवाके प्राणप्रतिष्ठा निम्न क्रम से करावें।

विनियोग:—अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषय:, ऋग्यजु: सामानि छन्दांसि, क्रियामयवपु:प्राणाख्या देवता, आं बीजं, ह्रीं शक्ति:, क्रौं कीलकं, प्राणप्रतिष्ठायां विनियोग:।

तदनन्तर ऋष्यादियों का क्रम से शिर, मुख, हृदय, नाभि, गुह्य और पैरों में न्यास करे।

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नम:-शिरसि। ऋग्यजु: सामछन्दोभ्यो नम:-मुखे। ॐ प्राणाख्यदेवतायै नम:-हृदि। ॐ आं बीजाय नम:-गुह्यस्थाने। ह्रीं शक्तये नम:-पादयो:। ॐ कं, खं, गं, घं, ङं, अं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने-आं हृदयाय नम:-हृदि। ॐ चं, छं, जं, झं, ञं, इं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं-शिरसे स्वाहा-शिरसि। ॐ टं, ठं, डं, ढं, णं, उं, श्रोत्रत्वक्, चक्षु, र्जिह्वा, घ्राणाऽत्मने-ॐ शिखायै वषट्-शिखायाम्। ॐ तं, थं, दं, धं, नं, एं, वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुम्-कवचे। ॐ पं, फं, बं, भं, मं, ॐ वचनादान-विहरणोत्सर्गानन्दाऽत्मने ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्-नेत्रे। ॐ अं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, लं, क्षं, मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने अ: अस्त्राय फट् अस्त्रे।

आचार्य शनि देवता की प्रतिमा का स्पर्श कर जप करें तथा शिर व हृदय का हाथ से स्पर्श कर निम्न प्राणप्रतिष्ठा के मंत्रों का उच्चारण करें—

ॐ आं, ह्रीं, क्रों, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, स: शनिदेवस्य प्राणा इह प्राणा:। ॐ आं, ह्रीं, क्रों, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, स: शनिदेवस्य जीव इह स्थित:। ॐ आं, ह्रीं, क्रों, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं,

हं, सः शनिदेवस्य सर्वेन्द्रियाणि। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः शनिदेवस्य वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ध्यानम्

नीलद्युतिः शूलधरः किरीटी गजस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तु मह्यं वरदो महात्मा॥

तदुपरान्त आचार्य और ब्राह्मण निम्न सूक्त का उच्चारण करें—

ॐ ध्रुवासिध्रुवोयं यजमानोस्मिन्नायतनेप्रजयापशुभिर्भूयात्। घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्यच्छदिरसि विश्वजनस्यछाया॥ १॥ ॐ आत्वाहार्षमन्तरभूद्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः। विशस्त्वा सर्वार्वावाञ्छन्तुमात्वद्राष्टमधिभ्रशत्॥ २॥ ॐ ध्रुवासिधरुणास्तृताविश्वकर्मणा। मात्वासमुद्राऽउद्वधीन्मासुपर्णोव्यथमानापृथिवीन्दृठं० ह॥ ३॥

प्राणसूक्तम्—ॐ प्राणो रक्षति विश्वमेजत्। इर्यो भूत्वा बहुधा बहूनि। स इत्सर्वं व्यान शे। यो देवषु विभूरन्तः। आवृदूदात्क्षेत्रियध्वगद्भषा। तमित्प्राणं मनसोपशिक्षत। अग्रं देवानामिदमत्तु नो हविः। मनसश्चित्तेदम्। भूतं भव्यं च गुप्यते। तद्धि देवेष्वग्रियम्॥ १॥ ॐ आ न एतु पुरश्चरम्। सह देवैरिमठं०हवम्। मनश्श्रेयसि श्रेयसि। कर्मन् यज्ञपर्त्ति दधत्। जुषतां मे वागिदठं०हविः। विराड् देवी पुरोहिता हव्यवाडनपायिनी। यमारूपाणि बहुधा वदन्ति। पेशाँ सि देवाः परमे जनित्रे। सा नो विराडनपस्फुरन्ती॥ २॥ ॐ वाग्देवी जुषता-

मिदर्ठ०हविः। चक्षुर्देवानां ज्योतिरमृते न्यक्तम्। अस्य विज्ञानाय बहुधा निधीयते। तस्य सुम्नमशीमहि। मानो हासीद्विचक्षणम्। आयुरिन्नः प्रतीर्यताम्। अनन्धाश्चक्षुषा वयम्। जीवा ज्योतिरशीमहि। सुवर्ज्योतिरुतामृतम्। श्रोत्रेण भद्रमुत शृण्वन्ति सत्यम्। श्रोत्रेण वाचं बहुधोद्यमानाम्। श्रोत्रेण मोदश्च महश्च श्रूयते। श्रोत्रेण सर्वा दिश आ शृणोमि। येन प्राच्या उत दक्षिणा। प्रतीच्यै दिशशृण्वन्त्युत्तरात्। तदिच्छ्रोत्रं बहुधोद्यामानम्। आरान्न नेमिः परि सर्वं बभूव। अग्रियमनपस्फुरन्ती सत्यर्ठ०सप्त च॥ ३॥

वैदिकमन्त्राः—ॐ मनो मे तर्पयत वाचं मे तर्पयत प्राणं मे तर्पयत चक्षुर्मे तर्पयत श्रोत्रं मे तर्पयतात्मानं मे तर्पयत प्रजां मे तर्पयत पशून्मे तर्पयत गणान्मे तर्पयत गणा मे मा वितृषन्॥ १॥ ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे निदीध्यदैन्द्र उदानो अङ्गे अङ्गे निधीतः। देवत्वष्टर्भूरि ते सर्ठ० समेतु सलक्ष्मा यद्विपुरूषं भवाति। देवत्रा यन्तमवसे सखायोऽनु त्वा माता पितरो मदन्तु॥ २॥ वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रं ते शुन्धामि नाभिं ते शुन्धामि मेढ्रं ते शुन्धामि पायुं ते शुन्धामि चरित्रार्ठ०स्ते शुन्धामि॥ ३॥ मनस्त आप्यायतां वाक्त आप्यायतां प्राणस्त आप्यायतां चक्षुस्त आप्यायतांर्ठ०श्रोत्रं त आप्यायताम्। यत्ते क्रूरं यदास्थितं तत्त आप्यायतां निष्ट्यायतां तत्ते शुध्यतु शमहोभ्यः। ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनर्ठ० हिर्ठ०सीः॥ ४॥ अपां पेरुरस्यापो देवीः स्वदन्तु स्वात्तं चित्सद्देवहविः। सं ते प्राणो वातेन गच्छतार्ठ० समङ्गानि यजत्रैः सं यज्ञपति

राशिषा ॥ ५ ॥ सं ते मनो मनसा सं प्राणः प्राणेन गच्छताम्। रेडस्यग्निष्ट्वा श्रीणात्वापस्त्वा समरिणन्वातस्य त्वा ध्राज्यै पूष्णो रठ०ह्या ऊष्मणो व्यथिषत्प्रयुतं द्वेषः ॥ ६ ॥ प्राणपा मे अपानपाश्चक्षुष्पाः श्रोत्रपाश्च मे। वाचो मे विश्वभेषजो मनसोऽसि विलायकः ॥ ७ ॥ प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं च म आधीतं च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पनन्ताम् ॥ ८ ॥ प्राणं मे पाह्यपानं मे पाहिव्यानं मे पाहिचक्षुर्म उर्व्या विभाहि श्रोत्रं मे श्लोकय। अपः पिन्वौषधीर्जिन्व द्विपादव चतुष्पात्पाहि दिवो वृष्टिमेरय ॥ ९ ॥ प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व व्यानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वोदानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व वाचे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व क्रतूदक्षाभ्यां मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व श्रोत्राय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व चक्षुर्भ्यां मे वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम् ॥ १० ॥ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥ ११ ॥ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रम् गायत्रादुपाठ०शुरुपाठ० शोस्त्रिवृत्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ १२ ॥ अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी जगत्या ऋक्सममृक्समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्निर्ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ १३ ॥ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्रठ०

सौवर्ठ० शरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभ ऐडमैडान्मथी मन्थिन एकविर्ठ०श एकविर्ठ० शाद्वैराजं विश्वामित्र ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ १४ ॥ इयमुपरि मतिस्तस्यै वाङ्मात्या हेमन्तोवाच्यः पङ्क्तिर्हैमन्ती पङ्क्त्यै निधनवन्निधनवत आग्रयणऽआग्रयणात्रिणवत्रयस्त्रिर्ठ० शौ त्रिणवत्रयस्त्रिर्ठ० शाभ्यार्ठ० शाक्वररैवते विश्वकर्म ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया वाचं गृह्णामि प्रजाभ्यो लोकं ता इन्द्रम् ॥ १५ ॥

पुनः निम्न श्लोक का आचार्य उच्चारण करें—

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै स्वाहेति यजुरीरयेत् ॥

नेत्रोन्मीलनम्—आचार्य शनि देवता की लौह प्रतिमा के मुख व नेत्र में स्वर्ण की शलाका के द्वारा (कांस्य पात्र में) शहद और घृत इन दोनों को आचार्य मिश्रित कर '**ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुमित्रस्य वरुणस्याग्नेः**' इस आधे वैदिकमन्त्र का उच्चारण करके चिह्न करें। तदुपरान्त यजमान नेत्रोन्मीलन के अंगत्व निम्न संकल्प गोदान के निमित्त आचार्य करावे—**नेत्रोन्मीलन अङ्गत्वेन गोदानं अहं करिष्ये।** शनि देवता की प्रतिमा के सामने कंकण, छत्र, पंखा, चावर, जल के पात्र पायस, भक्ष्य-भोज्य पदार्थ घृत, भोजनपात्र, काले रंग के रेशमी वस्त्र, अङ्ग-प्रत्यङ्ग के आभूषण, दर्पण, ताम्बूल आदि इन सामग्रियों को रखें और निम्न मंत्र का उच्चारण करके शनि देवता को उपरोक्त सभी वस्तुएँ दिखा देवें—**ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥**

(प्रधानपूजनम्)

शनिपूजनम्

यजमानः जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माऽहम्(वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सर्वविधबाधानिवृत्तिपूर्वकं धन-धान्य-पुत्र-पौत्र दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यादिप्राप्त्यर्थ धर्मार्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विध-पुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीशनिदेवताप्रीत्यर्थं यथोपचारैः शनिपूजनमहं करिष्ये।

ध्यानम्

चापासनो गृध्रघरस्तु नीलः प्रत्यङ्गमुखः काश्यप-गोत्रजातः।
स-शूल-चापेषु गदाधरोऽव्यात् सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च शौरिः॥ १॥
नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रासनस्थो विकृताननश्च।
केयूर-हारादि-विभूषिताङ्गः सदाऽस्तु मे मन्दगतिः प्रसन्नः॥ २॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तुः नः॥

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥ १॥
देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित।
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावद् देव इहावह॥ २॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, श्रीशनिदेवतामावाहयामि स्थापयामि। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आसनम्

ॐ या ते रुद्रशिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिसमन्वितम्।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, आसनं समर्पयामि। आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्

ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिर्ठ॰ सीः पुरुषं जगत्॥

यद् भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्दसम्भवः।
तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठ॰ सुमना असत्॥

अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह।
करुणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

मधुपर्कम्

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमर्ठ० रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नद्येनपरमो मधव्योऽन्नादोऽसानि॥

आज्यं दधि मधु श्रेष्ठं पात्रयुग्मसमन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाण त्वं प्रसन्नो भव दिवाकर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

स्नानम्

ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैनर्ठ० रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः
सहस्रशोऽवैषार्ठ० हेड ऽइमहे॥

गङ्गा-सरस्वती-रेवा-पयोष्णी-नर्मदाजलैः ।
स्नापितोऽसि मया देव ततः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पंचामृतस्नानम्

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, पंचामृतस्नानं समर्पयामि। पञ्चामृतस्नान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

सुगन्धितद्रव्यस्नानम्

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्॥
दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरु दिवाकर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, सुगन्धितद्रव्यस्नानं समर्पयामि। सु० द्रव्यस्नान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

महाभिषेकस्नानम्

आचार्य निम्न मन्त्र व रुद्रसूक्त का उच्चारण करते हुए शनि देवता की मूर्ति का महाभिषेक स्नान यजमान से सरसों के तेल से करावें—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तुः नः॥

रुद्रसूक्तम्—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ १॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ २॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिर्ठ०सीः पुरुषं जगत्॥ ३॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठ० सुमना असत्॥ ४॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहीर्ठ०श्च सर्व्वान् जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव॥ ५॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये

चैनर्ठ० रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषार्ठ० हेड ईमहे॥ ६॥ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥ ७॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥ ८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥ ९॥ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२। उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥ १०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥ ११॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्॥ १२॥ अवतत्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्त्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥ १३॥ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ १४॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥ १५॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषुमा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ १६॥

शुद्धोकस्नानम्

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽअवलिप्ता रोद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरुसम्भवम्।
चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रंमुपवस्त्रं च

ॐ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥
सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।
मयैवापादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥
ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतयेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतम् मयादत्तं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

गन्धम्

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, कनिष्ठामूलगताङ्गुष्ठयोगेन गन्धमुद्रां प्रदर्श्य अनामिकया गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

भस्मम्

ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
सठ० सृज्यमातृभिष्ट्वञ्ज्योतिष्मान्पुनरासदः॥

सर्वपापहरं भस्म दिव्यज्योतिस्समप्रभम्।
सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, भस्मं समर्पयामि।

अक्षतान्

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत्।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्रते हरी॥

अक्षताश्चं सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

नाना आभूषणम्

ॐ युवं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तं तमिद्धतं वज्रेण तन्तमिद्धतम्। दूरे चत्ताय छन्त्सद्गहनं यदिनक्षत्। अस्मा-

कर्ठ० शत्रून्परि शूर विश्वतो दर्मा दर्षीष्ट विश्वतः। ॐ भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम सुवीरा वीरैः सुपोषाः पोषैः।

स्वभावसुन्दराङ्गाय सत्यासत्याश्रयाय ते।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयामि सुरार्चित॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, नाना आभूषणं समर्पयामि।

सुवर्णमुकुटम्

ॐ प्रतिश्रुत्काया अर्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकर्ठ० शब्दायाडम्बराघातं महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्ममवरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनपमन्यतोऽरण्याय दावपम्॥

सर्वालङ्करणं दिव्यं सुखदं रत्नमण्डितम्।
मुकुटाभरणं देव! गृहीत्वा पालनं कुरु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, सुवर्णमुकुटं समर्पयामि।

शमीपुष्पमालाम्

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा ऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः॥

शुष्कचञ्चुनिभां पुण्या शुद्धसूत्र समन्विताम्।
शमीमालां गृहाणत्वमारोग्य सर्वदा कुरु॥ १॥
माल्यादीनि सुन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥ २॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, शमीपुष्पमालां समर्पयामि।

एकतन्त्रेण शन्यष्टोत्तरशतनामावल्याः शमीपुष्पं समर्पयेत्

ॐ शनैश्चराय नमः। शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ शान्ताय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ सर्वाभीष्टप्रदायिने नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ शरण्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ वरेण्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ सर्वेशाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ सौम्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ सुरवन्द्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ सुरलसोकविहारिणे नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ सुखासनोपविष्टाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ सुन्दराय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ घनाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ घनरूपाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ घनाभरणधारिणे नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ घनसारविलेपनाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ खद्योताय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ मन्दाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ मन्दचेष्टाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ महनीयगुणात्मने नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ मर्त्यपावनपादाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ महेशाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ छायापुत्राय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ शर्वाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ शरतूणीरधारिणे नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ चरस्थिरस्वभावाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ चञ्चलाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ नीलवर्णाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ नित्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ नीलाञ्जननिभाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ नीलाम्बरविभूषाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ निश्चलाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ विधिरूपाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ वेद्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ विरोधारभूमये नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ वेदास्पदस्वभावाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ वज्रदेहाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ वैराग्यदाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ वीराय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि।

ॐ वीतरोगभयाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ विपत्परंपरेशाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ विश्ववन्द्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ गृध्रवाहनाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ गूढाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ कूर्माङ्गाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ कुरूपिणे नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ कुत्सिताय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ गुणाढ्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ गोचराय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ अविद्यामूलनाशनाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ विद्या ऽविद्यास्वरूपिणे नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ आयुष्यकारणाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ आपदुद्धर्त्रे नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ विष्णुभक्ताय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ वशिने नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ विविधागमवेदिने नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ विधिस्तुत्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ वन्द्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ विरूपाक्षाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ वरिष्ठाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ गरिष्ठाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ वज्राङ्कुशधराय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ वरदाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ अभय हस्ताय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ वामनाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ ज्येष्ठापत्नीसमेताय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ श्रेष्ठाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ मितभाषिणे नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ अष्टौघनाशनाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ आर्यपुष्टिदाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ स्तुत्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ स्तोत्रगम्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ भक्तिवश्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ भानवे नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ भानुपुत्राय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ भव्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ पावनाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ धनुर्मण्डलसंस्थाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ धनदाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि।

ॐ धनुष्मते नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ तनुप्रकाशदेहाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ तामसाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ अशेषजनवन्द्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ विशेषफलदायिने नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ वशीकृतजनेशाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ पशूनाम्पत्ये नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ खेचराय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ घननीलाम्बराय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ काठिन्यमानसाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ आर्यगणस्तुत्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ नीलच्छत्राय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ नित्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ निर्गुणाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ गुणात्मने नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ निरामयाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ निन्द्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ वन्दनीयाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ धीराय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ दिव्यदेहाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ दीनार्तिहरणाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ दैत्यानाशनाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ आर्यजनगण्याय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ क्रूराय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ क्रूरचेष्टाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ कामक्रोधकराय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ कलत्रपुत्रशत्रत्व कारणाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ परिपोषितभक्ताय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ परभीतिहराय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐ भक्तशङ्घमनोभीष्टफलदाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि।

बिल्वपत्राणि

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः।
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

दूर्वाम्

ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं तान् गृहाण शनैश्चर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, दूर्वां समर्पयामि।

तुलसीदलम्

ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम्।
समूढमस्य पाठ॰ सुरे स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, तुलसीमञ्जरीं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यम्

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाठ॰सं परि पातु विश्वतः॥
अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नानापरिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

नामपूजनम्

ॐ कोणस्थायै नमः। ॐ पिङ्गलायै नमः। ॐ बभ्रुवै नमः। ॐ कृष्णायै नमः। ॐ रौद्रान्तकायै नमः। ॐ यमायै नमः। ॐ सौरियै नमः। ॐ शनैश्चरायै नमः। ॐ मन्दायै नमः। ॐ पिप्पलायदेवाय नमः।

अङ्गपूजनम्

ॐ कोणस्थायै नमः पादौपूजयामि। ॐ पिङ्गलायै नमः-गुल्फौ पूजयामि। ॐ बभ्रुवै नमः-जङ्घौ पूजयामि। ॐ कृष्णायै नमः-जानुनि पूजयामि। ॐ रौद्रान्तकायै नमः-उरौ पूजयामि। ॐ यमायै नमः-कटिं पूजयामि। ॐ सौरियै नमः-नाभौ पूजयामि। ॐ शमिमूलनिवासिने नमः-उदरं पूजयामि। ॐ मन्दायै नमः-हृदयं पूजयामि। ॐ पिप्पलायदेवाय नमः-स्कन्धौ पूजयामि। ॐ शूलपाणये नमः-कण्ठं पूजयामि। ॐ शनैश्चरायै नमः-मुखं पूजयामि। ॐ सर्वपीडानिवारकाय नमः-कर्णौ पूजयामि। ॐ शक्तिधराय नमः-नेत्रं पूजयामि। ॐ नीलाञ्जननिभाय नमः-ललाटं पूजयामि। ॐ दैत्यनाशनाय नमः-शिरः पूजयामि। ॐ चित्ररथात्मजासहशनैश्चराय नमः-सर्वाङ्गं पूजयामि।

धूपम्

ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टमहस्ते बभूव ते धनुः।
तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्यया परिभुज॥
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आध्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीपम्

ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो यऽ इषुधिस्तवारेऽ अस्मिन्निधेहि तम्॥
घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्ज्वलम्।
दीपं दास्यामि देवेश सुप्रीता भव सर्वदा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्त प्रक्षालम्)

नैवेद्यम्

ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्त्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥
अन्नं बहुविधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते पुनराचमनीयं जलं सम०।

फलानि

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्वत्वर्ठ०हसः॥
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, फलानि समर्पयामि।

ताम्बूलम्

ॐ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥

एला-लवङ्ग-कस्तूरी-कर्पूरैः पुष्पवासिताम्।
वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, ताम्बूलं समर्पयामि। मुखवासार्थं ताम्बूलं (पुगफल-एला-लवंगसहितम्) समर्पयामि।

दक्षिणाम्

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकआसीत्।
स दाधारः पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे परमेश्वर।
अर्पितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनम्

ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरर्ठ० सर्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्त्वन्नं पयो रेतो अस्म्मासु धत्त।

ॐ आ रात्रि पार्थिवर्ठ० रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदार्ठ०सि बृहती वितिष्ठस आ त्वेषं वर्त्तते तमः॥

जय शनिदेव हरे स्वामी जय शनिदेव हरे।
जो कोई मन से ध्यावे उनके विघ्न हरे॥
जय शनिदेव हरे०।

सतयुग सूरज स्वामी के घर छाया में जन्मे।
पति को तेज निरख कर थी बडवा वन में॥
जय शनिदेव हरे०।

त्रेतायुग में दशरथ राजा भक्ति करी।
भाव भक्ति के कारण अमृत वृष्टि करी॥
जय शनिदेव हरे०।

रामचन्द्र पर कोपे तब सब राज हरे।
खुशी भये जब उनपर तब सब भाँति भरे॥
जय शनिदेव हरे०।

अवतार लिए जब गणपति गिरिजा याद किये।
दृष्टि तुम्हारी पड़ते ही शिशु मुख रहित किये॥
जय शनिदेव हरे०।

द्वापर युग में पाण्डवगण जब वनवास गये।
भक्ति तुम्हारी करके तब वे सुखी भये॥
जय शनिदेव हरे०।
कलियुग में एक राजा विक्रम भये भारी।
दशा तुम्हारी लगते ही दुर्गति मयी भारी॥
जय शनिदेव हरे०।
देख दुःखी अति भारी सपने दरस दियो।
पूजा मनसे कीनी तिनको सुखी कियो॥
जय शनिदेव हरे०।
दशा और अन्तर या हो साढ़ेसाती।
जिनकी दुर्गति भारी उनके तुम साथी॥
जय शनिदेव हरे०।
शाण्डिल्य मुनि हैं कहते वे शनिकथा सुनें।
शनिदिन ब्रत और पूजा कर लें दुःख हरें॥
जय शनिदेव हरे०।
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥
कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।
आरात्रिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, नीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु॥ कुवेराय वैश्रवणाय

महाराजाय नमः ॥ ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिती। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

शनिगायत्री—ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनि प्रचोदयात् ॥

प्रदक्षिणाम्

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वनिं तन्मसि ॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि वै।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

नमस्कारान्

ॐ यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

शनैश्चराय शान्ताय सर्वाभीष्टप्रदायिने।
शरण्याय वरेण्याय सर्वेशाय नमो नमः॥
सौम्याय सुरवन्द्याय सुरलोकविहारिणे।
सुखासनोपविष्टाय सुन्दराय नमो नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, नमस्कारान् समर्पयामि।

स्तुतिः

क्रोडं नीलाञ्जनप्रख्यं नीलवर्णसमस्त्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं नमस्यामि शनैश्चरम्॥
नमोऽर्कपुत्राय शनैश्चराय नीहारवर्णाञ्जनमेचकाय।
श्रुत्वा रहस्यं भवकामदश्च फलप्रदो मे भव सूर्यपुत्र॥
नमोऽस्तु प्रेतराजाय कृष्णदेहाय वै नमः।
शनैश्चराय क्रूराय शुद्धबुद्धिप्रदायिने॥
य एभिर्नामभिः स्तौति तस्य तुष्टो भवाम्यहम्।
मदीयं तु भयं तस्य स्वप्नेऽपि न भविष्यति॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपगोत्राय कृष्णवर्णाय शनैश्चराय नमः, स्तुतिं समर्पयामि।

॥ इति शनिपूजनम् ॥

अग्निस्थापनम्

तद्यथा—यजमानो दक्षिणद्वारपश्चिमे उत्तराभिमुख उपविशेत्। आचार्य स्वकुण्ड-पश्चिमे तदा सपत्नीको यजमानः कर्माङ्गमाचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) करिष्यमाण सनवग्रहमख शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणि अग्न्यायतने पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमहातेजामग्निस्थापनं करिष्ये। तदङ्गत्वेन सम्मार्जनमेखलायोनिदेवतास्थापनपूजनादि करिष्ये। इति सङ्कल्प्य गोमयाद्युपलिप्ते शुद्धदेशे शुद्धामृदाऽरत्निविस्तृतं होमानुसारेण तदाधिकं वा समचतुरस्त्रं चतुरङ्गुलोन्नतं आदर्शसमं स्थण्डिलं कुण्डं वा शुद्ध्यर्थं संमार्ज्य कुशोदकेन प्रोक्ष्य तत्र—

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपाꣳसुरे स्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥ ततो मध्यमेखलायां रक्तवर्णालङ्कृतायां ब्रह्माणं पूजयेत्—ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥ तत अधोमेखलायां कृष्णवर्णालङ्कृतायां रुद्रं पूजयेत्—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ततो योन्यां रक्तवर्णालङ्कृतायां गौरीं पूजयेत्—ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि॥ कण्ठे—ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपश्रिताः। तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वनि तन्मसि॥ ॐ कण्ठे नमः कण्ठमावाहयामि स्थापयामि॥ नाभिम्—ॐ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः॥ ॐ नाभ्यै नमः नाभिमावाहयामि स्थापयामि॥ ॐ विश्वकर्मन्हविषा वर्द्धनेन् त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्म्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः, विश्वकर्माणमावाहयामि स्थापयामि॥

तत्रादावरणिप्रदानम्—आचार्यो वस्त्रवेष्टितमरणिद्वयमन्यानि च पात्राणि समादाय शनिशान्त्यनुष्ठानहोमाग्निसाधनभूते इमे अरणी परिगृहाण। यजमानः—शनिशान्त्यनुष्ठानहोमाग्निसाधनभूते इमे अरणी परिगृहीते तत्रेयमधरा इयमुत्तरा। इदं चात्रम्। इदं नेत्रम्। इमयोविली। शनिशान्त्यनुष्ठानहोमसाधनभूतानि इमानि स्त्रुवादीनि पात्राणि परिगृहाण। यजमानः—शनिशान्त्यनुष्ठानसाधनभूतानि इमानि स्त्रुवादीनि पात्राणि परिगृहीतानि। ततोऽरणिमानम्। तद्यथा—अग्न्यायतनस्य पश्चात् कस्मिंश्चित्पीठादौ वस्त्राच्छन्ने अधरारणिं मुत्तरारणिम् मन्थम् प्रमन्थम् ओविलीं च पात्राणि च निधाय हस्तेद्वयस्याङ्गुष्ठाभ्यां व्यत्यास्येन अरण्योः क्रमेण मानं कुर्यात्।

तद्यथा—प्रथमः द्वितीयः तृतीयः चतुर्थः पञ्चमः षष्ठः सप्तमः अष्टमः नवमः दशमः एकादशः द्वादशः त्रयोदशः चतुर्दशः पञ्चदशः षोडशः सप्तदशः अष्टादशः एकोनविशः विंशः एकविंशः द्वाविंशः त्रयोविंशः चतुर्विंशः इति दैर्ध्यमानं कृत्वा विस्तारमानं कुर्यात्—प्रथमः द्वितीयः तृतीयः चतुर्थः पञ्चमः षष्ठः। उत्सेधमानम्—प्रथमः द्वितीयः तृतीयः चतुर्थः इति। चात्र द्वादशाङ्गुलम्। ओविली द्वादशाङ्गुला। व्याममात्रा रज्जुः। बाहुमात्रा स्रुक्। अरत्निमात्रः स्रुवः। प्रादेशमात्रश्चमसः, प्रोक्षणीपात्रं च। अरत्निमात्रः स्फ्यः। एवं मानमाचारात् कृत्वा पूजनमप्याचारात् कुर्यात्। तद्यथा देशकालौ सङ्कीर्त्य करिष्यमाणसशनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणि हवनसाधनभूतस्याग्नेर्योनिरूपयोररण्योः पूजनं करिष्ये इति सङ्कल्प्य। ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥ इति मन्त्रेण अरणिभ्यां नमः इति पूजनं कृत्वा—अग्न्यायतनस्य पश्चात् प्राग्ग्रीवमुत्तरलोमकृष्णाजिनमास्तीर्य तत्रोदगग्रामधरारणिं निधाय तत्पूर्वत उत्तरारणिं च निधाय उत्तरारण्यां मूलात् नवाङ्गुलं प्रदेशं विहाय मन्थनदेशे प्रमन्थं निधाय तदग्रेउदगग्रामोबिलीं निधाय चात्र रज्ज्वा त्रिर्वेष्टयित्वा प्राङ्मुखो यजमान ओबिलीं धारयेत्। पत्नी च पश्चिमाभिमुखी मन्थेत्। असामर्थ्येऽन्यः। अग्न्युत्पत्तिपर्यन्तं मन्थनसमये आग्नेयात् रुद्रसूक्तमन्त्राः शुक्लयजुर्वेदतृतीयाऽध्यायस्य समस्तमन्त्राः पठन्ति।

रुद्रसूक्तम्—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः स्वाहा॥ १॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा॥ २॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्य्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिर्ठ०सीः पुरुषं जगत् स्वाहा॥ ३॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठ० सुमना असत् स्वाहा॥ ४॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहीर्ठ०श्च सर्व्वान् जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव स्वाहा॥ ५॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनर्ठ० रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषार्ठ० हेड ईमहे स्वाहा॥ ६॥ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः स्वाहा॥ ७॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः स्वाहा॥ ८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप स्वाहा॥ ९॥ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२। उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा॥ १०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज स्वाहा॥ ११॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम् स्वाहा॥ १२॥ अवतत्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्त्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा॥ १३॥ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत

ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने स्वाहा ॥ १४ ॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः स्वाहा ॥ १५ ॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषुमा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा ॥ १६ ॥

शुक्लयजुर्वेदसंहितातृतीयोऽध्यायः

ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन्हव्या जुहोतन॥ १ ॥ सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे॥ २॥ तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठय॥ ३॥ उप त्वाग्ने हविष्मतीर्घृताचीर्यन्तु हर्यत। जुषस्व समिधो मम॥ ४॥ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे॥ ५॥ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ ६ ॥ अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन्महिषो दिवम्॥ ७॥ त्रिर्ठ०शद्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते। प्रतिवस्तोरह द्युभिः॥ ८॥ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥ ९ ॥ सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवल्या। जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा। सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा॥ १०॥ उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं

वोचेमाग्नये। आरे अस्मे च शृण्वते॥ ११॥ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ०सि जिन्वति॥ १२॥ उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या उभा राधसः सह मादयध्यै। उभा दातारविषार्ठ० रयीणामुभा वाजस्य सातये हुवे वाम्॥ १३॥ अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः। तं जानन्नग्न आरोहाथा नो वर्धया रयिम्॥ १४॥ अयमिह प्रथमो धावि धातुभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः। यमप्रवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशेविशे॥ १५॥ अस्य प्रत्नामनु द्युतर्ठ० शुक्रं दिदुह्रे अह्रयः। पयः सहस्त्रसामृषिम्॥ १६॥ तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाह्यायुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि। अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण॥ १७॥ इन्धानास्त्वा शतर्ठ० हिमा द्युमन्तर्ठ० समिधीमहि। वयस्वन्तो वयस्कृतर्ठ० सहस्वन्तः सहस्कृतम्। अग्ने सपत्नदम्भनमदब्धासो अदाभ्यम्। चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय॥ १८॥ सं त्वमग्ने सूर्यस्य वर्चसागथाः समृषीणार्ठ० स्तुतेन। सं प्रियेण धाम्ना समहमायुषा सं वर्चसा सं प्रजया सर्ठ०रायस्पोषेण ग्मिषीय॥ १९॥ अन्धस्थान्धो वो भक्षीय महस्थ महो वो भक्षीयोर्जस्थोर्जं वो भक्षीय रायस्पोषस्थ रायस्पोषं वो भक्षीय॥ २०॥ रेवती रमध्वमस्मिन्योनावस्मिन् गोष्ठेऽस्मिँल्लोकेऽस्मिन्क्षये। इहैव स्त मापगात॥ २१॥ सर्ठ०हितासि विश्वरूप्यूर्जामाविश गौपत्येन। उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमोभरन्त एमसि॥ २२॥ राजन्त-

मध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्। वर्धमानर्ठ० स्वे दमे॥ २३॥ स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये॥ २४॥ अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः। वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमर्ठ०रयिं दाः॥ २५॥ तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः। स नो बोधि श्रुधी हवमुरुष्या णो अघायतः समस्मात्॥ २६॥ इड एह्यदित एहि काम्या एत। मयि वः कामधरणं भूयात्॥ २७॥ सोमानर्ठ० स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं य औशिजः॥ २८॥ यो रेवान् यो अमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्धनः। स नः सिषक्तु यस्तुरः॥ २९॥ मा नः शर्ठ० सो अररुषो धूर्तिः प्रणङ्मर्त्यस्य। रक्षाणो ब्रह्मणस्पते॥ ३०॥ महि त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः। दुराधर्षं वरुणस्य॥ ३१॥ नहि तेषाममा चन नाध्वसु वारणेषु। ईशे रिपुरधशर्ठ०सः॥ ३२॥ ते हि पुत्रासो अदितेः प्रजीवसे मर्त्याय। ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्त्रम्॥ ३३॥ कदाचनः स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते॥ ३४॥ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ ३५॥ परि ते दूडभो रथोऽस्माँ२ अश्नोतु विश्वतः। येन रक्षसि दाशुषः॥ ३६॥ भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्यार्ठ० सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः। नर्य प्रजां मे पाहि शर्ठ०स्य पशून्मे पाह्यथर्य पितुं मे पाहि॥ ३७॥ आगन्म विश्ववेदसमस्मभ्यं वसुवित्तमम्। अग्ने सम्राडभि द्युम्नमभि सह आयच्छस्व॥ ३८॥

अयमग्निर्गृहपतिर्गार्हपत्यः प्रजाया वसुवित्तमः। अग्ने गृहपतेऽभि द्युम्नमभि सह आयच्छस्व॥ ३९॥ अयमग्निः पुरीष्यो रयिमान्पुष्टिवर्धनः। अग्ने पुरीष्याभि द्युम्नमभि सह आयच्छस्व॥ ४०॥ गृहा मा बिभीत मा वेपध्वमूर्जं बिभ्रत एमसि। ऊर्जं बिभ्रद्वः सुमनाः सुमेधा गृहानैमि मनसा मोदमानः॥ ४१॥ येषामध्येति प्रवसन्येषु सौमनसो बहुः। गृहानुप ह्वयामहे ते नो जानन्तु जानतः॥ ४२॥ उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः। अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः। क्षेमाय वः शान्त्यै प्रपद्ये शिवꣳ शग्मꣳ शं योः शं योः॥ ४३॥ प्रघासिनो हवामहे मरुतश्च रिशादसः। करम्भेण सजोषसः॥ ४४॥ यद्ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये। यदेनश्चकृमा वयमिदं तदवयजामहे स्वाहा॥ ४५॥ मो षू ण इन्द्रात्र पृत्सु देवैरस्ति हि ष्मा ते शुष्मिन्नवयाः। महश्चिद्यस्य मीढुषो यव्या हविष्मतो मरुतो वन्दते गीः॥ ४६॥ अक्रन्कर्म कर्मकृतः सह वाचा मयोभुवा। देवेभ्यः कर्म कृत्वास्त प्रेत सचाभुवः॥ ४७॥ अवभृथ निचुं पुण निचेरुरसि निचुं पुणः। अव देवैर्देवकृतमेनोऽयासिषमव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि॥ ४८॥ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जꣳशतक्रतो॥ ४९॥ देहि मे ददामि ते नि मे देहि नि ते दधे। निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा॥ ५०॥ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी॥ ५१॥

सुसंदृशं त्वा वयं मघवन्वन्दिषीमहि। प्र नूनं पूर्णबन्धुरः स्तुतो यासि वशाँ अनु योजा न्विन्द्र ते हरी॥५२॥ मनो न्वाह्वामहे नाराशर्ठ०सेन स्तोमेन। पितृणां च मन्मभिः॥५३॥ आ न एतु मनः पुनः क्रत्वे दक्षाय जीवसे। ज्योक्च सूर्यं दृशे॥५४॥ पुनर्नः पितरो मनो ददातु दैव्यो जनः। जीवं व्रातर्ठ० सचेमहि॥५५॥ वयर्ठ०सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचमेहि॥५६॥ एष ते रुद्र भागः सह स्वस्त्राऽम्बिकया तं जुषस्व स्वाहैष ते रुद्र भाग आखुस्ते पशुः॥५७॥ अव रुद्रमदीमह्यव देवं त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात्॥५८॥ भेषजमसि भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम्। सुखं मेषाय मेष्यै॥५९॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥६०॥ एतत्ते रुद्राऽवसं तेन परो मूजवतोऽतीहि। अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासाऽ अहिर्ठ०सन्नः शिवोऽतीहि॥६१॥ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्॥६२॥ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिर्ठ०सीः। निवर्तयां यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥६३॥

नाग्निमन्थनीयास्त्रयोदश ऋचः। जातमग्निं कांस्यमृन्मयादिपात्रे सोपयनीके शुष्कगोमयपिण्डचूर्णं सतूलं नारिकेलजटां च निधाय तत्रारणिस्थग्निं प्रक्षिप्य धमन्यादिना मुखेन प्रज्वलयेत् यजमानश्च

देशकालौ सङ्कीर्त्य—''जातस्याग्नेः समृध्यर्थं वरमूल्यमाचार्याय तुभ्यं संप्रददे'' इति दद्यात्।

ततः कुण्डाद्वस्त्रपसार्य दारभिर्ज्वलन्तमग्निं गृहीत्वा कुण्डाद्बहिराग्नेय्यां निधाय आग्नेयकोणमार्गेण कुण्डमध्ये नीत्वा—ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह। मूलेन च तूष्णीं वा स्वाभिमुखं नाभौ स्थापयेत् प्रबोधयेच्च बलवर्धनमग्निम्।

अथ ध्यानम्

इष्टं शक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुच्चैर्दीर्घैर्दोर्भिर्धारयन्तं जपाभम्।
हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेत् वह्निं वह्निमौलि जटाभिः॥

इति ध्यात्वा गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारसिद्ध्यर्थे पञ्चदशवारं प्रणवान् पठेत्। ततः—ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽअस्य पादाद्वेशीर्षे सप्तहस्तासोऽअस्य। त्रिधा बद्धो वृषभोरोरवीतिमहोदेवो मर्त्यांऽआविवेश॥ इति षोडशैरुपचारैरग्निं संपूजयेत्।

ग्रहादिस्थापनम्

यजमानः जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणि सूर्यादिनवग्रहाणामधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-पञ्चलोकपाल-दशदिक्पालानां चावाहनं स्थापनं च पूजनं करिष्ये।

नवग्रहस्थापनम्—आचार्य ईशानकोण की ओर पीढ़े पर सफेद वस्त्र बिछाकर नवग्रहमण्डल का निर्माण कर सूर्यादिनवग्रहदेवताओं के निम्न मन्त्रों एवं वाक्यों के द्वारा उनका आवाहन व स्थापन यजमान से करावें-

जपा-कुसुम-सङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्॥

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

दधि-शङ्ख-तुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावहयाम्यहम्॥

ॐ इमं देवा असपत्नर्ठ० सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमुस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ० राजा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजःसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्॥

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ० सि जिन्वति॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ भौमाय नमः, भौममावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसठ० सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र हरितवर्ण भो बुध! इहागच्छेह तिष्ठ ॐ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

हिम-कुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्॥

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा ब्यपिबत्क्षत्त्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानठ० शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो मृतं मघु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तुः नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः, शनिश्चरमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैराठिनपुरोद्भव पैठीनसिगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ राहवे नमः, राहुमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

पालाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्रे धूम्रवर्ण भो केतो! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ केतवे नमः, केतुमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

ग्रहदक्षिणपार्श्वेऽधिदेवतास्थापनम्

नवग्रहों के आवाहन व स्थापन के पश्चात् आचार्य दायीं ओर आगे दिए हुए मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए अधिदेवताओं का स्थापन यजमान से करावें—

पञ्चवक्त्रं वृषारूढमुमेशं च त्रिलोचनम्।
आवाहयामीश्वरं तं खट्वाङ्गवरधारिणम्॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मा ऽमृतात्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वर इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ईश्वराय नमः, ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम्॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥

ॐ भूर्भुवः स्वः उमेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ उमायै नमः, उमामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

रुद्रतेजःसमुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम्।
षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम्॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्देहागच्छ इह तिष्ठ ॐ स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम्।
चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

कृष्णाजिनाऽम्बरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम्।
वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम्।
वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम्॥

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूंरुं०२॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिवपतिं प्रभुम्।
रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम्॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने दिने।
कलाकाष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम्॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कालेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ कालाय नमः, कालमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

धर्मराजसभासंस्थं कृताऽकृतविवेकिनम्।
आवाहयेच्चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम्

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्तेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

ग्रहवामपार्श्वे प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

आचार्य ग्रहों के बायीं ओर प्रत्यधिदेवताओं का आवाहन व स्थापन निम्न मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए यजमान से करावें—

रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्।
वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम्॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२। आसादयादिह॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

आदिदेवसमुद्भूता जगच्छुद्धिकरा शुभाः।
औषध्याप्यायनकरा अपामावाहयाम्यहम्॥

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अप इहाऽऽगच्छत इह तिष्ठत ॐ अद्भ्यो नमः, अपआवाहयामि स्थापयामि॥ २॥

शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।
सर्वशस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम्॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथ्वी इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

खड्गचक्रगदापद्महस्तं गरुडवाहनम्।
किरीटकुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य-पाꣳ सुरे स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ऐरावतगजारूढं सहस्त्राक्षं शचीपतिम्।
वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम्॥

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञःपुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम्।
नानाऽलङ्कारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणि इहागच्छेह तिष्ठ ॐ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम्।
अनेकव्रतयजमानरं सर्वेषां च पितामहम्॥

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापते इहागच्छेह तिष्ठ ॐ प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणिविराजितान्।
आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान्॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पा इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सर्पेभ्यो नमः, सर्पानामावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम्।
आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम्॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छेह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥ ९ ॥

पंचलोकपालादिस्थापनम्

प्रत्यधिदेवताओं के स्थापन के पश्चात् आचार्य विनायक आदि पंचलोकपाल, वास्तोष्पति तथा क्षेत्रपाल का आवाहन व स्थापन निम्न मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए यजमान से करावें—

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम्॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छेह तिष्ठ ॐ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्॥

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छेह तिष्ठ ॐ दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम्।
सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम्॥

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छेह तिष्ठ ॐ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम्।
आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम्॥

ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश इहागच्छेह तिष्ठ ॐ आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

देवतानां च भैषज्ये सुकुमारी भिषग्वरौ।
आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ इहागच्छतां इह तिष्ठतां ॐ अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

वास्तोष्पतिं विदिक्कार्यं भूशय्याभिरतं प्रभुम्।
आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्मफलप्रदम्॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवा भवो नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पते इहागच्छेह तिष्ठ ॐ वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

भूत-प्रेत-पिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम्।
आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः॥

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः। ऐमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानर क्षैत्रजित्याय देवाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपतये इहागच्छेह तिष्ठ ॐ क्षेत्राधिपतये नमः, क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

दशदिक्पालस्थापनम्

आचार्य ग्रहमण्डल के बाहर पूर्वदिशा से प्रदक्षिण क्रम द्वारा दशदिक्पालों का आवाहन व स्थापन निम्न मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करके यजमान से करावें-

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिद्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्द्धानं द्विनासिकम्।
षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्॥

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छेह तिष्ठ ॐ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम्॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छेह तिष्ठ ॐ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

सर्वप्रताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम्॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते इहागच्छेह तिष्ठ ॐ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

शुद्ध-स्फटिक-सङ्काक्षं जलेशं यादशां पतिम्।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मा न आयुः प्रमोषीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छेह तिष्ठ ॐ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छेह तिष्ठ ॐ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम्।
महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम्॥

ॐ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमेहागच्छेह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम्।
आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम्॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्‌वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्त्ये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इशानेहागच्छेह तिष्ठ ॐ ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम्।
आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धिहेतवे॥

ॐ अस्मे रुद्रा मे हना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शर्ठ० सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः॥

पूर्वेशानयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छेह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम्।
जगतां शान्तियजमानरं मण्डले स्थापयाम्यहम्॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥

निर्ऋति-पश्चिमयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्तेहागच्छेह तिष्ठ ॐ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥

निम्न श्लोक और मन्त्र से अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करे—

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं। य्यज्ञठ० समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ॥

नवग्रहपूजनम्

ध्यानम्

बृहस्पतिं दैत्यगुरुं महीसुतं शनैश्चरं चन्द्रसुतं च राहुम्।
दिवाकरं चन्द्रमसं सुकेतुं स्वकीयचित्ते बहुचिन्तयामि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः नवग्रहेभ्यो नमः, ध्यानं निवेदयामि।

आवाहनम्

समस्तप्रत्यूहसमुच्चयस्य विनाशने प्राप्तगुणाः शुभव्याः।
आवाहनं वो वितनोमि देवाः भवन्तु कल्याणकरा भवन्तः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० सशक्तिकेभ्यः नवग्रहेभ्यो नमः, आवाहनं करोमि।

आसनम्

रोचिष्णुकाञ्चनचयांशुपिशङ्गिताशं वैदूर्यरत्ननिकरैरभिभासितं तम्।
पीठं सदा सदमरैः प्रियमादृतं च साङ्गा नवग्रहवराः सततं भजन्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० स० नवग्रहेभ्यो नमः, आसनार्थे अक्षतान् स०।

पाद्यम्

कस्तुरिका सुरभिचन्दनमोदयुक्तमेलालवङ्गघनसारसुवासितं च।
पाद्यं ददामि जगदेकनिवासदेवाः साङ्गा नवग्रहवराः प्रतिमानयन्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० स० नवग्रहेभ्यो नमः, पादयो पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

सौजन्यसौख्यजननीजननीजनानां येषां कृपैव वसुधा वसुधारिणी वै।
ते सर्वदेवगुरुगौरवधारिदेहा अर्घ्यं सदैव हि ग्रहा मम धारयन्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० स० नवग्रहेभ्यो नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

कंकोलपत्रहरिचन्दनपुष्पयुक्तं एलालवङ्गलवलीघनसारसारम्।
दत्तंसदैव हृदये करुणाशयेऽत्मन् देवाः भजन्तु शुभमाचमनीयमम्भः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० स० नवग्रहेभ्यो नमः, अर्धाङ्गमाचमनीयं स०।

मधुपर्कम्

अधिकमानयुतः प्रियकारकः स मधुपर्क इतः समुपस्थितः।
सुविहितस्य तथाऽस्यसुरप्रियाः कुरुतः स्वीकरणं नवसंख्यकाः!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० स० नवग्रहेभ्यो नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

स्नानम्

जले समादाय विचित्रपुष्पाण्यगप्याणि चानीय निपातितानि।
स्नानं विधेयं बिबुधाः! समन्तादागत्य युष्माभिरिहाङ्गणे मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा०स०सा०स० नवग्रहेभ्यो नमः, मधुपर्कान्ते आचमनीयं जलं स०।

रक्तचूर्णम्

धूपादिकेनातिसुवासितं तथा शोणश्रियानन्दविवर्धितेन च।
श्रीरक्तचूर्णं मलतापहारकं नवग्रहा वो मनसार्पयामि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० स० नवग्रहेभ्यो नमः, रक्तचूर्णं समर्पयामि।

धूपम्

लवङ्गपाटीरजचूर्णवर्धितं नरासुराणामपि सौख्यदायकम्।
लोकत्रये गन्धचयप्रसारकं गृह्णन्तु धूपं गुरुकं नवग्रहाः!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० स० नवग्रहेभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि। हस्तप्र०।

दीपम्

सद्वर्तिकां ज्ञानविवर्धिकामिमां निपात्य दीपे विनिवेदितां तथा।
प्रज्वालितं ध्वान्तविनाशकारकं गृह्णन्तु ज्ञानस्य विशालरूपकम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० स० नवग्रहेभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्

सिद्धान्नकर्पूरविराजितं पुरः सौरभ्यसान्द्रेण विवर्धितं तथा।
नैवेद्यमेतद्रुचिरं सुगन्धितं स्वीकृत्य मामत्र कृतार्थयन्तु वै॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० स० नवग्रहेभ्यो नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

ताम्बूलम्

दिव्या गृहा! नव समेत्य गृहे मदीये भक्त्यार्पितं परमगन्धयुतं सुरम्यम्।
एलालवङ्गबहुलं क्रमुकादियुक्तं ताम्बूलमद्य मम गृह्णत हे सुरेन्द्राः!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० स० नवग्रहेभ्यो नमः, ताम्बूलपत्रं पुङ्गफलं च सम०।

दक्षिणाः

दैवासुरैर्नित्यमशेषकाले प्रगीयमानाः प्रभवः! पुराणाः!।
गृह्णन्तु सद्यः खलु दक्षिणां च ध्यानेन भक्ते मयि वर्तितव्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० स० नवग्रहेभ्यो नमः, दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि।

नीराजनम्

नीराजना सौख्यप्रदा सदैव गाढान्धकारादपि दूरकर्त्री।
अशेषपापैः परिपूरितस्य शुद्धिं करोति प्रियमानवस्य॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० स० नवग्रहेभ्यो नमः, नीराजनं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

प्रदक्षिणाः सन्ति प्रदक्षिणास्तथा पदे-पदे दुःखविनाशिका अपि।
जन्मान्तरस्यापि विनाशकारिकाः पापस्य याश्चित्तविवर्धितस्य च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० स० नवग्रहेभ्यो नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

पुष्पाञ्जलि सकलदिव्यग्रहाः! मदीयं भक्त्यार्पितं मधुरगन्धयुतं ससारम्।
दीने विधाय करुणां मयि हे सुरेन्द्राः! स्वीकृत्य दीनजनवत्सलतां किरन्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० स० नवग्रहेभ्यो नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्तवनम्

भानुः शशी धरणिजः सबुधो गुरुश्च शुक्रस्तथा दिवसनायकसूनुरेषः।
राहुः सदैव जगतां सुहितः सकेतुरेते गृहाः शिवकराः सततं भवन्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सा० स० सा० स० नवग्रहेभ्यो नमः, स्तवनं समर्पयामि।

असङ्ख्यात रुद्रकलश स्थापनं पूजनं च

तदनन्तरं ग्रहस्येशानदिग्भागे कलशस्थापनविधिना रुद्रकलशं संस्थाप्य, कलशे वरुणमसंख्यातरुद्रांश्चाऽऽवाह्य पूजयेत्। तद्यथा—
ॐ असङ्ख्याता सहस्त्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषाठ० सहस्त्रयोजने ऽवधन्वानितन्मसि॥ ॐ असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः असङ्ख्यातरुद्रानामावाहयामि स्थापयामि। ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं। य्यज्ञठ० समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ॥ इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य 'ॐ असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः' इति लब्धोपचारेण सम्पूजयेत्।

असङ्ख्यातरुद्रपूजनम्

ध्यानम्

वृष वाहन! सर्प-भूषण! डमरु -बादक! शूल-धारक!।
संततं हृदि चिन्तयामि त्वामयि गङ्गाधर! चन्द्रशेखर!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः
असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः, ध्यानं निवेदयामि।

आवाहनम्

क्रियते करुणा-निधे! विभो! गिरिशाऽवाहनमद्य ते मया।
भगवन्निज-पाद-पङ्कजैः कुरु पूतं मम सद्मपावनैः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः
असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः, आवाहनं करोमि।

आसनम्

अयि रुद्र! सुसज्जितं मया तव हेतोरिदमद्य चासनम्।
करुणेश! गृहाण वर्धय-दासस्य-यशो-वितानकम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः
असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः, आसनार्थे अक्षतान् स०।

पाद्यम्

अयि पाद्यमिदं प्रदीयते बहुभीतेन मया दयानिधे!।
करुणां कुरु गृह्यतामिदं शिव! दूरी कुरु मामकं भयम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः, पादयो पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

करुणा यदि नाथ ते मयि श्रद्धार्पितमेव गृह्यते।
पुनरीश! विलम्ब्यते कथं कथमर्घ्यन्तममाद्य गृह्यते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

गिरिशोपहरामि ते पुरो निज भक्त्या परिपूरितं मुदा।
इदमाचमनीयमीश्वर! करुणां दर्शय गृह्यतां प्रभो!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः, अर्धाङ्गमाचमनीयं स०।

मधुपर्कम्

अयि दयामय! देव! समर्प्यते शिव! हरे! मधुपर्कलवस्त्व।
पतित-पावन! पावन-पादयोरनुगृहाण जपं कुरु मे विभो!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

स्नानम्

मया ते प्रियं संभृतं गाङ्गमीश! जलं पूतपूतं त्वदर्थं त्रिनेत्र!।
प्रसीद प्रभो! जटाजूटधारिन्! कुरु स्नानमीशान! देवाधिदेव!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः, मधुपर्कान्ते आचमनीयं जलं स०।

कुंकुमम्

श्रुतस्त्वं मया दीनबन्धुर्दयालुस्तथा चाशुतोषः पुनः को विलम्बः!।
मया भक्तियुक्तेन दानेन दत्तं गृहाणाधुना कौङ्कुमं चूर्णमेतत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः
असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः, कुंकुमम् समर्पयामि।

धूपम्

इदं गन्धयुक्तं विभो! धूपजालं त्वदर्थं मया संभृतं किं नवाऽलम्।
यदि स्यादिदं स्वीकृतं ह्याशुतोषं! यथार्थं भवेन्नाम ते दीनबन्धो!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः
असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि। हस्तप्र०।

दीपम्

प्रदीपायसे त्वं जगत्यां दयालो! प्रदीप! पुरस्ते न शोभां दधाति।
विलोक्येश! लोकस्य रीतिं तथापि महादेव! दीपं पुरस्तेऽअपर्यामि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः
असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्

समानीतमीशान! नैवेद्यमेतत् त्वदर्थं मनोहारि पक्वं सुगन्धिम्।
दयानाथ! मन्ये न योग्यं तथापि विभो! तेऽस्मि किं वा दयापात्रमेवम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः
असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयजलं समर्पयामि।

ताम्बूलम्

चिदानन्दमूर्त्ते! दयानाथ! रुद्र! लवङ्गादियुक्तं सुताम्बूलमेतत्।
मया दीयते दीन-बन्धुर्यतस्त्वं गृहाणेश! भक्त्यार्पितं तापहारिन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः
असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः, ताम्बूलपत्रं पुङ्गफलं च सम०।

दक्षिणा:

त्वमेवाऽसि दाता विधाता दयालुर्ददामीश! किं दक्षिणाब्याजतोऽहम्।
तथापीश! मत्वा स्वदासार्पितां तामिमां दक्षिणां दीनबन्धो! गृहाण॥

ॐ भूर्भुव: स्व: साङ्गेभ्य: सपरिवारेभ्य: सायुधेभ्य: सशक्तिकेभ्य:
असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नम:, दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि।

नीराजनम्

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तं हृदयारबिन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥

ॐ भूर्भुव: स्व: साङ्गेभ्य: सपरिवारेभ्य: सायुधेभ्य: सशक्तिकेभ्य:
असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नम:, नीराजनं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

पुनाति विश्वं हि परिक्रमा ते सुरासुरैरर्चित-पाद-पद्म!।
अतो दया नाथ! यथाविधं तां करोमि भक्त्यानतमस्तकोऽहम्॥

ॐ भूर्भुव: स्व: साङ्गेभ्य: सपरिवारेभ्य: सायुधेभ्य: सशक्तिकेभ्य:
असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नम:, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

पुष्पांजलिं नाथ समर्पयामि गृहाणदेवेश! जगन्निवास!।
समर्पितं त्वं किल भक्तिपूर्वं जहासि नो नाथ! गणेश! जाने॥

ॐ भूर्भुव: स्व: साङ्गेभ्य: सपरिवारेभ्य: सायुधेभ्य: सशक्तिकेभ्य:
असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नम:, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्तवनम्

सौख्याकरस्त्वं करुणा-करश्च-भक्तार्त्ति-हर्तासि ददासि सर्वम्।
अहं न याचे परमीश! किञ्चिद्विहाय भक्तिं परमां त्वदीयाम्॥
दीनं ज्वलन्मम मनो विषयाग्निकुण्डे, आकारयत्यतितमां किल दीन-बन्धुम्।
त्वत्तोऽपरं कथय कं परमेश्वरं हा! पायाद्, दयामय! विभो! शिव! शूलधारिन्!॥

चतुःषष्टियोगिनीस्थापनम्

आचार्य मण्डप में एक हाथ चौड़ी वेदी या परिखायुक्त वेदी पर लालवस्त्र से उसको ढक कर उस पर नौ-नौ रेखाएँ पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण की ओर खीचें। तदुपरान्त चौसठखानों में चतुष्टीपद योगिनी के बनेगे, जिनमें रंगीन अक्षत भर कर योगिनी का आवाहन होगा, इनमें कुछ विद्वान् त्रिकोण आकृति का भी निर्माण करते हैं। स्वस्तिवाचन के मंत्रों की आवृति से मध्य में तीन कलश स्थापित कर महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती का आवाहन कर पूजन करें, योगिनीवेदी के पास बैठकर आचार्य निम्न संकल्प यजमान से करावें—

यजमानः जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ स्मृत्वा, अस्य शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणः समृद्धये महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीसहितानां चतुःषष्टियोगिनीनां पूजनं करिष्ये।

संकल्प के पश्चात् महाकाली की प्रतिमा योगिनी की प्रतिमा में '**ॐ अश्मन्नूर्जम्०**' इस वाक्य के द्वारा अग्नयुत्तारण करके प्रतिमा को यथास्थान स्थापित कर आवाहनादि करें—

ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥

अयमेव मन्त्रः सर्वेषूपचारेषु महाकालीपूजने आवर्तनीयः। एवं महालक्ष्मी-महासरस्वतीपूजने-ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णान्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ इति मन्त्रावावर्तनीयौ।

आचार्य पहली पंक्ति में निम्न मन्त्रों का उच्चारण कर निम्न क्रम से आवाहन और स्थापन करावें—

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम्॥ पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ॐ गजाननायै नमः। गजाननामावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥ ॐ सिंहमुख्यै नमः। सिंहमुखीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ महाँ२॥ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा॥ ॐ गृध्रास्यायै नमः। गृध्रास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ सद्योजातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः। अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहा कृतठ० हविरदन्तु देवाः॥ ॐ काकतुण्डिकायै नमः। ॐ काकतुण्डिकामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्त्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्ग्धि हरसा माभिमर्ठ०स्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः॥ ॐ उष्ट्रग्रीवायै नमः। उष्ट्रग्रीवामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ स्वर्ण घर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा॥ ॐ हयग्रीवायै नमः। हयग्रीवामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे विश्वं च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं

च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ॐ वाराह्यै नमः। वाराहीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ भायै दार्वाहारं प्रभाया अग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारꣳ सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारमवऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम्॥ ॐ शरभाननायै नमः। शरभाननामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

आचार्य दूसरी पंक्ति में निम्न मन्त्रों का उच्चारण कर निम्न क्रम से आवाहन और स्थापन करावें—

ॐ जिह्वामे भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड्भामः॥ मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः॥ ॐ उलूकिकायै नमः। उलूकिकामावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा संदिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा सꣳहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहा यनाय स्वाहा प्रायाणाय स्वाहा॥ ॐ शिवारावायै नमः। शिवारावामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्करयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ॐ मयूरायै नमः। मयूरामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन॥ स्तोतारस्त इह स्मसि॥ ॐ विकटाननायै नमः। विकटाननामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना॥ ॐ अष्टवक्त्रायै नमः। अष्टवक्त्रामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ अयमग्निः सहस्त्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः। मूर्धा कवी रयीणाम्॥ ॐ कोटराक्ष्यै नमः। कोटराक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥ ॐ कुब्जायै नमः। कुब्जामावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु। पृथिव्याः सꣳ स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि॥ ॐ विकटलोचनायै नमः। विकटलोचनामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

आचार्य तीसरी पंक्ति में आगे दिए हुए मन्त्रों का उच्चारण कर निम्न क्रम से आवाहन और स्थापन करावें—

ॐ यमेन दत्तं त्रित एनमायुनगिन्द्र एणं प्रथमो अध्यतिष्ठत्। गन्धर्वो अस्य रशनामगृभ्णात्सूरादश्वं वसवो निरतष्ट॥ ॐ शुष्कोदर्यै नमः। शुष्कोदरीमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्॥ ॐ ललज्जिह्वायै नमः। ॐ ललज्जिह्वामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ अग्ने ब्रह्म गृभ्णीष्व धरुणमस्यन्तरिक्षं दृठं०ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। धर्त्रमसि दिवं दृठं०ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। विश्वाभ्यस्त्वाशाभ्य उपदधामि चितः स्थोर्ध्वचितो भृगूणामङ्गिरसां तपसा तप्यध्वम्॥ ॐ श्वदंष्ट्रायै नमः। श्वदंष्ट्रामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम॥ ॐ वानराननायै नमः। वानराननामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्मा छन्दाठं०स्यङ्गानि यजूठं० षि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत॥ ॐ ऋक्षाक्ष्यै नमः। ऋक्षाक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।

अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ ॐ केकराक्ष्यै नमः । केकराक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी । तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिसन्ताभिचाकशीहि ॥ ॐ बृहत्तुण्डायै नमः । बृहत्तुण्डामावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

ॐ वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः । करतां नः सुराधसः ॥ ॐ सुरप्रियायै नमः । सुरप्रियामावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

आचार्य चौथी पंक्ति में निम्न मन्त्रों का उच्चारण कर निम्न क्रम से आवाहन और स्थापन करावें—

ॐ हर्ठ०सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदूतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऽऋतं बृहत् ॥ ॐ कपालहस्तायै नमः । कपालहस्तामावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

ॐ सुसंदृशं त्वा वयं मघवन्वन्दिषीमहि । प्र नूनं पूर्णबन्धुरः स्तुतो यासि वशाँ अनु योजा न्विन्द्र ते हरी ॥ ॐ रक्ताक्ष्यै नमः । रक्ताक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥

ॐ प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा सम्पदसि सम्पदे त्वा तेजोऽसि तेजसे त्वा ॥ ॐ शुष्क्यै नमः । शुष्कीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

ॐ देवीरापो अपांनपाद्यो व ऊर्मिर्हविष्य इन्द्रियावान्मदिन्तमः । तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा ॥ ॐ श्येन्यै नमः । शेनीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

ॐ देवीरापो अपांनपाद्यो व ऊर्मिर्हविष्य इन्द्रियावानमदिन्तमः। तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा॥ ॐ कपोतिकायै नमः। कपोतिकामावाहयामि स्थाप-यामि॥ ५॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ ॐ पाशहस्तायै नमः। पाशहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः। दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्॥ ॐ दण्डहस्तायै नमः। दण्डहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ कदाचन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यत आदित्येभ्यस्त्वा॥ ॐ प्रचण्डायै नमः। प्रचण्डामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

आचार्य पाँचवी पंक्ति में निम्न मन्त्रों का उच्चारण कर निम्न क्रम से आवाहन और स्थापन करावें—

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ॐ चण्डविक्रमायै नमः। चण्डविक्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि॥ ॐ शिशुघ्न्यै नमः। शिशुघ्नीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ देवी द्यावापृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥ ॐ पापहन्त्र्यै नमः पाहन्त्रीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव॥ ॐ काल्यै नमः। कालीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ ॐ रुधिरपायिन्यै नमः। रुधिरपायिनीमावाहयामिस्थापयामि॥ ५॥

ॐ अग्निश्च म आपश्च मे वीरुधश्च म ओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मेऽकृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च मे वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ॐ वसाधयायै नमः। वसाधयामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य। इषुधिः संकाः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठेनिनद्धो जयति प्रसूतः॥ ॐ गर्भभक्षायै नमः। गर्भक्षामावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ शवहस्तायै नमः। शवहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

आचार्य छठवीं पंक्ति में निम्न मन्त्रों का उच्चारण कर निम्न क्रम से आवाहन और स्थापन करावें—

ॐ ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुखं च मे शयनं च

सूषाश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः। आन्त्रमालिनीमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून्विध्यतार्ठ० संविदाने आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अमित्रान्॥ ॐ स्थूलकेश्यै नमः। स्थूलकेशीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना॥ ॐ बृहत्कुक्ष्यै नमः। बृहत्कुक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवति। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ ॐ सर्पास्यायै नमः। सर्पास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ अस्कन्नमद्य देवेभ्य आज्यर्ठ०संभ्रियासमङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषं वसुमतीमग्ने ते च्छायामुपस्थेषं विष्णो स्थानमसीत इन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वोंध्वर आस्थात्॥ ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः। प्रेतवाहिनीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ तोव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोश्वारथेभिः सहवाजयन्तः॥ अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान्क्षिणन्तिशत्रू१। रनपव्ययन्तः॥ ॐ दन्तशूककरायै नमः। दन्तशूककरामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥ ॐ क्रौञ्च्यै नमः। क्रौञ्चीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधा असि चनो मयि धेहि। जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे॥ ॐ मृगशीर्षायै नमः। मृगशीर्षामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

आचार्य सातवीं पंक्ति में निम्न मन्त्रों का उच्चारण कर निम्न क्रम से आवाहन और स्थापन करावें—

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे॥ ॐ वृषवाहिन्यै नमः। वृषवाहिनामावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥ ॐ व्यात्तास्यायै नमः। व्यात्तास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्॥ उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥ ॐ धूमविश्वासायै नमः। धूमविश्वासामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेम्बालिके नमानयतिकश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्कांपीलवासिनीम्॥ ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वद्दशे नमः। व्योमैकचरणोर्ध्वद्दशमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ ॐ तापिन्यै नमः। तापिनीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयठ० सुधातुदक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत॥ ॐ शोषणीदृष्ट्यै नमः। शोषणीदृष्टिमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवार्ठ०सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥
ॐ कोटर्यै नमः। कोटरीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च म एकादश च म एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म एकविर्ठ०शतिश्च म एकविर्ठ०शतिश्च मे त्रयोविर्ठ०शतिश्च मे त्रयोविर्ठ०शतिश्च मे पञ्चविर्ठ०शतिश्च मे पञ्चविर्ठ० शतिश्च मे सप्तविर्ठ०शतिश्च मे सप्तविर्ठ०शतिश्च मे नवविर्ठ०शतिश्च मे नवविर्ठ०शतिश्च म एकत्रिर्ठ०शच्च म एकत्रिर्ठ०शच्च मे त्रयस्त्रिर्ठ० शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥
ॐ स्थूलनासिकायै नमः। स्थूलनासिकामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

आचार्य आठवीं पंक्ति में निम्न मन्त्रों का उच्चारण कर निम्न क्रम से आवाहन और स्थापन करावें—

ॐ ब्रह्माणि मे मतयः शर्ठ० सुतासः शुष्म इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः। आशासते प्रतिहर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो अच्छ॥
ॐ विद्युत्प्रभायै नमः। विद्युतप्रभामावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ॐ बलाकास्यायै नमः। बलाकास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं जाया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमार्ठ०सं परिपातु विश्वतः॥
ॐ मार्जार्यै नमः। मार्जारीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ तिस्त्रस्त्रेधा सरस्वत्यश्विना भारतीडा। तीव्रं परिस्त्रुता सोममिन्द्राय सुषुवुर्मदम्॥ ॐ कटपूतनायै नमः। कटपूतनामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति। अपाꣳ रसेन वरुणो न साम्नेन्द्रꣳ श्रियै जनयन्नप्सु राजा॥ ॐ अट्टाट्टहासायै नमः। अट्टाट्टहासामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्॥ समूढमस्यपाꣳ सुरेस्वाहा॥ ॐ कामाक्ष्यै नमः। कामाक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि॥ ॐ मृगाक्ष्यै नमः। मृगाक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकꣳसꣳशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व॥ ॐ मृगलोचनायै नमः। मृगलोचनामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

ईशाने—ॐ जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि॥ पूर्वे—ॐ विजयायै नमः, विजयामावाहयामि स्थापयामि॥ आग्नेये—ॐ अजितायै नमः, अजितामावाहयामि स्थापयामि॥ दक्षिणे—ॐ अपराजितायै नमः, अपराजितामावाहयामि स्थापयामि॥ नैर्ऋत्ये—ॐ क्षेमकर्त्र्यै नमः, क्षेमकर्त्रीमावाहयामि स्थापयामि॥ पश्चिमे—ॐ लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि॥ वायव्ये—ॐ वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि॥ उत्तरे—ॐ पार्वत्यै नमः, पार्वतीमावाहयामि स्थापयामि॥

(अथवा)

केवलं नामाऽनुक्रमेण योगिनीस्थापनम्

ॐ गजाननायै नमः गजाननामावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥
ॐ सिंहमुख्यै नमः सिंहमुखीमावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥
ॐ गृध्रास्यायै नमः गृध्रास्यामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥
ॐ काकतुण्डिकायै नमः काकतुण्डिकामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥
ॐ उष्ट्रग्रीवायै नमः उष्ट्रग्रीवामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥
ॐ हयग्रीवायै नमः हयग्रीवामावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥
ॐ वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥
ॐ शरभाननायै नमः शरभाननामावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥
ॐ उलूकिकायै नमः उलूकिकामावाहयामि स्थापयामि ॥ ९ ॥
ॐ शिवारावायै नमः शिवारावामावाहयामि स्थापयामि ॥ १० ॥
ॐ मयूरायै नमः मयूरामावाहयामि स्थापयामि ॥ ११ ॥
ॐ विकटाननायै नमः विकटाननामावाहयामि स्थापयामि ॥ १२ ॥
ॐ अष्टवक्त्रायै नमः अष्टवक्त्रामावाहयामि स्थापयामि ॥ १३ ॥
ॐ कोटराक्ष्यै नमः कोटराक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ १४ ॥
ॐ कुब्जायै नमः कुब्जामावाहयामि स्थापयामि ॥ १५ ॥
ॐ विकटलोचनायै नमः विकटलोचनामावाहयामि स्थापयामि ॥ १६ ॥
ॐ शुष्कोदर्यै नमः शुष्कोदरीमावाहयामि स्थापयामि ॥ १७ ॥
ॐ ललज्जिह्वायै नमः ललज्जिह्वामावाहयामि स्थापयामि ॥ १८ ॥
ॐ श्वदंष्ट्रायै नमः श्वदंष्ट्रामावाहयामि स्थापयामि ॥ १९ ॥
ॐ वानराननायै नमः वानराननामावाहयामि स्थापयामि ॥ २० ॥
ॐ ऋक्षाक्ष्यै नमः ऋक्षाक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ २१ ॥

ॐ केकराक्ष्यै नमः केकराक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ २२॥
ॐ बृहत्तुण्डायै नमः बृहत्तुण्डामावाहयामि स्थापयामि॥ २३॥
ॐ सुरप्रियायै नमः सुरप्रियामावाहयामि स्थापयामि॥ २४॥
ॐ कपालहस्तायै नमः कपालहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ २५॥
ॐ रक्ताक्ष्यै नमः रक्ताक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ २६॥
ॐ शुष्क्यै नमः शुष्की-मावाहयामि स्थापयामि॥ २७॥
ॐ श्येन्यै नमः शेनीमावाहयामि स्थापयामि॥ २८॥
ॐ कपोतिकायै नमः कपोतिकामावाहयामि स्थापयामि॥ २९॥
ॐ पाशहस्तायै नमः पाशहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ ३०॥
ॐ दण्डहस्तायै नमः दण्डहस्तमावाहयामि स्थापयामि॥ ३१॥
ॐ प्रचण्डायै नमः प्रचण्डामावाहयामि स्थापयामि॥ ३२॥
ॐ चण्डविक्रमायै नमः चण्डविक्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ३३॥
ॐ शिशुघ्न्यै नमः शिशुघ्नीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३४॥
ॐ पापहन्त्र्यै नमः पाहन्त्रीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३५॥
ॐ काल्यै नमः कालीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३६॥
ॐ रुधिरपायिन्यै नमः रुधिरपायिनीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३७॥
ॐ वसाधयायें नमः वसाधयामावाहयामि स्थापयामि॥ ३८॥
ॐ गर्भभक्षायै नमः गर्भक्षामावाहयामि स्थापयामि॥ ३९॥
ॐ शवहस्तायै नमः शवहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ ४०॥
ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः आन्त्रमालिनीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४१॥
ॐ स्थूलकेश्यै नमः स्थूलकेशीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४२॥
ॐ बृहत् कुक्ष्यै नमः बृहत्कुक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४३॥
ॐ सर्पास्यायै नमः सर्पास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ ४४॥

ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः प्रेतवाहिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४५ ॥
ॐ दन्तशूककरायै नमः दन्तशूककरामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४६ ॥
ॐ क्रौञ्च्यै नमः क्रौञ्चीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४७ ॥
ॐ मृगशीर्षायै नमः मृगशीर्षामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४८ ॥
ॐ वृषवाहिन्यै नमः वृषवाहिनामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४९ ॥
ॐ व्यात्तास्यायै नमः व्यात्तास्यामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५० ॥
ॐ धूमविश्वासायै नमः धूमविश्वासामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५१ ॥
ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः व्योमैकचरणोर्ध्वदृशमा० स्था० ॥ ५२ ॥
ॐ तापिन्यै नमः तापिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५३ ॥
ॐ शोषणीदृष्ट्यै नमः शोषणीदृष्टिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५४ ॥
ॐ कोटर्यै नमः कोटरीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५५ ॥
ॐ स्थूलनासिकायै नमः स्थूलनासिकामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५६ ॥
ॐ विद्युत्प्रभायै नमः विद्युतप्रभामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५७ ॥
ॐ बलाकास्यायै नमः बलाकास्यामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५८ ॥
ॐ मार्जार्यै नमः मार्जारीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५९ ॥
ॐ कटपूतनायै नमः कटपूतनामावाहयामि स्थापयामि ॥ ६० ॥
ॐ अट्टाट्टहासायै नमः अट्टाट्टहासामावाहयामि स्थापयामि ॥ ६१ ॥
ॐ कामाक्ष्यै नमः कामाक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६२ ॥
ॐ मृगाक्ष्यै नमः मृगाक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६३ ॥
ॐ मृगलोचनायै नमः मृगलोचनामावाहयामि स्थापयामि ॥ ६४ ॥

चतुर्वेदोक्तादिमन्त्रैर्योगिनीस्थापनम्

१-ऋग्वेद—तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धिजञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ १॥ यजुर्वेद—तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ २॥ (सामवेद) आवो राजा॥ नमध्व। रस्यरुद्राम्। हो। ता। राम। स। त्ययजाइम्। रोदसीयोः अग्निंपु। रा। तनयि। त्नोरचित्तात्। हिरण्य। रू॥ पा ३ मव। सा ३४३ इ॥ ३॥ अथर्ववेद—ईशां वो मरुतो देव अदित्यो ब्रह्मणस्पतिः। ईशां वा इन्द्रश्चाग्निश्च धाता मित्रः प्रजापतिः। ईशां व ऋषयश्च क्रुरमित्रेषु समीक्षयन्त्रदिते अर्बुदे तव॥ ४॥ एह्येहि यज्ञेऽत्र गजानने त्वं सिन्दूरवर्णे गणपेऽनुकूले। रक्ताम्बरे रक्तविलोचने च गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ गजाननायै नमः—गजाननामावाहयामि॥ ५॥

२-ऋग्वेद—ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्॥ १॥ यजुर्वेद—आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥ २॥ (सा०) ब्रह्मा। ब्रा २३ ह्या। जज्ञानं प्रथमं पुरस्तात्॥ विसाइ। वा २३ इसी। मतः सुरुचोवेन आवः। सबू। सा२३ बू। न्धिया उपमा अस्य वा इष्ठाः॥ सताः।

सा २३ ताः। चयोनिमसतश्च वा इ वा ३४३। ओ २३४५ इ॥ डा॥ ३॥ स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्॥ अथर्ववेदं—ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्याऽउपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः॥ ४॥ आवाहये सिंहमुखीं सुरूपां सर्वार्तिहन्त्री सकलार्थदात्रीम्। विद्युन्निभां सर्वजगत्प्रणम्यां रक्षाध्वरं नो वरदे नमस्ते॥ सिंहमुख्ये० सिंहमुखीमा०॥ ५॥

३-ऋग्वेद—महाँऽ इन्द्रो य ऽओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे ॥ १॥ यजुर्वेद—महाँऽ इन्द्रो य ऽओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे। उपयाम गृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैषते योनिर्महेन्द्राय त्वा॥ २॥ (सा.) इन्द्र हाउ। इा हो इ। पर्वता बृहता रथा २ इना २३ वा ३। ऊ ३४ पा॥ वामीर्हा उ। हा हो इ। इष आ वह तूँ सुवा २ इ रा २३ उवा ३। ऊ ३४ पर॥ वीत्ँ हाउ। हा हो इ। हव्यानध्वरे सुदा २ इ वा २ उवा ३॥ ऊ ३४ पा० वर्द्धा हा उ। हा हो थां गीर्भिरिडयामदा २० ना २ उवा ३॥ ऊ ३२३४ पा ॥ ३॥ (अ०) महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वा वृधे॥ ४॥ एह्येहि गृध्रास्य इहामरेशि प्रचण्डदैतेय विमर्दने त्वम्। कुरु प्रसाद मयि देवि मातः पूजा त्वदर्था रचित्वा परेयन्॥ गृध्रास्यायै०। गृध्रास्यामा०॥ ५॥

४-ऋग्वेद—कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे। वो चेम शंतमं हृदे॥ १॥ यजुर्वेद—सद्योजातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः। अस्य होतुः प्रदिश्यतस्य वाचि स्वाहा कृतठं० हविरदन्तु देवाः॥ २॥ (सा.) तद्वौहोवा॥ गाया २

सुताइसा २३४ चा। पुरुहूता। यसात्वा १ ना २ इ॥ शंयत्। हा। औ ३ होई। गा २२४ वा इ॥ ना २ शा २३४ औ हो वा॥ ए ३। किने २३४५॥ ३॥ (अ. देवस्य सवितुः सर्वे कर्म कृण्वन्तु मानुषाः। शं नो भवन्त्वप ओषधीः शिवा॥ ४॥ आवाहये त्वामिह काकतुण्डै यज्ञ चतुर्वेद भवे सदैव। कोष्ठे तुरीये वसति विधत्स्व पूजां तवाहं विद्रधे विनम्रः॥ काकतुण्डिकायै० काकतुण्डिकामा०॥ ५॥

५-(ऋ०) वपुर्न तच्चिकिनुषे चिदस्तु समानं नाम धेनु पत्यभानम्। मर्तेष्वन्यद् दो ह से पीपाय सकृच्छुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः॥ १॥ (य०) आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्त्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्ग्धि हरसा माभिमर्ठ०स्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः॥ २॥ (सा०) उदुत्यम्। ओहाइ। जा। तवे २ दा २३४ साम्। देवं वहा। हीकेता २३४ वाः। दा २३४ र्शे हाइ। वा इश्वायसू। र्याम्। औ २३ हो वा। हो ५ इ॥ डा ॥ ३ ॥ (अ०) कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्त्राक्षो अजरो भूरिरेताः। तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा युवनानि विश्वा॥ ४॥ एह्येहि यज्ञेत्र सरोजहस्ते कल्याणदे रक्तमुखोष्ट्रग्रीवे। कलापदण्डास्त्रधरे प्रसीद विशाध्वरं नः सततं शुभाय॥ उष्ट्रग्रीवायै० उष्ट्रग्रीवामा०॥ ५॥

६-(ऋ०) इतो वा सातिमीहसे दिवो वा पार्थिवा दधि। इन्द्रं महो वा रजसः॥ १॥ (य.) स्वर्ण धर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा॥ २॥ (सा.) अबोधिया॥ ग्नाइः समिधाजना २ नाम्। प्रताइधे ३ नूम्। इवायती मुषासम्। यह्वाई ३ वा। प्रवा २

यामुज्जिहानाः ॥ प्रभाना २३ वा. । सस्रते नाकमच्छ । इडा २३ भा ३४३ । ओ २३४५ इ । डा ॥ ३ ॥ (अ.) कुहू देवीं सुकृतं विद्मनायसमस्मिन् यज्ञे सुहवा जोहवीमि । सानो रयिं विश्ववारं नि यच्छाद्ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यऽम् ॥ ४ ॥ एह्येहि यज्ञेऽत्र सुवाजिग्रीवे विशालनेत्रे भव भूतिकर्त्री । देवान्समावाहय हव्यकामान् गृहाण पूजां सततं नमस्ते । हयग्रीवायै० । हयग्रीवामा० ॥ ५ ॥

७-(ऋ०) श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः । श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदया मसि ॥ १ ॥ (य.) सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे विश्वं च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २ ॥ (सा.) तु चेतुना । यता ३२ त्सु २३४ नाः द्राधीया र ३४ यूः जीवासा २ इ । जादी २ त्यासाः २ ॥ समहसा २ः । कृणो ३ ता ५ ॥ ना २३४५ ॥ ३ ॥ (अ.) वाताज्जातो अन्तरिक्षाद्विद्युतो ज्योतिषस्परि स नो हिरण्यजाः शंखः कृशनः पा त्वं हसः ॥ ४ ॥ एह्येहि वाराहि विशालरूपे द्रष्ट्राग्रलीलोद्धृतभूमि के च । पीताम्बरे देवि नमोऽस्तु तुभ्यं गृहाण पूजां वरदे नमस्ते ॥ वाराह्यै० वाराहीमा० ॥ ५ ॥

८-(ऋ०) गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी । सा चतुष्पदी । अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् ॥ १ ॥ (य०) भायै दार्वाहारं प्रभाया अग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारꣳ० सर्वेभ्यो लोकेभ्यऽ उपसेक्तारम ऋत्यै वधायौपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूलीं

प्रकामाय रजयित्रीम्॥ २॥ (सा०) आतू औ हो। आतू औ हो न इन्द्र वृत्रा २३४ हान्। अस्माकमर्द्धम्। आगा २३ ही। गाही॥ २॥ माहा २० माही २३॥ भिरू ३४ वा। ता ५ इभो ६ हाइ॥ ३॥ (अ० अहमेव स्वयमिद वदामि जुष्टं देवानामुत मानुषाणाम्। यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तंमृषि तं सुमेधाम्। आवाहयेहं शरभाननां त्वां समस्तसंसार विधानदक्षाम्। देवाधिदेवेशि परेशि नित्यं गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ शरभाननायै० शरभाननामा०॥ ५॥

९-(ऋ०) उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ १॥ (य०) जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड् भामः। मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः ॥ २ ॥(सा०) हा। वो वो। ३ हा ३ हा। ओ २३४ सी॥ आरत्ला २३४ सौ। माधारापा २३४॥ आपो वा २३४ सा। नो अर्षा २३४ सी॥ आरत्ला २३४ धाः। योनीमा २३४ र्त्ता। स्यासीदा २३४ सी॥ ऊत्सोदा २३४ इवो। हा इरण्या २३४ याः। हा। हा। वो ३ हा ३। हा ओ हो वा ॥ए ३। अतिविश्वानिदुरितातरमा २३४५ ॥ ३॥ (अ०) अङ्गेभ्यस्त उदराय जिह्वाया आस्याऽयते। दद्भ्यो गन्धाय ते नमः॥ ४॥ उलूकिके त्वामिह भावयेहं काश्मीरपाटीरविलेपनाढ्याम्। नानाविधालङ्करणोपपन्नां यज्ञे समागन्तुमशेषवन्द्याम्॥ उलूकिकायै० उलूकिकामा०॥ ५॥

१०-(ऋ०) अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्य १ः स्मयमानासो अग्निम्। घृतस्य धारासमिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जात वेदाः॥ १॥ (य०) हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय

स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा पप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहो पविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा वृजिम्भभाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा सर्ठ० हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥ २ ॥ (सा०) अश्वी अश्वी ॥ रथीसु ३ रूपा १ ई २ त् । गोमाँ यदि । द्राते १ साखा २ । श्वात्रा २ भाजा २ । वयसास चतेसा २३ दा ॥ चन्द्राइर्या ३ ती ३ ॥ सा २३ भा ३ म्० । ३४३ पो ६ हाइ ॥ ३ ॥ (अ०) यत्ते देवी निर्ऋत्तिराबबन्ध दाम ग्रीवास्वविमोक्यं यत् । तत्ते विष्याम्यायुषे वर्चसे बलायादोमदमन्नमद्धि प्रसूतः ॥ ४ ॥ आवाहयेहं शिवपूर्विकां त्वां रावां महारावजितत्रिलोकीम् । कुरु प्रसादं मम विष्णुयज्ञे गृह्णीष्व पूजां करुणामये च ॥ शिवरावायै० शिवारावामा० ॥ ५ ॥

११-(ऋ०) अद्या चिन्नू चित् तदपो नदीनां यदाभ्यो अरदो गातुमिन्द्र। नि पर्वता अद्मसदो न सेदुस्त्वया दृल्हानि सुक्रतो रजांसि ॥ १ ॥ (य०) अग्निश्च मे धर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मे ऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २ ॥ (सा०) पिबासुतस्यरसिनोमत्स्वाहा ३ ॥ ना २ः । इन्द्रा २ गोमता २३ः । हा उ । आपिर्नो २ वो । धिसाधमा २ । दिये वृधा २३ । हा उ ॥ अस्मार्ठ० अवाँ २३ । हा ॥ तु ते ३ हो २ । २३४ औ होवा ॥ धियऊ २३४५ ॥ ३ ॥ (अ०) इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ अदित्यानां मरुतां शर्ध उग्रम्। महामनसां

भुवनच्यवानां धोषो देवानां जयतामुदस्यात् ॥ ४ ॥ मयूरिके त्वं विश मेऽध्वरेऽस्मिन् लोक-त्रयेऽप्यप्रतिमप्रभावे। मयूरिरूपे त्रिदशैकवन्द्ये ममाध्वरं पाहि वरे नमस्ते॥ मयूरिकायै० मयूरिकामा० ॥ ५ ॥

१२-(ऋ०) यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे। प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् ॥ १ ॥ (य०) पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मसि ॥ २ ॥ (सा०) यज्ञायज्ञा। होइ। वो ३ ग्नय ए ३४ ॥ हिया ॥ गिरा गिरा। चा २ दक्षसाइ। प्रप्रावयाम्। अमृतं जा ३। त वे २ वा २३४ साम। प्रियम्मित्राम्। नशर्ठ० सिषाम्। एहिया। औ हो २३४५ इ॥ डा ॥ ३ ॥ (अ० विश्वजित् कल्याण्यैऽ मा परि देहि। कल्याणि द्विपाच्च सर्वं नो रक्ष चतुष्पाद्यच्च नः स्वम्॥ ४॥ आवाहयेहं कमलासनस्थां विशालनेत्रा विकटाननां त्वाम्। सर्वज्ञकल्पां बहुमानयुक्तामागत्य रक्षां कुरु सुप्रसन्ने॥ विकटाननायै० विकटाननामा० ॥ ५ ॥

१३-(ऋ०) ईले द्यावा पृथिवी पूर्वंचित्तयेऽग्निं घर्म सुरुचं यामन्निष्टये। याभिर्भरे कार मशाय जिन्वण्य स्ताभिरूषु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १ ॥ (य०) वेद्या वेदिः समाप्यते बहिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना ॥ २ ॥ (सा०) भूमिः। (त्रिः)। अन्तरिक्षम् (त्रिः) द्यौः। (द्विः) द्य। ३४। ओहो वा॥ ए ३। भूताया २३४५ ॥ ३ ॥ (अ०) प्रोष्ठेशयास्तल्पेशया नारीर्या वह्यशीवरीः। स्त्रियो याः पुण्य-गन्धस्ताः सर्वाः स्वापयामसि ॥ ४॥ आवाहये त्वामष्टवक्त्रां

कल्याणदात्रीं शुभकारिणीं मे। प्रसादये त्वां बहुचाटुकारैर्गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ अष्टवक्त्रायै० अष्टवक्त्रामा०॥ ५॥

१४-(ऋ०) अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ आ सा दयादिह॥ १॥ (य०) अयमग्निः सहस्त्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः। मूर्धा कवी रयीणाम्॥ २॥ (सा०) अग्निर्ठ० होतारं मन्ये। दा २३४। स्वन्तं वसोः सू नुम्॥ सहसोजा ३ तावे १ दासा २ म्। विप्रन्नजा ३ तावे १ दासा २ म्। य ऊर्ध्वया ३ सूवध्वारा २ः देवो देवा ३ चाया १ कृपा २। घृतास्यविभ्राष्टिमनुशु। क्राशो १ चिपारः। आजूह्वा ३ ना ३॥ स्या २३ सा ३। पा ३४५ इषो ६ हाइ॥ ३॥ (अ०) सोमेन पूर्णं कलशं बिभर्षि त्वस्य रूपाणं जनिता पंशूनाम्। शिवास्ते सन्तु प्रजन्वऽ इह या इमा न्य १ स्भभ्यं स्वधिते थच्छ या अमूः॥ ४॥ आवाहये सुन्दरि कोटराक्षि त्वामत्र यज्ञे भव तापहारिणि। राजप्रजावंशकरी प्रसन्नां ममाध्वरं पाहि वरे नमस्ते॥ कोटराक्ष्यै० कोटराक्षीमा०॥ ५॥

१५-(ऋ०) उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। यथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम॥ १॥ (य०) इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराच के॥ २॥ (सा०) यदाकदा च माहा ३॥ ढूषा २ इस्तोता २। जराइ। तमर्तियः। आदिद्वन्दा। औहो ३ हां ३। हा ३ इ। तावा २ रू २३४ णाम्। विपागिरा॥ धर्त्तारंव्या। औहो ३ हा ३। हाइ॥ व्रातानाम्। इडा २३ भा ३४३ ओ २३४५ इ॥ डा॥ ३॥ (अ०) अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो अध्वरीयताम्। पृञ्चतीमधुना

पयः ॥ ४ ॥ एह्येहि कुब्जे दुरितौघ नाशिनि सदानुकूले कलहंसजामिनि। मां पाहि दीनं शरणागतं च गृहाण पूजां वरदे नमस्ते ॥ कुब्जायै० कुब्जामा० ॥ ५ ॥

१६-(ऋ०) यस्मिन् वृक्षे सुपलाशे देवैः सं पिबते यमः। अत्रा नो विश्पतिः पिता पुराणाँ अनु वेनति ॥ १ ॥ (य०) यमाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः सर्ठ० स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥ २ ॥ (सा०) आ २ याम्। अयायम्। औ ३ हो ३ इ। आ २ इ। ऊ २। ना के सुपार्णमुपयात्पतन्ताम्। पतन्तम्। औ ३ हो ३ इ। ऊ २। हृदावेनांतो अभ्यचाक्षतत्वा। क्षतत्वो ३। हो ३ इ। आ २ इ। ऊ २। हृदावेनांतो अभ्यचाक्षतत्वा। क्षतत्वो ३। हो ३ इ। आ २ इ। ऊ २ ॥ आ २ याम्। अयायम्। औ ३ हो ३ इ। आ २ इ। ऊ २। यमस्य योनौ शकुनां भुरण्यूम्। औ ३ हो ३ इ। आ २ इ। ऊ २। आ २ याम्। अयायम् ओ ३ हो २ इ। आ ३ इ। ऊ २। वाहा ३१३ वा २३ ॥ ए ३। दिवम्। ए ३। दिवा २३४५ म ॥ ३ ॥ (अ०) हिङ्कृण्वतौ वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात्। गौरमीमेदभि वत्सं मिषन्तं मूर्धान हिङ्कृणोन्मातवाउ ॥ ४ ॥ एह्येहि दुर्गे विकटाक्षिनाम्नि प्रभावयास्मानिह यज्ञकामान्। संसार दुःखौघविनाशिके च रक्षाध्वरं नो वरदे नमस्ते ॥ विकटाक्ष्यै० विकटाक्षीमा० ॥ ५ ॥

१७-(ऋ०) गन्धर्व इत्था पदमस्य रक्षति पाति देवानां जनिमान्यद्भुतः। गृभ्णाति रिपुं निधया निधापतिः सुकृत्तमा मघनो भक्षमाशत ॥ १ ॥ (य०) यमेन दत्तं त्रित एनमायुनगिन्द्र

एणं प्रथम अध्यतिष्ठत्। गन्धर्वोऽ अस्य रशनामगृब्भ्णात्सूरादश्वं वसवो निरतष्ट॥ २॥ (सा०) गायन्तित्वा गायत्रिण आ॥ अर्चन्त्यर्कमर्का २३ इणाः। ब्रह्माणस्त्वा २ हो १ इ। शतक्रा २३ ता ३। उद्वठं० शमिवया १ इमी ३ रे॥ उद्वठं०शा २३४ मौ॥ वाया ३२ उवा ४। उप्। मा २ इरो ३५ हा इ॥ ३॥ (अ०) स्त्रियः सतीस्तां उमे पुंस आहुः पश्यदक्षण्वान्न वि चेतदन्धः। कविर्यः पुत्रः स ईमा चिकेत यस्ता विजानात्स पितुष्पितासत्॥ ४॥ एह्येहि शुष्कोदरि सुन्दरि त्वं समस्तदैतेयनिषूदयित्रि। आगत्य नः पालय दुःखितांश्च गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ शुष्कोदर्यै० शुष्कोदरीमा०॥ ५॥

१८-(ऋ०) मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम्। मित्रः कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत॥ १॥ (य०) मित्रस्य चर्षणी धृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्॥ २॥ (सा०) आनोमित्रा। वरुणा ३। औ होवा ३२४॥ घृतैर्गव्यूतिमु। क्षता ३ म्। ओ होवा २॥ माध्वारजा २। सिसू ३। औ होवा २॥ क्रतु। इडा २३ भा २४३। ओ २३४५ इ॥ डा॥ ३॥ (अ०) मित्रावरुणयोर्भागस्थ अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त। प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये॥ ४॥ आवाहयेऽहं ललदाद्याज ह्वानाम्नीं सुदेवीं चपलां सुनेत्राम्। नानाविधास्वादनतत्परां च गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ ललज्जिह्वायै ललज्जिह्वामा०॥ ५॥

१९-(ऋ०) दिवस्पृथिव्योरव आ वृणीमहे मातृन्त्सिन्धून् पर्वताञ्छर्य णावतः॥ १॥ (य०) अग्रे ब्रह्म गृब्भ्णीष्व

धरुणमस्यन्तरिक्षं दृर्ठ० ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। धर्त्रमसि दिर्वं दृर्ठ ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। विश्वाभ्यस्त्वाशाभ्यऽ उपदधामि चित्तस्थोर्ध्वचितो भुगूणामङ्गिरसां तपसा तप्यद्ध्वम्॥ २॥ (सा०) अग्निन्दूताम्। वृणीमहाइ। होतारा २३० वी। वाद्वेदसाम्। अस्य या २३ ज्ञा। आ। औ ३ होवा। स्यासुक्रतुम्। इडा २३ भा ३४३। ओ २३४५ इ॥ डा॥ ३॥ (अ०) आगन् रात्री संगमनी वसूनामूर्जं पुष्टंवस्वावेशयनी अमावास्याऽयै हविषा विधे मोर्ज दुहाना पयसा न आगन्॥ ४॥ आवाहयेऽहं भवती श्वदंष्ट्रानाम्नी शुनो मूर्तिधरां महोग्राम्। अत्युग्ररूपां महदाननां च विशाधरं नो वरदे नमस्ते॥ श्वदंष्ट्र्यै० श्वदंष्ट्रामा०॥ ५॥

२०-(ऋ०) भवा मित्रो न शेब्यो घृतासुतिर्विभूतद्युम्न एवया उ सप्रथाः। अधा ते विष्णो विदुषा चिदर्ध्यः स्तोमो यज्ञश्च राध्यो हविष्मता॥ १॥ (य०) भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिन्नृवन्तः स्याम॥ २॥ (सा०) अग्निरौहोवाहाई। वृत्राणि। जाङ्घा ३ नात्। औ हो ३ वा ३। द्रविणा २३४ स्युः। ओ इ वो इपन्यया २। समाये ३। धा २ः शू २३४ औ हो वा। क्रयाहुता २३४५ः॥ ३॥ (अ०) सिन्धुपत्नी सिन्धुराज्ञीः सर्वा या नद्य १ स्थन। दत्त नस्तस्य भेषजं तेना वो भुनजामहै॥ ४॥ आवाहये त्वामिह वानराननां प्रियां हनूमद्विदुषो महामते। देवि त्वमस्मान्परिपाहि नित्यं श्रीरामभक्ते सततं शिवाय॥ वानराननायै० वानराननामा०॥ ५॥

२१-(ऋ०) रात्री व्यरव्यदायती पुरुत्रा देव्य १ क्षभिः। विश्वा अधि श्रितोऽधित॥ १॥ (य०) सुपर्णोऽसि गरुत्मान् पृष्ठे पृथिव्याः सीद। भासान्तरिक्षमापृण ज्योतिषा दिवमुत्तमान तेजसा दिश उद् दृर्ठ० ह॥ २॥ (सा०) नित्वामग्रनाइ॥ मनुर्द्धा २३४ धाइ। ज्योतिर्जना। या शश्वाता २ इ। दी। दाइ। थक ण्वाऋतजा ३। त ऊ रक्षा २३४ इता॥ यन्नमस्या २३॥ ता २ इ कृ २३४ औ होवा॥ ष्टा २३४ याः॥ ३॥ (अ०) तद्भद्राः समगच्छन्तवशा देष्ट्रयथो स्वधा। अथर्वा यत्र दीक्षितो बर्हिषास्त हिरण्यये॥ ४॥ एह्येहि ऋक्षाक्षिभवानि नित्यं विनाशयास्माकमघं समन्तात्। हीनप्रबोधं शरणागतं मां त्रायस्व कल्याणि परे नमस्ते॥ ऋक्षाक्ष्यै० ऋक्षाक्षीमा०॥ ५॥

२२-(ऋ०) उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु॥ १॥ (य०) पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्य स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽती तृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥ २॥ सा० यद्वाऊ २३ विश्पतिः शिताः॥ सुप्रीतोमनुषोविशे॥ विश्वा इदा ३२ ग्रीः॥ प्रतिरक्षा। सिसेधता। औ ३ होवा हो ५ इ॥ डा॥ ३॥ (अ०) पूर्णं नारि प्रभर कुंभमेतं घृतस्य धारा ममृतेन संभृताम्। इमां पातृनतेमृना समङ्ग्धीष्टापूर्तमभि रक्षात्येनाम्॥ ४॥ आवाहये त्वामिहकेकराक्षीं शुभाननां दिव्यगुणार्णवां चे। समुद्रजातां परमार्थदात्रीं त्रायस्व हेभार्गवनन्दनेऽस्मान्॥ केकराक्षयै० केकराक्षीमा०॥ ५॥

२३-(ऋ०) क्षुत्पिसामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ १ ॥ (य०) या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ता भिचाकशोहि॥ २ ॥ (सा०) चन्द्रमाअप्सुवा॥ तरा। सुपर्णो धावते दा २३ इ वी। न वा २३ होइ। हिरण्यनेमयः परं विन्द। तिविद्यता २३। वित्तर्ठ० होई। म आ २३ हो॥ स्यरो २३। दा २ सा २३४ औ होवा॥ ऊ ३२३४ पा॥ ३ ॥ (अ०) उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अधा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम॥ ४ ॥ आवाहये त्वामिह देवपुत्री बृहन्मुखीं किन्नरगीयमानाम्। केयूरमाणिक्यविभूषिताङ्गी मनोरमां सर्वसुखाधिदात्रीम्॥ बृहत्तुण्डायै० बृहन्तुण्डामा० ॥ ५ ॥

२४-(ऋ०) तमिद् धनेषु हितेष्वधिवाकाय हवन्ते। येषामिन्द्रस्ते जयन्ति॥ १ ॥ (य०) वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतान्नः सुराधसः॥ २ ॥ (सा०) आवोराजा। नमध्व। रस्य रुद्राम्। हो। ता। राम्। स। त्य य जा ३ म्। रोदसीयोः। अग्निं पु। रा। तनयि। त्नोरचिन्तात्॥ हिरण्य। रू॥ पा ३ मव। सा ३४३ इ। का ३ र्णू ५ ध्वी ६५६ म्॥ ३ ॥ (३ अ०) वाताज्जातो अन्तरिक्षाद्विद्युतो ज्यौतिषस्परि। सन्ते हिरण्यजाः शंखः कृशनः पात्वं हसः ॥ ४ ॥ एह्येहि यज्ञेऽसुरराज पुत्रि सुराप्रिये सर्वभयापहे त्वम्। सुरप्रिये योगिनि दिव्यदेहे नमामि मातस्तव पादपङ्कजम्॥ सुरप्रियायै० सुरप्रियामा० ॥ ५ ॥

२५-(ऋ०) स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गणस्त्वष्ट्रमान् मित्रोअर्यमा। इमा हव्या जुषन्त नः॥ १ ॥ (य०) हर्ठ० सः शुचिषद्वसु-

रन्तरिक्षसद्होता वेदिषदतिथिदुरोणसत्। नृषद्वर सदृतसद् व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥ २॥ (सा०) हा उ हो वा। (त्रिः)। परात्परम्मैरय। ता। (द्वेत्रिः)। यज्जायथाः। अपूर्विया। अपूर्विया। आपूर्वा २३४ या॥ मघवन् वृ। त्रहत्याया त्रहत्यायाः ३ः त्राहत्या २३४ या। तन्पृथिवीम्। अप्राथयाः। अप्राथया ३ः। अप्राथा २३४ याः॥ तदस्तम्नाः। उदोदिवाम्। उतोदिवा ३ म्। अतोदा २३४ इवाम्। हा उहोवा। (त्रिः) परात्परम्मैरय। ता। (द्वेत्रिः)। परात्परम्मै रय। त। औ हो वाहा उ। वा॥ ए। तेजोधर्मः संक्रीडन्ते वायुगोपास्तेजस्वतीर्मरुद्भिर्भुवनानि चक्रदुः॥ ३॥ (अ०) ग्रामणीरसि ग्रामणीरुत्थायाभिषिक्तोऽभि मा सिञ्च वर्चसा॥ तेजोऽसि तेजो मयि धारयाधि रयिरसि रयिं मे धेहि॥ ४॥ एह्येहि मातस्सुकपालहस्ते जगल्लये शङ्करवल्लभे च। वृषाधिरूढे ललिते सुरेशे गृहाण पूजां वरदे नमस्ते। कपालहस्तायै० कपालहस्तामा०॥ ५॥

२६-(ऋ०) जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ १॥ (य०) सुसन्दृशं त्वा वयं मघवन्वन्दिषीमहि। प्र नूनं पूर्णबन्धुरस्तुतो यासि वशांऽ अनु यो जान्विन्द्र ते हरी॥ २॥ (सा०) अभाइमाहे। (त्रिः) चर्षणीधृतं मघवाना ३ मूक्था १ याऽ २ म्। इन्द्रजिरो बृहतीरभ्या ३ नूषा १ ता २॥ वावृधानं पुरुहूतꣳ० सु ३ वार्क्ता १ इभी २ः॥ अमर्त्यं जरमाणं दि ३ वो इदा १ इवे २। अभामाइहे। (द्विः)। अभा २३ इ। मा २। हा २३४। औहोवा। सर्पसुवा २३४५ः॥ ३॥ (अ०)

बृहद्ग्रावासुरेभ्योऽधि देवानुपावर्तत महिमानमिच्छन्। तस्मै स्वप्नाय दधु राधिपत्यं त्रयस्त्रिंशासः स्वऽरानशानाः॥४॥ एह्येहि रक्ताक्षि सुचारुपे क्रोधेन दूरीकृतदानवेन्द्रे। यज्ञे समागच्छ सुमध्यमे त्वं गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ रक्ताक्ष्यै० रक्ताक्षीमा०॥५॥

२७-(ऋ०) परा शुभ्रा अयासो यव्या साधारण्येव मरुतो मिमिक्षुः। न रोदसी अप नुदन्त घोरा जुषन्त वृधं सख्याय देवाः॥१॥(य०) देवीरापो अपान्नपाद्यो ऊर्मिर्हविष्य इन्द्रियावान्मर्दिन्तमः। तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भागस्थ स्वाहा॥२॥(सा०) ए २। विदामघवन्विदाः॥ गातुमनुशर्ठ० सिषः। दाइशा ३१ उवा २३। ई ३४ डा॥ ए २। शिक्षाशचीनाम्पताइ॥ पूर्वीभाम्पूरू २। वसा ३१ उवा २३॥ ई ३४ डा। आभिष्ट्वमभा २ ह। ष्टिभिरा ३१ उवा २३। ई ३४ डा। स्वर्न्नार्ठ० शूरः। हाउ १ उवा २३ ई ३४ डा। प्रा। चेतनप्रचेतया॥ ईन्द्रा॥ द्युम्नायना २ इषाद्द। इडा॥ ईन्द्रा॥ द्युम्नायना २ इषाइ। अथा ॥ईन्द्रा॥ द्युम्नायना २ इषाद्द। इडा एवाहिशक्रो राये वा जायना १ ज़ी ३ वाः। शविष्ठवज्रिन्ना ३। जासाइ॥ मर्ठ० हिष्ठवज्रिन्ना २३ हो॥ जासा ३१ उवा २३॥ इट् इडा २३४५॥ आया॥ हिपिबमा २ त्सुवा॥ इडा २३४५। ए २। विदाराये सुवीरियाम्। भुवो वाजानाम्पतिर्वशा २। अनुआ ३१ उवा २३। ई ३४ डा॥ ए २। मर्ठ० हिष्ठवज्रिन्नृञ्जसाइ। यऽशविष्ठः शूरा २। णा ३१ उवा २३॥ ई ३४ डा॥ योमर्ठ० हिष्ठा मघो २। ना ३१ उवा २३। ई ३४ डा॥ अर्ठ० शुर्नशोचा २ इः। हा ३१ उवा २३।

ई ३४ डा। चाइ। हिकत्वो अभिनोनया॥ ईन्द्रो॥ विदेतमू २ स्तुहाइ॥ इडा॥ ईन्द्रो॥ विदेतमू २ स्तुहा इ। आथा॥ ईन्द्रो। विदेतमू २ स्तुहाइ। इडा। ईशेहि शक्रस्तमूर्तये हवा १ मा ३ हाइ। जेतारमपरा ३। जाइताम्। सनः स्वर्षदता २३ होइ॥ द्वाइषा ३१ उवा २३॥ इट् इडा २३४५॥ क्रातूः छन्द ऋता २ म्बृहात् इडा २३४५॥ ए २ इन्द्रन्धनस्य सातयाइ॥ हवामहे जेतारमपरा २। जितमा ३१ उवा २३। ई ३४ डा॥ ए २। सनः स्वर्षदहिद्विषा॥ सानः स्वर्षदता २ इ। द्विष आ ३१ उवा २३। ई ३४ डा। पूर्वस्ययत्त आ २। द्विव आ ३१ उवा २३। ई ३४ डा। अठ० शु र्मे दाया २। हाउ १ उवा २३। ई ३४ डा। सू। म्नआधेहिनो व साउ॥ पर्त्तीः शविष्ठशा २ स्यताइ। इडा पूर्तीः। शविष्ठशा २ स्यताइ। अथा॥ पूर्त्तीः॥ शविष्ठशा २ स्यताइ। इडा। वशीहिशक्रो नूनन्तन्नध्यर्ठ० सा १ न्या २ साइ। प्रभोजनस्यवा ३॥ त्राहान्॥ समर्येषुब्रवा २३ हो इ॥ वाहा ३१ उवा २३॥ इटा इडा २३४५॥ शूरो॥ योगोषुगा २ च्छा ताइ। इडा॥ सारवा सुशेवो २ द्वयूः॥ इडा २३४५ ॥ ३ ॥ आइवा हियेवा २३४५। होइ। हो। वाहा ३१ उवा २३॥ ई ३४ डा॥ आइवा॥ हियग्ना २३४५ इ। होइ। हो। वाहा ३१ उवा २३॥ ई ३४ डा॥ आइवा॥ हिपूषा २३४५ न्। होइ॥ हो। वाहा ३१ उवा २३॥ ई ३४ डा॥ आइवा॥ हि देवा २३४५ः। होइ॥ हो। हो। वाहा ३१ उवा २३॥ ई ३४ डा॥

(अ०) शिवास्त एका अशिवास्त एकाः सर्वा बिभर्षि सुमनस्यमानः। तिस्त्रो वाचो निहिता अन्तरस्मिन्तासामेका वि पापातानु घोषम्॥ ४॥ एह्येहि मातश्शुकि योगिनि त्वमस्मत्सवे

ब्रह्ममहेशवन्द्ये। परात्परेशे विहिताङ्गरागे गृहाण पूजां वरदे नमस्ते ॥ शुष्क्यै० शुष्कीमा० ॥ ५ ॥

२८-(ऋ०) रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि मित्रं प्रथिष्टमुप यामि सर्म । शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिव स रिष पातु नक्तम् ॥ १ ॥ (य०) प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा सम्पदे त्वा तेजोऽसि तेजसे त्वा ॥ २ ॥ (सा०) तक्षद्यदी । हो २३४५ इ ॥ मनसोवेनतः । वा २३४५ क ॥ ज्येष्ठस्यधा ३१२३४ । मन्द्युक्षीरनी ॥ का २३४५ इ ॥ आदाइमाया ३१२३४ न् । वरमावावशा । ना २३४५: ॥ जुष्ठम्यता ३१२३४ इम् । कलशेगा ५ वः । इ । दाउ ॥ वा ॥ ३ ॥ (अ०) रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि मित्रं प्रतिष्ठमुप यामि शर्म । शिशानो अग्निंः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् ॥ ४ ॥ हेश्येनि मातर्दह दुःखजातं यज्ञे समागत्य चतुर्भुजे नः । अनन्यभावाः करुणार्द्रचित्ताः कल्याण-काङ्क्षा भवतीं नमामः ॥ श्येन्यै० शेनीमा० ॥ ५ ॥

२९-(ऋ०) समुद्रज्येष्ठा सलिलस्य मध्यात् पुनाना यन्त्यनिविशमानाः । इन्द्रो यावज्री वृषणो रराद् ता आपो देवी रिह मामवन्तु ॥ १ ॥ (य०) द्वारो देवी देवीरन्वस्य विश्वे व्रता ददन्तेऽ अग्नेः । अरु व्यचसो धाम्ना पत्यमानाः ॥ २ ॥ (सा०) हाउहा उहाउ। आयुश्चक्षुर्ज्योति। औ होवा। ईया। उदुत्तमं वरुणपाशमा ३३ स्मात् । अवाधमंविमध्यमर्ठ० श्रथा २३ या ॥ अथा नित्यव्रते-वयता २३ ॥ अनागसो अदियेसिया २३ मा ३ । हाउहा उहाहा आयुश्चक्षुर्ज्योतिः औ होवा ई २। या २३४। औहोवा ॥ ई २३४५ ॥ ३ ॥ (अ०) आपो अग्रे विश्वभावन् गर्भं

दधाना अमृता ऋतज्ञाः। यासु देवीष्वधि देव आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ४॥ प्रसादमाधाय कपोतकाख्ये देवि त्वमागच्छ ममाध्वरेऽत्र। समस्तदेवा सुरवन्दरवनीये गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ कपोतिकायै० कपोतिकामा०॥ ५॥

३०-(ऋ०) पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मा रिषण्यो वसुः सन्। उत त्रायस्व गृणतो मघोनो महश्च रायो रेवतस्कृधो नः॥ १॥ (य०) देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ता-ब्भ्याम्। आददे नारिरसि॥ २॥ (सा०) एतमुस्यम्। ए ५। मदा॥ च्युताम्। सहस्त्रधारं वृषभं दिवोदू २३ हाम्॥ वा इश्वा २ वासू २३॥ निषो २३४ वा। श्वा ५ तो ६ हाइ॥ ३॥ (अ०) सत्यं बृहदद‍ृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्मयज्ञः पृथिवी धीरयन्ति॥ सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोति॥ ४॥ आवाहये माशकरां प्रकेतः प्रियां प्रतीच्यामुपलब्धवासाम्। जलाधिनाथां स्फटिकप्रभां त्वां गृहाण मेऽर्चां शिवमातनुष्व॥ पाशहस्तायै० पाशहस्तमा०॥ ५॥

३१-(ऋ०) पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्नि जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥ १॥ (य०) भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः। दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्॥ २॥ (सा०) प्रत्यग्ने। हरसाहरा ६ ए। शृणाहि वा २ इ। श्वता ३४५ः। पा ३४ री॥ यातुधानस्य रक्षसो ३॥ वा २ लाम्। नियुब्जवो २३४ वा॥ री २३४ याम्॥ ३॥ (अ०) य एवं विदुषेऽदत्वाथान्येभ्यो ददद्वशाम्। दुर्गा तस्मा

अधिष्ठाने पृथिवी सह देवता ॥ ४ ॥ आवाहये त्वामिह दण्डहस्तां यमेप्सितामञ्जनसन्निभां च। विशालवक्षःस्थलरुद्ररूपां गृहाण पूजां वरदे नमस्ते ॥ दण्डहस्तायै० दण्डहस्तामा० ॥ ५ ॥

३२-(ऋ०) महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती। यथा चिन्नो अबोधयः सत्वश्रवसि वाप्ये सुजाते अश्व सूनृते ॥ १ ॥ (य०) कदाचन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानन्दवस्य पृच्चतऽआदित्येभ्यस्त्वा ॥ २ ॥ (सा०) शचीभिर्ना ५ः शची वसू ॥ दिवानक्तं दिशस्यताम्। मावा २ म्। रातिरुपद-सत्कदाचना। आस्मा २ त्। रातिः कदो २३४ वा। चा ५ नो ६ हाइ ॥ ३ ॥ (अ०) शिवास्त एका अशिवास्त एकाः सर्वा बिभर्षि सुमनस्यमानः। तिस्रो वाचो निहिता अन्तरस्मिन्तासामेका वि पपातानुघोषणम् ॥ ४ ॥ एह्येहि देवि त्वमिह प्रचण्डे प्रचण्डनोर्दण्डसुरारिहस्ते। सुरासुरैरचितपादपद्मे विशाध्वरं नो वरदे नतस्ते ॥ प्रचण्डायै० प्रचण्डामा० ॥ ५ ॥

३३-(ऋ०) मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान् मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सद्मित् त्वा हवामहे ॥ १ ॥ (य०) भद्रं कर्णेभिः शृणयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाः सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ २ ॥ (सा०) हा ३ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहि २। (त्रिः) ऐहिहा ३ वाक्। (त्रिः)। हा हाउ। (त्रिः) हाउ (३) वा। प्रजातोकमजीकनेहस। इहा २३४५। हा उ (३)। वाऽघहइह। (त्रिः)। एही २। (त्रिः)। एहिहा उवाक्।

(त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः) आया उ। (त्रिः)। अग्निरस्मिजन्मना ॐ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो ३॥(हाउ ३)। वाग्धहहहह। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः) हाहाउ। (त्रिः)।हाउ(३)।वाग्धहहहह।(त्रिः)ऐही २।(त्रिः)एहिहा उवाक्।(त्रिः)हाहाउ।(त्रिः)आयाउ।(त्रिः)जातवेदाओ ३ हो। हा २ हया। ॐ ३ हो। हा २ हया। ॐ ३ हो ३। हाउ (३) वाग्धहहहह।(त्रिः) ऐही २। ऐहिहा उवाक्।(त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। हाउ (३) वा। रायस्पोषायसुकृतायभूयसेहस। इहा २३४।हाउ(३)।वाग्घहहहह।(त्रिः)।एही २।(त्रिः)ऐहिहा उवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। आयाउ। (त्रिः)। घृतं मे चक्षुरमतं म आसानौ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो। हाउ(३) वाग्धहहहह।(त्रिः)। ऐही २।(त्रिः)। ऐहिहा उवाक्।(त्रिः)।हाहाउ।(त्रिः)।हाउ(३) वा। आगावाममिदं बृहद्धस्। इहा। २३४५। हाउ (३)। वाग्घहहहह।(त्रिः)। ऐही २। (त्रिः) ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। आहाउ। (त्रिः)। त्रिधातुरर्कोरकसोविमाना ॐ ३ हो। २ इया। ॐ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो ३॥ हाउ (३)। वाग्घहहहह।(त्रिः) ऐही २।(त्रिः)। ऐहिहाउवाक्।(त्रिः)। हाहाउ।(त्रिः)। हाउ(३) वा। इदं वापहिद बृहद्धस्। इहा। २३४५। हाउ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐही २। (त्रिः) ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। आया उ।(त्रिः) अजस्त्रं ज्योता इरौ ३ हो। हा। हा २ इया। ॐ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो ३॥ हाउ(३) वाग्घहहहह।(त्रिः) ऐही २।(त्रिः) ऐहिहाउवाक्।(त्रिः) हाहाउ।(त्रिः)। हाउ(३) बा

चराचराय बृहत इदं धाममिदं बृहद्धस्। इहा २३४५। हाउ (३)। वाग्धहहहह। (त्रिः) ऐही ५। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक् (त्रिः)। हाहाउ (त्रिः) आयाउ। (त्रिः) हविरस्मिसर्वामौ ३ हो। हा २ इया ॐ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो २। हाउ (३) वाग्घहहहह (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हा हाउ। (त्रिः)। हाउ (३) वा॥ एयवोक्रान्भूतमततनता जा उस मचूकुपत्पशुभ्योहस्। इहा २३४५॥ ३॥ (अ०) मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा नो वहन्तमुत मा ना वक्ष्यतः। मा नोः हिंसीः पितरं मातरं च स्वां तन्वऽ रुद्र मा रीरिषो नः॥ ४॥ आवाहये त्वामिह चण्डविक्रमामज्ञानतामिस्त्रनिराकरीं च। संसारपङ्केऽत्र निमज्जनानानुद्धारयन्तीं भवतीं नमामि॥ चण्डविक्रमायै० चण्डविक्रमा०॥ ५॥

३४-(ऋ०) अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ १॥ (य०) इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्य देवो वः सविता प्रापयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशर्ठ० सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥ २॥ (सा०) अग्न आयाहि। वा ५ इ तथा इ। गृणानो हव्यदा १ ता ३ ये। निहीता २३४ सा। त्सा २३४ इषो ६ हा इ॥ ३॥ (अ०) शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥ ४॥ शिशुघ्नि देवि त्वमिहाद्य धत्स्व रतिं मयि त्वच्चरणाब्जभाजि। शिशूनवास्मत्कुलजान्सबन्धून् गृहाण पूजां वरदे नमस्ते। शिशुघ्न्यै० शिशुघ्नीमा०॥ ५॥

३५-(ऋ०) द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठतु। नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत॥ १॥ (य०) देवी द्यावा पृथिवी मखस्य

त्वामद्य शिरो राध्यास देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥ २॥ (सा०) अयन्त आ॥ द्रसोमो। होवा ३ होइ। निपूतो आ ३। धीबहा २३४ इषी॥ आइहीमस्या २३॥ द्वा २ वा २३४ ॐ होवा॥ पी २३४ वा॥ ३॥ (अ०) अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत्त विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनो भा॥ ४॥ आवाहये त्वामिहपापहन्त्रीं कन्यापचित्या सुमुखीं प्रसन्नाम्। मुक्तिप्रदां भक्तजनेष्टदात्रीं गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ पापहन्त्र्यै० पापहन्त्रीमा०॥ ५॥

३६-(ऋ०) असुनीते मनो अस्मासु धारय जीवातवे सु प्र तिरा न आयुः रारन्धि नः सूर्यस्य संदृशि घृतेन तन्वं वर्धयस्व॥ १॥ (य०) विश्वानि देव सवितर्दुरितानिपरासुव। यद्भद्रं तन्नऽ आसुव॥ २॥ (सा.) असाविस्वोमो अरुषो वृषाह। राइः॥ राजेवदस्मो अभिगा अचिक्र दाता। पुनानो वारमत्येष्यव्य। याम्॥ श्येनो नयो र्निघृत। वा। तमा ३। सार दा २३४ औ हो वा॥ ए ३। दिवी २३४५॥ ३॥(अ.) आनो यहि सुतावतोऽस्माकं सुष्टुतिरुप पिबा सुशिप्रिन्नन्धसः॥ ४॥ एह्येहि कालित्वमिहाध्वरे मे वेदज्ञसम्पादितकार्यजाते। विष्णुप्रिये सर्वनुते गृहाण पूजां यथावत्कृपया सुरेशि॥ काल्यै० कालीमा०॥ ५॥

३७-(ऋ०) रपद्गन्धवीर्रप्याह च योषणा नदस्य नादे परि पातु मे मनः। इष्टस्य मध्ये अदितिर्नि धातु नो भ्रातानो ज्येष्ठः प्रथमो वि वो चति॥ १॥ (य०) असुन्वन्तम यजमानमिच्छस्ते नस्ये त्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो

देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ २॥ (सा० वे त्थाहिनिर्ऋतीताम्। वाज्रहस्तपरिवृ। जाम्॥ अहर। हाः। शुन्ध्युः परि। पदा ३ मा ५ इवा ६५६॥ ३॥ (अ०) वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽ वस्यवः। वाजे चित्रं हवामहे॥ ४॥ आवाहये त्वां रुधिरं पिबन्तीं देवासुराणां भयदां ज्वलन्तीम्। विशालनेत्रां परिपूर्णचन्द्रविम्वाननां चन्दनचर्चिताङ्गीम्॥ रुधिरपायिन्यै० रुधिरपायिनीमा०॥ ५॥

३८-(ऋ०) सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः। अस्य होतुः प्रदिश्पृतस्य वाचि स्वाहाकृतं हविरदन्तु देवाः॥ १॥ (य०) अग्निश्च मे घर्मश्च मे ऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्करयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ २॥ (सा०) अग्गिस्तिग्मेन शोचिषा। इह यऽ साद्विश्वं म्यत्रिणां २ म्। इहा॥ अग्निर्नोवर्ठ० सता २ इ इहा ३। रा २३४ यो ६ हाइ॥ ३॥ (अ०) स्वाहाकृतः शुचिर्देवेषु यज्ञा यो अश्विनोश्चमसो देवयानः। तमु विश्वे अमृतासो जुषाणा गन्धर्वस्य प्रत्यास्ना रिहन्ति॥ ४॥ वसाधयां त्वामिह भावयेऽहं सामन्त यज्ञ प्रभया समानाम्। यज्ञैः स्तुतां यज्ञवसाधयां च पाहि त्वमम्बे भवतीं नमामि॥ वसाधयायै० वसाधयामा०॥ ५॥

३९-(ऋ०) कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम। को नो महया अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेद्यं मातरं च ॥ १॥(य०) बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य। इषुधिः लंकाः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्घो जयति

प्रभूतः ॥ २ ॥ (सा०) चित्रा ६ ए॥ ए ३१२३४। शिशोस्तरुणस्य वक्षथः। क्षथः। हिहिहियोऽ६ हा उ। ए ३१२३४। नयो मातरावन्वेति धातवे। तवे। हिहिहिया ६ हा उ॥ ए ३१२३४। अनूधायदजीजनदधाचिदा। हिहिहिया ६ हा उ। ए ३१२३४। ववक्षत्सद्यो महिदूतियंचरन्। हिहिहिया ६ हा उ। वा॥ ए ३। ऋतून ॥ ३ ॥ (अ०) सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा। जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिड्ढिनः॥ ४॥ आवाहये त्वामिह गर्भभक्षां देवीं सुमायां भयदां समन्तात्। स्ववंशरक्षार्थभिहार्चयामि गृहाण पूजां शुभदे नमस्ते॥ गर्भभक्षायै० गर्भभक्षामा० ॥ ५ ॥

४०-(ऋ०) मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः। सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्म वि शत्रून् ताल्हि विमृधो नुदस्व॥ १ ॥ (य०) नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतोतऽ इषवे नमः। बाहुब्भ्यामुत ते नमः ॥२ ॥(सा०) मृज्यमाना ॥ सुहस्तिया३। सामू ३ द्राइवा। चमिन्वसा ३ इ। रायी ३० पाइशा। गंवहुला ३ म्। पूरू २ स्पृ २३४ हाम्। पवमा। ना। औ ३ हो। भियो २३४ वा। षा ५ सो ६ हाइ॥ ३॥ (अ०) मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगम्यात्परस्याः। सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून्ताढि वि मृधो नुदस्व॥ ४॥ आवाहयेहं शवहस्तकां त्वां सर्वस्य लोकस्य भयप्रदात्रीम्। कपालखट्वाङ्गधरां सुधूम्रां भजामि देवीं कुलवृद्धिहेतो॥ शवहस्तायै० शवहस्तामा० ॥ ५ ॥

४१-(ऋ०) सत्या सत्येभिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः। रुजत् दृल्हानि दददुस्त्रियाणां प्रति गाव उषसं

वाव-शन्त ॥ १ ॥ (य०) ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽमित्रं च मेऽभयं च मे सुखं च मे शयनं च मे सूषाश्च मे सुदिन च मे यज्ञन कल्पन्ताम्॥ (सा०) हाउ (३) ओहा। (त्रिः) हा ओवा। (त्रिः)। ऊ २। (त्रिः) ओ २। (त्रिः)। हाउ वाक्। (त्रिः)। आयुर्यन्। (त्रिः) ए आयुः। (त्रिः)। आयुः। (त्रिः)। वयाः। (द्विः)। वयः। इन्द्रन्नरोनेमधिताहवा २ न्ताइ॥ यत्पार्यायुनजते धिया २ स्ता॥ शूरोनृषाताश्रवसश्चका २ माइ। आगोमतिव्रजेभजातुवा २ न्नः। हाउ (३)। ओहा। (त्रिः)। हा ओवा। (त्रिः)। ऊ २। (त्रिः)। ओ २। (त्रिः)। हाउवाक्। (त्रिः)। आयुर्यन। (त्रिः)। ए आयुः। (त्रिः)। आयुः। (त्रिः) वयाः। (द्विः)। वा २। या २२४। औ होवा॥ ए आयुर्द्धा अस्मभ्यं वर्चोधादेवेभ्या २३४५ः॥ ३॥ (अ०) सत्यजितं शपथयावनीं सहमानां पुनः सराम्। सर्वाः समहयोषधीरितो नः पारयादिति॥ ४॥ आवाहये यज्ञ इहान्त्रमालीं प्रपञ्चकर्त्रीं सुरसानुरूपाम्। गृहाण पूजां श्रुतिमन्त्रजुष्टां कृपाकटाक्षं कुरु मय्यधीने॥ आन्त्रमालिन्यै० आन्त्रमालिनीमा०॥ ५॥

४२-(ऋ०) द्रविणोदा ददातु नो वसूनि यानि शृण्विरे। देवेषु ता वनामहे॥ १॥ (य०) ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून्विध्यतार्ठ० संविदानेऽ आर्त्नीऽ इमे विष्फुरन्तीऽ अमित्रान्॥ २॥ (सा०) देवो ३ वो ३ द्रविणोदाः॥ पूर्णां विवष्ट्वासिचम्। उद्वा १ सिञ्च २। ध्वमुपवा पृणध्वम। आदि द्वोदे २॥ व ओहते। इडा २३ भा ३४३। ओ २३४५ इ॥

डा॥ ३॥ (अ०) अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकीतुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तः॥ ४॥ आवाहये त्वामिह स्थूलकेशीं शिरोरुहाच्छादितसर्वदेहाम्। रक्ताम्बरां नक्तचरीं सुवक्त्रां ध्यायेऽध्वरेऽस्मिन्मनसा च वाचा॥ स्थूलकेश्यै० स्थूलकेशीमा०॥ ५॥

४३-(ऋ०) ईले द्यावा पृथिवी पूर्वचित्त येऽग्निं धर्मं सुरचं याममन्निष्टये। याभिर्भरे कारगंशाय जिन्वथ स्ताभिरूषु ऊतिभि-रश्विना गतम्॥ १॥ (य०) वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरि-न्द्रियम्। यूपेन यूपऽ आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना॥ २॥ (सा०) भूमिः। (त्रिः)। अन्तरिक्षम्। (त्रिः) द्यौः। (द्विः)। द्या ३४। औं हो वा॥ ए ३। भूताया २३ ४५॥ ३॥ (अ०) भूतिर्मातादितिर्नो जनित्रं भ्रातान्तरिक्षमभिशक्त्या नः द्यौर्न पिता पित्र्याच्छं भवाति जामि मृत्वा माव पत्सि लोकात्॥ ४॥ महोदरे त्वामिह भावयामि कुक्षिं बृहन्तं दधतीं सुवेषाम्। यज्ञे समागच्छ विधेहि भद्रं गृहाण पूजां प्रियदे नमस्ते॥ बृहत्कुक्ष्यै० बृहत्कुक्षीमा०॥ ५॥

४४-(ऋ०) अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने। धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे॥ १॥ (य०) पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धिया वसुः॥ २॥ (सा०) अती-हिमा॥ न्युषा २ वा इ णा २ म्। सुषुवार्ठ० सा २ म्। होइ। ऊपै १ राया २॥ अस्यराता २३ उ॥ सू र ता २३४ औ होवा॥ पी २३४ वा॥ ३॥ (अ०) कालोऽमूं दिवमजनयत्काल इमाः पृथिवीरुत। कालेह भूतं भव्यं चेषितं हवितिष्ठते॥ ४॥

एह्येहि सर्पास्य इह द्विजिह्वे द्विजिह्वतादोषमधारयन्तीम्। शिवप्रिये जन्हुसुताप्रिये च नमामि त्वां देवि बहुप्रकोपाम्॥ सर्पास्यायै० सर्पास्यामा० ॥ ५ ॥

४५-(ऋ०) तवाहं सोम शरण सख्य इन्द्रो दिवे दिवे। पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधीं रति ताँ इहि ॥ १ ॥ (य०) अस्कन्नमद्य देवेभ्य आज्यर्ठ० संभ्रियासमङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषं वसुमतीमग्ने ते च्छायामुपस्थेषं विष्णोः स्थानमसीतऽ इन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वोऽ ध्वरऽ आस्थात्॥ २ ॥ (सा०) तवाहँ सो। मरा २ रणा। रण। सख्य इन्द्रो दिवा २ इदिवाह। दिवे। पुरूणिबभ्रो निचरन्तिमा २ मवा। अव॥ परिधीम रतितर्ठ० इहा २३ इ। आ २ इ। हा २३४। ओ हो वा। औ हो वा॥ ऊ ३२३४ पा॥ ३॥ (अ०) सोम राजन्संज्ञानमा वपैभ्यः सुब्राह्मणा यतमे त्वोपसीदान्। ऋषीनार्षेयांस्तपसोऽधि जातान् ब्रह्मौदने सुहवा जौहवीमि॥ ४॥ आवाहये प्रेतवहां यमप्रियां यमस्य दूतीं सुविशालरूपाम्। सुदण्डहस्तां महिषाधिरूढां भजामि देवीं कुलवृद्धिहेतोः। प्रेतवाहिन्यै० प्रेतवाहिनीमा० ॥ ५ ॥

४६-(ऋ०) ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून् विध्यतां संविदाने आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अभित्रान्॥ १ ॥ (य०) ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून्विध्यतार्ठ० संविदानेऽ आर्त्नीऽ इमे विस्फुरन्तीऽ अमित्रान्॥ २॥ (सा०) अपामिवे दूर्मयस्तौ।होवा-हाइ॥तुराणा २३४ः।हाहोइ।प्रमनी।षाः।ईरते

३। सोमम। छा ३४। हाहोई। नमस्य। ताइः। उपचा ३। यन्तितसम्। चा ३४। हा होइ॥ आच वि। शा। तियुश। तीरुश। ता ३४ म्। हाहा ३४। और होवा। वा ३ डा २३४५:॥ ३॥ (अ०) अपो देवी र्मधुमतीर्घृतश्चुतो ब्रह्मणां हस्तेषु प्रपृथक्सादयामि। यत्काम इदमभिषिञ्चामि वोऽहं तन्मे सर्वं सं पद्यतां वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ ४॥ आवाहये शूककरां सुभीमां कामप्रियां घोरमुखीं कृशाङ्गीम्। यज्ञे समागत्य शुभं कुरुष्व गृहाण पूजां शुभदे नमस्ते॥ दन्तशूकरायै० दन्तशूककरामा० ॥५ ॥

४७-(ऋ०) बलिस्था पर्वतानां खिद्रं विभर्षि पृथिवि। प्रया भूमिं प्रवत्वति मह्ना जिन्नोषि महिनि॥ १॥ (य०) मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥ २॥ (सा०) यज्ञायज्ञा॥ वो अग्नयाः ३ इ। गिरा २ गिरा ३४। हा हो ३ इ। चादक्षा २३४ साइ। प्रप्रा २ वयममृतं जा। ता। वे १ दासा २ म्॥ प्रियम्मित्राम्। नशर्ठ० सिषाम्॥ एहिया। ओ हौ हो २३४५ इ॥ डा॥ ३॥ (अ०) यामृषया भूतकृतो मेधां मेधाविनो विदुः। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु॥ ४॥ आवाहये दैत्यसुतां सुभीमां क्रौञ्चीं महार्हासनसन्निविष्टाम्। भयस्य हन्त्रीं द्विजसङ्घजुष्टां वने वसन्ती वनदेवतां त्वाम्॥ क्रौञ्चयै० क्रौञ्चीमा०॥ ५॥

४८-(ऋ०) देवस्य सवितुर्वयं वाजयन्तः पुरन्ध्या। भगस्य रातिमीमहे॥ १॥ (य०) उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि च नोधाश्चनोधाऽ असि च नो मयि धेहि। जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं

भगाय देवाय त्वा सवित्रे ॥ २ ॥ (सा०) तत्सवितुर्वेरेणियोम्। भर्गो देवस्य धीम हीऽ २। धियो यो नः प्रचो १२१२। हुम् आ २ दायो आ २३४५ ॥ ३ ॥ (अ०) सविता प्रस वानामधिपतिः स मावतु अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामा शिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ ४ ॥ आवाहयेऽहं मृगशीर्षनाम्नीं निजप्रबोथाभुडुमध्यसंस्थाम्। चन्द्रप्रियां चन्द्रनिभाननतां च संभावयास्मानिह योगिनि त्वम्। मृगशीर्षायै० मृगशीर्षामा० ॥ ५ ॥

४९-(ऋ०) एको बहूनामसि मन्यवीलितो विशं विशं युधये सं शिशाधि। अकृत्तरुक् त्वया युजा वयं द्युमन्तं घोषं विजयाय कृण्डमहे ॥ १ ॥ (य०) आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ २ ॥ (सा०) अग्नाइमृडा २ऽ। महर्ठ० आ २३४ सी। अय आदा २ इ। वयुञ्जा २३४ नाम्। इयेथ वा २३। हिरा ३ सा ५ दा ६५६ म् ॥ ३ ॥ (अ०) यदन्तरिक्षं पृथिवीमृत द्यां यन्मातरं पितरं वा जिर्हिंसिम। अयं तस्माद्गाहपत्यो नो अग्निरुदिन्नयाति सुकृतम्य लोकम् ॥ ४ ॥ वृषानने शङ्करवल्लभे त्वमत्रेहि यज्ञे विधि गौरवाय। त्वामर्चये दैवि कृपां विधेहि गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ वृषननायै० वृषाननामा० ॥ ५ ॥

५०-(ऋ०) अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय। वा तं त्रिष्णुं सरस्वतीं सवितारं च वाजिनम् ॥ १ ॥ (य०) कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽ उन्नयामि। समापोऽ अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ २ ॥ (सा०) अग्नाइमृडा २ऽ। महर्ठ० आ

२३४ सी। अय आदा २ इ। वयुञ्ज्ञा २३४ नाम्। इयेथ वा २३। हिरा ३ सा ५ दा ३५६ म्॥ ३॥ (अ०) धनुर्बिभर्षि हरितं हिरण्ययं सहस्रघ्नि शतवधं शिखण्डिनम्। रुद्रस्ये षुश्चरति देवहेतिस्तस्यै नमो यतमस्यां दिशी ३ तः॥ ४॥ एह्येहि व्यात्तास्य इहैव सद्यो मदीययज्ञे रुचिराङ्गजाते। सुमूर्धजे पद्मसमाननेत्रे ममाध्वरं योगिनि पाहि नित्यम्॥ व्यात्तास्यास्यै० व्यात्तास्यामा०॥ ५॥

५१-(ऋ०) आ नो दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन्निदं बर्हिः सोमपेयाय याहि। वहन्तु त्वा हरयो मद्र्यञ्चमाङ्गूषमच्छा त वस मदाया॥ १॥ (य०) त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥ २॥ (स०) परीतोषिञ्चत। सुताम्॥ सोमोय उ। तमर्ठ० हवाइः दाधाओ २३४ वा ऊ ३४ पा। न्वार्ठ० योनर्यो अप्सुवन्ता ३ रा॥ सुषावाऽ २३ सो॥ मामद्रिभिः। इडा २३ भा ३४३। औ २३४५ इ॥ डा॥ ३॥ (अ०) उत्तमो अस्यौषधीनां तव वृक्षा उपस्तयः उपस्तिरस्तु सो ३ स्माकं यो अस्माँ अभिदासति॥ ४॥ एह्येहि यज्ञे मम देवि धूमनिश्वसके योगिनि चारुदन्ते। गोरोचना कुङ्कुमशोभिताङ्गे प्रसीद मातः कमलालये त्वम्॥ धूमनिश्वासायै० धूमनिश्वासामा०॥ ५॥

५२-(ऋ०) पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि। विश्वप्रिये विष्णु मनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि संनिधत्स्व॥ १॥ (य०) श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे

नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म ऽ इषाण ॥ २ ॥ (सा०) हा। वो ३ हा। वो ३ हा ३। हा। ओ २३४ वा। हा इ। पूमाना २३४: सो। माधा राप २३४॥ आपो वा २३४ सा अर्षा २३४ सी ॥ आरत्ना २३४ धाः। योनी मा २३४ र्त्ताः। स्यासीदा २३४ सी ॥ उत्सोहा इ वो हा इ रण्या २३४ याः। हा वो ३ हा। वो ३ हा ३। हा। ओ २३४ वा। हा ३४। औ हो वा ॥ ए ३। अति विश्वानि दुरिता तरमा २३४५ ॥३ ॥ (अ०) देवी देव्यामधि जाता पृथिव्यामस्योषधे। तां त्वा नितत्नि केशेभ्यो दृंहणाय खनामसि ॥ ४ ॥ व्योमैकपादोर्ध्वदृशं सुरेशीमावाहये योगिनीदिव्यदेहाम्। प्रसीद मातः ककलायताक्षि विशाध्वरं नो वरदे नमस्ते॥ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे० व्योमैकचरणोर्ध्वदृशमा० ॥ ५ ॥

५३-(ऋ०) आर्ष्टिपेणो होत्रमृषिर्निषीदन्। देवापिर्देवसुमतिं चिकित्वान् ॥ १ ॥ (य०) विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ २ ॥ (सा०) औ हो इत्वमिन्द्र प्रतूर्त्तिषु ३२ ॥ अभाइवा इश्वाः। आसिस्था २३४ द्धाः ॥ श्री ॥ आशस्तिहा जनितावृ। त्रतू २३ रसाइ ॥ श्री ॥ तूवा २३० तुर्या ॥ तरौ हो ३। हुम्मा २। स्था २ तो ३४ हाइ ॥ ३ ॥ (अ०) उदगातां भगवती विचृतौ नाम तारके। विक्षेत्रियस्य मुञ्चतामधमं पाशमुत्तमम् ॥ ४ ॥ आवाहये तापनि योगिनि त्वां यज्ञे द्विषतापकरीशुभाङ्गीम्। सर्वार्थसम्पत्तिकरी प्रणाम्यां विघ्नव्रज नाशय नो नमस्तु॥ तापिन्यै० तापिनीमा० ॥ ५ ॥

५४-(ऋ०) त्वष्टा दुहित्रे वहन्तु कृणोतीतीदं विश्वं भुवनं समेति। यमस्य माता पर्युह्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश॥ १॥ (य०) ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयर्ठ० सुधातु दक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत्॥ २॥ (सा०) हा उ (त्रिः)। इमाः। इमाः। प्रजा। (त्रिः) प्रजापते। हो इ (द्वि द्विः)॥ प्रजापते। हा ३१३। वा २॥ ए। हृदयम्। (द्वि द्विः) ए। हृदया ३१३। वा २॥ प्रजारूप मजीजने ३। इट् इडा २३४५॥ ३॥ (अ०) प्रजापतिः सलिलादा समुद्रादाप ईरयन्नु दधिमर्दयाति। प्रप्यायतां वृष्णो अश्वस्य रेतोऽर्वाङ्गे तेन स्तनयित्नुने हि॥ ४॥ आवाहये शोषणि दृष्टिमस्मिन् यज्ञे समागत्य कुरु प्रसादम्। रसाध्वरं पालय नोरिनीते गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ शोषणीदृष्ट्यै० शोषणीदृष्टिमा०॥ ५॥

५५-(ऋ०) कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम। को नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च॥ १॥ (य०) आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्धासो ऽअपरीतासः उद्भिदः। देवानो यथा सदमिद् वृधेऽ असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ २॥ (सा०) हा ३ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहि २। (त्रिः) ऐहिहा ३ वाक्। (त्रिः)। हा हाउ। (त्रिः) हाउ (३) वा। प्रजातोकमजीजनेहस। इहा २३४५। हा उ (३)। वाऽघहहहह। (त्रिः)। एही २। (त्रिः)। एहिहा उवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः) आयाउ। (त्रिः)। अग्निरस्मिजन्मना औ ३ हो। हा २ इया। औ ३ हो। हा २ इया।

ओ ३ हो ३ ॥ (हाउ ३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः) हाहाउ। (त्रिः)। हाउ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः) ऐही २। (त्रिः) एहिहा उवाक्। (त्रिः) हाहाउ। (त्रिः) आयाउ। (त्रिः) जातवेदाओ ३ हो। हा २ हया। ॐ ३ हो। हा २ हया। ॐ ३ हो ३। हाउ (३) वाग्धहहहह। (त्रिः) ऐही २। ऐहिहा उवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। हाउ (३) वा। रायस्पोषायसुकृतायभूयसेहस। इहा २३४। हाउ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। एही २। (त्रिः) ऐहिहा उवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। आयाउ। (त्रिः)। घृतं मे चक्षुरमतं म आसानौ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो। हाउ (३) वाग्धहहहह। (त्रिः)। ऐही २। (त्रिः)। ऐहिहा उवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। हाउ (३) वा। आगावाममिदं बृहद्धस्। इहा। २३४५। हाउ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐही २। (त्रिः) ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। आहाउ। (त्रिः)। त्रिधातुरर्कोरकसोविमाना ॐ ३ हो। २ इया। ॐ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो ३ ॥ हाउ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः) ऐही २। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। हाउ (३) वा। इदं वापहिद बृहद्धस्। इहा। २३४५। हाउ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐही २। (त्रिः) ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। आया उ। (त्रिः) अजस्त्रं ज्योता इरौ ३ हो। हा। हा २ इया। ॐ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो ३ ॥ हाउ (३) वाग्घहहहह। (त्रिः) ऐही २। (त्रिः) ऐहिहाउवाक्। (त्रिः) हाहाउ। (त्रिः)। हाउ (३) बा चराचराय बृहत इदं धाममिदं बृहद्धस्। इहा २३४५।

हाउ (३)। वाग्धहहहह। (त्रिः) ऐही ५। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक् (त्रिः)। हाहाउ (त्रिः) आयाउ। (त्रिः) हविरस्मिसर्वामौ ३ हो। हा २ इया ॐ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो २। हाउ (३) वाग्घहहहह (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हा हाउ। (त्रिः)। हाउ (३) वा॥ एयशोक्रान् भूतमततनत् प्रजाउसमचूकुपत् पशुभ्योहस्। इहा २३४५॥ ३॥ (अ०) आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो ऽदब्धासो ऽअपरीतासऽ उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधेऽ असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ ४॥ आवाहये कोटरि योगिनि त्वां यज्ञेऽत्र देवार्चितपादपद्मे। आगत्य रक्षां कुरु सप्ततन्तोर्गृहाण पूजां वरदे नमस्ते कोटयै० कोटरीमा०॥ ५॥

५६-(ऋ०) जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ १॥ (य०) एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च म एकादश च म एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म एकविर्ठ० शतिश्च म एकविर्ठ० शतिश्च मे त्रयोविर्ठ० शतिश्च मे त्रयोविर्ठ० शतिश्च मे पञ्चविर्ठ० शतिश्च मे पञ्चविर्ठ० शतिश्च मे सप्तविर्ठ० शतिश्च मे सप्तविर्ठ शतिश्च मे नवविर्ठ० शतिश्च मे नवविर्ठ० शतिश्च म एकत्रिर्ठ० शच्च म एकत्रिर्ठ० शच्च मे त्रयत्रिर्ठ० शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ २॥ (सा०) श्रायन्तइवसू ४ रायाम्॥ विश्वा २ इ दिन्द्रा २। स्यभा २ क्षाता। वासू निजातो जनिमा।

नियोजा १ सा २ ॥ प्रतिभागन्न दो २ धिकाः। प्रा २३ ती॥ भागान्न ३ दा। हुम्। धिमा ३ः। ओ २३४ वा॥ हे २३४५॥ ३॥ (अ०) शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥ ४॥ एह्येहि मातर्वरदानदक्षे विशाध्वरे दैत्यविनाशकारिणि। त्वां स्थूलनासां विनता नमामः प्रसीद धन्ये प्रणतार्तिहन्त्रि॥ स्थूलनासिकायै० स्थूलनासिकामा०॥ ५॥

५७-(ऋ०) ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्॥ १॥ (य०) ब्रह्माणि मे मतयः शꣳ सुतासः शुष्मऽ इयर्ति प्रभृतो मेऽ अद्रिः। आशासते प्रतिर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो अच्छ॥ २॥ (सा०) ब्रह्मा। ब्रा २३ ह्मा। जज्ञानं प्रथमं पुरास्तात्॥ विसाइ। वा २३ इसी। मतः सुरुचौ वेन आवः॥ सबू। सा २३ बू। ध्निया उपमा अस्य वा इष्ठाः॥ सताः सा २३ ताः। चयोनिमसतश्च वाइवा ३४३ः। ओ २३४५ इ। डा॥ ३॥ (अ०) तेऽवदन्प्रथमा ब्रह्मकिल्विषेऽकूपा २ः। सलिलो मातरिश्वा। वीडुहरास्तप उग्रं मयोभूरापो देवीः प्रथमजा ऋतस्य॥ ४॥ आवाहये भूषणभूषिताङ्गीं विद्युत्प्रभां भासितदिव्यदेहाम्। विशाम्बरे देवि गृहाण पूजां देवैर्नुते ते वरदे नमोऽस्तु॥ विद्युत् प्रभायै० विद्युत् प्रभामा०॥ ५॥

५८-(ऋ०) नि पस्त्यासु त्रितः स्तभूयन् परिवीतो योनी सीददन्तः। अतः संगृभ्या विशां दमूना विधर्मणायन्त्रैरीयतेन्दॄन्॥ १॥ (य०) असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽ अधि

भूम्याम्। तेषाऍं सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ २॥ (सा०) अग्नेयू ३ ऽङ्क्ष्वाहियेतवा। अश्वासोदेवसाघा २३ः। अरं वा २३ हो। तियाशा २३ वा ३४३ः। ओ २३४५ इ ॥ ३॥ (अ०) वरणो वरयाता अयं देवो वनस्पतिः। यक्ष्मो यो अस्मिन्नविष्टस्तमु देवा अवीवरन्॥ ४॥ नमाम् आह्लादमयीं बलाढ्यां बलाकिकास्यां वरदां शुचिस्मिताम्। प्रविश्य यागेऽत्र मनोरथान्न विधेहि सत्यानखिलान् नमस्ते॥ बलाकास्यायै० बलाकास्यामा० ॥ ५ ॥

५९-(ऋ०) हऍं० सः शुच्रिषद् वसुरन्तरिक्षसद्होता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद् वरस दृतमद् व्योमसद् ब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्॥ १ ॥ (य०) सुपर्णोऽसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुबृहद्रथन्तरे पक्षो। स्तोमऽ आत्मा छन्दाऍं० स्यङ्गानि यजूऍं०षि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञा यज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत॥ २॥ (सा०) अभाइमाहे। (त्रिः)। चर्षणीधृतं मघवाना ३ मूक्था १ याऽ २ म्। इन्द्रं गिरो वृहतीरभ्या ३ नूषा १ ता २॥ व। वृथानं पुरुहूतऍं० सु ३ वाक्तो १ इ भी २ः॥ अमर्त्यं जरमाऍं०दि ३ वा इदा १ ईवे २। अभाइमाहे। (द्विः)। अभा २३ इ। मा २। औ २३४। हो हो वा॥ सर्पसु वा २३४५ः॥ ३॥ (अ०) गन्धर्वाप्सरसः सर्पान् देवान् पुण्यजनान् पितृन् दृष्टा न दृष्टानिष्णामि यथा सेनाममूं हनन्॥ ४॥ मार्जारिके त्वामिह चिन्तयामि मार्जाररूपे निखिला घहन्त्रीम्। संभावये योगिनि दिव्यरूपे गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ मार्जायै० मार्जारीमा० ॥ ५ ॥

६०-(ऋ०) दक्षस्य वाढिते जन्मनि व्रते राजाना मित्रावरुणा विवाससि। अतूर्तपन्थाः पुरुरथो अर्यमा सप्तहोता विषुरूपेषु जन्मसु॥ १॥ (य०) या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचा कशीहि॥ २॥ (सा०) ओग्राइ। आयाही ३ वी इ तोया २ इ। तोया २ इ। गृणानोइ। व्यदातोया २ इ। तोया २ इ। नाइ होताया २ २। त्सा २ यि। वा २३४ औ हो वा। ही २३४ षी॥ ३॥ (अ०) मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगम्यात्परस्याः। सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून्ता ढिवि मृघो नुदस्व॥ ४॥ आवाहयेऽहं कटपूतनां त्वां समस्तविघ्नौघविनाशदक्षाम्। वृन्दारकैर्वन्दितपादपद्मां नमामि देवीं परमार्तिहन्त्रीम्॥ कटपूतनायै० कटपूतनामा०॥ ५॥

६१-(ऋ०) अदितिर्द्यौरिदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ १॥ (य०) देवी द्यावा पृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः। मरवाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥ २॥ (सा०) वृषा हाउ॥ पा २३४ वा। स्वधारा २३४ या। मा २३४ या। मा २३४ रू। त्वा २३४ ता इ। चामत्सा २३४ रा॥ वा इश्वादधा २३॥ ना २ ओ १३४ औ हो वा॥ जा २३४ सा॥ ३॥ (अ०) वृषेन्द्रस्य वृषादिवो वृषा पृथिव्या अयम्। वृषा विश्वस्य भूततस्य त्वमेक वृषो भव॥ ४॥ अट्टाटहासामिह भीमरूपां राकाप्रभामान्त्रयुतां ज्वलन्तीम्। सर्वस्व लोकस्य

विषादहन्त्रीमावाहयेस्मिन् विततेऽध्वरेऽहम्॥ अट्टाट्टहासायै० अट्टाट्टहासामा०॥५॥

६२-(ऋ०) न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम्। हन्ति रक्षो हन्त्यासद् वदन्तमुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते॥१॥ (य०) इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।समूढमस्य पार्ठ० सुरे स्वाहा॥२॥(सा०)हाउ(३)।ऊं २ वदः। (त्रिः) वदोवदः। (त्रिः)। वदोनृम्णानिपुरायः। (त्रिः)।यमो हाउ।(त्रिः)।पितरो हाउ।(त्रिः)।भारुण्डो हाउ (त्रिः) इम् ँ स्तोमाम्। अर्हातिजा। तावेदसहोये ३। होये होये॥ हाउ (३)। ऊ २ वदः। (त्रिः)! वदोवदः। (त्रिः)। वदोनृम्णानिपुराणः। (त्रिः)। यमोहाउ। (त्रिः)। पितरो हाउ। (त्रिः)। भारुण्डो हाउ। (त्रिः) रथामिवा। संमाहेमा। मानीषयहोये ३। होये होये॥ हाउ (३)। ऊ २ वदः। (त्रिः)। वदोवदः। (त्रिः) वदोनृम्णानिपुरायः। (त्रिः)। यमोहाउ (त्रिः)।पितरो हाउ।(त्रिः) भारूण्डो हाउ।(त्रिः)।भद्राहिना। प्रमातिरा। स्यास् ँ सदहोये ३। होये होये॥ हाउ (३) ऊ २ वदः (त्रिः) वदोवदः। (त्रिः)। वदोनृम्णानिपुरायः। (त्रिः) यमोहाउ।(त्रिः)।पितरो हाउ।(त्रिः) भारुण्डो हाउ।(त्रिः)। अग्नाइसख्याइ। माराइषामा। वायन्तवहोये ३। होये होये॥ हाउ (३)। ऊ २ वदः। (त्रिः)। वदोवदः। (त्रिः) वदोनृम्णानिपुरायः।(त्रिः)।पितरोहाउ।(त्रिः) पितरो हाउ। बारुण्डोहाउ। (द्विः)। भारुण्डो ३ हाउ। वा॥ ए। वदोवदोनृम्णानिपुराययमोवः पितरो भारुण्डः। ए। वदोवदोनृम्णानि-

पुराययमोवः पितरो भारुण्डः। ए। व। वदोवदोनृम्णानिपुराययमोव पितरो भारुण्डा २३४५॥ ३॥ (अ०) अदितिर्मादित्यैः प्रतीच्यादिशः पातुबाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि। लोक कृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ॥ ४॥ कामाक्षिसंसारमलापहन्त्रि विद्युत्प्रभाचन्द्रनिभानने च। एह्येहि यज्ञे सकलार्थदात्रि गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ कामाक्षायै० कामाक्षीमा०॥ ५॥

६३-(ऋ०) मानः समस्य दूढ्य १ः परिद्वेषसो अंहति ऊर्मिनं नावमा वधीत्॥ १॥(य०) वृष्णऽ ऊर्मिरसि राष्ट्रदाराष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्णऽ ऊर्म्मिरसि राष्ट्रदाराष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोसि राष्ट्रदा-राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदाराष्ट्रममुष्मै देहि॥ २॥ (सा०) अहा। वो ३ हा। वो ३ हा। सनादग्नाइ। मृणसि। आतुधानान्। नत्वारक्षा। सी ३ पृत। नासुजिग्यूः॥ अनुदहा। सहमू। रान्कयादाः। अहा। वो ३ हा। वो ३ हा। माता इहेल्याः। मुक्षत। दा १४३ इ। वी ३ या या ५ या ६५६॥ ३॥ (अ०) अङ्गेभ्यस्त उदराय जिह्वाया आस्याऽयते। दद्रभ्यो गन्धाय ते नमः॥ ४॥ मृगाक्षिवालार्कनिभामिह त्वामावाहये ज्ञानमयीं सुशीलाम्। ब्रह्मादिदेवार्चितपादयुग्मामागत्य यज्ञेऽत्र विधेहि भव्यम्॥ मृगाक्ष्यै० मृगाक्षीमा०॥ ५॥

६४-(ऋ०) भद्रं कर्णोर्भिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवां सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥ १॥ (य०) भायै दार्वाहारं प्रभायाऽ अग्न्येधं ब्रध्नस्य

विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारठं० सर्वेभ्यो लोकेभ्यऽ उप सेक्तारमवऽ ऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम्॥ २ ॥(सा०) वृषासोमा॥द्युमा २ आसा २ इ। धृतादेषा ३ हा ३ इ। वार्ष व्रा २३४ ताः॥ वृषाघर्मा ३॥इ ३ या॥णा इदध्रिषे। इडा २३ भा ३४३। ओ २३४५ इ। डा॥ ३॥ (अ०) अभाशर्वौ मृदन्तं माभि यातं भूतपती नमो वाम्। प्रति हिंतामायतां मा विस्राष्टं मा नो हिंसिष्टं द्विपदो मा चतुष्पदः॥ ४॥ आवाहयेऽहं मृगलोचनां त्वामाकण्ठदीर्घनयनां मणिकुण्डलढ्याम्। मन्दस्मितां मृगमदोज्वलमालदेहां विशाध्वरं नो वरदे नमस्ते॥ मृगलोचनायै० मृगलोचनामा० स्थापयामि॥ ५॥

योगिनीपूजनम्

ध्यानम्

स्मरामि चित्ते सततं सुरम्याः सुयोगिनीर्वोऽत्र गजाननाद्याः।
देवीश्चतुः षष्टिसुधांशुशुभ्राः स्वच्छं धरामण्डलमाशुकार्यम्॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्

समस्तप्रत्यूहसमुच्चयस्य विनाशने प्राप्तगुणाः सुभव्याः।
गजाननाद्या वितनोमि देव्य आवाहनं वोऽत्र समागताः स्युः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्

दत्तं चतुष्षष्टि गजाननाद्या योगिन्य आरादिदमासनं च।
शुभप्रदाः सौख्यकरा भजन्तु भवन्तु मेऽभीष्टकराः सुवेषाः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्

योगिन्य आशुपरमानिगमप्रसिद्धाः प्रक्षालनायपदपङ्कजयोरुदारम्।
स्वच्छं सुशीतलमिदं भयकाहृतं च गृह्णन्त्वशेषमिदमिष्टकरं च वारि॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

सौजन्यसौख्यजननीजननीजनानां यासां कृपैव वसुधा वसुधारिणी मे।
ताः सर्वदैवगुरुगौरवधारिदेहा अर्घ्यं च गृह्णतमुदाऽऽशु गजाननाद्याः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

कङ्कोलपत्रहरिचन्दन - पुष्पयुक्तमेलालवङ्गलवली - घनसारसारम्।
दत्तं सदैव हृदये करुणाशयेस्मिन्देव्यो भजन्तु शुभमाचमनीयम्मभः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, आचमनीयजलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

गङ्गाजलेन सहितेन पयःसिताज्यैर्दध्नाऽमलेन मधुना तुलसीदलैश्च।
पञ्चामृतेन वरवेशगजाननाद्याः स्नानं मुदा कुरुत योगरतावरेण्याः॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकम्

जलेऽमलेमञ्जुविचित्र पुष्पाण्यच्छानि चानीय निपातितानि।
स्नानं विधेयं हि गजाननाद्या आगत्य युष्माभिरिहाङ्गणे ते॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, शुद्धोदकजलं समर्पयामि।

वस्त्रम्

अनर्घरत्नैरतिशोभमानं शुभं प्रियं मङ्गलकारकं च।
मयार्पितं वस्त्रमिदं विचित्रं कृते भवेद् वै वरयोगिनीनाम्॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

त्रिविधतापविनाशविचक्षणाः परमभक्तियुतेन निवेदितम्।
सुरनुता उपवस्त्रमिदं नवं सुरभितं परिगृह्णत मेऽधुना॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

गन्धम्

योगिन्य आशु वनजातसुगन्धराशिं सप्रेम गृह्णत सुशीतलमच्छशोभम्।
सन्तापविस्तृतिहरं परमं पवित्रं द्रागर्पितं मम मनोरथदा भवेयुः॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतान्

योगिन्य एतात्र सुगन्धितांश्च भक्त्या मया मोदसमर्पितांश्च।
गृह्णन्तु देव्यो द्रुतमक्षतान्मे समग्रविघ्नान् विनिवारयन्तु॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, अक्षतं समर्पयामि।

पुष्पम्

बहुविधं परितो हि समाहृतं समुचितं मकरन्दसमन्वितम्।
विकसितं कुसुमं विनिवेदितं कुरुत मे सफलं नयनाञ्चलैः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, पुष्पं समर्पयामि।

रक्तचूर्णम्

धूपादिकेनातिसुवासितानि शोणश्रियानन्दविवर्धितानि।
श्रीरक्तचूर्णानि मनोहराणि गजाननाद्या मनसाऽर्पयामि॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, रक्तचूर्णं समर्पयामि।

धूपम्

लवङ्गपाटीरकचूर्णवर्धितं नरासुराणामपि सौख्यदायकम्।
गजाननाद्याः सुरभिप्रसारकं गृह्णन्तु धूपं सुखदं सुदेव्यः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि समर्पयामि।

दीपम्

सद्वर्तिकां ज्ञानविवर्धिकामिमां निपात्यदीयं विनिवेदितं मया।
प्रज्वालितं ध्वान्तविनाशकं च गृह्णन्तु देव्यं सततं शिवाय॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षाल्यं)

नैवेद्यम्

सिद्धान्नकर्पूरविराजितं द्राक्सौरभ्यसान्द्रेण विभूषितं च।
नैवेद्यमेतद्रुचिरं सुगन्धि स्वीकृत्य मामत्र कृतार्थयन्तु॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, नैवेद्यं समर्पयामि। (हस्तप्रक्षालनार्थे मुखप्रक्षालनार्थे च जलं समर्पयामि।)

ताम्बूलम्

योगिन्य आशु गृहमेत्य शुभं मदीयं भक्त्यार्पितं परमगन्धयुतं सुरम्यम्।
एलालवङ्गबहुलं क्रमकादियुक्तं ताम्बूलमद्य मम गृह्णत मञ्जुहासाः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः मुखवासार्थं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणाम्

देवासुरैर्नित्यमशेषकाले प्रगीयमानाः सततं सहासाः।
गृह्णन्तु सद्यः खलु दक्षिणां च गजाननाद्याः सुखदाभवन्तु॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

आर्तिक्यम्

नीराजना सौख्यमयी सदैव गाढान्धकारानपि दूरयन्ती।
अशेषपापैः परिपूरितस्य शुद्धिं करोति प्रियमानवस्य॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, आर्तिक्यं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

प्रदक्षिणाः सन्ति गजाननाद्याः पदे पदे दुःखविनाशिका अपि।
जन्मान्तरस्यापि विनाशकारिकाः पापस्य याश्चित्तविवर्धितस्य॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

गजाननाद्यारुचिरं मदीयं गृह्णन्तु पुष्पाञ्जलिमत्र देव्यः।
योगिन्य आशूद्भटशङ्कराश्च भवन्तु भूपालनतत्पराश्च॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्तुतिम्

जनामि नोऽर्चनविधिं परमं क्षमध्वं लोकार्तिपुञ्जमतुलं विनिपातयन्त्यः।
योगिन्य आशु मम मङ्गलमातनुध्वं कुर्वन्तु दूरमनिशं दुरितात्समस्तात्॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, स्तुतिं समर्पयामि।

इति सम्पूज्य 'अनया पूजया चतुः षष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम्।'

क्षेत्रपालस्थापनम्

आचार्य वायव्यकोण में नवीन श्वेत वस्त्र से ढँकी हुई पीठ पर चारों ओर रेखाओं को लगाकर मध्य में पूर्वदिशा से पश्चिमदिशा, उत्तरदिशा से दक्षिणदिशा में दो-दो रेखाएं बनावें, नवग्रह के तुल्य नौ कोष्ठकों का निर्माण करके पूर्वदिशा में छः षट्दल और उत्तरदिशा व ईशानकोण के मध्य के कोष्ठों में सप्तदल का निर्माण करें, पुनः यजमान अपनी पत्नी के साथ आसन पर बैठकर आचमन और प्राणायाम करे। तदुपरान्त आचार्य निम्न संकल्प यजमान से करावें—

यजमानः जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ स्मृत्वा, अस्मिन् शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणि क्षेत्रपालपूजनं करिष्ये॥

वायव्यकोण में क्षेत्रपाल का पूजन करें, उसकी विधि इस प्रकार से है-अजर, व्यापक, इन्द्रादि का उन्हीं के मन्त्रों से आवाहन और स्थापन निम्न क्रम से करें—

तद्यथा—ॐ इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ याभ्यार्ठ० रक्षार्ठ०स्यप हर्ठ० स्यग्ने। ताभ्यां पतेम सुकृतामु लोकं यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः॥ ॐ अजराय नमः अजरमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ प्रथमा वार्ठ० सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा। अपिप्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता॥ ॐ व्यापकाय नमः व्यापकमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकं मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः। सेमां नो हव्यदातिं जुषाणो देव रथ प्रतिहव्या गृभाय॥ ॐ इन्द्रचौराय नमः। इन्द्रचौरमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः। स नः स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ॐ इन्द्रमूर्तये नमः। इन्द्रमूर्तिमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ उक्षा समुद्रो अरुणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुराविवेश। मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ॥ ॐ उक्ष्णे नमः। उक्षाणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वर्ठ०हसः॥ ॐ कूष्माण्डाय नमः। कूष्माण्डमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

आग्नेये षट्सु दलेषु

ॐ स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित्परिस्रव॥ ॐ वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ बाहू मे बलमिन्द्रियर्ठ० हस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम॥ ॐ वटुकाय नमः। वटुकमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत। अथो यमस्य पड्वीशात्सर्वस्माद्देवकिल्बिषात्॥ ॐ विमुक्ताय नमः। विमुक्तमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

ॐ कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतर्ठ० समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ ॐ लिप्तकाय नमः। लिप्तकमावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥

ॐ सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यवह्रियमाणः सलिलः प्रप्लुतो ययोरोजसा स्कभिता रजार्ठ०सि वीर्येभिर्वीरतमा शविष्ठा। या पत्येते अप्रतीता सहोभिर्विष्णू अगन्वरुणा पूर्वहूतौ॥ ॐ लीलालोकाय नमः। लीलालोकमावाहयामि स्थापयामि॥ ११॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो

विश्वरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥ ॐ एकदंष्ट्राय नमः। एकादंष्ट्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १२॥

दक्षिणषट्के

ॐ अर्मेभ्यो हस्तिपं जवायाश्वपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालं तेजसेऽजपालमिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्राय गृहपर्ठ० श्रेयसे वित्तधमाध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम्॥ ॐ ऐरावताय नमः। ऐरावतमावाहयामि स्थापयामि ॥ १३॥

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रूणामहर्ठ०शतं धामानि सप्त च॥ ॐ ओषधीघ्नाय नमः। ओषधीघ्नमावाहयामि स्थापयामि॥ १४॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥ ॐ बन्धनाय नमः। बन्धनमावाहयामि स्थापयामि॥ १५॥

ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा॥ ॐ दिव्यकरणाय नमः। दिव्यकरणमावाहयामि स्थापयामि॥ १६॥

ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति। अश्विना यज्ञर्ठ० सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषजयन्॥ ॐ कम्बलाय नमः। कम्बलमावाहयामि स्थापयामि॥ १७॥

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतर्ठ० सेना अजय-

त्साकमिन्द्रः॥ ॐ भीषणाय नमः। भीषणमावाहयामि स्थापयामि॥ १८॥

नैर्ऋत्यषट्के

ॐ इमर्ठ० साहस्त्रर्ठ० शतधारमुत्सं व्यच्यमानर्ठ० सरिरस्य मध्ये। घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हिर्ठ०सीः परमे व्योमन्॥ गवयमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद। गवयं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु॥ ॐ गवयाय नमः। गववमावाहयामि स्थापयामि॥ १९॥

ॐ कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो अन्तः। प्लाशिर्व्यक्तः शतधार उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः॥ ॐ घण्टाय नमः। घण्टामावाहयामि स्थापयामि॥ २०॥

ॐ आक्रन्दय बलमोजो न आधा निष्टनिहि दुरिताबाधमानः। अपप्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इत इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व॥ ॐ व्यालाय नमः। व्यालमावाहयामि स्थापयामि॥ २१॥

ॐ इन्द्रायाहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः॥ ॐ अंशवे नमः। अंशुमावाहयामि स्थापयामि॥ २२॥

ॐ चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि। रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहर्ठ० हरिरेति कनिक्रदत्॥ ॐ चन्द्रवारुणाय नमः। चन्द्रवारुणमावाहयामि स्थापयामि॥ २३॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ ॐ घटाटोपाय नमः। घटाटोपमावाहयामि स्थापयामि॥ २४॥

पश्चिमे षट्सु दलेषु

ॐ उग्रं लोहितेन मित्रꣳ सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥ ॐ जटिलाय नमः। जटिलमावाहयामि स्थापयामि॥ २५॥

ॐ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूँ२रनु॥ रनु॥ ॐ क्रतवे नमः। क्रतुमावाहयामि स्थापयामि॥ २६॥

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः॥ ॐ घण्टेश्वराय नमः। घण्टेश्वरमावाहयामि स्थापयामि॥ २७॥

ॐ वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु। आयाहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता॥ ॐ विटकाय नमः। विटकमावाहयामि स्थापयामि॥ २८॥

ॐ दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं नोऽग्नेर्जिह्वामभिगृणीतम्। कृणुतं नः स्विष्टिम्॥ ॐ मणिमानाय नमः। मणिमानमावाहयामि स्थापयामि॥२९॥

ॐ त्रीणि त आहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तः समुद्रे। उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन्यत्रा त आहुः परमं जनित्रम्॥ ॐ गणवन्धाय नमः। गणवन्धमावाहयामि स्थापयामि॥ ३०॥

वायव्यदिक्कोष्ठेषट्सुदलेषुक्रमेण

ॐ प्रतिश्रुत्काया अर्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकꣳ शब्दायाडम्बराघातं महसे वीणावादं क्रोशाय

तूणवध्ममवरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनपमन्यतोऽरण्याय दावपम्॥ ॐ मुण्डाय नमः। मुण्डमावाहयामि स्थापयामि॥ ३१॥

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥ ॐ वर्वूकराय नमः। वर्वूकरमावाहयामि स्थापयामि॥ ३२॥

ॐ वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखाप्रतरणः सुवीरः। गोभिः सन्नद्धो असिवीडय स्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि॥ ॐ सुधापाय नमः। सुधापमावाहयामि स्थापयामि॥ ३३ ॥

ॐ सुपर्णं वस्ते मृगो अस्यादन्तो गोभिः संनद्धा पतति प्रसूता। यत्रा नरः सं च वि च द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म यर्ठ०सन्॥ ॐ वैनाय नमः। वैनमावाहयामि स्थापयामि॥ ३४॥

ॐ अग्ने अच्छा वदेह नः प्रति नः सुमना भव। प्र नो यच्छ सहस्रांजित्वर्ठ०हि धनदा असि स्वाहा॥ ॐ पवनाय नमः। पवनमावाहयामि स्थापयामि॥ ३५॥

ॐ भद्रं कर्णेभिःशृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः॥ ॐ ढुण्ढकरणाय नमः। ढुण्ढकरणमावाहयामि स्थापयामि॥ ३६॥

ॐ अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः। विश्वा यदजयः स्पृधः॥ ॐ स्थविराय नमः। स्थविरमावाहयामि स्थापयामि॥ ३७॥

ॐ वातं प्राणेनापानेन नासिके उपयाममधरेणौष्ठेन सदुत्तरेण प्रकाशेनान्तरमनूकाशेन बाह्यं निवेष्यं मूर्ध्ना स्तनयित्नु निर्बाधेनाशनिं मस्तिष्केण विद्युतं कनीनकाभ्यां कर्णाभ्यार्ठ०

श्रोतर्ठ० श्रोत्राभ्यां कर्णौ तेदनीमधरकण्ठेनापः शुष्ककण्ठेन चित्तं मन्याभिरदितिर्ठ० शीर्ष्णा निर्ऋतिं निर्जल्पेन शीर्ष्णा संक्रोशैः प्राणान् रेष्माणर्ठ० स्तुपेन॥ ॐ दन्तुर नमः। दन्तुरामावाहयामि स्थापयामि॥ ३८॥

ॐ उत्तरादिकोष्ठेसप्तसुदलेषु

ॐ इदं हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरर्ठ० सर्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य भयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥ ॐ धनदाय नमः। धनदमावाहयामि स्थापयामि॥ ३९॥

ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिर्ठ०हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः॥ ॐ नागकर्णाय नमः। नागकर्णमावाहयामि स्थापयामि॥ ४०॥

ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकर्ठ०सर्ठ०शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व॥ ॐ महाबलाय नमः। महाबलमावाहयामि स्थापयामि॥ ४१॥

ॐ इन्दुर्दक्षः श्येन ऋतावा हिरण्यपक्षः शकुनो भुरण्युः। महान् सधस्थे ध्रुव आ निषत्तो नमस्ते अस्तु मा मा हिर्ठ०सीः॥ ॐ फेत्काराय नमः। फेत्कारमावाहयामि स्थापयामि॥ ४२॥

ॐ जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे। अनाविद्धया तन्वा जय त्वर्ठ० स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु॥ ॐ वीरकाय नमः। वीरकमावाहयामि स्थापयामि॥ ४३॥

ॐ ईशानदिक्कोष्ठेसप्तसुदलेषुक्रमेण

ॐ तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सह वाजयन्त। अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान्क्षिणन्ति शत्रूं १ ॥ रनपव्ययन्तः ॥ ॐ सिंहाय नमः। सिंहमावाहयामि स्थापयामि॥ ४४॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२॥ आसादयादिह॥ ॐ मृगाय नमः। मृगमावाहयामि स्थापयामि॥ ४५॥

ॐ अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयां यन्तरिक्षस्य धर्त्रीं विष्टं भनीं दिशामधिपत्नीं भुवनानाम्। ऊर्मिर्द्रप्सो अपामसि विश्वकर्मा त ऋषिरश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा॥ ॐ यक्षाय नमः। यक्षमावाहयामि स्थापयामि॥ ४६॥

ॐ द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं वायुश्छिद्रं पृणातु ते। सूर्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया॥ ॐ मेघवाहनाय नमः। मेघवाहनमावाहयामि स्थापयामि॥ ४७॥

ॐ संबर्हिरङ्क्तार्ठ०हविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः संमरुद्भिः। समिन्द्रो विश्वदेवेभिरङ्क्तां दिव्यं नभो गच्छतु यत्स्वाहा॥ ॐ तीक्ष्णाय नमः। तीक्ष्णमावाहयामि स्थापयामि॥ ४८॥

ॐ पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा॥ ॐ अमलाय नमः। अमलमावाहयामि स्थापयामि॥ ४९॥

ॐ अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते॥ ॐ शुक्राय नमः। शुक्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ५०॥

(अथवा)

केवलं नामाऽनुक्रमेण क्षेत्रपालस्थापनम्

ॐ अजराय नमः अजरमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥
ॐ व्यापकाय नमः व्यापकमावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥
ॐ इन्द्रचौराय नमः इन्द्रचौरमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥
ॐ इन्द्रमूर्तये नमः इन्द्रमूर्तिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥
ॐ उक्ष्णे नमः उक्षाणमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥
ॐ कूष्माण्डाय नमः कूष्माण्डमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥
ॐ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥
ॐ वटुकाय नमः वटुकमावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥
ॐ विमुक्ताय नमः विमुक्तमावाहयामि स्थापयामि ॥ ९ ॥
ॐ लिप्तकाय नमः लिप्तकमावाहयामि स्थापयामि ॥ १० ॥
ॐ लीलालोकाय नमः लीलालोकमावाहयामि स्थापयामि ॥ ११ ॥
ॐ एकदंष्ट्राय नमः एकादंष्ट्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ १२ ॥
ॐ ऐरावताय नमः ऐरावतमावाहयामि स्थापयामि ॥ १३ ॥
ॐ ओषधीघ्नाय नमः ओषधीघ्नमावाहयामि स्थापयामि ॥ १४ ॥
ॐ बन्धनाय नमः बन्धनमावाहयामि स्थापयामि ॥ १५ ॥
ॐ दिव्यकरणाय नमः दिव्यकरणमावाहयामि स्थापयामि ॥ १६ ॥
ॐ कम्बलाय नमः कम्बलमावाहयामि स्थापयामि ॥ १७ ॥
ॐ भीषणाय नमः भीषणमावाहयामि स्थापयामि ॥ १८ ॥
ॐ गवयाय नमः गववमावाहयामि स्थापयामि ॥ १९ ॥
ॐ घण्टाय नमः घण्टामावाहयामि स्थापयामि ॥ २० ॥
ॐ व्यालाय नमः व्यालमावाहयामि स्थापयामि ॥ २१ ॥
ॐ अंशवे नमः अंशुमावाहयामि स्थापयामि ॥ २२ ॥
ॐ चन्द्रवारुणाय नमः चन्द्रवारुणमावाहयामि स्थापयामि ॥ २३ ॥
ॐ घटाटोपाय नमः घटाटोपमावाहयामि स्थापयामि ॥ २४ ॥
ॐ जटिलाय नमः जटिलमावाहयामि स्थापयामि ॥ २५ ॥
ॐ क्रतवे नमः क्रतु मावाहयामि स्थापयामि ॥ २६ ॥

ॐ घण्टेश्वराय नमः घण्टेश्वरमावाहयामि स्थापयामि ॥ २७ ॥
ॐ विटकाय नमः विटकमावाहयामि स्थापयामि ॥ २८ ॥
ॐ मणिमानाय नमः मणिमानमावाहयामि स्थापयामि ॥ २९ ॥
ॐ गणवन्धाय नमः गणवन्धमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३० ॥
ॐ मुण्डाय नमः मुण्डमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३१ ॥
ॐ वर्वूकराय नमः वर्वूकरमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३२ ॥
ॐ सुधापाय नमः सुधापमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३३ ॥
ॐ वैनाय नमः वैनमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३४ ॥
ॐ पवनाय नमः पवनमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३५ ॥
ॐ ढुण्ढकरणाय नमः ढुण्ढकरणमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३६ ॥
ॐ स्थविराय नमः स्थविरमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३७ ॥
ॐ दन्तुर नमः दन्तुरामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३८ ॥
ॐ धनदाय नमः धनदमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३९ ॥
ॐ नागकर्णाय नमः नागकर्णमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४० ॥
ॐ महाबलाय नमः महाबलमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४१ ॥
ॐ फेत्काराय नमः फेत्कारमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४२ ॥
ॐ वीरकाय नमः वीरकमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४३ ॥
ॐ सिंहाय नमः सिंहमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४४ ॥
ॐ मृगाय नमः मृगमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४५ ॥
ॐ यक्षाय नमः यक्षमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४६ ॥
ॐ मेघवाहनाय नमः मेघवाहनमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४७ ॥
ॐ तीक्ष्णाय नमः तीक्ष्णमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४८ ॥
ॐ अमलाय नमः अमलमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४९ ॥
ॐ शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५० ॥

पुनः—हरिः ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्प्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं द धातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ ॥ इति अजरादिक्षेत्रपालाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

क्षेत्रपालपूजनम्

ध्यानम्

श्रीक्षेत्रपालान्सुरपुष्पमालान्सर्वान्तरायाशु विनाशकालान्।
दत्ताखिलाभीप्सितवर्गजालान्ध्यायेऽधुना चन्दनलिप्तभालान्॥

ॐ साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सशक्तिकेभ्यः सवाहनेभ्यः सायुधेभ्यः क्षेत्रपालेभ्यो नमः, ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्

समस्तप्रत्यूहसमुच्चयस्य विनाशने प्राप्तगुणाः सुभव्याः।
आवाहनं क्षेत्रसुपालका वः करोम्यहं भव्यकरा भवन्तु॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्

चित्रप्रभाभासुरमच्छभक्त्यार्पितं मया साम्प्रतमासनं च।
श्रीक्षेत्रपालाः सुतरां भजन्तु भवन्तु मेऽभीष्टकराः सहाङ्गैः॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्

विबुधा निगमप्रसिद्धाः प्रक्षालनाय पदपङ्कजयोरुदारम्।
स्वच्छं सुशीतलमिदं मयकाहृतं च गृह्णन्त्वशेषमिदमिष्टकरं च वारि॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

सौजन्यसौख्यजननी जननी जनानां येषां कृपैव वसुधा वसुधारिणी वै।
ते सर्वदेवगुरुगौरवधारिदेहा अर्घ्यं मुदा हि च सुरा मम धारयन्तु॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

कङ्कोलपत्रहरिचन्दन - पुष्पयुक्तमेलालवङ्गलवलीघनसारसारम्।
दत्तं सदैव हृदये करुणाशयेऽस्मिन्देवा भजन्तु शुभमाचमनीयमम्भः॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

विमलगाङ्गजलेन युतं पयोघृतसितादधिसर्पिसमन्वितम्।
प्रियतरं भवतां परिगृह्णत यदि कृपाप्रभवो मयि सेवके॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

जले समादाय विचित्रपुष्पाण्यच्छानि चानीय निपातितानि।
स्नानं विधेयं विबुधाः समन्तादागत्य युष्माभिरिहाङ्गणे मे॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम्

अनर्घ्यरत्नैरतिभासितं शुभं सदा प्रियं मङ्गलकारकं वरम्।
स्वच्छं च वस्त्रं विनिवेदितं मया प्रमोददं वै भवतां कृते भवेत्॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

कौशेयसूत्रविहितं विमलां सुचारु वेदोक्तरीतिविहितं परिपावनञ्च।
क्षेत्राधिपाः सुमनसः सुनिवेदितं च यज्ञोपवीतमुररीक्रियतां सुदेवाः॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

विविधता पविनाशविचक्षणाः परमभक्तियुतेन निवेदितम्।
सुरनुता उपवस्त्रमिदं नवं सुरभितं परिगृह्णत मेऽधुना॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

गन्धम्

क्षेत्राधिपा मलयजातसुगन्धराशिं सप्रेम गृह्णत सुशीतलमच्छशोभम्।
सन्तापसन्ततिहरं परमं पवित्रं द्रागर्पितं मम मनोरथपूरकाः स्युः॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतान्

विमलगाङ्गजलैः परिमार्जितं सुरभिकुङ्कुमरागसुरञ्जितम्।
सततमक्षतमादरचेतसा सकलसौम्यमयं शुभकारकम्॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पम्

बहुविधं परितो हि समाहृतं समुचितं मकरन्दसमन्वितम्।
विकसितं कुसुमं विनिवेदितं कुरुत मे सफलं नयनाञ्चलैः॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, पुष्पं समर्पयामि।

धूपम्

लवङ्गपाटीवरचूर्णवर्द्धितं सर्वासुराणामपि सौख्यकारि।
लोकत्रये गन्धकरं प्रशस्तं क्षेत्राधिपा जिघ्रत धूपगन्धम्॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि समर्पयामि।

दीपम्

सद्वर्त्तिकां ज्ञानविवर्द्धिकां परां निर्वाण दीपं विनिवेदितं मुदा।
प्रज्वालितं ध्वान्तिविनाशकारकं गृह्णन्तु ज्ञानस्य विशालरूपम्॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

नैवेद्यम्

सिद्धान्नकर्पूरविराजितं पुरः सौरभ्यसान्द्रेण विवर्धितं तथा।
नैवेद्यमेतद्रुचिरं सुगन्धितं स्वीकृत्य मामत्र कृतार्थयन्तु॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, नैवेद्यं समर्पयामि। (हस्तप्रक्षालनार्थे, मुखप्रक्षालनार्थे च जलं समर्पयामि। पुनराचमनीयं जलं समर्पयमि।)

ताम्बूलम्

श्रीक्षेत्रपालविबुधाः सदने मदीये भक्त्यार्पितं परमगन्धमयं मनोज्ञम्।
एलालवङ्गलसितं क्रमुकादिकान्तं ताम्बूलमद्य मम गृह्णत हे सुरेन्द्राः॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, मुखवासार्थं ताम्बूलं सम०।

दक्षिणाम्

देवासुरैर्नित्यमशेषकाले प्रगीयमानाः प्रभवः पुराणाः।
गृह्णन्तु सद्यः खलु दक्षिणां मे ध्यायेन भक्ते लघु वर्तितव्यम्॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनम्

नीराजना सौख्यमयी सदैव गाढान्धकारादपि दूरकर्त्री।
अशेषपापैः परिपूरितस्य शुद्धिं करोति प्रियमानसत्य॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, नीराजनं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

प्रदक्षिणाः सन्ति प्रदक्षिणा अपि पदे पदे दुःखविनाशिकास्तथा।
जन्मान्तरस्यापि विनाशकारिकाः पापस्य याश्चित्तविवर्धितस्य॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

क्षेत्राधिपाविमलपुष्पवराञ्जलिं मे भक्त्यार्पितं सरसमच्छरसैःप्रपूर्णम्।
दीने विधाय करुणां मयि हेसुरेन्द्राः स्वीकृत्य दीनजनवत्सलतां किरन्तु॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्तुतिम्

जानामि नोऽर्चनविधिं परमं क्षमध्वं लोकार्तिपुञ्जमतुलं हरतारमेव।
क्षेत्राधिपालविबुधाः सुखमाकिरन्तु कुर्वन्तु दूरमनिशं दुरितात्समस्तात्॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, स्तुतिं समर्पयामि।

यजमान से पूजन करवाने के उपरान्त आचार्य पुनः मध्य भाग में एक अष्टदल का निर्माण करके वहाँ कलश की स्थापना करावें। पुनः सुवर्ण या रजत से निर्मित क्षेत्रपाल की प्रतिमा का अग्न्युत्तारण करवाके निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से आवाहन करवाने के बाद क्षेत्रपाल की प्रतिमा को स्थापित करावें—**ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यःसर्वेभ्यो नमः॥**

कुशकण्डिका:

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्व ब्रह्मा भव 'भवामि' इति। पठित्वा तत्रोपवेशनम्। 'भवामि' इति ब्रह्मणः प्रत्युक्तिः। ब्रह्मा वाग्यतश्च भवेत्। ततः प्रणीतापात्रं सव्यहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तगृहीतेनोदकपात्रेण तत्र जलं सम्पूर्य पश्चादास्तीर्णकुशैषु दक्षिणहस्तेन निधाय (कुशैराच्छाद्य तत्पात्रमालभ्य ब्रह्मणोमुखमवलोक्य ईक्षणमात्रेण ब्रह्मणाऽनुज्ञातः उत्तरत आस्तीर्णेषु कुशेषु निदध्यात्। ततो द्वादशानां परिस्तरण कुशानां चतुरो भागान् वामहस्ते कृत्वा एकैकभागेन आग्नेयादीशानान्तम्, ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्, नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्। इतरथा वृत्तिः। तत उत्तरतः स्तीर्णकुशेषु द्विशः पात्राणि यथा सम्भवं न्युब्जानि उदक्संस्थानि प्राक्संस्थानि वा आसादयेत्। पवित्रे छेदनकुशाः। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। संमार्जनकुशाः

अग्निदेव के दक्षिणदिशा की ओर ब्रह्मा के लिए कुशासन रखे। अग्नि के उत्तर दिशा में 'प्रणीता पात्र' के लिये दो आसन रखे। ब्रह्मा के ही आसन पर ब्रह्मा को बैठा दे और कहे—हे ब्रह्मन्! जब तक कर्म की समाप्ति न हो तब तक आप ब्रह्म के पद पर आसीन हो। ब्रह्मा मैं होता हूँ—यो कह कर पूर्व स्थापित आसन पर बैठे, तदनन्तर ब्रह्मा मौन हो जाये, फिर प्रणीता पात्र को बायें हाथ में धारण कर दाहिने हाथ से ग्रहण किये हुए जलपात्र से उस प्रणीता पात्र में जल को भरकर पहले से बिछी हुई कुशाओं पर दाहिने हाथ से रखकर कुशों द्वारा आच्छादन कर उस पात्र को स्पर्श कर ब्रह्मदेव के मुख को देखकर ईक्षण मात्र से ब्रह्मा की आज्ञा लेकर उत्तर दिशा की तरफ बिछी कुशाओं पर रख दे, तदनन्तर बाहर परिस्तरण कुशाओं के चार भागों को बायें हाथ में रखे उसमें से एक-एक भाग से परिस्तरण अग्निकोण से ईशानादि में ही करें। तदनन्तर-पश्चिम दिशा से उत्तर दिशा की ओर बिछी कुशाओं पर दो-दो पात्रों को यथासम्भव न्युब्ज-उदक् संस्थ या प्राक्संस्थ आसादन करे।

पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुला। पूर्णपात्रम्। उपल्पनीयानिद्रव्याणि निधाय तत्तद्ग्रहवस्त्राणि। अधिदेवताद्यर्थं श्वेतानि। तत्तद्ग्रहवर्णाः। तत्तद्ग्रह पुष्पाणि। तत्तद्ग्रहधूपाः तत्तदग्रहनैवेद्यानि। फलानि। दक्षिणाः वितानम्। अर्कादिसमिधिः। सयवतिलाः पूर्णाहुत्यर्थं नारिकेलवस्त्रादि। ततः पवित्रकरणम्। आसादितकुशपत्रद्वयं स्थौल्येन समं मध्यशल्यरहितं वामहस्ते कृत्वा अग्रतः प्रादेशमात्रं परिमाय मूले तयोरुपरि कुशत्रयमुदग्रं निधाय तत्कुशत्रय तयोर्मूलभागेन प्रादक्षिण्येन परिवेष्ट्य तयोः प्रादेशपरिमणामग्रभागं वामस्ते कृत्वा अवशिष्टं मूलभागं कुशत्रयं च दक्षिणहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तेन त्रोटयेत् परित्यजेच्च। शिष्टं पत्रद्वयं पवित्रम्। तस्मिन्पत्रद्वयेऽविश्लेषाय ग्रथिं कुर्यात्। ततः प्रागग्रं प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतासन्निधौ निधाय तत्र सपवित्रेण पात्रान्तरेण हस्तेन वा प्रणीतोदकं त्रिरासिच्य प्रोक्षणीपात्रं सव्ये कृत्वा दक्षिणेन वामहस्तधृतमेव कर्णसमुत्थाय नीचैः कृत्वा प्रणीतोदकेनं पवित्रानोतेनोत्तानहस्तेन

दो पवित्र छेदन करने के लिए कुशा, प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, संमार्जनकुशापाँच, उपयनकुशा सात, तीनसमीधा, स्रुव-घृत-चावल पूर्णपात्र आदि रखें, सूर्यादि ग्रहों के अनेक वर्ण के वस्त्र, अधिदेवता, देवता आदि के लिये सफेद वस्त्र, सूर्यादि ग्रहों के लिए अनेक प्रकार के चन्दन, तत्-तत् वर्ण के ग्रहों की धूप, ग्रहों के नैवेद्य-फल-दक्षिणा वितान सूर्यादि की समिधा यव और तिल, पूर्णाहुत्यर्थ नारिकेल और वस्त्र का आसादन करे। तदन्तर पवित्र बनाये जैसे-स्थापित मध्य (बीच कुशा से रहित) शल्य रहित दो कुशपत्रद्वय को आगे से बराबर नापकर बायें हाथ में कर कुशा के अग्रभाग से प्रादेशमात्र नापकर उसके मूल पर उन दोनों कुशा के ऊपर तीन कुशाओं को उद्ग्र रखकर उन कुशाओं को उस दो कुशा के मूल भाग से प्रादक्षिण्यक्रम से वेष्टन कर उन दो कुशपत्रों को प्रादेशमात्र परिमाण के अग्रभाग को बायें हाथ में कर बचे हुए मूल भाग को और तीन कुशाओं को दाहिने हाथ से तोड़ दें फिर उसका त्याग कर दें, शिष्ट पत्रद्वय ही पवित्र है। उस पत्रद्वय में अविश्लेषण

प्रोक्षणीः प्रोक्षयेत्। ततः प्रोक्षणीजलेन आज्यस्थालीं प्रोक्षणम्। चरुस्थालीं प्रोक्षणम्। समार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। ततस्ते पवित्रे प्रोक्षणीपात्रे संस्थाप्य प्रोक्षणीपात्रमग्निप्रणतयोर्मध्ये निदध्यात्। ततोऽग्नेः पश्चादाज्यस्थालीं निधाय तत्राज्यं प्रक्षिपेत्। एवं चरुस्थालीमग्नेः पश्चिमतो निधाय तत्र सपवित्रायां त्रिः प्रक्षालियान् तण्डुलान् प्रक्षिप्य प्रणीतोदकमासिच्योपयुक्तं जलं तत्र निनीय ब्रह्मदक्षिणत आज्यं आचार्य उत्तरतश्चरुमदग्धमस्त्रावितमण्डमन्तरूष्मपक्वं सुशृतं पचेत्। (केवलाज्ये तु उत्तराश्रितामाज्य स्थालीमग्नावारोपयेत्।) ततोऽग्नेर्ज्वलदुल्मुकमादाय ईशानादिप्रदक्षिणमीशान पर्यन्तमग्निमाज्यचर्वोः परितं भ्रामयित्वोल्मुकमग्नौ प्रक्षिप्य अप्रदक्षिणं हस्तमीशानकोणपर्यन्तं पर्यावर्तयेत्। अर्द्धश्रिते चरौ स्रुवं गृहीत्वाऽधोबिलं सकृत् प्रतप्य संमार्जनकुशानाममग्रैरन्तरतः

के लिए गाँठ दे। तदनन्तर प्रागग्र प्रोक्षणीपात्र को प्रणीता के समीप रख दे वहाँ से सपवित्र पात्रान्तर हाथ से प्रणीता पात्र से जल को तीन बार आसेचन कर प्रोक्षणी पात्र को बायें हाथ में कर दाहिने से बायें हाथ से धारण किये हुए ही कान की तरफ उठाकर नीचे की तरफ कर प्रणीतापात्र के जल से पवित्र द्वारा ग्रहण किये हुए, उत्तानहाथ से प्रोक्षणीपात्र का प्रोक्षण करें। प्रोक्षणी जल से आज्यस्थाली का प्रोक्षण करे। चरुस्थाली का प्रोक्षण करे। संमार्जन कुशाओं का प्रोक्षण करे। उपयमन कुशाओं का, समिधा का, स्रुवका आज्यका और पूर्णपात्रका प्रोक्षण करे। तदन्तर उन दोनों पवित्रों को प्रोक्षणी पात्र में स्थापन कर उस प्रोक्षणी पात्र को अग्नि और प्रणीतापात्र के मध्य में रख दे। फिर अग्नि के पीछे आज्यस्थाली रख उसमें आज्य का प्रक्षेप करे। इसी प्रकार अग्नि के पश्चिम में चरुस्थाली रख सपवित्रवाली उसमें तीन बार धोये हुए चावलों को छोड़ प्रणीता पात्र के जल से आसेचन कर उपयुक्त जल को उसमें छोड़कर ब्रह्मा के दक्षिण तरफ घी को आचार्य उत्तरदिशा से अदग्ध अश्रावित पक्वचरु को पका दे। तदन्तर

उपरि मूलादारभ्याग्रपर्यन्तं प्राञ्चं संमृज्य कुशमूलैर्बहिरधः प्रदेशे अग्रादारभ्य प्रत्यञ्चं समृज्य संमार्जन कुशानग्नौ प्रक्षिप्य प्रणीतोदकेन स्रुवमभ्युक्ष्य पुनःस्रुवं प्रयप्य दक्षिणस्यां दिशि तं तस्थापयेत्। तत् शृतं चरुं स्रुवेण गृहीतेनाज्येनाभिघार्य आज्यस्थालीं चरोः पूर्वेणानीयोत्तरत उद्वास्याग्नेः पश्चिमतः स्थापयेत्। ततश्चरुमादाय उत्तरत उद्वास्य आज्यस्य पूर्वेणानीय आज्यस्योत्तरतः स्थापयेत्। ततो दक्षिणहस्तस्याङ्गुष्ठानामिकाभ्यां पवित्रयोर्मूलं सङ्गृह्य वामहस्तस्याङ्गुष्ठानामिकाभ्यां पवित्रयोर्मूलं संङ्गृह्य वामहस्तस्याङ्गुष्ठा नामिकाभ्यां तयोरग्रं संङ्गृह्य ऊर्ध्वाग्रेऽनम्रीकृत्य धारयन्नेवाज्ये प्रक्षिप्याज्यस्यात्पवनं कुर्यादुच्छालयेत्। तत आज्यमवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरस्येत्। ततः पूर्ववत् पवित्रे गृहीत्वाप्रोक्षणीनामपामुत्पवनं कुर्यात्। ततो वामहस्ते उपयमनादाय दक्षिणेन प्रादेशमात्रीः पालाशीस्तिस्रः-समिधो घृताक्ता द्व्यङ्गुलादूर्ध्व मध्यमानामिकांगुष्ठैर्मूलभागे धृतास्तर्जन्यग्रवत्स्थूलास्तन्त्रेणाग्नौतूष्णीं प्रक्षिप्य सपवित्रेण प्रोक्षण्युदकेन

अग्निकुंड या स्थण्डिल से जलते हुए, उल्मुक को लेकर ईशान कोण आदि से प्रदक्षिण कर ईशानकोण पर्यन्त अग्नि स्थित आज्य और चरु के चारों ओर घुमकर उस उल्मुक को अग्नि में छोड़े दे। फिर अप्रदक्षिण क्रम से अपने हाथ को ईशान कोण पर्यन्त घुमा दे। चरु के आधे पक जाने पर स्रुव को हाथ में ग्रहण कर उस स्रुव के बिल को नीचे की ओर कर एक बार अग्नि में तपाकर समार्जन कुशाओं के अग्रभाग से भीतर की ओर से मूल भाग से आरम्भ कर अग्रभाग पर्यन्त पूर्व की तरफ संमार्जन कर कुश मूलों से बाहर और नीचे के हिस्से में अग्रभाग से आरम्भ कर शुद्ध कर सर्माजन कुशाओं को अग्नि में फेककर प्रणीत जल से स्रुव का अभ्युक्षण तथा स्रुव का प्रतपन कर दक्षिणदिशा की ओर उस स्रुव को रख दे। तदनन्तर पके हुए चरु में स्रुव के द्वारा घी को छोड़ आज्यस्थाली को चरु के पूर्व से लेकर उत्तरदिशा की ओर रख फिर अग्नि के पश्चिम दिशा की तरफ स्थापन करे। फिर चरु को लेकर उत्तर दिशा से उतारे हुए घृत के पूर्व से ले आकर घृत के उत्तर की ओर स्थापना करे।

चुलुकगृहीतेन ईशानादि प्रदक्षिणमीशानकोणपर्यन्तं पर्युक्ष्य अप्रदक्षिणमीशानकोणपर्यन्तं हस्तं पर्यावर्तयेत्। ततः पवित्रे प्रणीतासु निधाय दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्ध उपयमनकुशसहितं प्रसारिताङ्गुलि हस्तं हृदि निधाय दक्षिणहस्तेन मूले चतुरङ्गुल त्यक्त्वा शङ्खसनिभमुद्रया स्त्रुवं गृहीत्वा समिद्धतमेऽग्नौ वायव्य कोणादारभ्यांग्निकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा सन्तघृतधारया मनसा प्रजापतिं ध्यायन् स्त्रुवेण तुष्णीं सशेषं मौनी जुहुयात्। नात्र स्वाहाकारः। इदं प्रजापतये न मम इति यजमानेन त्यागः कर्तव्यः। होमत्यागानन्तरं स्त्रुवावशिष्टस्याज्यस्य सर्वत्र प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः कार्यः। ततो निर्ऋतिकोणादारभ्येशानकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा-

---

तदनन्तर–दाहिने हाथ के अंगूठे और अनामिका से उस दोनों कुशाओं (पवित्र) के अग्रभाग को पकड़कर ऊपर के अग्रभाग को नम्र बनाकर धारण करते हुए ही घृत में प्रक्षेप कर आज्य को उत्पवन करे। फिर घृत को देख कर उसमें जो अपद्रव्य हो उसे निकाल दे। तदनन्तर फिर पवित्रों को ग्रहण कर प्रोक्षणी स्थित जल का उत्पवन करे फिर बायें हाँथ में उपयमन कुशा को लेकर दाहिने हाथ में प्रादेश प्रमाण की तीन समिधाओं को घी में भिगोकर दो अंगुल ऊपर मध्यमा अनामिका अँगूठे के मूलभाग में धारण की हुई, तर्जनी की तरह मोटी समिधा को एक साथ चुपचाप अग्नि में प्रक्षेप कर सपवित्र वाली प्रोक्षणी पात्र के जल से चुल्लु द्वारा ग्रहण कर ईशान कोण से प्रक्षेप कर फिर ईशान पर्यन्त प्रदक्षिण क्रम से पर्युक्षण कर अप्रदक्षिण क्रम से ईशान कोण पर्यन्त अपने दाहिने हाथ को केवल घुमा दे। तदनन्तर उन पवित्र को प्रणीता पात्र में रख अपने दाहिने जानु को मोड़कर ब्रह्मा से कुशों द्वार अन्वारब्ध (स्पर्श) कर उपयमन कुशा के सहित अपने हाथ की अँगुलियों को फैलाकर उस हाथ को हृदय में लगा दाहिने हाथ से स्रुव के मूल से चार अंगुल छोड़कर शखमुद्रा से स्रुव को ग्रहण कर प्रदीप्त अग्नि में वायव्य–कोण से प्रारम्भ कर अग्निकोण पर्यन्त या पूर्व दिशा की ओर निरन्तर घृत की धारा द्वारा प्रजापति का मन से ध्यान कर स्रुव से चुपचाप शेष के सहित हवन करे, इसमें स्वाहाकार नहीं है। 'इदं प्रजापतये न मम' इस वाक्य का कर्ता त्याग करे। होम त्याग के बाद स्रुव स्थित आज्य का सर्वत प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करे। तदनन्तर–निर्ऋतिकोण से आरम्भ कर ईशान कोण पर्यन्त या पूर्व की तरफ

ॐ इन्द्राय स्वाहा इति जुहुयात्। 'इदमिन्द्राय न मम' इति त्यजेत्। तत उत्तरपूर्वार्द्धे-ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम इति हुत्वा दक्षिण-पूर्वार्द्धे-ॐ सोमाय स्वाहा-इदं सोमाय न मम इति जुहुयात्।

संकल्प—अस्मिन् शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणि इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम। यथा दैवतानि सन्तु॥

वराहुतिः

आचार्य और ब्राह्मण निम्न दो मन्त्रों का उच्चारण करते हुए शनिहवनकुण्ड में यजमान से गणेश और अम्बा के लिये आहुति प्रदान करावें—

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधीपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् स्वाहा॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥

'इन्द्राय स्वाहा' इससे हवन करे। इद्रमिन्द्राय न मम, इससे त्याग करे फिर उत्तर पूर्वार्ध में 'अग्नये स्वाहा' से हवन करें। दक्षिण पूर्वार्ध में 'सोमाय स्वाहा' से हवन करे।

संकल्प—पुनः यजमान दाहिने हाथ में जल लेकर '**अस्मिन् शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणि**' से '**परित्यक्तं न मम**' तक का उच्चारण करके जल को भूमि में छोड़ दें, फिर 'यथा देवतानि सन्तु' इस वाक्य का भी उच्चारण करे।

ग्रहादिहवनम्

आचार्य और ब्राह्मण शनिशान्तिअनुष्ठान कर्म में निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से नवग्रहों की आहुति शनिकुण्ड में प्रदत्त करवायें–

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् सूर्याय स्वाहा।

ॐ इमं देवाऽअसपत्नर्ठ० सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममपुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ० राजा सोमाय स्वाहा॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ०सि जिन्वति भौमाय स्वाहा॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसर्ठ० सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत बुधाय स्वाहा॥

ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् बृहस्पतये स्वाहा॥

ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्त्यमिन्द्रियं विपानर्ठ० शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु शुक्राय स्वाहा॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्त्रवन्तु नः शनैश्चराय स्वाहा॥

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता राहवे स्वाहा॥

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या ऽअपेशसे समुषद्भिरजायथाः केतुवे स्वाहा॥

आचार्य ग्रहों की आहुति प्रदान करवाने के पश्चात् अधिदेवताओं की आहुति निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से शनि कुण्ड में प्रदान करवायें—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्नमृत्योर्मुक्षीय मा ऽमृतात् ईश्वराय स्वाहा॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णनिषाणामुं म ऽइषाण सर्वलोकं म इषाण उमायै स्वाहा॥

ॐ यदक्रन्द्रः प्रथमं जायमान ऽद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्ये नस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुयं महि जातं ते ऽअर्वन् स्कन्दाय स्वाहा॥

ॐ विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्धुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा विष्णवे स्वाहा॥

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ब्रह्मणे स्वाहा॥

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूंर्ठ०२॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः इन्द्राय स्वाहा॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे यमाय स्वाहा॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः कालाय स्वाहा॥

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय चित्रगुप्ताय स्वाहा॥

आचार्य अधिदेवताओं की आहुति प्रदान करवाने के पश्चात् प्रत्यधिदेवताओं की आहुति निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से शनिकुण्ड में प्रदान करवायें-

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२॥ आसादयादिह अग्नये स्वाहा॥

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे अद्भ्यो स्वाहा॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः पृथिव्यै स्वाहा॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य-पाꣳ सुरे विष्णवे स्वाहा॥

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् इन्द्राय स्वाहा॥

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व इन्द्राण्यै स्वाहा॥

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम् प्रजापतये स्वाहा॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः सर्पेभ्यो स्वाहा॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ब्रह्मणे स्वाहा॥

आचार्य प्रत्यधिदेवताओं की आहुति के पश्चात् निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पंचलोकपाल की आहुति शनिकुण्ड में यजमान से प्रदान करवायें-

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् गणपतये स्वाहा ॥

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् दुर्गायै स्वाहा ॥

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान् सोमपीतये वायवे स्वाहा ॥

ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः आकाशाय स्वाहा ॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम् अश्विनौ स्वाहा ॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवा भवो नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे वास्तोष्पतये स्वाहा ॥

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानर क्षैत्रजित्याय देवाः क्षेत्राधिपतये स्वाहा ॥

आचार्य दशदिक्पालों की आहुति निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से शनिकुण्ड में प्रदान करावायें-

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः इन्द्राय स्वाहा ॥

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते अग्नये स्वाहा॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे यमाय स्वाहा॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु निर्ऋतये स्वाहा॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ०स मा न आयुः प्रमोषीः वरुणाय स्वाहा॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः वायवे स्वाहा॥

ॐ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत। प्रजावन्तः सचेमाहि सोमाय स्वाहा॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ईशानाय स्वाहा॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शर्ठ०सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः ब्रह्मणे स्वाहा॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः अनन्ताय स्वाहा॥

शनिमन्त्रस्य न्यासः

विनियोगः—शन्नोदेवीरिति मन्त्रस्य दध्यङ्ङाथर्वणऋषिः गायत्री छन्दः शनिर्देवता आपोबीजं वर्तमान इति शक्तिः शनैश्चरप्रीत्यर्थे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—ॐ दध्यङ्ङाथर्वण ऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे। ॐ शनैश्चराय नमः हृदये। ॐ आपोबीजाय नमः गुह्ये। ॐ वर्तमानशक्तये नमः पादयोः।

करन्यासः—ॐ शन्नोदेवीः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ अभीष्टय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ आपोभवन्तु मध्यमाभ्यां नमः। ॐ पीतये अनामिकाभ्यां नमः। ॐ शंय्योः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अभिस्त्रवन्तु नः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—ॐ शन्नोदेवीः हृदयाय नमः। ॐ अभिष्टये शिरसे स्वाहा। ॐ आपोभवन्तु शिखायै वषट्। ॐ पीतये कवचाय हुम्। ॐ शंय्योः नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अभिस्त्रवन्तु नः अस्त्राय फट्।

मन्त्रन्यासः—ॐ शन्नो शिरसि। ॐ देवीः ललाटे। ॐ अभीष्टये मुखे। ॐ आपो हृदये। ॐ भवन्तु नाभौ। ॐ पीतये कट्याम्। ॐ शंय्योः ऊर्वोः। ॐ अभिस्त्रवन्तु जान्वोः। ॐ नः पादयोः।

ध्यानम्

नीलद्युतिः शूलधरः किरीटी गजस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तु मह्यं वरदो महात्मा॥

प्रधानाहुतिः

शनिशन्तिअनुष्ठान आठ दिन में सम्पन्न होता है। इसलिए आचार्य और ब्राह्मण निम्न मन्त्र का उच्चारण करके तेईस हजार अथवा यजमान की सामर्थ्य हो तो बानबे हजार आहुति शनिकुण्ड में प्रदान करवायें—**ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तुः नः स्वाहा॥**

शनिसहस्त्रनामावल्या हवनम्

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीशनैश्चरसहस्त्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य कश्यपऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शनैश्चरो देवता, शं बीजम्, नम् शक्तिः, मम् कीलकम्, शनैश्चरप्रसादसिद्ध्यर्थे हवने विनियोगः।

करन्यासः—शनैश्चराय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः, अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः, सौरये अनामिकाभ्यां नमः, शुष्कोदराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः, छायात्मजाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—शनैश्चराय हृदयाय नमः, मन्दगतये शिरसे स्वाहा, अधोक्षजाय शिखायै वषट्, सौरये कवचाय हुम्, शुष्कोदराय नेत्रत्रयाय वौषट्, छायात्मजाय अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

चापासनो गृध्रधरस्तु नीलः प्रत्यङ्मुखः काश्यप-गोत्रजातः।
स-शूल-चापेषु गदाधरोऽव्यात् सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च शौरिः॥ १॥
नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रासनस्थो विकृताननश्च।
केयूर-हारादि-विभूषिताङ्गः सदाऽस्तु मे मन्दगतिः प्रसन्नः॥ २॥

आचार्य शनि देवता के एक हजार आठ नामों का क्रमानुसार उच्चारण करते हुए शनिकुण्ड में यजमान से शाकल्य में शमीपुष्प मिलवाकर उससे एक-एक नाम का उच्चारण करवाते हुए हवन करावें—

१. ॐ अमितभाषिणे स्वाहा
२. ॐ अघहराय स्वाहा
३. ॐ अशेषदुरितापहाय स्वाहा
४. ॐ अघोररूपाय स्वाहा
५. ॐ अतिदीर्घकायाय स्वाहा
६. ॐ अशेषभयानकाय स्वाहा
७. ॐ अनन्ताय स्वाहा
८. ॐ अन्नदात्रे स्वाहा
९. ॐ अश्वत्थमूलजपप्रियाय स्वाहा
१०. ॐ अतिसम्पत्प्रदाय स्वाहा
११. ॐ अमोघाय स्वाहा
१२. ॐ अन्यस्तुत्याप्रकोपिताय स्वाहा
१३. ॐ अपराजिताय स्वाहा
१४. ॐ अद्वितीयाय स्वाहा
१५. ॐ अतितेजसे स्वाहा
१६. ॐ अभयप्रदाय स्वाहा
१७. ॐ अष्टमस्थाय स्वाहा
१८. ॐ अञ्जननिभाय स्वाहा

१९. ॐ अखिलात्मने स्वाहा
२०. ॐ अर्कनन्दनाय स्वाहा
२१. ॐ अतिदारुणाय स्वाहा
२२. ॐ अक्षोभ्याय स्वाहा
२३. ॐ अप्सरोभिः प्रपूजिताय स्वाहा
२४. ॐ अभीष्टफलदाय स्वाहा
२५. ॐ अरिष्टमथनाय स्वाहा
२६. ॐ अमरपूजिताय स्वाहा
२७. ॐ अनुग्राहाय स्वाहा
२८. ॐ अप्रमेयपराक्रमविभीषणाय स्वाहा
२९. ॐ असाध्ययोगाय स्वाहा
३०. ॐ अखिलदोषघ्नाय स्वाहा
३१. ॐ अपराकृताय स्वाहा
३२. ॐ अप्रमेयाय स्वाहा
३३. ॐ अतिसुखदाय स्वाहा
३४. ॐ अमराधिपपूजिताय स्वाहा
३५. ॐ अवलोकात्सर्वनाशाय स्वाहा
३६. ॐ अश्वत्थामद्विरायुधाय स्वाहा
३७. ॐ अपराधसहिष्णवे स्वाहा
३८. ॐ अश्वत्थामसुपूजिताय स्वाहा
३९. ॐ अनन्तपुण्यफलदाय स्वाहा
४०. ॐ अतृप्ताय स्वाहा
४१. ॐ अतिबलाय स्वाहा
४२. ॐ अवलोकात्सर्ववन्द्याय स्वाहा
४३. ॐ अक्षीणकरुणानिधये स्वाहा
४४. ॐ अविद्यामूलनाशाय स्वाहा
४५. ॐ अक्षय्यफलदायकाय स्वाहा
४६. ॐ आनन्दपरिपूर्णाय स्वाहा
४७. ॐ आयुष्कारकाय स्वाहा
४८. ॐ आश्रितेष्टार्थवरदाय स्वाहा
४९. ॐ आधिव्याधिहराय स्वाहा
५०. ॐ आनन्दमयाय स्वाहा
५१. ॐ आनन्दकराय स्वाहा
५२. ॐ आयुधधारकाय स्वाहा
५३. ॐ आत्मचक्राधिकारिणे स्वाहा
५४. ॐ आत्मस्तुत्यपरायणाय स्वाहा
५५. ॐ आयुष्कराय स्वाहा
५६. ॐ आनुपूव्यय स्वाहा
५७. ॐ आत्मायत्तजगत्त्रयाय स्वाहा
५८. ॐ आत्मनामजपप्रीताय स्वाहा
५९. ॐ आत्माधिकफलप्रदाय स्वाहा
६०. ॐ आदित्यसम्भवाय स्वाहा
६१. ॐ आर्तिभञ्जनाय स्वाहा
६२. ॐ आत्मरक्षकाय स्वाहा
६३. ॐ आपद्बान्धवाय स्वाहा
६४. ॐ आनन्दरूपाय स्वाहा
६५. ॐ आयु:प्रदाय स्वाहा
६६. ॐ आकर्णपूर्णचापाय स्वाहा
६७. ॐ आत्मोद्दिष्टद्विजप्रदाय स्वाहा
६८. ॐ आनुकूल्याय स्वाहा
६९. ॐ आत्मरूपप्रतिमादानसुप्रियाय स्वाहा
७०. ॐ आमारामाय स्वाहा
७१. ॐ आदिदेवाय स्वाहा
७२. ॐ आपन्नार्तिविनाशनाय स्वाहा
७३. ॐ इन्दिरार्चितपादाय स्वाहा
७४. ॐ इन्द्रभोगफ़लप्रदाय स्वाहा

७५. ॐ इन्द्रदेवस्वरूपाय स्वाहा
७६. ॐ इष्टवरदायकाय स्वाहा
७७. ॐ इष्टापूर्तिप्रदाय स्वाहा
७८. ॐ इन्दुमतीष्टवरदायकाय स्वाहा
७९. ॐ इन्दिरारमणप्रीताय स्वाहा
८०. ॐ इन्द्रवंशनृपार्चिताय स्वाहा
८१. ॐ इहामुत्रेष्टफलदाय स्वाहा
८२. ॐ इन्दिरारमणार्चिताय स्वाहा
८३. ॐ ईद्धियाय स्वाहा
८४. ॐ ईश्वरप्रीताय स्वाहा
८५. ॐ ईषणात्रयवर्जिताय स्वाहा
८६. ॐ उमास्वरूपाय स्वाहा
८७. ॐ उद्बोध्याय स्वाहा
८८. ॐ उशनाय स्वाहा
८९. ॐ उत्सवप्रियाय स्वाहा
९०. ॐ उमादेव्यार्चनप्रीताय स्वाहा
९१. ॐ उच्चस्थोच्चफलप्रदाय स्वाहा
९२. ॐ उरुप्रकाशाय स्वाहा
९३. ॐ उच्चस्थयोगदाय स्वाहा
९४. ॐ उरुपराक्रमाय स्वाहा
९५. ॐ ऊर्ध्वलोकादिसञ्चारिणे स्वाहा
९६. ॐ ऊर्ध्वलोकादिनायकाय स्वाहा
९७. ॐ ऊर्जस्विने स्वाहा
९८. ॐ ऊनपादाय स्वाहा
९९. ॐ ऋकाराक्षरपूजिताय स्वाहा
१००. ॐ ऋषिप्रोक्तपुराणज्ञाय स्वाहा
१०१. ॐ ऋषिभिः परिपूजिताय स्वाहा
१०२. ॐ ऋग्वेदवन्द्याय स्वाहा
१०३. ॐ ऋग्रूपिणे स्वाहा
१०४. ॐ ऋजुमार्गप्रवर्तकाय स्वाहा
१०५. ॐ लुलितोद्धारकाय स्वाहा
१०६. ॐ लूतभवपाशप्रभञ्जनाय स्वाहा
१०७. ॐ लूकाररूपकाय स्वाहा
१०८. ॐ लब्धधर्ममार्गप्रवर्तकाय स्वाहा
१०९. ॐ एकाधिपत्यसाम्राज्यप्रदाय स्वाहा
११०. ॐ ऐनौघनाशनाय स्वाहा
१११. ॐ एकपादे स्वाहा
११२. ॐ एकस्मै स्वाहा
११३. ॐ एकोनविंशतिमासभुक्तिदाय स्वाहा
११४. ॐ एकोनविंशतिवर्षदशाय स्वाहा
११५. ॐ एणाङ्कपूजिताय स्वाहा
११६. ॐ ऐश्वर्यफलप्रदाय स्वाहा
११७. ॐ ऐन्द्राय स्वाहा
११८. ॐ ऐरावतसुपूजिताय स्वाहा
११९. ॐ ओङ्कारजपसुप्रीताय स्वाहा
१२०. ॐ ओङ्कारपरिपूजिताय स्वाहा
१२१. ॐ ओङ्कारबीजाय स्वाहा
१२२. ॐ औदार्यहस्ताय स्वाहा
१२३. ॐ औन्नत्यदायकाय स्वाहा
१२४. ॐ औदार्यगुणाय स्वाहा
१२५. ॐ औदार्यशीलाय स्वाहा
१२६. ॐ औषधकारकाय स्वाहा
१२७. ॐ करपङ्कजसन्नद्धधनुषे स्वाहा
१२८. ॐ करुणानिधये स्वाहा
१२९. ॐ कालाय स्वाहा
१३०. ॐ कठिनचित्ताय स्वाहा

१३१. ॐ कालमेघसमप्रभाय स्वाहा
१३२. ॐ किरीटिने स्वाहा
१३३. ॐ कर्मकृते स्वाहा
१३४. ॐ कारयित्रे स्वाहा
१३५. ॐ कालसहोदराय स्वाहा
१३६. ॐ कालाम्बराय स्वाहा
१३७. ॐ काकवाहाय स्वाहा
१३८. ॐ कर्मठाय स्वाहा
१३९. ॐ काश्यपान्वयाय स्वाहा
१४०. ॐ कालचक्रप्रभेदिने स्वाहा
१४१. ॐ कालरूपिणे स्वाहा
१४२. ॐ कारणाय स्वाहा
१४३. ॐ कारिमूर्तये स्वाहा
१४४. ॐ कालभर्त्रे स्वाहा
१४५. ॐ किरीटमकूटोज्ज्वलाय स्वाहा
१४६. ॐ कार्यकारणकालज्ञाय स्वाहा
१४७. ॐ काञ्चनाभरथान्विताय स्वाहा
१४८. ॐ कालदंष्ट्राय स्वाहा
१४९. ॐ क्रोधरूपाय स्वाहा
१५०. ॐ करालिने स्वाहा
१५१. ॐ कृष्णकेतनाय स्वाहा
१५२. ॐ कालात्मने स्वाहा
१५३. ॐ कालकर्त्रे स्वाहा
१५४. ॐ कृतान्ताय स्वाहा
१५५. ॐ कृष्णगोप्रियाय स्वाहा
१५६. ॐ कालाग्निरुद्ररूपाय स्वाहा
१५७. ॐ कश्यपात्मजसम्भवाय स्वाहा
१५८. ॐ कृष्णवर्णहयाय स्वाहा
१५९. ॐ कृष्णगोक्षीरसुप्रियाय स्वाहा
१६०. ॐ कृष्णगोघृतसुप्रीताय स्वाहा
१६१. ॐ कृष्णगोदधिसुप्रियाय स्वाहा
१६२. ॐ कृष्णगावैकचित्ताय स्वाहा
१६३. ॐ कृष्णगोदानसुप्रियाय स्वाहा
१६४. ॐ कृष्णगोदत्तहृदयाय स्वाहा
१६५. ॐ कृष्णगोग्रासचित्तस्य सर्वपीडानिवारकाय स्वाहा
१६६. ॐ कृष्णगोरक्षणप्रियाय स्वाहा
१६७. ॐ कृष्णगोदानशान्तस्य सर्वशान्तिफलप्रदाय स्वाहा
१६८. ॐ कृष्णगोस्नानकामस्यगङ्गास्नानफलप्रदाय स्वाहा
१६९. ॐ कृष्णगोरक्षणस्नानसर्वाभीष्टफलप्रदाय स्वाहा
१७०. ॐ कृष्णगावप्रियाय स्वाहा
१७१. ॐ कपिलापशुषुप्रियाय स्वाहा
१७२. ॐ कपिलाक्षीरपानस्य सोमपानफलप्रदाय स्वाहा
१७३. ॐ कपिलादानसुप्रीताय स्वाहा
१७४. ॐ कपिलाज्यहुतप्रियाय स्वाहा
१७५. ॐ कृष्णाय स्वाहा
१७६. ॐ कृत्तिकान्तस्थाय स्वाहा
१७७. ॐ कृष्णगोवत्ससुप्रियाय स्वाहा
१७८. ॐ कृष्णमाल्याम्बरधराय स्वाहा
१७९. ॐ कृष्णवर्णतनूरुहाय स्वाहा
१८०. ॐ कृष्णकेतवे स्वाहा
१८१. ॐ कृशकृष्णदेहाय स्वाहा

१८२. ॐ कृष्णाम्बरप्रियाय स्वाहा
१८३. ॐ क्रूरचेष्टाय स्वाहा
१८४. ॐ क्रूरभावाय स्वाहा
१८५. ॐ क्रूरदंष्ट्राय स्वाहा
१८६. ॐ कुरूपिणे स्वाहा
१८७. ॐ कमलापतिसंसेव्याय स्वाहा
१८८. ॐ कमलोद्भवपूजिताय स्वाहा
१८९. ॐ कामितार्थप्रदाय स्वाहा
१९०. ॐ कामधेनुपूजनसुप्रियाय स्वाहा
१९१. ॐ कामधेनुसमाराध्याय स्वाहा
१९२. ॐ कृपापीयूषविवर्धनादाय स्वाहा
१९३. ॐ कामधेन्वैकचित्ताय स्वाहा
१९४. ॐ कृपराजसुपूजिताय स्वाहा
१९५. ॐ कामदोग्ध्रे स्वाहा
१९६. ॐ क्रुद्धाय स्वाहा
१९७. ॐ कुरुवंशसुपूजिताय स्वाहा
१९८. ॐ कृष्णाङ्गमहिषीदोग्ध्रे स्वाहा
१९९. ॐ कृष्णेन कृतपूजनाय स्वाहा
२००. ॐ कृष्णाङ्गमहिषीदानप्रियाय स्वाहा
२०१. ॐ कोणस्थाय स्वाहा
२०२. ॐ कृष्णाङ्गमहिषीदानलोलुपाय स्वाहा
२०३. ॐ कामपूजिताय स्वाहा
२०४. ॐ क्रूरावलोकनात्सर्वनाशाय स्वाहा
२०५. ॐ कृष्णाङ्गदप्रियाय स्वाहा
२०६. ॐ खद्योताय स्वाहा
२०७. ॐ खण्डनाय स्वाहा
२०८. ॐ खड्गधराय स्वाहा
२०९. ॐ खेचरपूजिताय स्वाहा
२१०. ॐ खरांशुतनयाय स्वाहा
२११. ॐ खगानाम्पतिवाहनाय स्वाहा
२१२. ॐ गोसवासक्तहृदयाय स्वाहा
२१३. ॐ गोचरस्थानदोषहृते स्वाहा
२१४. ॐ गृहराश्यधिपाय स्वाहा
२१५. ॐ गृहराजमहाबलाय स्वाहा
२१६. ॐ गृध्रवाहाय स्वाहा
२१७. ॐ गृहपतये स्वाहा
२१८. ॐ गोचराय स्वाहा
२१९. ॐ गानलोलुपाय स्वाहा
२२०. ॐ घोराय स्वाहा
२२१. ॐ घर्माय स्वाहा
२२२. ॐ घनतमसे स्वाहा
२२३. ॐ घर्मिणे स्वाहा
२२४. ॐ घनकृपान्विताय स्वाहा
२२५. ॐ घननीलाम्बरधराय स्वाहा
२२६. ॐ डादिवर्णसुसंजिताय स्वाहा
२२७. ॐ चक्रवर्तिसमाराध्याय स्वाहा
२२८. ॐ चन्द्रमत्यासमर्चिताय स्वाहा
२२९. ॐ चन्द्रमत्यार्तिहारिणे स्वाहा
२३०. ॐ चराचरसुखप्रदाय स्वाहा
२३१. ॐ चतुर्भुजाय स्वाहा
२३२. ॐ चापहस्ताय स्वाहा
२३३. ॐ चराचरहितप्रदाय स्वाहा
२३४. ॐ छायापुत्राय स्वाहा
२३५. ॐ छत्रधराय स्वाहा
२३६. ॐ छायादेवीसुताय स्वाहा
२३७. ॐ जयप्रदाय स्वाहा

२३८. ॐ जगन्नीलाय स्वाहा
२३९. ॐ जपतां सर्वसिद्धिदाय स्वाहा
२४०. ॐ जपविध्वस्तविमुखाय स्वाहा
२४१. ॐ जम्भारिपरिपूजिताय स्वाहा
२४२. ॐ जम्भारिवन्द्याय स्वाहा
२४३. ॐ जयदाय स्वाहा
२४४. ॐ जगज्जनमनोहराय स्वाहा
२४५. ॐ जगत्त्रयप्रकुपिताय स्वाहा
२४६. ॐ जगत्त्राणपरायणाय स्वाहा
२४७. ॐ जयाय स्वाहा
२४८. ॐ अयप्रदाय स्वाहा
२४९. ॐ जगदानन्दकारकाय स्वाहा
२५०. ॐ ज्योतिषे स्वाहा
२५१. ॐ ज्योतिषांश्रेष्ठाय स्वाहा
२५२. ॐ ज्योतिश्शास्त्रप्रवर्तकाय स्वाहा
२५३. ॐ झर्झरीकृतहेदाय स्वाहा
२५४. ॐ झल्लरीवाद्यसुप्रियाय स्वाहा
२५५. ॐ ज्ञानमूर्त्तये स्वाहा
२५६. ॐ ज्ञानगम्याय स्वाहा
२५७. ॐ ज्ञानिने स्वाहा
२५८. ॐ ज्ञानमहानिधये स्वाहा
२५९. ॐ ज्ञानप्रबोधकाय स्वाहा
२६०. ॐ ज्ञानदृष्ट्यावलोकिताय स्वाहा
२६१. ॐ टङ्किताखिललोकाय स्वाहा
२६२. ॐ टङ्कितैनस्तमेरवे स्वाहा
२६३. ॐ टङ्कारकारकाय स्वाहा
२६४. ॐ टङ्कृताय स्वाहा
२६५. ॐ टाम्भदप्रियाय स्वाहा
२६६. ॐ ठकारमयसर्वस्वाय स्वाहा
२६७. ॐ ठकारकृतपूजिताय स्वाहा
२६८. ॐ ढक्कावाद्यप्रीतिकराय स्वाहा
२६९. ॐ डमड्डमरुकप्रिया स्वाहा
२७०. ॐ डम्बरप्रभवाय स्वाहा
२७१. ॐ डम्भाय स्वाहा
२७२. ॐ डाकिनीशाकिनीभूतसर्वोपद्रवकारकाय स्वाहा
२७३. ॐ ढक्कानादप्रियङ्कराय स्वाहा
२७४. ॐ डाकिनीशाकिनीभूतसर्वोपद्रवनाशकाय स्वाहा
२७५. ॐ ढकाररूपाय स्वाहा
२७६. ॐ ढांभिकाय स्वाहा
२७७. ॐ णकारजपसुप्रियाय स्वाहा
२७८. ॐ णकारमयमन्त्रार्थाय स्वाहा
२७९. ॐ णकारैकशिरोमणये स्वाहा
२८०. ॐ णकारवचनानन्दाय स्वाहा
२८१. ॐ णकारकरुणामयाय स्वाहा
२८२. ॐ णकारमयसर्वस्वाय स्वाहा
२८३. ॐ णकारैकपरायणाय स्वाहा
२८४. ॐ तर्जनीधृतमुद्राय स्वाहा
२८५. ॐ तपसांफलदायकाय स्वाहा
२८६. ॐ त्रिविक्रमनुताय स्वाहा
२८७. ॐ त्रयीमयवपुर्धराय स्वाहा
२८८. ॐ तपस्विने स्वाहा
२८९. ॐ तपसादग्धदेहाय स्वाहा
२९०. ॐ ताम्राधराय स्वाहा
२९१. ॐ त्रिकालवेदितव्याय स्वाहा

२९२. ॐ त्रिकालमतितोषिताय स्वाहा
२९३. ॐ तुलोच्चयाय स्वाहा
२९४. ॐ त्रासकराय स्वाहा
२९५. ॐ तिलतैलप्रियाय स्वाहा
२९६. ॐ तिलान्नसन्तुष्टमनसे स्वाहा
२९७. ॐ तिलदानप्रियाय स्वाहा
२९८. ॐ तिलभक्ष्यप्रियाय स्वाहा
२९९. ॐ तिलचूर्णप्रियाय स्वाहा
३००. ॐ तिलखण्डप्रियाय स्वाहा
३०१. ॐ तिलापूपप्रियाय स्वाहा
३०२. ॐ तिलहोमप्रियाय स्वाहा
३०३. ॐ तापत्रयनिवारकाय स्वाहा
३०४. ॐ तिलतर्पणसन्तुष्टाय स्वाहा
३०५. ॐ तिलतैलान्नतोपिताय स्वाहा
३०६. ॐ तिलैकदत्तहृदयाय स्वाहा
३०७. ॐ तेजस्विने स्वाहा
३०८. ॐ तेजसान्निधये स्वाहा
३०९. ॐ तेजसादित्यसङ्काशाय स्वाहा
३१०. ॐ तेजोमयवपुर्धराय स्वाहा
३११. ॐ तत्त्वज्ञाय स्वाहा
३१२. ॐ तीव्राय स्वाहा
३१३. ॐ तपोरूपाय स्वाहा
३१४. ॐ तपोमयाय स्वाहा
३१५. ॐ तुष्टिदाय स्वाहा
३१६. ॐ तुष्टिकृते स्वाहा
३१७. ॐ तीक्ष्णाय स्वाहा
३१८. ॐ त्रिमूर्तये स्वाहा
३१९. ॐ त्रिगुणात्मकाय स्वाहा
३२०. ॐ तिलदीपप्रियाय स्वाहा
३२१. ॐ तस्यपीडानिवारकाय स्वाहा
३२२. ॐ तिलोत्तमामेनकादिनर्तनप्रियाय स्वाहा
३२३. ॐ त्रिभागमष्टवर्गाय स्वाहा
३२४. ॐ स्थूलरोम्णे स्वाहा
३२५. ॐ स्थिराय स्वाहा
३२६. ॐ स्थिताय स्वाहा
३२७. ॐ स्थायिने स्वाहा
३२८. ॐ स्थपकाय स्वाहा
३२९. ॐ स्थूलसूक्ष्मप्रदर्शकाय स्वाहा
३३०. ॐ दशरथार्चितपादाय स्वाहा
३३१. ॐ दशरथस्तोत्रतोषिताय स्वाहा
३३२. ॐ दशरथप्रार्थनाक्लृप्तदुर्भिक्षविनिवारकाय स्वाहा
३३३. ॐ दशरथप्रार्थनाक्लृप्तवरद्वयप्रदायकाय स्वाहा
३३४. ॐ दशरथस्वात्मदर्शिने स्वाहा
३३५. ॐ दशरथाभीष्टदायकाय स्वाहा
३३६. ॐ दोर्भिर्धनुर्धराय स्वाहा
३३७. ॐ दीर्घश्मश्रुजटाधराय स्वाहा
३३८. ॐ दशरथस्तोत्रवरदाय स्वाहा
३३९. ॐ दशरथाभीप्सितप्रदाय स्वाहा
३४०. ॐ दशरथस्तोत्रसन्तुष्टाय स्वाहा
३४१. ॐ दशरथेन सुपूजिताय स्वाहा
३४२. ॐ द्वादशाष्टमजन्मस्थाय स्वाहा
३४३. ॐ देवपुङ्गवपूजिताय स्वाहा
३४४. ॐ देवदानवदर्पघ्नाय स्वाहा

३४५. ॐ दिनंप्रतिमुनिस्तुताय स्वाहा
३४६. ॐ द्वादशस्थाय स्वाहा
३४७. ॐ द्वादशात्मसुताय स्वाहा
३४८. ॐ द्वादशनामभृते स्वाहा
३४९. ॐ द्वितीयस्थाय स्वाहा
३५०. ॐ द्वादशार्कसूनवे स्वाहा
३५१. ॐ दैवज्ञपूजिताय स्वाहा
३५२. ॐ दैवज्ञचित्तवासिने स्वाहा
३५३. ॐ दमयन्त्यासुपूजिताय स्वाहा
३५४. ॐ द्वादशाब्दंतुदुर्भिक्षकारिणेस्वाहा
३५५. ॐ दुःस्वप्ननाशनाय स्वाहा
३५६. ॐ दुराराध्याय स्वाहा
३५७. ॐ दुराधर्षाय स्वाहा
३५८. ॐ दमयन्तीवरप्रदाय स्वाहा
३५९. ॐ दुष्टदूराय स्वाहा
३६०. ॐ दुराचारशमनाय स्वाहा
३६१. ॐ दोषवर्जिताय स्वाहा
३६२. ॐ दुस्सहाय स्वाहा
३६३. ॐ दोषहन्त्रे स्वाहा
३६४. ॐ दुर्लभाय स्वाहा
३६५. ॐ दुर्गमाय स्वाहा
३६६. ॐ दुःखप्रदाय स्वाहा
३६७. ॐ दुःखहन्त्रे स्वाहा
३६८. ॐ दीप्तरञ्जितदिङ्मुखाय स्वाहा
३६९. ॐ दीप्यमानमुखाम्भोजाय स्वाहा
३७०. ॐ दमयन्त्याशिशवप्रदाय स्वाहा
३७१. ॐ दुर्निरीक्ष्याय स्वाहा
३७२. ॐ दुष्टमात्रदैत्यमण्डल-
नाशकाय स्वाहा
३७३. ॐ द्विजदानैकनिरताय स्वाहा
३७४. ॐ द्विजाराधनतत्पराय स्वाहा
३७५. ॐ द्विजसर्वार्तिहारिणे स्वाहा
३७६. ॐ द्विजराजसमर्चिताय स्वाहा
३७७. ॐ द्विजदानैकचित्ताय स्वाहा
३७८. ॐ द्विजराजप्रियङ्कराय स्वाहा
३७९. ॐ द्विजाय स्वाहा
३८०. ॐ द्विजप्रियाय स्वाहा
३८१. ॐ द्विजराजेष्टदायकाय स्वाहा
३८२. ॐ द्विजरूपाय स्वाहा
३८३. ॐ द्विजश्रेष्ठाय स्वाहा
३८४. ॐ दोषदाय स्वाहा
३८५. ॐ दुस्सदाय स्वाहा
३८६. ॐ देवादिदेवाय स्वाहा
३८७. ॐ देवेशाय स्वाहा
३८८. ॐ देवराजसुपूजिताय स्वाहा
३८९. ॐ देवराजेष्टवरदाय स्वाहा
३९०. ॐ देवराजप्रियङ्कराय स्वाहा
३९१. ॐ देवादिवन्दिताय स्वाहा
३९२. ॐ दिव्यतनवे स्वाहा
३९३. ॐ देवशिखामणय स्वाहा
३९४. ॐ देवगानप्रियाय स्वाहा
३९५. ॐ देवदेशिकपुङ्गवाय स्वाहा
३९६. ॐ द्विजात्मजासमाराध्यायस्वाहा
३९७. ॐ ध्येयाय स्वाहा
३९८. ॐ धर्मिणे स्वाहा
३९९. ॐ धनुर्धराय स्वाहा
४००. ॐ धनुष्मते स्वाहा
४०१. ॐ धनदात्रे स्वाहा

४०२. ॐ धर्माधर्मविवर्जिताय स्वाहा
४०३. ॐ धर्मरूपाय स्वाहा
४०४. ॐ धनुर्दिव्याय स्वाहा
४०५. ॐ धर्मशास्त्रात्मचेतनाय स्वाहा
४०६. ॐ धर्मराजप्रियकराय स्वाहा
४०७. ॐ धर्मराजसुपूजिताय स्वाहा
४०८. ॐ धर्मराजेष्टवरदाय स्वाहा
४०९. ॐ धर्माभीष्टफलप्रदाय स्वाहा
४१०. ॐ नित्यतृप्तस्वभावाय स्वाहा
४११. ॐ नित्यकर्मरताय स्वाहा
४१२. ॐ निजपीडार्तिहारिणे स्वाहा
४१३. ॐ निजभक्तेष्टदायकाय स्वाहा
४१४. ॐ निर्मांसदेहाय स्वाहा
४१५. ॐ नीलाय स्वाहा
४१६. ॐ निजस्तोत्रबहुप्रियाय स्वाहा
४१७. ॐ नलस्तोत्रप्रियाय स्वाहा
४१८. ॐ नलराजसुपूजिताय स्वाहा
४१९. ॐ नक्षत्रमण्डलगताय स्वाहा
४२०. ॐ नमतां प्रियकारकाय स्वाहा
४२१. ॐ नित्यार्चितपदाम्भोजाय स्वाहा
४२२. ॐ निजाज्ञापरिपालकाय स्वाहा
४२३. ॐ नवग्रहवराय स्वाहा
४२४. ॐ नीलवपुषे स्वाहा
४२५. ॐ नलकरार्चिताय स्वाहा
४२६. ॐ नलप्रियानन्दिताय स्वाहा
४२७. ॐ नलक्षेत्रनिवासकाय स्वाहा
४२८. ॐ नलपाकप्रियाय स्वाहा
४२९. ॐ नलापद्भञ्जनक्षमाय स्वाहा
४३०. ॐ नलसर्वार्तिहारिणे स्वाहा
४३१. ॐ नलेनात्मार्थपूजिताय स्वाहा
४३२. ॐ नीपाटवीनिवासाय स्वाहा
४३३. ॐ नलाभीष्टवरप्रदाय स्वाहा
४३४. ॐ नक्षत्रराश्यधिपाय स्वाहा
४३५. ॐ नलेशदर्शनस्याशुसाम्राज्यपदवीप्रदाय स्वाहा
४३६. ॐ नक्षतीर्थसकृत्स्नानसर्वपीडानिवारकाय स्वाहा
४३७. ॐ नीलध्वजविराजिताय स्वाहा
४३८. ॐ नित्ययोगरताय स्वाहा
४३९. ॐ नवरत्नविभूषिताय स्वाहा
४४०. ॐ नवधाभज्यदेहाय स्वाहा
४४१. ॐ नवीकृतजगत्त्रयाय स्वाहा
४४२. ॐ नवग्रहाधिपाय स्वाहा
४४३. ॐ नवाक्षरजपप्रियाय स्वाहा
४४४. ॐ नवात्मने स्वाहा
४४५. ॐ नवचक्रात्मने स्वाहा
४४६. ॐ नवतत्त्वाधिपाय स्वाहा
४४७. ॐ नवोदनप्रियाय स्वाहा
४४८. ॐ नवधान्यप्रियाय स्वाहा
४४९. ॐ निष्कण्टकाय स्वाहा
४५०. ॐ निःस्पृहाय स्वाहा
४५१. ॐ निरपेक्षाय स्वाहा
४५२. ॐ निरामयाय स्वाहा
४५३. ॐ नागराजार्चितपादाय स्वाहा
४५४. ॐ नागराजप्रियङ्कराय स्वाहा
४५५. ॐ नागराजेष्टवरदाय स्वाहा

४५६. ॐ नागाभरणभूषिताय स्वाहा
४५७. ॐ नागेन्द्रगाननिरताय स्वाहा
४५८. ॐ नागाभरणभूषिताय स्वाहा
४५९. ॐ नवमित्रस्वरूपाय स्वाहा
४६०. ॐ नानाश्चर्यविधायकाय स्वाहा
४६१. ॐ नानाद्वीपाधिकर्त्रे स्वाहा
४६२. ॐ नानालिपिसमावृताय स्वाहा
४६३. ॐ नानारूपजगत्स्रष्ट्रे स्वाहा
४६४. ॐ नानारूपजनाश्रयाय स्वाहा
४६५. ॐ नानालोकाधिपाय स्वाहा
४६६. ॐ नानाभाषाप्रियाय स्वाहा
४६७. ॐ नानारूपाधिकारिणे स्वाहा
४६८. ॐ नवरत्नप्रियाय स्वाहा
४६९. ॐ नानाविचित्रवेषाढ्याय स्वाहा
४७०. ॐ नानाविचित्रविधायकायस्वाहा
४७१. ॐ नीलजीमूतसङ्काशाय स्वाहा
४७२. ॐ नीलमेघसमप्रभाय स्वाहा
४७३. ॐ नीलाञ्जनचयप्रख्याय स्वाहा
४७४. ॐ नीलवस्त्रधरप्रियाय स्वाहा
४७५. ॐ नीचभाषाप्रचारज्ञाय स्वाहा
४७६. ॐ नीचेस्वल्पफलप्रदाय स्वाहा
४७७. ॐ नानागमविधानज्ञाय स्वाहा
४७८. ॐ नानानृपसमावृताय स्वाहा
४७९. ॐ नानावर्णाकृतये स्वाहा
४८०. ॐ नानावर्णस्वरार्तवाय स्वाहा
४८१. ॐ नागलोकान्तवासिने स्वाहा
४८२. ॐ नक्षत्रत्रयसंयुताय स्वाहा
४८३. ॐ नभादिलोकसम्भूताय स्वाहा
४८४. ॐ नामस्तोत्रबहुप्रियाय स्वाहा
४८५. ॐ नामपारायणप्रीताय स्वाहा
४८६. ॐ नामार्चनवरप्रदाय स्वाहा
४८७. ॐ नामस्तोत्रैकचित्ताय स्वाहा
४८८. ॐ नानारोगार्तिभञ्जनाय स्वाहा
४८९. ॐ नवग्रहसमाराध्याय स्वाहा
४९०. ॐ नवग्रहभयापहाय स्वाहा
४९१. ॐ नवग्रहसुसम्पूज्याय स्वाहा
४९२. ॐ नानावेधासुरक्षकाय स्वाहा
४९३. ॐ नवग्रहाधिराजाय स्वाहा
४९४. ॐ नवग्रहजपप्रियाय स्वाहा
४९५. ॐ नवग्रहमयज्योतिषे स्वाहा
४९६. ॐ नवग्रहवरप्रदाय स्वाहा
४९७. ॐ नवग्रहाणामधिपाय स्वाहा
४९८. ॐ नवग्रहसुपीडिताय स्वाहा
४९९. ॐ नवग्रहधीश्वराय स्वाहा
५००. ॐ नवमाणिक्यशोभितायस्वाहा
५०१. ॐ परमात्मने स्वाहा
५०२. ॐ परब्रह्मणे स्वाहा
५०३. ॐ परमैश्वर्यकारणाय स्वाहा
५०४. ॐ प्रपन्नभयहारिणे स्वाहा
५०५. ॐ प्रमत्तासुरशिक्षकाय स्वाहा
५०६. ॐ प्रासहस्ताय स्वाहा
५०७. ॐ पङ्गुपादाय स्वाहा
५०८. ॐ प्रकाशात्मने स्वाहा
५०९. ॐ प्रतापवते स्वाहा
५१०. ॐ पावनाय स्वाहा
५११. ॐ परिशुद्धात्मने स्वाहा

५१२. ॐ पुत्रपौत्रप्रवर्धनाय स्वाहा
५१३. ॐ प्रसन्नात्सर्वसुखदाय स्वाहा
५१४. ॐ प्रसन्नेक्षणाय स्वाहा
५१५. ॐ प्रजापत्याय स्वाहा
५१६. ॐ प्रियकराय स्वाहा
५१७. ॐ प्रणतेप्सितराज्यदाय स्वाहा
५१८. ॐ प्रजानां जीवहेतये स्वाहा
५१९. ॐ प्राणिनां परिपालकाय स्वाहा
५२०. ॐ प्राणरूपिणे स्वाहा
५२१. ॐ प्राणधारिणे स्वाहा
५२२. ॐ प्रजानां हितकारकाय स्वाहा
५२३. ॐ प्राज्ञाय स्वाहा
५२४. ॐ प्रशान्ताय स्वाहा
५२५. ॐ प्रज्ञावते स्वाहा
५२६. ॐ प्रजारक्षणदीक्षिताय स्वाहा
५२७. ॐ प्रावृषेण्याय स्वाहा
५२८. ॐ प्राणकारिणे स्वाहा
५२९. ॐ प्रसन्नोत्सववन्दिताय स्वाहा
५३०. ॐ प्रज्ञानिवासहेतवे स्वाहा
५३१. ॐ पुरुषार्थैकसाधनाय स्वाहा
५३२. ॐ प्रजाकराय स्वाहा
५३३. ॐ प्रातिकूल्याय स्वाहा
५३४. ॐ पिङ्गलाक्षाय स्वाहा
५३५. ॐ प्रसन्नधिये स्वाहा
५३६. ॐ प्रपञ्चात्मने स्वाहा
५३७. ॐ प्रसवित्रे स्वाहा
५३८. ॐ पुराणपुरुषोत्तमाय स्वाहा
५३९. ॐ पुराणपुरुषाय स्वाहा
५४०. ॐ पुरुहूताय स्वाहा
५४१. ॐ प्रपञ्चधृते स्वाहा
५४२. ॐ प्रतिष्ठिताय स्वाहा
५४३. ॐ प्रीतिकराय स्वाहा
५४४. ॐ प्रियकारिणे स्वाहा
५४५. ॐ प्रयोजनाय स्वाहा
५४६. ॐ प्रीतिमते स्वाहा
५४७. ॐ प्रवरस्तुत्याय स्वाहा
५४८. ॐ पुरूरवसमर्चिताय स्वाहा
५४९. ॐ प्रपञ्चकारिणे स्वाहा
५५०. ॐ पुण्याय स्वाहा
५५१. ॐ पुरुहूतसमर्चिताय स्वाहा
५५२. ॐ पाण्डवादिसुसंसेव्याय स्वाहा
५५३. ॐ प्रणवाय स्वाहा
५५४. ॐ पुरुषार्थदाय स्वाहा
५५५. ॐ पयोदसमवर्णाय स्वाहा
५५६. ॐ पाण्डुपुत्रर्तिभञ्जनाय स्वाहा
५५७. ॐ पाण्डुपुत्रेष्टदात्रे स्वाहा
५५८. ॐ पाण्डवानां हितङ्कराय स्वाहा
५५९. ॐ पञ्चपाण्डवपुत्राणां सर्वाभीष्टफलप्रदाय स्वाहा
५६०. ॐ पञ्चपाण्डवपुत्राणां सर्वारिष्टनिवारकाय स्वाहा
५६१. ॐ पाण्डुपुत्राद्यर्चिताय स्वाहा
५६२. ॐ पूर्वजाय स्वाहा
५६३. ॐ प्रपञ्चभृते स्वाहा
५६४. ॐ परचक्रप्रभेदिने स्वाहा
५६५. ॐ पाण्डवेषुवरप्रदाय स्वाहा

५६६. ॐ परब्रह्मस्वरूपाय स्वाहा
५६७. ॐ पराज्ञापरिवर्जिताय स्वाहा
५६८. ॐ परात्पराय स्वाहा
५६९. ॐ पाशहन्त्रे स्वाहा
५७०. ॐ परमाणवे स्वाहा
५७१. ॐ प्रपञ्चकृते स्वाहा
५७२. ॐ पातङ्गिने स्वाहा
५७३. ॐ पुरुषाकाराय स्वाहा
५७४. ॐ परशंभुसमुद्भवाय स्वाहा
५७५. ॐ प्रसन्नात्सर्वसुखदाय स्वाहा
५७६. ॐ प्रपञ्चोद्भवसम्भवाय स्वाहा
५७७. ॐ प्रसन्नाय स्वाहा
५७८. ॐ परमोदाराय स्वाहा
५७९. ॐ पराहङ्कारभञ्जनाय स्वाहा
५८०. ॐ पराय स्वाहा
५८१. ॐ परमकारुण्याय स्वाहा
५८२. ॐ परब्रह्ममयाय स्वाहा
५८३. ॐ प्रपन्नभयहारिणे स्वाहा
५८४. ॐ प्रणतार्तिहराय स्वाहा
५८५. ॐ प्रसादकृते स्वाहा
५८६. ॐ प्रपञ्चाय स्वाहा
५८७. ॐ पराशक्तिसमुद्भवाय स्वाहा
५८८. ॐ प्रदानपावनाय स्वाहा
५८९. ॐ प्रशान्तात्मने स्वाहा
५९०. ॐ प्रभाकराय स्वाहा
५९१. ॐ प्रपञ्चात्मने स्वाहा
५९२. ॐ प्रपञ्चोपशमनाय स्वाहा
५९३. ॐ पृथिवीपतये स्वाहा
५९४. ॐ परशुरामसमाराध्याय स्वाहा
५९५. ॐ परशुरामवरप्रदाय स्वाहा
५९६. ॐ परशुरामचिरञ्जीत्वि-
प्रदाय स्वाहा
५९७. ॐ परमपावनाय स्वाहा
५९८. ॐ परमहंसस्वरूपाय स्वाहा
५९९. ॐ परमहंससुपूजिताय स्वाहा
६००. ॐ पञ्चनक्षत्राधिपाय स्वाहा
६०१. ॐ पञ्नक्षत्रसेविताय स्वाहा
६०२. ॐ प्रपञ्चरक्षिते स्वाहा
६०३. ॐ प्रपञ्चस्य भयङ्कराय स्वाहा
६०४. ॐ फलदानप्रियाय स्वाहा
६०५. ॐ फलहस्ताय स्वाहा
६०६. ॐ फलप्रदाय स्वाहा
६०७. ॐ फलाभिषेकप्रियाय स्वाहा
६०८. ॐ फल्गुनस्य वरप्रदाय स्वाहा
६०९. ॐ फुटच्छमितपापौघाय स्वाहा
६१०. ॐ फल्गुनेनप्रपूजिताय स्वाहा
६११. ॐ फणिराजप्रियाय स्वाहा
६१२. ॐ फुल्लाम्बुजविलोचनाय स्वाहा
६१३. ॐ बलप्रियाय स्वाहा
६१४. ॐ बलिने स्वाहा
६१५. ॐ बभ्रुवे स्वाहा
६१६. ॐ ब्रह्मविष्णवीशक्लेशकृते स्वाहा
६१७. ॐ ब्रह्मविष्णवीशरूपाय स्वाहा
६१८. ॐ ब्रह्मशक्रादिदुर्लभाय स्वाहा
६१९. ॐ बासदष्ट्र्याप्रमेयाङ्गाय स्वाहा
६२०. ॐ बिभ्रत्कवचकुण्लाय स्वाहा

६२१. ॐ बहुश्रुताय स्वाहा
६२२. ॐ बहुमतये स्वाहा
६२३. ॐ ब्रह्मण्याय स्वाहा
६२४. ॐ ब्राह्मणप्रियाय स्वाहा
६२५. ॐ बलप्रमथनाय स्वाहा
६२६. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
६२७. ॐ बहुरूपाय स्वाहा
६२८. ॐ बहुप्रदाय स्वाहा
६२९. ॐ बालर्कद्युतिमते स्वाहा
६३०. ॐ बालाय स्वाहा
६३१. ॐ बृहद्वक्षसे स्वाहा
६३२. ॐ बृहत्तनवे स्वाहा
६३३. ॐ ब्रह्माण्डभेदकृते स्वाहा
६३४. ॐ भक्तसर्वार्थसाधकाय स्वाहा
६३५. ॐ भव्याय स्वाहा
६३६. ॐ भोक्त्रे स्वाहा
६३७. ॐ भीतिकृते स्वाहा
६३८. ॐ भक्तानुग्रहकारकाय स्वाहा
६३९. ॐ भीषणाय स्वाहा
६४०. ॐ भैक्षकारिणे स्वाहा
६४१. ॐ भूसुरादिसुपूजिताय स्वाहा
६४२. ॐ भोगभाग्यप्रदाय स्वाहा
६४३. ॐ भस्मीकृतजगत्त्रयाय स्वाहा
६४४. ॐ भयानकाय स्वाहा
६४५. ॐ भानुसूनवे स्वाहा
६४६. ॐ भूतिभूषितविग्रहाय स्वाहा
६४७. ॐ भास्वद्रताय स्वाहा
६४८. ॐ भक्तिमतां सुलभाय स्वाहा
६४९. ॐ भ्रुकुटीमुखाय स्वाहा
६५०. ॐ भवभूतगणैस्स्तुत्याय स्वाहा
६५१. ॐ भूतसंघसमावृताय स्वाहा
६५२. ॐ भ्राजिष्णवे स्वाहा
६५३. ॐ भगवते स्वाहा
६५४. ॐ भीमाय स्वाहा
६५५. ॐ भक्ताभीष्टवरप्रदाय स्वाहा
६५६. ॐ भवभक्तैकचित्ताय स्वाहा
६५७. ॐ भक्तिगीतस्तवोन्मुखाय स्वाहा
६५८. ॐ भूतसन्तोषकारिणे स्वाहा
६५९. ॐ भक्तानां चित्तशोधनाय स्वाहा
६६०. ॐ भक्तिगम्याय स्वाहा
६६१. ॐ भयहराय स्वाहा
६६२. ॐ भावज्ञाय स्वाहा
६६३. ॐ भक्तसुप्रियाय स्वाहा
६६४. ॐ भूतिदाय स्वाहा
६६५. ॐ भूतिकृते स्वाहा
६६६. ॐ भोज्याय स्वाहा
६६७. ॐ भूतात्मने स्वाहा
६६८. ॐ भुवनेश्वराय स्वाहा
६९९. ॐ मन्दाय स्वाहा
६७०. ॐ मन्दगतये स्वाहा
६७१. ॐ मासमेव प्रपूजिताय स्वाहा
६७२. ॐ मुचुकुन्दसमाराध्याय स्वाहा
६७३. ॐ मुचुकुन्दवरप्रदाय स्वाहा
६७४. ॐ मुचुकुन्दार्चितपदाय स्वाहा
६७५. ॐ महारूपाय स्वाहा
६७६. ॐ महायशसे स्वाहा

६७७. ॐ महाभोगिने स्वाहा
६७८. ॐ महायोगिने स्वाहा
६७९. ॐ महाकायाय स्वाहा
६८०. ॐ महाप्रभवे स्वाहा
६८१. ॐ महेशाय स्वाहा
६८२. ॐ महदैश्वर्याय स्वाहा
६८३. ॐ मन्दारकुसुमप्रियाय स्वाहा
६८४. ॐ महाक्रतवे स्वाहा
६८५. ॐ महामानिने स्वाहा
६८६. ॐ महाधीराय स्वाहा
६८७. ॐ महाजयाय स्वाहा
६८८. ॐ महावीराय स्वाहा
६८९. ॐ महाशान्ताय स्वाहा
६९०. ॐ मण्डलस्थाय स्वाहा
६९१. ॐ महाद्युतये स्वाहा
६९२. ॐ महानुताय स्वाहा
६९३. ॐ महोदराय स्वाहा
६९४. ॐ महानीयाय स्वाहा
६९५. ॐ महोदयाय स्वाहा
६९६. ॐ मैथिलीवरदायिने स्वाहा
६९७. ॐ मार्तण्डस्य द्वितीयजाय स्वाहा
६९८. ॐ मैथिलीप्रार्थनाक्लृप्तदशकण्ठशिरोपहृते स्वाहा
६९९. ॐ मरामरहराराध्याय स्वाहा
७००. ॐ महेन्द्रादिसुरार्चिताय स्वाहा
७०१. ॐ महारथाय स्वाहा
७०२. ॐ महावेगाय स्वाहा
७०३. ॐ मणिरत्नविभूषिताय स्वाहा
७०४. ॐ मेपनीचाय स्वाहा
७०५. ॐ महाघोराय स्वाहा
७०६. ॐ महासौरये स्वाहा
७०७. ॐ मनुप्रियाय स्वाहा
७०८. ॐ महादीर्घाय स्वाहा
७०९. ॐ महाग्रासाय स्वाहा
७१०. ॐ महदैश्वर्यदायकाय स्वाहा
७११. ॐ महाशुष्काय स्वाहा
७१२. ॐ महारौद्राय स्वाहा
७१३. ॐ मुक्तिमार्गप्रदर्शकाय स्वाहा
७१४. ॐ मकरकुम्भाधिपाय स्वाहा
७१५. ॐ मृकण्डुतनयार्चिताय स्वाहा
७१६. ॐ मन्त्राधिष्ठानरूपाय स्वाहा
७१७. ॐ मल्लिकाकुसुमप्रियाय स्वाहा
७१८. ॐ महामन्त्रस्वरूपाय स्वाहा
७१९. ॐ महायन्त्रस्थिताय स्वाहा
७२०. ॐ महाप्रकाशदिव्यात्मने स्वाहा
७२१. ॐ महादेवप्रियाय स्वाहा
७२२. ॐ महाबलिसमाराध्याय स्वाहा
७२३. ॐ महर्षिगणपूजिताय स्वाहा
७२४. ॐ मन्दचारिणे स्वाहा
७२५. ॐ महामायिने स्वाहा
७२६. ॐ माषदानप्रियाय स्वाहा
७२७. ॐ माषोदनप्रीतचित्ताय स्वाहा
७२८. ॐ महाशक्तये स्वाहा
७२९. ॐ महागुणाय स्वाहा
७३०. ॐ यशस्कराय स्वाहा
७३१. ॐ योगदात्रे स्वाहा

७३२. ॐ यज्ञाङ्गाय स्वाहा
७३३. ॐ युगन्धराय स्वाहा
७३४. ॐ योगिने स्वाहा
७३५. ॐ योग्याय स्वाहा
७३६. ॐ याम्याय स्वाहा
७३७. ॐ योगरूपिणे स्वाहा
७३८. ॐ युगाधिपाय स्वाहा
७३९. ॐ यज्ञभृते स्वाहा
७४०. ॐ यजमानाय स्वाहा
७४१. ॐ योगाय स्वाहा
७४२. ॐ योगविदाम्वराय स्वाहा
७४३. ॐ यक्षराक्षसवेतालकूष्माण्डादिप्रपूजिताय स्वाहा
७४४. ॐ यमप्रत्यधिदेवाय स्वाहा
७४५. ॐ युगपद्भोगदायकाय स्वाहा
७४६. ॐ योगप्रियाय स्वाहा
७४७. ॐ योगयुक्ताय स्वाहा
७४८. ॐ यज्ञरूपाय स्वाहा
७४९. ॐ युगान्तकृते स्वाहा
७५०. ॐ रघुवंशसमाराध्याय स्वाहा
७५१. ॐ रौद्राय स्वाहा
७५२. ॐ रौद्राकृतये स्वाहा
७५३. ॐ रघुनन्दनसंल्लापाय स्वाहा
७५४. ॐ रघुप्रोक्तजपप्रियाय स्वाहा
७५५. ॐ रौद्ररूपिणे स्वाहा
७५६. ॐ रथारूढाय स्वाहा
७५७. ॐ राघवेष्टवरप्रदाय स्वाहा
७५८. ॐ रथिने स्वाहा
७५९. ॐ रौद्राधिकारिणे स्वाहा
७६०. ॐ राघवेणसमर्चिताय स्वाहा
७६१. ॐ रोषात्सर्वस्वहारिणे स्वाहा
७६२. ॐ राघवेणसुपूजिताय स्वाहा
७६३. ॐ राशिद्वयाधिपाय स्वाहा
७६४. ॐ रघुभिः परिपूजिताय स्वाहा
७६५. ॐ राज्यभूपाकराय स्वाहा
७६६. ॐ राजराजेन्द्रवन्दिताय स्वाहा
७६७. ॐ रत्नकेयूरभूषाढ्याय स्वाहा
७६८. ॐ रमानन्दनवन्दिताय स्वाहा
७६९. ॐ रघुपौरुषसन्तुष्टाय स्वाहा
७७०. ॐ रघुवंशनृपैःपूज्याय स्वाहा
७७१. ॐ रणन्मञ्जीरनूपुराय स्वाहा
७७२. ॐ रविनन्दनाय स्वाहा
७७३. ॐ राजेन्द्राय स्वाहा
७७४. ॐ रघुवंशप्रियाय स्वाहा
७७५. ॐ लोहजप्रतिमादानप्रियाय स्वाहा
७७६. ॐ लावण्यविग्रहाय स्वाहा
७७७. ॐ लोकचूडामणये स्वाहा
७७८. ॐ लक्ष्मीवाणीस्तुतिप्रियाय स्वाहा
७७९. ॐ लोकरक्षाय स्वाहा
७८०. ॐ लोकशिक्षाय स्वाहा
७८१. ॐ लोकलोचनरञ्जिताय स्वाहा
७८२. ॐ लोकाध्यक्षाय स्वाहा
७८३. ॐ लोकवन्द्याय स्वाहा
७८४. ॐ लक्ष्मणाग्रजपूजिताय स्वाहा
७८५. ॐ वेदवेद्याय स्वाहा
७८६. ॐ वज्रदेहाय स्वाहा

७८७. ॐ वज्राङ्कुशधराय स्वाहा
७८८. ॐ विश्ववन्द्याय स्वाहा
७८९. ॐ विरूपाक्षाय स्वाहा
७९०. ॐ विमलाङ्गविराजिताय स्वाहा
७९१. ॐ विश्वस्थाय स्वाहा
७९२. ॐ वायसारूढाय स्वाहा
७९३. ॐ विशेषसुखकारकाय स्वाहा
७९४. ॐ विश्वरूपिणे स्वाहा
७९५. ॐ विश्वगोप्त्रे स्वाहा
७९६. ॐ विभावसुनुताय स्वाहा
७९७. ॐ विप्रप्रियाय स्वाहा
७९८. ॐ विप्ररूपाय स्वाहा
७९९. ॐ विप्राराधनतत्पराय स्वाहा
८००. ॐ विशालनेत्राय स्वाहा
८०१. ॐ विशिखाय स्वाहा
८०२. ॐ विप्रदानबहुप्रियाय स्वाहा
८०३. ॐ विश्वसृष्टिसमुद्भूताय स्वाहा
८०४. ॐ वैश्वानरसमद्युतये स्वाहा
८०५. ॐ विष्णवे स्वाहा
८०६. ॐ विरिञ्चये स्वाहा
८०७. ॐ विश्वेशाय स्वाहा
८०८. ॐ विश्वकर्त्रे स्वाहा
८०९. ॐ विशाम्पतये स्वाहा
८१०. ॐ विराडाधारचक्रस्थाय स्वाहा
८११. ॐ विश्वभुजे स्वाहा
८१२. ॐ विश्वभावाय स्वाहा
८१३. ॐ विश्वव्यापारहेतवे स्वाहा
८१४. ॐ वक्रक्रूरविवर्जिताय स्वाहा
८१५. ॐ विश्वोद्भवाय स्वाहा
८१६. ॐ विश्वकर्मणे स्वाहा
८१७. ॐ विश्वसृष्टिविधायकाय स्वाहा
८१८. ॐ विश्वमूलनिवासिने स्वाहा
८१९. ॐ विश्वचित्रविधायकाय स्वाहा
८२०. ॐ विश्वाधारविलासिने स्वाहा
८२१. ॐ व्यासेन कृतपूजिताय स्वाहा
८२२. ॐ विभीषणेष्टवरदाय स्वाहा
८२३. ॐ वाञ्छितार्थप्रदायकाय स्वाहा
८२४. ॐ विभीषणसमाराध्याय स्वाहा
८२५. ॐ विशेषसुखदायकाय स्वाहा
८२६. ॐ विषमव्ययाष्टजन्मस्थैकादशफलप्रदाय स्वाहा
८२७. ॐ वासवात्मजसुप्रीताय स्वाहा
८२८. ॐ वसुदाय स्वाहा
८२९. ॐ वासवार्चिताय स्वाहा
८३०. ॐ विश्वत्राणैकनिरताय स्वाहा
८३१. ॐ वाङ्मनोतीतविग्रहाय स्वाहा
८३२. ॐ विराणमन्दिरमूलस्थाय स्वाहा
८३३. ॐ वलीमुखसुखप्रदाय स्वाहा
८३४. ॐ विपाशाय स्वाहा
८३५. ॐ विगतातङ्काय स्वाहा
८३६. ॐ विकल्पपरिवर्जिताय स्वाहा
८३७. ॐ वरिष्ठाय स्वाहा
८३८. ॐ वरदाय स्वाहा
८३९. ॐ वन्द्याय स्वाहा
८४०. ॐ विचित्राङ्गाय स्वाहा
८४१. ॐ विरोचनाय स्वाहा

८४२. ॐ शुष्कोदराय स्वाहा
८४३. ॐ शुक्लवपुषे स्वाहा
८४४. ॐ शान्तरूपिणे स्वाहा
८४५. ॐ शनैश्चराय स्वाहा
८४६. ॐ शूलिने स्वाहा
८४७. ॐ शरण्याय स्वाहा
८४८. ॐ शान्ताय स्वाहा
८४९. ॐ शिवायामप्रियङ्कराय स्वाहा
८५०. ॐ शिवभक्तिमतांश्रेष्ठाय स्वाहा
८५१. ॐ शूलपाणये स्वाहा
८५२. ॐ शुचिप्रियाय स्वाहा
८५३. ॐ श्रुतिस्मृतिपुराणज्ञाय स्वाहा
८५४. ॐ श्रुतिजालप्रबोधकाय स्वाहा
८५५. ॐ श्रुतिपारगसम्पूज्याय स्वाहा
८५६. ॐ श्रुतिश्रवणलोलुपाय स्वाहा
८५७. ॐ श्रुत्यन्तर्गतमर्मज्ञाय स्वाहा
८५८. ॐ श्रुत्येष्टवरदायकाय स्वाहा
८५९. ॐ श्रुतिरूपाय स्वाहा
८६०. ॐ श्रुतिप्रीताय स्वाहा
८६१. ॐ श्रुतीप्सितफलप्रदाय स्वाहा
८६२. ॐ श्रुतिश्रुताय स्वाहा
८६३. ॐ शान्तमूर्तये स्वाहा
८६४. ॐ श्रुतिश्रवणकीर्तनाय स्वाहा
८६५. ॐ शमीमूलनिवासिने स्वाहा
८६६. ॐ शमीकृतफलप्रदाय स्वाहा
८६७. ॐ शमीकृतमहाघोराय स्वाहा
८६८. ॐ शरणागतवत्सलाय स्वाहा
८६९. ॐ शमीतरुस्वरूपाय स्वाहा
८७०. ॐ विमन्त्रज्ञमुक्तिदाय स्वाहा
८७१. ॐ शिवागमैकनिलयाय स्वाहा
८७२. ॐ शिवमन्त्रजपप्रियाय स्वाहा
८७३. ॐ शमीपत्रप्रियाय स्वाहा
८७४. ॐ मीपर्णसमर्चिताय स्वाहा
८७५. ॐ शतोपनिषदस्तुत्याय स्वाहा
८७६. ॐ शान्त्यादिगुणभूषिताय स्वाहा
८७७. ॐ शान्त्यादिषड्गुणोपेताय स्वाहा
८७८. ॐ शङ्खवाद्यप्रियाय स्वाहा
८७९. ॐ श्यामरक्तसितज्योतिषे स्वाहा
८८०. ॐ शुद्धपञ्चाक्षरप्रियाय स्वाहा
८८१. ॐ श्रीहालास्यक्षेत्रवासिने स्वाहा
८८२. ॐ श्रीमते स्वाहा
८८३. ॐ शक्तिधराय स्वाहा
८८४. ॐ षोडशद्वयसम्पूर्णलक्षणाय स्वाहा
८८५. ॐ षणमुखप्रियाय स्वाहा
८८६. ॐ षड्गुणैश्वर्यसंयुक्ताय स्वाहा
८८७. ॐ षडङ्गावरणोज्ज्वलाय स्वाहा
८८८. ॐ षडक्षरस्वरूपाय स्वाहा
८८९. ॐ षट्चक्रोपरिसंस्थिताय स्वाहा
८९०. ॐ षोशशिने स्वाहा
८९१. ॐ षोडशान्ताय स्वाहा
८९२. ॐ षट्छक्तिव्यक्तमूर्तिमते स्वाहा
८९३. ॐ षड्भावरहिताय स्वाहा
८९४. ॐ षडङ्गश्रुतिपारगाय स्वाहा
८९५. ॐ षट्कोणमध्यनिलयाय०
८९६. ॐ षट्छास्त्रस्मृतिपारगाय स्वाहा
८९७. ॐ स्वर्णेन्द्रनीलमकुटाय स्वाहा

८९८. ॐ सर्वाभीष्टप्रदायकाय स्वाहा
८९९. ॐ सर्वात्मने स्वाहा
९००. ॐ सर्वदोषघ्नाय स्वाहा
९०१. ॐ सर्वगर्वप्रभञ्जनाय स्वाहा
९०२. ॐ समस्तलोकाभयदाय स्वाहा
९०३. ॐ सर्वदोषाङ्गनाशकाय स्वाहा
९०४. ॐ समस्तभक्तसुखदाय स्वाहा
९०५. ॐ सर्वदोषनिवर्तकाय स्वाहा
९०६. ॐ सर्वनाशक्षमाय स्वाहा
९०७. ॐ सौम्याय स्वाहा
९०८. ॐ सर्वक्लेशनिवारकाय स्वाहा
९०९. ॐ सर्वात्मने स्वाहा
९१०. ॐ सर्वदातुष्टाय स्वाहा
९११. ॐ सर्वपीडानिवारकाय स्वाहा
९१२. ॐ सर्वरूपिणे स्वाहा
९१३. ॐ सर्वकर्मणे स्वाहा
९१४. ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा
९१५. ॐ सर्वकारकाय स्वाहा
९१६. ॐ सुकृते स्वाहा
९१७. ॐ सुलभाय स्वाहा
९१८. ॐ सर्वाभीष्टफलप्रदाय स्वाहा
९१९. ॐ सूर्यात्मजाय स्वाहा
९२०. ॐ सदातुष्टाय स्वाहा
९२१. ॐ सूर्यवंशप्रदीपनाय स्वाहा
९२२. ॐ सप्तद्वीपाधिपाय स्वाहा
९२३. ॐ सुरासुरभयङ्कराय स्वाहा
९२४. ॐ सर्वसंक्षोभहारिणे स्वाहा
९२५. ॐ सर्वलोकहितङ्कराय स्वाहा
९२६. ॐ सर्वौदार्यस्वभावाय स्वाहा
९२७. ॐ सन्तोषात्सकलेष्टदाय स्वाहा
९२८. ॐ समस्तऋषिभिः स्तुत्याय स्वाहा
९२९. ॐ समस्तगणपावृताय स्वाहा
९३०. ॐ समस्तगणसंसेव्याय स्वाहा
९३१. ॐ सर्वारिष्टविनाशनाय स्वाहा
९३२. ॐ सर्वसौख्यप्रदात्रे स्वाहा
९३३. ॐ सर्वव्याकुलनाशनाय स्वाहा
९३४. ॐ सर्वसंक्षोभहारिणे स्वाहा
९३५. ॐ सर्वारिष्टफलप्रदाय स्वाहा
९३६. ॐ सर्वव्याधिप्रशमनाय स्वाहा
९३७. ॐ सर्वमृत्युनिवारकाय स्वाहा
९३८. ॐ सर्वानुकूलकारिणे स्वाहा
९३९. ॐ सौन्दर्यमृदुभाषिताय स्वाहा
९४०. ॐ सौराष्ट्रदेशोद्भवाय स्वाहा
९४१. ॐ स्वक्षेत्रेष्टवरप्रदाय स्वाहा
९४२. ॐ सोमयाजिसमाराध्याय स्वाहा
९४३. ॐ सीताभीष्टवरप्रदाय स्वाहा
९४४. ॐ सुखासनोपविष्टाय स्वाहा
९४५. ॐ सद्यःपीडानिवारकाय स्वाहा
९४६. ॐ सौदामिनीसन्निभाय स्वाहा
९४७. ॐ सर्वानुल्लङ्घ्यशासनाय स्वाहा
९४८. ॐ सूर्यमण्डलसञ्चारिणे स्वाहा
९४९. ॐ संहारास्त्रनियोजिताय स्वाहा
९५०. ॐ सर्वलोकक्षयकराय स्वाहा
९५१. ॐ सर्वारि[illegible]धायकाय स्वाहा
९५२. ॐ सर्वव्याकुलकारिणे स्वाहा
९५३. ॐ सहस्रजपसुप्रियाय स्वाहा

१५४. ॐ सुखासनोपविष्टाय स्वाहा
१५५. ॐ संहारास्त्रप्रदर्शिताय स्वाहा
१५६. ॐ सर्वालङ्कारसंयुक्तकृष्णगोदानसुप्रियाय स्वाहा
१५७. ॐ सुप्रसन्नाय स्वाहा
१५८. ॐ सुरश्रेष्ठाय स्वाहा
१५९. ॐ सुघोषाय स्वाहा
१६०. ॐ सुखदाय स्वाहा
१६१. ॐ सुहृदे स्वाहा
१६२. ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा
१६३. ॐ सिद्धसङ्कल्पाय स्वाहा
१६४. ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा
१६५. ॐ सर्वदाय स्वाहा
१६६. ॐ सुखिने स्वाहा
१६७. ॐ सुग्रीवाय स्वाहा
१६८. ॐ सुधृतये स्वाहा
१६९. ॐ साराय स्वाहा
१७०. ॐ सुकुमाराय स्वाहा
१७१. ॐ सुलोचनाय स्वाहा
१७२. ॐ सुव्यक्ताय स्वाहा
१७३. ॐ सच्चिदानन्दाय स्वाहा
१७४. ॐ सुवीराय स्वाहा
१७५. ॐ सुजनाश्रयाय स्वाहा
१७६. ॐ हरिश्चन्द्रसमाराध्याय स्वाहा
१७७. ॐ हेयोपादेयवर्जिताय स्वाहा
१७८. ॐ हरिश्चन्द्रेष्टवरदाय स्वाहा
१७९. ॐ हंसमन्त्रादिसंस्तुताय स्वाहा
१८०. ॐ हंसवाहसमाराध्याय स्वाहा
१८१. ॐ हंसवाहवरप्रदाय स्वाहा
१८२. ॐ हृद्याय स्वाहा
१८३. ॐ हृष्टाय स्वाहा
१८४. ॐ हरिसखाय स्वाहा
१८५. ॐ हंसाय स्वाहा
१८६. ॐ हंसगतये स्वाहा
१८७. ॐ हविषे स्वाहा
१८८. ॐ हिरण्यवर्णाय स्वाहा
१८९. ॐ हितकृते स्वाहा
१९०. ॐ हर्षदाय स्वाहा
१९१. ॐ हेमभूषणाय स्वाहा
१९२. ॐ हविर्होत्रे स्वाहा
१९३. ॐ हंसगतये स्वाहा
१९४. ॐ हंसमन्त्रादिसंस्तुताय स्वाहा
१९५. ॐ हनूमदर्चितपदाय स्वाहा
१९६. ॐ हलधृत्पूजिताय स्वाहा
१९७. ॐ क्षेमदाय स्वाहा
१९८. ॐ क्षेमकृते स्वाहा
१९९. ॐ क्षेम्याय स्वाहा
१०००. ॐ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा
१००१. ॐ क्षामवर्जिताय स्वाहा
१००२. ॐ क्षुद्रघ्नाय स्वाहा
१००३. ॐ क्षान्तिदाय स्वाहा
१००४. ॐ क्षमाय स्वाहा
१००५. ॐ क्षितिभूषाय स्वाहा
१००६. ॐ क्षमाश्रयाय स्वाहा
१००७. ॐ क्षमाधराय स्वाहा
१००८. ॐ क्षयद्वाराय स्वाहा

योगिनीहोमः

निम्न मन्त्रों का क्रम से आचार्य और ब्राह्मण उच्चारण करते हुए यजमान से शनिकुण्ड में योगिनीहोम के लिए हवन करावें—

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये स्वाहा॥

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् स्वाहा॥

ॐ महाँ२॥ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा स्वाहा॥

ॐ सद्योजातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः। अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहा कृतꣳ हविरदन्तु देवाः स्वाहा॥

ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्त्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्ग्धि हरसा माभिमꣳस्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः स्वाहा॥

ॐ स्वर्ण घर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा॥

ॐ सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे विश्वं च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥

ॐ भायै दार्वाहारं प्रभाया अग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टप्रायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारर्ठ० सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारमवऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम् स्वाहा ॥

ॐ जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड्भामः। मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः स्वाहा ॥

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा संदिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा सर्ठ०हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायाणाय स्वाहा ॥

ॐ अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्करयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा ॥

ॐ पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मसि स्वाहा ॥

ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना स्वाहा ॥

ॐ अयमग्निः सहस्त्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः। मूर्धा कवी रयीणाम् स्वाहा ॥

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके स्वाहा ॥

ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु। पृथिव्याः सर्ठ० स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि स्वाहा॥

ॐ यमेन दत्तं त्रित एनमायुनगिन्द्र एणं प्रथमो अध्यतिष्ठत्। गन्धर्वो अस्य रशनामगृभ्णात्सूरादश्वं वसवो निरतष्ट स्वाहा॥

ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम् स्वाहा॥

ॐ अग्ने ब्रह्म गृभ्णीष्व धरुणमस्यन्तरिक्षं दृर्ठ०ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। धर्त्रमसि दिवं दृर्ठ०ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। विश्वाभ्यस्त्वाशाभ्य उपदधामि चितः स्थोर्ध्वचितो भृगूणामङ्गिरसां तपसा तप्यध्वम् स्वाहा॥

ॐ भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम स्वाहा॥

ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्मा छन्दार्ठ०स्यङ्गानि यजूर्ठ०षि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत स्वाहा॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् स्वाहा॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा॥

ॐ वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतां नः सुराधंसः स्वाहा॥

ॐ हर्ठ०सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् स्वाहा॥

ॐ सुसंदृशं त्वा वयं मघवन्वन्दिषीमहि। प्र नूनं पूर्णबन्धुरः स्तुतो यासि वशाँ अनु योजा न्विन्द्र ते हरी स्वाहा॥

ॐ प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा सम्पदसि सम्पदे त्वा तेजोऽसि तेजसे त्वा स्वाहा॥

ॐ देवीरापो अपांनपाद्यो व ऊर्मिर्हविष्य इन्द्रिया वान्मदिन्तमः। तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा॥

ॐ हविष्मतीरिमा आपो हविष्माँ २ आ विवासति। हविष्यमान्देवो अध्वरो हविषमाँ २॥ अस्तु सूर्यः स्वाहा॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण स्वाहा॥

ॐ भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः। दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम् स्वाहा॥

ॐ कदाचनः स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यत आदित्येभ्यस्त्वा स्वाहा॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवार्ठ०सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः स्वाहा॥

ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्त्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशर्ठ०सो ध्रुवा अस्मिगोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि स्वाहा॥

ॐ देवी द्यावापृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे स्वाहा॥

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा॥

ॐ अग्निश्च म आपश्च मे वीरुधश्च म ओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मेऽकृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च मे वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥

ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य। इषुधिः संकाः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः स्वाहा॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः स्वाहा॥

ॐ ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुखं च मे शयनं च सूषाश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥

ॐ ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून्विध्यतार्ठ० संविदाने आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अमित्रान् स्वाहा॥

ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना स्वाहा॥

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवति। यज्ञं वष्टु धियावसुः स्वाहा॥

ॐ अस्कन्नमद्य देवेभ्य आज्यर्ठ॰संभ्रियासमङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषं वसुमतीमग्ने ते च्छायामुपस्थेषं विष्णोः स्थानमसीत इन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वोध्वर आस्थात् स्वाहा॥

ॐ तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सहवाजयन्तः। अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान्क्षिणन्तिशत्रूं१। रनपव्ययन्तः स्वाहा॥

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः स्वाहा॥

ॐ उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधा असि चनो मयि धेहि। जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे स्वाहा॥

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे स्वाहा॥

ॐ काऽर्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः स्वाहा॥

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा स्वाहा॥

ॐ ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयर्ठ० सुधातुदक्षिणम्। अस्मद्राता देवता गच्छत प्रदातारमाविशत स्वाहा॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवार्ठ०सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः स्वाहा॥

ॐ एका च मे तिस्त्रश्च मे तिस्त्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च म एकादश च म एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म एकविर्ठ०शतिश्च म एकविर्ठ०शतिश्च मे त्रयोविर्ठ०शतिश्च मे त्रयोविर्ठ०शतिश्च मे पञ्चविर्ठ०शतिश्च मे पञ्चविर्ठ० शतिश्च मे सप्तविर्ठ०शतिश्च मे सप्तविर्ठ०शतिश्च मे नवविर्ठ०शतिश्च मे नवविर्ठ०शतिश्च म एकत्रिर्ठ०शच्च म एकत्रिर्ठ०शच्च मे त्रयस्त्रिर्ठ० शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥

ॐ ब्रह्माणि मे मतयः शर्ठ० सुतासः शुष्म इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः। आशासते प्रतिहर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो अच्छ स्वाहा॥

ॐ असंख्याता सहस्त्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमार्ठ०सं परिपातु विश्वतः स्वाहा॥

ॐ तिस्त्रस्त्रेधा सरस्वत्यश्विना भारतीडा। तीव्रं परिस्त्रुता सोममिन्द्राय सुषुवुर्मदम् स्वाहा॥

ॐ सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति। अपाꣳ रसेन वरुणो न साम्नेन्द्रꣳ श्रियै जनयन्नप्सु राजा स्वाहा॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपाꣳ सुरे स्वाहा॥

ॐ वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोऽसिराष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि स्वाहा॥

ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकꣳसꣳशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व स्वाहा॥

(अथवा)

केवलं नामाऽनुक्रमेण योगिनीहोमः

ॐ गजाननायै स्वाहा, ॐ सिंहमुख्यै स्वाहा, ॐ गृध्रास्यायै स्वाहा, ॐ काकतुण्डिकायै स्वाहा, ॐ उष्ट्रग्रीवायै स्वाहा, ॐ हयग्रीवायै स्वाहा, ॐ वाराह्यै स्वाहा, ॐ शरभाननायै स्वाहा, ॐ उलूकिकायै स्वाहा, ॐ शिवारावायै स्वाहा, ॐ मयूरायै स्वाहा, ॐ विकटाननायै स्वाहा, ॐ अष्टवक्त्रायै स्वाहा, ॐ कोटराक्ष्यै स्वाहा, ॐ कुब्जायै स्वाहा, ॐ विकटलोचनायै स्वाहा, ॐ शुष्कोदर्यै स्वाहा, ॐ ललजिह्वायै स्वाहा, ॐ श्वदंष्ट्रायै स्वाहा, ॐ वानराननायै स्वाहा, ॐ ऋक्षाक्ष्यै स्वाहा, ॐ केकराक्ष्यै स्वाहा, ॐ बृहत्तुण्डायै स्वाहा, ॐ सुराप्रियायै स्वाहा, ॐ कपालहस्तायै स्वाहा, ॐ रक्ताक्ष्यै स्वाहा,

ॐ शुक्यै स्वाहा, ॐ श्येन्यै स्वाहा, ॐ कपोतिकायै स्वाहा, ॐ पाशहस्तायै स्वाहा, ॐ दण्डहस्तायै स्वाहा, ॐ प्रचण्डायै स्वाहा, ॐ चण्डविक्रमायै स्वाहा, ॐ शिशुघ्न्यै स्वाहा, ॐ पापहन्त्र्यै स्वाहा, ॐ काल्यै स्वाहा, ॐ रुधिरपायिन्यै स्वाहा, ॐ वसाधयायै स्वाहा, ॐ गर्भभक्षायै स्वाहा, ॐ शवहस्तायै स्वाहा, ॐ आन्त्रमालिन्यै स्वाहा, ॐ स्थूलकेश्यै स्वाहा, ॐ बृहत्कुक्ष्यै स्वाहा, ॐ सर्पास्यायै स्वाहा, ॐ प्रेतवाहिन्यै स्वाहा, ॐ दन्दशूककरायै स्वाहा, ॐ क्रौञ्च्यै स्वाहा, ॐ मृगशीर्षायै स्वाहा, ॐ वृषाननायै स्वाहा, ॐ व्यात्तास्यायै स्वाहा, ॐ धूम्रनिश्वासायै स्वाहा, ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे स्वाहा, ॐ तापिन्यै स्वाहा, ॐ शोषिणीदृष्ट्यै स्वाहा, ॐ कोटर्यै स्वाहा, ॐ स्थूलनासिकायै स्वाहा, ॐ विद्युत्प्रभायै स्वाहा, ॐ बलाकास्यायै स्वाहा, ॐ मार्जार्यै स्वाहा, ॐ कटपूतनायै स्वाहा, ॐ अट्टाट्टहासायै स्वाहा, ॐ कामाक्ष्यै स्वाहा, ॐ मृगाक्ष्यै स्वाहा, ॐ मृगलोचनायै स्वाहा।

क्षेत्रपालहोमः

निम्न मन्त्रों का आचार्य और ब्राह्मण उच्चारण करते हुए यजमान से शनिकुण्ड में क्षेत्रपाल हवन करावें—

ॐ इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ याभ्यार्ठ० रक्षार्ठ०स्य पहर्ठ० स्यग्ने। ताभ्यां पतेम सुकृतामु लोकं यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः स्वाहा॥

ॐ प्रथमा वार्ठ० सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा। अपिप्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता स्वाहा॥

ॐ इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकं मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः। सेमां नो हव्यदातिं जुषाणो देव रथ प्रतिहव्या गृभाय स्वाहा॥

ॐ एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः। स नः स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा॥

ॐ उक्षा समुद्रो अरुणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुराविवेश। मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ स्वाहा॥

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः स्वाहा॥

ॐ स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित्परिस्रव स्वाहा॥

ॐ बाहू मे बलमिन्द्रियꣳ हस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम स्वाहा॥

ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत। अथो यमस्य पड्वीशात्सर्वस्माद्देवकिल्बिषात् स्वाहा॥

ॐ कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳ समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे स्वाहा॥

ॐ सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यवह्रियमाणः सलिलः प्रप्लुतो ययोरोजसा स्कभिता रजाꣳसि वीर्येभिर्वीरतमा शविष्ठा। या पत्येते अप्रतीता सहोभिर्विष्णू अगन्वरुणा पूर्वहूतौ स्वाहा॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विश्वरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥

ॐ अर्मेभ्यो हस्तिपं जवायाश्वपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालं तेजसेऽजपालमिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं

भद्राय गृहपर्ठ०श्रेयसे वित्तधमाध्यक्ष्यायायानुक्षत्तारम् स्वाहा ॥

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रूणामहर्ठ०शतं धामानि सप्त च स्वाहा ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः स्वाहा ॥

ॐ देवसवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा ॥

ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति। अश्विना यज्ञर्ठ० सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषजयन् स्वाहा ॥

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमष एकवीरः शतर्ठ० सेना अजयत्साकमिन्द्रः स्वाहा ॥

ॐ इमर्ठ० साहस्त्रर्ठ० शतधारमुत्सं व्यच्यमानर्ठ० सरिरस्य मध्ये। घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हिर्ठ०सीः परमे व्योमन्॥ गवयमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद। गवयं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु स्वाहा ॥

ॐ कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो अन्तः। प्लाशिर्व्यक्तः शतधार उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः स्वाहा ॥

ॐ आक्रन्दय बलमोजो न आधा निष्टनिहि दुरिताबाधमानः। अपप्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इत इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व स्वाहा ॥

ॐ इन्द्रायाहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः स्वाहा॥

ॐ चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि। रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहर्ठ० हरिरेति कनिक्रदत् स्वाहा॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा॥

ॐ उग्रं लोहितेन मित्रर्ठ० सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यर्ठ० रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् स्वाहा॥

ॐ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूँ२रनु॥ रनु स्वाहा॥

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः स्वाहा॥

ॐ वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु। आयाहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता स्वाहा॥

ॐ दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं नोऽग्नेर्जिह्वामभिगृणीतम्। कृणुतं नः स्विष्टिम् स्वाहा॥

ॐ त्रीणि त आहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तःसमुद्रे। उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन्यत्रा त आहुः परमं जनित्रम् स्वाहा॥

ॐ प्रतिश्रुत्काया अर्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकर्ठ० शब्दायाडम्बराघातं महसे वीणावादं क्रोशाय

तूणवध्ममवरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनपमन्यतोऽरण्याय दावपम् स्वाहा ॥

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः स्वाहा ॥

ॐ वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखाप्रतरणः सुवीरः। गोभिः सन्नद्धो असिवीडय स्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि स्वाहा ॥

ॐ सुपर्णा वस्ते मृगो अस्यादन्तो गोभिः संनद्धा पतति प्रसूता। यत्रा नरः सं च वि च द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म यर्ठ०सन् स्वाहा ॥

ॐ अग्ने अच्छा वदेह नः प्रति नः सुमना भव। प्र नो यच्छ सहस्त्रजित्त्वर्ठ०हि धनदा असि स्वाहा ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिःशृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवार्ठ० सस्तनुभिर्व्यशेमहि देव हितं यदायुः स्वाहा ॥

ॐ अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः। विश्वा यदजयः स्पृधः स्वाहा ॥

ॐ वातं प्राणेनापानेन नासिके उपयाममधरेणौष्ठेन सदुत्तरेण प्रकाशेनान्तरमनूकाशेन बाह्यं निवेष्यं मूर्ध्ना स्तनयित्नुं निर्बाधेनाशनिं मस्तिष्केण विद्युतं कनीनकाभ्यां कर्णाभ्यार्ठ० श्रोतर्ठ० श्रोत्राभ्यां कर्णौ तेदनीमधरकण्ठेनापः शुष्ककण्ठेन चित्तं मन्याभिरदितिर्ठ० शीर्ष्णा निर्ऋतिं निर्जल्पेन शीर्ष्णा संक्रोशैः प्राणान् रेष्माणर्ठ० स्तुपेन स्वाहा ॥

ॐ इदं हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरर्ठ० सर्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त स्वाहा॥

ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिर्ठ०हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः स्वाहा॥

ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकर्ठ०सर्ठ०शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व स्वाहा॥

ॐ इन्दुर्दक्षः श्येन ऋतावा हिरण्यपक्षः शकुनो भुरण्युः। महान् सधस्थे ध्रुव आ निषत्तो नमस्ते अस्तु मा मा हिर्ठ०सीः स्वाहा॥

ॐ जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे। अनाविद्धया तन्वा जय त्वर्ठ० स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु स्वाहा॥

ॐ तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सह वाजयन्त। अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान्क्षिणन्ति शत्रूं १॥ रनपव्ययन्तः स्वाहा॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह स्वाहा॥

ॐ अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्यन्तरिक्षस्य धत्री विष्टम्भनीं दिशामधिपत्नीं भुवनानाम्। ऊर्मिर्द्रप्सो अपामसि विश्वकर्मा त ऋषिरश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा स्वाहा॥

ॐ द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं वायुश्छिद्रं पृणातु ते। सूर्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया स्वाहा॥

ॐ संबर्हिरङ्क्तार्ठ०हविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः संमरुद्भिः। समिन्द्रो विश्वदेवेभिरङ्क्ता दिव्यं नभो गच्छतु यत् स्वाहा॥

ॐ पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा स्वाहा॥

ॐ अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते स्वाहा॥

(अथवा)

केवलं नामाऽनुक्रमेण क्षेत्रपालहोमः

ॐ अजराय स्वाहा, ॐ व्यापकाय स्वाहा, ॐ इन्द्रचौराय स्वाहा, ॐ इन्द्रमूर्तये स्वाहा, ॐ उक्ष्णे स्वाहा, ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा, ॐ वरुणाय स्वाहा, ॐ वटुकाय स्वाहा, ॐ विमुक्ताय स्वाहा, ॐ लिप्तकाय स्वाहा, ॐ नीललोकाय स्वाहा, ॐ एकदंष्ट्राय स्वाहा, ॐ ऐरावताय स्वाहा, ॐ ओषधीघ्नाय स्वाहा, ॐ बन्धनाय स्वाहा, ॐ दिव्यकरणाय स्वाहा, ॐ कम्बलाय स्वाहा, ॐ भीषणाय स्वाहा, ॐ गवयाय स्वाहा, ॐ घंटाय स्वाहा, ॐ व्यालाय स्वाहा, ॐ अंशवे स्वाहा, ॐ चन्द्रवारुणाय स्वाहा, ॐ घटाटोपाय स्वाहा, ॐ जटिलाय स्वाहा, ॐ क्रतवे स्वाहा, ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा, ॐ विकटाय स्वाहा, ॐ मणिमाणाय स्वाहा, ॐ गणबन्धाय स्वाहा, ॐ मुण्डाय स्वाहा, ॐ बर्बूकराय स्वाहा, ॐ सुधापाय स्वाहा, ॐ वैनाय स्वाहा, ॐ पवनाय स्वाहा, ॐ ढुण्ढकरणाय स्वाहा, ॐ स्थविराय स्वाहा, ॐ दन्तुराय स्वाहा, ॐ धनदाय स्वाहा, ॐ नागकर्णाय स्वाहा, ॐ महाबलाय स्वाहा, ॐ फेत्काराय स्वाहा, ॐ वीरकाय स्वाहा, ॐ सिंहाय स्वाहा, ॐ मृगाय स्वाहा, ॐ यक्षाय स्वाहा, ॐ मेघवाहनाय स्वाहा, ॐ तीक्ष्णाय स्वाहा, ॐ अमराय स्वाहा, ॐ शुक्राय स्वाहा।

(कृताकृतम्)

लिङ्गतोभद्रदेवताहोमः

आचार्य और ब्राह्मण निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से लिङ्गतोभद्र देवताओं के लिए शनिकुण्ड में हवन करावें—

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा॥

ॐ वयठं० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि स्वाहा॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे व्यम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये स्वाहा॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रठं० हवे हवे सुहवठं० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रठं० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा॥

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषठं० रक्षमाणस्तव व्रते स्वाहा॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे स्वाहा॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ०स मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा॥

ॐ सुगा वो देवाः सदना अकर्म य आजग्मेर्ठ० सवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवीर्ठ०ष्यस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा॥

ॐ रुद्राः सर्ठ० सृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे। तेषां भानुरजस्त्र इच्छुक्रो देवेषुरोचते स्वाहा॥

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येतिसुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः। आवोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्यादर्ठ० होश्चिद्यावरिवोवित्तरात् आदित्येभ्यस्त्वा स्वाहा॥

ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् स्वाहा॥

ॐ विश्वेदेवासआगत शृणुता म इमर्ठ०हवम्। एदम्बर्हिनिषीदत। उपयामगृहीतोऽसिविश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यएष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः स्वाहा॥

ॐ अभि त्यं देवर्ठ०सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवर्ठ० रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्। ऊर्ध्वायस्याऽमतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपास्वः। प्रजाभ्यसत्वा प्रजास्त्वानुप्राणन्तु प्रजास्त्वमनुप्राणिहि स्वाहा॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः स्वाहा॥

ॐ ऋताषाड्ऋतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम। स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूउपस्त्यं महि जातन्ते अर्वन् स्वाहा॥

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतꣳ सेना अजयत्साकमिन्द्रः स्वाहा॥

ॐ यत्ते गात्रादग्निना पच्यमानादभिशूलं निहतस्यावधावति। मा तद्भूम्यामाश्रिषन्मा तृणेषु देवेभ्यस्तदुशद्भ्यो रातमस्तु स्वाहा॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा॥

ॐ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च। शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यर्ꣳहाः स्वाहा॥

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।

अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् स्वाहा ॥

ॐ परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वत ते ब्रवीमि मा नः प्रजार्ठ॰ रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा ॥

ॐ गणानान्त्वा गणपतिर्ठ॰ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ॰ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठ॰ हवामहे वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा ॥

ॐ अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे। गर्भे सन् जायसे पुनः स्वाहा ॥

ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवोविमहसः। स सुगोपातमो जनः स्वाहा ॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः स्वाहा ॥

ॐ पंचनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित् स्वाहा ॥

ॐ समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शंभूर्मयोभूरभि मा वहि स्वाहा। मारुतोऽसि मरुतां गणः शंभूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छंभूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा ॥

ॐ परि त्वा गिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः। वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः स्वाहा ॥

ॐ गणानान्त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम आहमजानि गर्धमात्वमजासि गर्भधम् स्वाहा॥

ॐ त्रिशर्ठ०द्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते। प्रतिवस्तोरह द्युभिः स्वाहा॥

ॐ महाँ२॥ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा स्वाहा॥

ॐ वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च म इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥

ॐ इड एह्यदित एहि काम्या एत। मयि वः काम धरणं भूयात् स्वाहा॥

ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिर्ठ०हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः स्वाहा॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मत्वाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा॥

ॐ अर्ठ०शुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपार्ठ० शुश्च मेऽन्तर्यामश्च म ऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च म आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः स्वाहा॥

ॐ अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य मनो वैश्वकर्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वारर्ठ॰ स्वारादन्तर्यामोन्तर्यामात्पंचदशः पञ्चदशाद्बृहद् भरद्वाज ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः स्वाहा॥

ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्रर्ठ॰ सौवर्ठ॰ शरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभ ऐडमैडान्मन्थी मन्थिन एकविर्ठ॰श एकविर्ठ॰शाद्वैराजं विश्वामित्र ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः स्वाहा॥

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् स्वाहा॥

ॐ अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी जगत्या ऋक्सममृक्समाच्छुक्रः शुक्रात् सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्निर्ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः स्वाहा॥

ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रम् गायत्रादुपार्ठ॰शुरुपार्ठ॰ शोस्त्रिवृत्त्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः स्वाहा॥

ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्। अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत स्वाहा॥

ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः स्वाहा॥

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व स्वाहा॥

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥

ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः स्वाहा॥

ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृक्काभ्यां गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीहा वल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्त्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिभ्यार्ठ० समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना स्वाहा॥

ॐ समख्ये देव्या धिया संदक्षिणयोरुचक्षसा। मा म आयुः प्रमोषीर्मो अहं तव वीरं विदेय तव देवि संदृशि स्वाहा॥

ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि स्वाहा॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा॥

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः स्वाहा॥ १॥ ॐ श्वित्रऽआदित्यानामुष्टोघृणीवान्वार्ध्रीनमस्ते मत्याऽअरण्याय सृमरो रुरूरौद्रः क्वयिः कुटरुर्द्रात्यौ हस्ते व्वाजिनाङ्कामायपिकः स्वाहा॥ २॥ ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः, शङ्कराय च मयस्कराय च नमः, शिवाय च शिवतराय च स्वाहा॥ ३॥ ॐ यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी॥ तयानस्तन्वाशन्तमयागिरिशन्तमिचाकशीहि स्वाहा॥ ४॥ ॐ उन्नतऽऋषभोव्वामनस्तऽऐन्द्रावैष्णवाऽउन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठस्तऽऐन्द्राबार्हस्पत्याः शुकरूपा व्वाजिनः। कल्माषाऽआग्निमारुताः श्यामः पौष्ष्णाः स्वाहा॥ ५॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वा क्षित्याऽउन्नयामि। समापोऽद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा॥ ६॥ ॐ उग्रश्च भीमद्ध्वान्तश्च धुनिश्च॥ सासह्वाँश्चाभियुग्वाचव्विक्षिपः स्वाहा॥ ७॥ ॐ रुद्राः सर्ठ०सृज्जय पृथिवींबृहः ज्योतिसमीधिरे॥ तेषांभानुरजस्त्रऽइच्छुक्रो देवेषु रोचते स्वाहा॥ ८॥

(अथवा)

केवलं नामाऽनुक्रमेण लिङ्गतोभद्रदेवताहोमः

१. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। २. ॐ सोमाय स्वाहा। ३. ॐ ईशानाय स्वाहा। ४. ॐ इन्द्राय स्वाहा। ५. ॐ अग्नये स्वाहा। ६. ॐ यमाय स्वाहा। ७. ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ८. ॐ वरुणाय स्वाहा। ९. ॐ वायवे स्वाहा। १०. ॐ अष्टवसुभ्यो स्वाहा। ११. ॐ एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा। १२. ॐ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा। १३. ॐ अश्विभ्यां स्वाहा। १४. ॐ सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। १५. ॐ सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा।

१६. ॐ नागेभ्यः स्वाहा। १७. ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्यः स्वाहा। १८. ॐ स्कन्दाय स्वाहा। १९. ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा। २०. ॐ शूलाय स्वाहा। २१. ॐ महाकालाय स्वाहा। २२. ॐ दक्षादिभ्यः स्वाहा। २३. ॐ दुर्गायै स्वाहा। २४. ॐ विष्णवे स्वाहा। २५. स्वधायै स्वाहा। २६. ॐ मृत्युरोगेभ्य स्वाहा। २७. ॐ गणपतये स्वाहा। २८. ॐ अद्भ्य स्वाहा। २९. ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा। ३०. ॐ पृथिव्यै स्वाहा। ३१. ॐ गङ्गादिनदीभ्यः स्वाहा। ३२. ॐ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा। ३३. ॐ मेरवे स्वाहा। ३४. ॐ गदायै स्वाहा। ३५. ॐ त्रिशूलाय स्वाहा। ३६. ॐ व्रजाय स्वाहा। ३७. ॐ शक्तये स्वाहा। ३८. ॐ दण्डा स्वाहा। ३९. ॐ खड्गाय स्वाहा। ४०. ॐ पाशाय स्वाहा। ४१. ॐ अङ्कुशाय स्वाहा। ४२. ॐ गौतमाय स्वाहा। ४३. ॐ भरद्वाजाय स्वाहा। ४४. ॐ विश्वामित्राय स्वाहा। ४५. ॐ कश्यपाय स्वाहा। ४६. ॐ जमदग्नये स्वाहा। ४७. ॐ वसिष्ठाय स्वाहा। ४८. ॐ अत्रये स्वाहा। ४९. ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा। ५०. ॐ ऐन्द्र्यै स्वाहा। ५१. ॐ कौमार्यै स्वाहा। ५२. ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा। ५३. ॐ वाराह्यै स्वाहा। ५४. ॐ चामुण्डायै स्वाहा। ५५. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। ५६. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। ५७. ॐ वैनायक्यै स्वाहा। ५८. ॐ असिताङ्गभैरवाय स्वाहा। ५९. ॐ रुरुभैरवाय स्वाहा। ६०. ॐ क्रोधभैरवाय स्वाहा। ६१. ॐ चण्डभैरवाय स्वाहा। ६२. ॐ उन्मत्तभैरवाय स्वाहा। ६३. ॐ कपालभैरवाय स्वाहा। ६४. ॐ भीषणभैरवाय स्वाहा। ६५. ॐ संहारभैरवाय स्वाहा।

अग्निपूजनमन्त्रः

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम॥

स्विष्टकृद्धवनञ्च

यजमान अपनी धर्मपत्नी के साथ खड़े होकर बड़े पात्र में तिल को लेवें, फिर दाहिने हाथ से स्रुवे में घी भरकर ब्रह्मा से स्पर्श कर निम्न मन्त्र द्वारा हवन कुण्ड में करे—**ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।**

नवाहुतिः

आचार्य और ब्राह्मण निम्न नाम मन्त्रों व मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से कुण्ड में नवाहुति प्रदान करावें, प्रत्येक आहुति के उपरान्त स्रुवे में जो घृत बचे, उसे यजमान प्रोक्षणीपात्र में छोड़ता जाये—

ॐ भूः स्वाहा — इदमग्नये न मम।
ॐ भुवः स्वाहा — इदं वायवे न मम।
ॐ स्वः स्वाहा — इदं सूर्याय न मम।

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषार्ठ०सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥

ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणर्ठ० रराणो वीहि मृडीकर्ठ० सुहवो न एधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजर्ठ० स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे न मम॥

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। ते भिर्न्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणायादित्यादितये न मम॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

बलयः

आचार्य शनिशान्तिअनुष्ठान में बलिदानकर्म को करवाने से पूर्व निम्न संकल्प यजमान से करावें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतस्य शनिशान्त्यनुष्ठानसिद्ध्यर्थं बलिदानं करिष्ये।

यजमान अलग-अलग पात्रों में पके हुए उड़द और भात को मिलाकर पत्तल आदि में रखकर उसमें दही मिलाकर, आग्नेयकोण से आरम्भ कर दसों दिशाओं में दस पात्रों में दस बलियों और दस दीपों को स्थापित करें। तदुपरान्त ग्रहवेदी के सामने एक ग्रहबलि जिसके चारों ओर चौंतीस अथवा एक छिपक रखे। इसके उपरान्त निम्न क्रम से आगे की क्रिया करें।

अधिदेवता—प्रत्यधिदेवता के सहित नव गणपति आदि की सात, पाँच या दस बलि आचार्य को यजमान से प्रदान करवानी चाहिये। पुनः प्रधान वेदी के आगे एक बड़े पात्र में पायस, माष (उड़द) और भात बलि और तीन दीप स्थापित करके वास्तुवेदी के आगे दीप के साथ एक बलि और योगिनी वेदी के आगे तीन दीप और एक बलि स्थापित करके क्षेत्रपाल की वेदी के आगे दीप के साथ एक बलि स्थापित करे। इसके उपरान्त अग्नि के आगे बाँस आदि से बनाये हुए एक बड़े पात्र में माष और भात की बलि दधि के साथ स्थापित करके उसके ऊपर मध्य में चतुर्मुख दीप प्रज्वलित करके रखें। यदि वहाँ सम्भव हो तो कूष्माण्ड जल से भरा हुआ एक मिट्टी

का घड़ा रख करके सौभाग्य परिमल द्रव्य से और पुष्प-माला आदि से बलि को अलंकृत करके संकल्प करके निम्न क्रम से सभी बलिदान करें।

बलिदानम्

ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहाप्रतीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा ॥

ॐ इन्द्रादिभ्यो दशभ्यो दिक्पालेभ्यो नमः। इन्द्रादिभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमान् सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि। भो इन्द्रादयः स्वां स्वां दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारो वरदा भवत। अनेन बलिदानेन इन्द्रादयो दशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्।

ततः—**ॐ ग्रहाऽउर्जा हुतयोवयन्तो विप्रायमतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोहमिषमूर्जꣳ समग्रभमुपयामगृहीतोसीद्रायत्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषतेयो निरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम् ॥**

ग्रहपीठस्थेभ्यः सूर्यादिभ्य अधिदेवताप्रत्यधिदेवतापञ्चलोकपालक्रतुसंरक्षकदिक्पालसहितेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सूर्यादिभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्य इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भोः सूर्यादयो देवाः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारो वरदा भवत। अनेन बलिदानेन सूर्यादयो ग्रहाः प्रीयन्ताम्।

आचार्य प्रधानवेदी के पास यजमान को ले जाकर शनिदेवता के निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु: न: ॥

आचार्य शनिदेवता के वाहन गृध्र का आवाहन निम्न नाम मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से करावें—**ॐ गृद्ध्राय नम: गृद्ध्रं आवाहयामि स्थापयामि।**

आचार्य निम्न वाक्य का उच्चारण यजमान से करावें—**ॐ शनिगृद्ध्रेभ्य: साङ्गेभ्य: सपरिवारेभ्य: सायुधेभ्य: इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो: शनिदेवता गृध्रदेवता: इमं दीपत्रययुतं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु:कर्तार: क्षेमकर्तार: शान्तिकर्तार: तुष्टिकर्तार: पुष्टिकर्तार: वरदा भवत। अनेन बलिदानेन शनिगृध्रसहित-आवाहितदेवा: प्रीयन्ताम्।**

निम्न मन्त्र और वाक्य का उच्चारण करके आचार्य वास्तुपीठ की पूजा यजमान से करावें—**ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशोऽअनमीवो भवान:। यस्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥ ॐ वास्तोष्पतये नम: ॥**

शिख्यादिभ्यश्च साङ्गेभ्य: सशक्तिकेभ्य: इमं सदीपदधिमाष-भक्तबलिं समर्पयामि। भो: वास्तोष्पते शिख्यादिदेवताश्च इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु:कर्त्र्य: क्षेमकर्त्र्य: शान्तिकर्त्र्य: पुष्टिकर्त्र्य स्तुष्टिकर्त्र्यो वरदा भवत। अनेन बलिदानेन वास्तोष्पति: शिख्यादयश्च प्रीयन्ताम्।

योगिनीवेदी के पास जाकर आचार्य निम्न मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए यजमान से बलि प्रदान करावें—**ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्य-श्वक: सुभद्रिकाङ्काम्पील-वासिनीम्॥ ॐ महाकाल्यै नम:। ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्नि-षाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण॥ ॐ महालक्ष्म्यै नम: ॥**

ॐ पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥ ॐ महासरस्वत्यै नमः ॥

ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यश्च साङ्गाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भोः भोः महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यः चतुःषष्टियोगिन्यश्च देवताः अमुं बलिं गृहीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यस्तुष्टिकर्त्र्यो वरदा भवत। अनेन बलिदानेन महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो योगिन्यश्च प्रीयन्ताम्॥

क्षेत्रपालबलिदानम्

यजमानः जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः, अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्य शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपालादिप्रीत्यर्थं भूत-प्रेत-पिशाचादिनिवृत्यर्थं च सार्वभौतिकबलिदानं करिष्ये।

भूमि में सूर्यादि देवताओं की महाबलि आचार्य निम्न दो वाक्यों का उच्चारण करके यजमान से प्रदान करावे—**ॐ सर्वभूतेभ्यो नमः। ॐ क्षेत्रपालादिभ्यो नमः।**

तदुपरान्त यजमान के दायें हाथ में जल व अक्षत देकर आचार्य निम्न पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करें—

अधश्चैव तु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः।
सपत्नीपरिवाराश्च परिगृह्णन्तु मे बलिम्॥ १॥

ईशानोत्तरयोर्मध्ये क्षेत्रपालो महाबलः।
भीमनामा महादंष्ट्रः स च गृह्णातु मे बलिम्॥ २॥

ये केचित्त्विह लोकेषु आगता बलिकाङ्क्षिणः।
तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः॥ ३॥

आचार्य निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करें—**ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः॥**

आचार्य आगे दिए हुए बलि वाक्य का कर्ता से उच्चारण करवाके वैतालादि परिवार सहित, क्षेत्रपालादि समस्त परिवारभूतों के लिये उसी से इस बलि को प्रदान करावें—

बलिमन्त्र—वेतालादिपरिवारयुतक्षेत्रपालादिसर्वभूतेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस-शाकिनी-डाकिनीसहितेभ्य इमं बलिं समपर्यामि। भो! भो! क्षेत्रपालादयः अमुं बलिं गृह्णीत मम यजमानस्य आयुः कर्तारः, क्षेमकर्तारः, शान्तिकर्तारः, पुष्टिकर्तारः, तुष्टिकर्तार, निर्विघ्नकर्तारः वरदा भवत अनेन सार्वभौतिकबलिप्रदानेन क्षेत्रपालादयः प्रीयन्ताम्।

निम्न पौराणिक श्लोकों का आचार्य और ब्राह्मण उच्चारण करें—

बलिं गृहणन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः (नगाः)॥
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगरक्षसाः।
डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः॥
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वाः सौम्या विद्याधरानगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः॥
जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः॥
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूत-प्रेताः सुखावहाः॥
भूतानि यानीह वसन्ति तानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र॥

ततो दुर्ब्राह्मणेन नापितेन (शूद्रेण) वा क्षेत्रपालबलिं गृहीत्वा यजमानपृष्ठतोऽनवेक्षमाणेन यजमानमस्तकोपरि सकृद् भ्रामयित्वा बहिर्देशे चतुष्पथे निःक्षिपेत्। तत आचार्यः-

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्क्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा ग्घ्राताय स्वाहा निविष्ट्टाय स्वाहो पविष्ट्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्ग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहासर्ठ० हानायस्वाहोपस्स्थिताय स्वाहा ऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा॥ इति मन्त्रेण यजमानमस्तकोपरि जलं प्रक्षिपेत्।

पूर्णाहुतिः

यजमानः जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्ये।

आचार्य यजमान से पूर्णाहुति का ध्यान करवाते हुए निम्न श्लोक का उच्चारण करवाके प्रणाम करावें—

कल्याणदात्री कल्याणीं सर्वकामप्रपूरणीम्।
हवनस्य फलप्राप्त्यै पूर्णाहुत्यै नमो नमः॥

पूर्णाहुतिमन्त्राः

ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ२॥ उदारदुपाꣳशुना सममृतत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानां मृतस्य नाभिः॥ १॥

वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः। उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुः शृङ्गोऽवमीद्गौर एतत्॥ २॥

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां२॥ आविवेश॥ ३॥

त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्। इन्द्र एकꣳ सूर्य एकं जजान वेनादेकꣳ स्वधया निष्टतक्षुः॥ ४॥

एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे। घृतस्य धाराअभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम्॥ ५॥

सम्यक् स्त्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः। एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इव क्षिपणोरीषमाणाः॥ ६॥

सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥ ७ ॥

अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासोअग्निम्।
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः ॥ ८ ॥

कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभिचाकशीमि।
यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते ॥ ९ ॥

अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त।
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते ॥ १० ॥

धामं ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि।
अपामनीके समिथे य आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम्॥ ११ ॥

पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥ १२ ॥

सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वा घृतेन स्वाहा॥ १३ ॥

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्।
कविर्ठ० सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥ १४ ॥

पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जर्ठं० शतक्रतो॥ १५ ॥

वसोर्धाराहवनम्

यजमानः जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं कृतस्य शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं वसोर्द्धारां होष्यामि।

निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से वसोर्धारा का पूजन आचार्य करावें—

दिव्यवस्त्रा दिव्यदेहा नालालङ्कारभूषिताः।
वसोर्द्धारा महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा॥
शुद्धस्फटिकसंकाशा दिव्यायुधकरावृताः।
एकभोगाः साक्षसूत्राः वसोर्द्धारा नता वयम्॥

वसोर्धाराहोममन्त्राः

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा॥ १॥

शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्म्माँश्चा शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यर्ठ० हाः॥ २॥

ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ्। मितश्च संमितश्च सभराः॥ ३॥

ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च। धर्ता च विधर्ता च विधारयः॥ ४॥

ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च। अन्तिमित्रश्च दूरेअमित्रश्च गणः॥ ५॥

ईदृक्षास एतादृक्षासऽऊषणुः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास एतन। मितासश्च संमितासो नो अद्य सभरसो मरुतो यज्ञे अस्मिन्॥ ६॥

स्वतवांश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चोज्जेषी॥ ७॥

इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्। एवमिमं यजमानं दैविश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु॥ ८॥

इमर्ठ० स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये। उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्समुद्रियर्ठ० सदनमाविशस्व॥ ९॥

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥ १०॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तुः नः॥

रुद्रसूक्तम्—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ १॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ २॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिर्ठ०सीः पुरुषं जगत्॥ ३॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठ० सुमना असत्॥ ४॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहीर्ठ०श्च सर्व्वान् जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव॥ ५॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये

चैनर्ठ० रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषार्ठ० हेड ईमहे॥ ६॥ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥ ७॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥ ८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥ ९॥ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२। उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥ १०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥ ११॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्॥ १२॥ अवतत्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्त्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥ १३॥ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ १४॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥ १५॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषुमा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ १६॥

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा॥

हवन के बाद जो घृतादि बचा हो, उसे आचार्य प्रोक्षणीपात्र में यजमान से इस वाक्य का उच्चारण करवा के छोड़वा दें—**ॐ इदमग्नये वैश्वानराय न मम।**

अग्नेः प्रदक्षिणम्

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से अग्निदेवता की प्रदक्षिणा करवायें—

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥

आचार्य पश्चिम दिशा की ओर आसन पर बैठकर निम्न पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से अग्निदेवता की स्तुति करावें—

जितन्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुष - पूर्वज॥ १॥
देवानां दानवानां च सामान्यमधिदैवतम्।
सर्वदा चरणद्वन्द्वं व्रजामि शरणं तव॥ २॥
एकस्त्वमसि लोकस्य स्रष्टा संहारकस्तथा।
अव्यक्तश्चानुमन्ता च गुणमाया समावृतः॥ ३॥
संसारसागरं घोरमनन्तक्लेशभाजनम्।
त्वामेव शरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः॥ ४॥
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै होमात्मने नमः॥ ५॥

आचार्य निम्न मन्त्र और श्लोक का उच्चारण करते हुए शनि देवता की प्रार्थना यजमान से करावें—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तुः नः॥

शनैश्चराय शान्ताय सर्वाभीष्टप्रदायिने।
शरण्याय वरेण्याय सर्वेशाय नमो नमः॥ १॥
सौम्याय सुरवन्द्याय सुरलोकविहारिणे।
सुखासनोपविष्टाय सुन्दराय नमो नमः॥ २॥

भस्मधारणम्

आचार्य हवनकुण्ड से स्रुवे के द्वारा भस्म निकाले और यजमान के शरीर में निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके उसको लगावें-

ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः-ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्-ग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्-दक्षिणांसे। ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्हृदि।

प्रणीतापात्र के जल से मार्जन करवाके प्रज्वलित शनिकुण्ड में यजमान से पवित्री का परित्याग करवा दें।

पूर्णपात्रदानम्

आचार्य निम्न संकल्प यजमान से करवाके ब्रह्मा को दक्षिणा सहित पूर्णपात्र प्रदान करावें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः शर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अद्य कृतस्य शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे।

यजमान के द्वारा प्रदत्त किये गये दक्षिणा सहित पूर्णपात्र को इस वाक्य का उच्चारण करके ब्रह्मा ग्रहण करें-**ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु।**

श्रेयोदानम्

आचार्य निम्न वाक्य का उच्चारण करके यजमान के दोनों हाथों में फलादि देवें—**कृतस्य शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य 'शिवा आपः सन्तु' इति यजमान दक्षिणहस्ते जलं दद्यात्। सौमनस्यमस्तु इति पुष्पं दद्यात्। अक्षतं चारिष्टं चास्तु इति अक्षतान् दद्यात्। तत आचार्यः हस्ते जलाक्षतपूगीफलमादाय भवन्नियोगेन मया अस्मिन् शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणि यत्कृतम् आचार्यात्वं तथा च एभिर्ब्रह्मगाणपत्यसदस्योपद्रष्टजापकादिभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं जपहवनादिकं च तेनोत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत् साक्षतेन सजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे, तेन श्रेयसा त्वं श्रेयस्वान भव।** यजमान '**भवामि**' कहकर उसे ले लेवे।

अवभृथस्नानम्

यजमान प्रधानवेदी के ऊपर स्थापित प्रधानकलश के पास स्रुव-स्रुवादि यज्ञपात्र व पूजन सामग्री को लेकर वेदमन्त्रों व भगवान् का कीर्तन व वाद्य घोष के साथ आचार्य, ब्राह्मणों और बन्धु-बान्धव तथा पारिवारिकजनों के साथ गंगा अथवा नदी या तालाब के किनारे जायें। आधे मार्ग पर क्षेत्रपाल का पूजन करके आचार्य क्षेत्रपाल को बलि प्रदान करें। नदी व जलाशय के किनारे जाने पर आचार्य और ब्राह्मण स्वस्तिवाचन करके निम्न संकल्प अवभृथस्नान के लिए यजमान से करावें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) मम सर्वेषां परिवाराणां तथाऽन्येषां समुपस्थितानां जनानाञ्च सर्वविधकल्याणपूर्वकं धर्मार्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतिपूर्वकं च कृतस्य शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्यकालेऽस्मिन् अस्यां नद्यां जलाशये वा मांगलिक अवभृथस्नानं समस्तसमुपस्थितजनैः सहाहं करिष्ये।''

अनन्तरं नद्यां जलाशये वा जलमातृणामावाहनं पूजनं च कुर्यात्। तद्यथा—ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः, मत्सीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्म्यै नमः, कूर्मीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः दर्दुर्यै नमः, दर्दुरीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः मकर्यै नमः, मकरीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः जलूक्यै नमः, जलूकीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः तन्तुक्यै नमः, तन्तुकीमावाहयामि स्थापयामि। ततो वरुणदेवतामावाहयेत्—

आगच्छ जलदेवेश जलनाथ पयस्पते।
तव पूजां करिष्यामि कुम्भेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

इत्यावाह्य सम्पूज्यं च—

श्वेताभ्र शिखिराकार सर्वभूतहिते रतः।
गृहाणार्घ्यमिमं देव जलनाथ नमोऽस्तु ते॥

इति विशेषार्घ्यं दद्यात्। ततः—

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामस्युराचके॥ १॥ ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० समान आयुः प्रमोषीः॥ २॥ ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो बह्नितमर्ठ० शोशुचानो विश्वा द्वेषार्ठ०सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥ ३॥ ॐ सत्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या ऽउषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्वनो वरुणर्ठ० रराणो वीहि मृडीकर्ठ० सुहवो नऽएधि॥ ४॥ ॐ मापो मौषधीर्हिर्ठ० सीर्द्धाम्नो धाम्ना राजँस्ततो व्वरुण नो मुञ्च। यदाहुरघ्न्या ऽइति वरुणओत शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च॥ ५॥ ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमर्ठ० श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम॥ ६॥ ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादूत। अथो यमस्य षड्वीशात् सर्वस्माद्देवकिल्विषात्॥ ७॥ ॐ अवभृथ निचुं पुण निचेरुरसि निचुं पुणः। अव देवैर्द्देवकृतमेनो यासिषमवमर्त्त्यैमर्त्त्यकृतं पुरुराब्णो देवरिषस्पाहि॥ ८॥

इति मन्त्रैः सम्प्रार्थ्य स्त्रुवरेखया तीर्थप्रकल्पनं कुर्यात्।

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि चाकृष्याङ्कुशमुद्रया।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर॥

इति रज्वादिना परितश्चतुरस्त्रं स्नानार्थं व्यवस्थां प्रकल्पयेत्।

ततः—ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥ इति मन्त्रेण गङ्गां नदीं जलाशयं वा सम्पूज्य ततो लाजादिना जीवमातृणां बलिं दद्यात् तद्यथा—ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्यै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः धनदायै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दायै

नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः विमलायै नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः मङ्गलायै नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः अचलायै नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः ।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तुः नः ॥

रुद्रसूक्तम्—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ १ ॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ २ ॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिर्ठ०सीः पुरुषं जगत्॥ ३ ॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठ० सुमना असत्॥ ४॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहीर्ठ०श्च सर्व्वान् जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव॥ ५॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनर्ठ० रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषार्ठ० हेड ईमहे॥ ६॥ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥ ७॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥ ८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥ ९॥ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२। उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥ १०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥ ११॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्॥ १२॥ अवतत्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्त्राक्ष शतेषुधे।

निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥ १३॥ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ १४॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥ १५॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषुमा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ १६॥

यजमान हवनकुण्ड में से सभी हवन किये हुए द्रव्यों को निकालकर गंगा, नदी अथवा जलाशय में छोड़ दे।

ततो जले—'वडवाग्निरूपायाग्नये नमः' इतिमन्त्रेण षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा सम्पूज्य द्वादश आज्याहुतीन् जुहुयात्। तद्यथा—

१. ॐ अद्भ्यः स्वाहा, इदमद्भ्यो न मम॥ २. ॐ वार्भ्यः स्वाहा, इदं वार्भ्यो न मम॥ ३. ॐ उदकाय स्वाहा, इदमुदाय न मम॥ ४. ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा, इदं तिष्ठन्तीभ्यो न मम॥ ५. ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा, इदं स्रवन्तीभ्यो न मम॥ ६. ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा, इदं स्यन्दमानाभ्यो न मम॥ ७. ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा, इदं कूप्याभ्यो न मम॥ ८. ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा, इदं सूद्याभ्यो न मम॥ ९. ॐ धार्याभ्यः स्वाहा, इदं धार्याभ्यो न मम॥ १०. ॐ अर्णवाय स्वाहा, इदमर्णवाय न मम॥ ११. ॐ समुद्राय स्वाहा, इदं समुद्राय न मम॥ १२. ॐ सरिराय स्वाहा, इदं सरिराय न मम॥

ततो यजमानः सम्पूजितेन प्रधानकलशोदकेन—१. ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥ २. ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोद्धयुरुशर्ठ० स मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा॥ ३. ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः॥ यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषार्ठ०सि प्र मुमुग्ध्यस्मत्॥ ४. ॐ स त्वं नो अग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो

अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणर्ठ० रराणो वीहि मृडीकः सुहवो न ऽएधि॥ ५. ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमर्ठ० श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम॥

यजमान वारुण मन्त्रों से स्नान करके प्रधान कलश के अन्दर से कुशा एवं दूर्वा के द्वारा जल निकालकर अन्य लोगों के ऊपर छोड़े, इसके उपरान्त यजमान कुण्ड से भस्म स्रुवे के द्वारा निकालकर अपने शरीर पर उसे लगावे और नदी अथवा जलाशय में जाकर स्नान कर, नूतन वस्त्र पहन कर अपने मस्तक पर तिलक लगावे। तदुपरान्त इस मन्त्र से सूर्य का उपस्थान आचार्य करावें—**ॐ हर्ठ० सः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥**

पुनः तीर्थदेवताओं का पूजन यजमान से करवाके आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से हाथ जोड़कर प्रार्थना करावें—**ॐ हिरण्यशृङ्गोऽयो अस्य पादा मनोजवा अवर इन्द्र आसीत्। देवा इदस्य हविरद्यमायन्यो अर्वन्तं प्रथमो अध्यतिष्ठत्॥ १॥ ईर्मान्तासः सिलिकमध्यमासः सर्ठ०शूरणासो दिव्यासो अत्याः। हर्ठ०सा इव श्रेणिशो यतन्ते यदाक्षिषुर्दिव्यमज्ममश्वाः॥ २॥ तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन् तव चित्तं वात इव ध्रजीमान्। तव शृङ्गाणि विष्ठिता पुरुत्रारण्येषु जर्भुराणा चरन्ति॥ ३॥**

आचार्य और ब्राह्मणों को यजमान दक्षिणा देवे, इसके उपरान्त प्रधान कलश व पूजा सामग्री को लेकर भगवान् का कीर्तनादि करें। पुनः उनके साथ सपत्नीक यजमान शनिशान्तिअनुष्ठान स्थल में आकर हाथ, पैर धोकर मण्डप की प्रदक्षिणा करके मण्डप के पूर्वद्वार से अन्दर आवे। फिर प्रधानकलश को प्रधानवेदी पर रखे और आचार्य शनिशान्तिअनुष्ठान कर्म के शेष कर्मों को पुनः प्रारम्भ करवायें।

छायापात्रदानसंकल्पः

शनिशान्तिअनुष्ठानकर्म में शनिछायापात्रदान करने हेतु शनि का दान लेने वाले ब्राह्मण को बुलाकर ही छायापात्र का दान करना चाहिए, क्योंकि इस दान को लेने का अधिकार मात्र शनि के ब्राह्मण को ही है। लोहे की कढ़ाई में सरसों का तेल भरकर उसमें काला तिल, स्वर्ण और कुछ द्रव्य छोड़कर यजमान निम्न संकल्प को करके अपने मुख की छाया को देखें—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्याः अमुकतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) आत्मनः जन्मकुण्डल्यां वर्षकुण्डल्यां गोचरकुण्डल्यां ये केचन् दुष्टग्रहास्तैः शुचितस्य सूचयिष्यमाणस्य दुष्टफलस्य निवृत्तये तथा च शनिग्रहस्य विशेषतः अनिष्टसूचकफलनिवृत्तये आत्मनः छायावलोकितं ससुवर्णं सर्षप तैलपूरितम् इदं लोहपात्रं सूपूजिताय अमुकनामगोत्राय अमुकनामविप्राय शनिग्रहप्रीतये तुभ्यमहं सम्प्रददे।

तिलपात्रदानसंकल्पः—शनिशान्तिअनुष्ठानकर्म में स्वर्ण सहित तिलपात्रदान करने हेतु शनि का दान लेने वाले ब्राह्मण को ही तिलपात्र का दान करना चाहिए, क्योंकि इस दान को लेने का अधिकार मात्र शनिदेवता के ब्राह्मण को ही है।

यजमानः—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त-सर्वविध-पापक्षयार्थं सुवर्णसहितं सतिलं ताम्रपात्रदान महं करिष्ये।

आचार्यादिभ्योदक्षिणादानम्—यजमानः जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, कृतस्य शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य मनसोद्दिष्टां दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।

भूयसीदक्षिणासंकल्पः—यजमानः जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, शनिग्रह-निमित्तकससुवर्ण-छायावलौकिककसर्षपलौहपात्रदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं सांगतासिद्ध्ये च भूयसीं दक्षिणां अमुकनामगोत्राय अमुकनामविप्राय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

कपिलागोदानसंकल्पः—यजमानः जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतस्य शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थमिदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय[1] तुभ्यमहं सम्प्रददे।

ब्राह्मणभोजनसंकल्पः—यजमानः जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, कृतस्य शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यथासङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये।

उत्तरपूजनम्—यजमानः जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, कृतस्य शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च आवाहितदेवानामुत्तरपूजां करिष्ये। संकल्प के उपरान्त गणपत्यादिदेवताओं की पूजा भी आचार्य उसी के द्वारा करावें।

मण्डपप्रधानपीठादिदानसंकल्पः—यजमान मण्डप और प्रधानपीठ के दान हेतु निम्न संकल्प को करके आचार्य को प्रदान करे—**देशकालौ संकीर्त्य, कृतस्य शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थमिमानि सोपस्करसहितानि प्रधानपीठादीनि आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

संकल्प के उपरान्त यजमान प्रधानपीठादि आचार्य को प्रदान करे।

---

[1] अ-आचार्याय च गां दद्यात्सवत्सां हेमसंयुताम्। (विश्वकर्मप्रकाश)
ब-गौर्देया कर्मणोऽस्यान्ते पृथगेभ्यः पयस्विनी। (याज्ञवल्क्यसंहिता ३।३०५)

अथाभिषेकः

यजमान और उसकी पत्नी[1] के अभिषेक के लिये आचार्य भद्रासन बिछावें। उस आसन पर यजमान पूर्वाभिमुख बैठे तथा उसकी पत्नी उसके वाम[2] भाग में बैठे। आचार्य और ब्राह्मण पूर्वस्थापित सभी कलशों के जल को शुद्ध ताँबे के चौड़े मुख के पात्र में थोड़ा-थोड़ा लेकर 'दूर्वा और पंचपल्लवादि' से निम्न वैदिक मंत्रों का उच्चारण करके सपत्नीक यजमान का अभिषेक करें।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ १॥ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ २॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ ३॥ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ ४॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरे वशान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ५॥ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ ६॥ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ ७॥ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे॥ ८॥ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥ ९॥ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव॥ १०॥

---

[1] पत्नी धर्मार्थकामानां कारणं प्रवरं स्मृतम्। अपत्नीको नरो भूप कर्मयोग्यो न जायते।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यः शूद्रोऽपि वा नरः॥ (यज्ञ-मीमांसा)

[2] आशीर्वादेऽभिषेके च पादप्रक्षालने तथा। शयने भोजने चैव पत्नी तूत्तरतो भवेत्॥ (धर्मप्रवृत्तौ)

पौराणिकमन्त्रैरभिषेकः

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः ।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥ १ ॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥ २ ॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥ ३ ॥
कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥ ४ ॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध-जीव-सितार्कजा ॥ ५ ॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः ।
देव-दानव-गन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः ॥ ६ ॥
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च ।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥ ७ ॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्याऽवयवाश्च ये ॥ ८ ॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामाऽर्थसिद्धये ॥ ९ ॥

अभिषेक के उपरान्त यजमान की पत्नी पति के दाहिनी[1] ओर बैठ जावें और आगे के कृत्यों में पति का सहयोग करे।

---

[1] व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थी-सहभोजने। व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे ॥
सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा। (यज्ञमीमांसा)

क्षमा-प्रार्थना

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां देव देवेश सर्वपापहरा भव॥ १॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥ २॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥ ३॥
कर्मणा मनसा वाचा पूजनं यन्मया कृतम्।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वर॥ ४॥

देवविसर्जनम्

आचार्य निम्न मन्त्रों और श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से आवाहित देवताओं का विसर्जन करावें—

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥

ॐ यज्ञ यज्ञ गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनि गच्छ स्वाहा। एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा॥

ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहान्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देवठ॰सवितारं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहा होरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दार्ठ॰सि गच्छ स्वाहा द्या वा पृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा। मनो मे हार्दि यच्छ दिवं ते धूमौ गच्छ तु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा॥

शनैश्चराय शान्ताय सर्वाभीष्टप्रदायिने।
शरण्याय वरेण्याय सर्वेशाय नमो नमः॥
सौम्याय सुरवन्द्याय सुरलोकविहारिणे।
सुखासनोपविष्टाय सुन्दराय नमो नमः॥

अनेन यथाशक्तिकृतेन शनिशान्त्यनुष्ठानकर्मणा श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयन्ताम्। यह कहकर शनिशान्तिअनुष्ठान कर्म को ईश्वर को अर्पण करें। पुनः यजमान तीन बार निम्न वाक्यों का उच्चारण करें—

ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः।

यजमानरक्षाबन्धनम्

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान को रक्षासूत्र बाँधे—

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥

यजमानपत्नीरक्षाबन्धनम्

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण कर यजमान की पत्नी को रक्षासूत्र बाँधे—

ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृणानाः सुकतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधि रोचने दिवः॥

यजमानतिलककरणम्

निम्न श्लोक का उच्चारण कर आचार्य यजमान के मस्तक पर रोली का तिलक करे-

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु कामधर्मार्थसिद्धये॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण कर तिलक के मध्य में अक्षत लगावें-

येऽक्षताः क्षतहन्तारो हन्तारोऽखिलवैरिणाम्।
ताँस्ते मूर्ध्नि प्रयच्छामि तेन ते शं सदा भवेत्॥

यजमानायाशीर्वादः

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ १॥
ॐ दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथो त्वं दीग्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्॥ २॥

भावार्थ—चिरन्तन कीर्ति इन्द्र हमारा कल्याण करे। सभी धनों का स्वामी पूषा हमारा कल्याण करे। तार्क्ष्यदेव हमारा कल्याण करे एवं बृहस्पति देवता भी हमारा कल्याण करते रहें॥ १॥ हे ओषधे! तुम्हारा खनन करने वाला लम्बी आयु का हो, जिस रोगी के लिये मैं स्वयं तुम्हें खोद रहा हूँ, वह रोगी भी लम्बी आयु वाला होवे। इसके साथ ही तुम भी स्वयं लम्बी आयु वाली होकर शत-शत काण्ड-प्रकाण्डों वाली होकर सभी जगह प्रसरित होओ॥ २॥

यजमानपत्न्या आशीर्वादः

ॐ यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे। तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयि गृह्णाम्यक्षितम्॥ १॥
ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ २॥

भावार्थ—हे इन्द्र! यह द्यावापृथिवी जितने विस्तारवाली व जितने विस्तार वाले सातों सागर हैं। उतने ही परिमाण वाले आपके ग्रह को मैं अन्न के साथ ग्रहण करता हूँ। हे इन्द्र! मैं अपने में ही उस ग्रह को अनुपक्षीण ग्रहण करता हूँ॥ १॥ हे श्रेष्ठपुरुष! श्री व लक्ष्मी तेरी पत्नियाँ हैं। अहोरात्र तुम्हारे दो कक्ष हैं। नक्षत्र तेरा

रूप है। अश्विनौ तेरा फैला हुआ मुख है। हे भगवन्! इच्छा करते हुए तुम मुझे अपनाने की इच्छा करो। इस परलोक और सर्वलोक को मेरे लिए इच्छा करो॥ २॥

श्रीर्वर्च्चस्वमायुष्यारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥ १॥
आयुष्कामो यशस्कामो पुत्र-पौत्रस्तथैव च।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु ते॥ २॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्॥ ३॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥ ४॥

भावार्थ—श्री, वर्चस्व, आयुष्य, पवित्र एवं महिमायुक्त आरोग्य, धान्य, धन, पशु, बहुपुत्रलाभ, संवत्सर, दीर्घायु को आप प्राप्त करें॥ १॥ तुम्हारी आयुष्य की कामना, धन की कामना एवं सभी इच्छाएँ पूर्ण हों॥ २॥ अपुत्र पुत्रवान् हों, पुत्रवान् पौत्रवान् हों, निर्धन धनी हों तथा सौ वर्ष तक जीवित रहे॥ ३॥ तुम्हारे मन्त्रार्थ सफल हों, मनोरथ पूर्ण हों, शत्रुओं के बुद्धि का नाश हो एवं मित्रों का उदय हो॥ ४॥

शनि का दान लेने वाले ब्राह्मण को सर्वप्रथम भोजन करवाके यजमान आचार्य और ब्राह्मणों को भोजन करावें। तदुपरान्त यजमान अपनी धर्मपत्नी एवं परिवार के सदस्यों, बन्धु-बान्धवों के साथ शनिशान्तिअनुष्ठानकर्म के महाप्रसाद को प्रसन्नचित्त होकर ग्रहण करें।

॥ इति शनिशान्त्यनुष्ठानपद्धतिः ॥

परिशिष्टो भागः

ध्यानम्

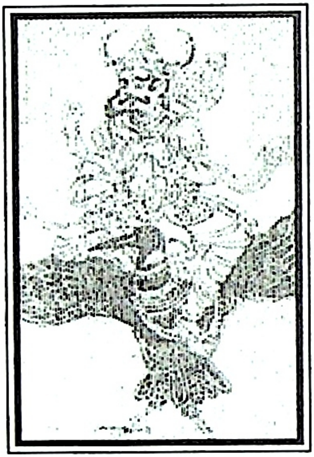

चापासनो गृध्रघरस्तु नीलः प्रत्यङ्गमुखः काश्यप-गोत्रजातः ।
स-शूल-चापेषु गदाधरोऽव्यात् सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च शौरिः ॥ १ ॥
नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रासनस्थो विकृताननश्च ।
केयूर-हारादि-विभूषिताङ्गः सदाऽस्तु मे मन्दगतिः प्रसन्नः ॥ २ ॥

शनिसहस्त्रनामस्तोत्रम्

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीशनैश्चरसहस्त्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य कश्यप-ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शनैश्चरो देवता, शं बीजम्, नम् शक्तिः, मम् कीलकम्, शनैश्चरप्रसादसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

करन्यासः—शनैश्चराय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः, अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः, सौरये अनामिकाभ्यां नमः, शुष्कोदराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः, छायात्मजाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—शनैश्चराय हृदयाय नमः, मन्दगतये शिरसे स्वाहा, अधोक्षजाय शिखायै वषट्, सौरये कवचाय हुम्, शुष्कोदराय नेत्रत्रयाय वौषट्, छायात्मजाय अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

चापासनो गृध्रघरस्तु नीलः प्रत्यङ्गमुखः काश्यप-गोत्रजातः।
स-शूल-चापेषु गदाधरोऽव्यात् सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च शौरिः॥ १॥
नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रासनस्थो विकृताननश्च।
केयूर-हारादि-विभूषिताङ्गः सदाऽस्तु मे मन्दगतिः प्रसन्नः॥ २॥

ॐ अमिताभाष्यघहरः अशेषदुरितापहः।
अघोररूपोऽतिदीर्घकायो ऽशेषभयानकः॥
अन्तो अन्नदाता चाश्वत्थमूलजपे प्रियः।
अतिसम्पत्प्रदोऽमोघः अन्यस्तुत्या प्रकोपितः॥
अपराजितो अद्वितीयः अतितेजो ऽभयप्रदः।
अष्टमस्थोञ्जननिभः अखिलात्मार्कनन्दनः॥
अतिदारुण अक्षोभ्यः अप्सरोभिः प्रपूजितः।
अभीष्टफलदो ऽरिष्टमथनोऽमरपूजितः॥
अनुग्राह्यो प्रमेय पराक्रम विभीषणः।
असाध्ययोगो अखिलदोषघ्नः अपराकृतः॥
अप्रमेयोऽतिसुखदः अमराधिपपूजित।
अवलोकात् सर्वनाशः अश्वत्थाम द्विरायुधः॥

अपराधसहिष्णुश्च अश्वत्थाम सुपूजितः।
अनन्तपुण्यफलदो अतृप्तोतिबलोपिच॥
अवलोकात् सर्ववन्द्यः अक्षीणकरुणानिधिः।
अविद्यामूलनाशश्च अक्षय्यफलदायकः॥
आनन्दपरिपूर्णश्च आयुष्कारक एव च।
आश्रितेष्टार्थवरदः आधि-व्याधिहरोपिच॥
आनन्दमय आनन्दकरो आयुधधारकः।
आत्मचक्राधिकारी च आत्मस्तुत्यपरायणः॥
आयुष्करो आनुपूर्व्यः आतायत्तजगत्त्रयः।
आत्मनामजपप्रीतः आत्माधिकफलप्रदः॥
आदित्यसम्भवो आर्तिभञ्जनो आत्मरक्षकः।
आपद् बान्धव आनन्दरूपो आयुःप्रदोपिच॥
आकर्णपूर्णचापश्च आत्मोद्दिष्ट द्विजप्रदः।
आनुकूल्यो आत्मरूप प्रदिमादान सुप्रियः॥
आत्मारामो आदिदेवो आपन्नार्ति विनाशनः।
इन्दिरार्चितपादश्च इन्द्रभोगफलप्रदः॥
इन्द्रदेव स्वरूपश्च इष्टेष्ट-वरदायकः।
इष्टापूर्तिप्रदो इन्दुमतीष्टवरदायकः॥
इन्दिरारमणः प्रीतः इन्द्रवंशनृपार्चितः।
इहामुत्रेष्टफलदः इन्दिरारमणार्चितः॥
ईद्रियो ईश्वरप्रीतः ईषमात्रग्यवर्जितः।
उमास्वरूपउद्बोध्यः उशना उत्सवप्रियः॥
उमादेव्यर्चनप्रीतः उच्चस्थोच्चफलप्रदः॥
उरुप्रकाशो उच्चस्थ योगदः उरुपराक्रमः॥
ऊर्ध्वलोकादिसञ्चारी ऊर्ध्वलोकादिनायकः।
ऊर्जस्वी ऊनपादश्च ऋकाराक्षरपूजितः॥

ऋषिप्रोक्त पुराणज्ञः ऋषिभिः परिपूजितः।
ऋग्वेदवन्द्यो ऋग्रूपी ऋजुमार्ग प्रवर्तकः॥
लुलितोद्धारकोलूत भवपाशप्रभञ्जनः।
लूकारकूरपकोलब्धर्ममार्गप्रवर्तकः॥
ऐकाधित्यसाम्राज्यप्रदो एनौघनाशनः।
एकपादयेक ऐकोनविंशतिमासभुक्तिदः॥
एकोनविंशतिवर्षदशो एणाङ्कपूजितः।
ऐश्वर्यफलदो ऐन्द्र ऐरावतसुपूजितः॥
ओंकार जपसुप्रीतः ओंकार परिपूजितः।
ओंकारबीजो औदार्य हस्तो औन्नत्यदायकः॥
औदार्यगुण औदार्य शीलो औषधकारकः।
करपङ्कजसन्नद्धधनुश्च करुणानिधिः॥
कालः कठिनचित्तश्च कालमेघसमप्रभः।
किरीटी कर्मकृत्कारयिताकालसहोदरः॥
कालाम्बरः काकवाहः कर्मठः काश्यपान्वयः।
कालचक्रप्रभेदी च कालरूपी च कारणः॥
कारिमूर्तिः कालभर्ता किरीटमुकुटोज्वलः।
कार्यकारण कालज्ञः काञ्नाभरथान्वितः॥
कालदंष्ट्रः क्रोधरूपः कराली कृष्णकेतनः।
कालात्मा कालकर्ता च कृतान्तः कृष्णगोप्रियः॥
कालाग्निरुद्ररूपश्च काश्यपात्मजसम्भवः।
कृष्णवर्णहयश्चैव कृष्णगोक्षीरसुप्रियः॥
कृष्णगोघृतसुप्रीतः कृष्णगोदधिषुप्रियः।
कृष्णगावैकचित्तश्च कृष्णगोदानसुप्रियः॥
कृष्णगोदत्तहृदयः कृष्णगोरक्षणप्रियः।
कृष्णगोग्रासचित्तस्य सर्वपीडानिवारकः॥

कृष्णगोदान शान्तस्य सर्वशान्त फलप्रदः।
कृष्णगोस्नान कामस्य गङ्गास्नान फलप्रदः॥
कृष्णगोरक्षणस्यद्यु सर्वाभीष्टफलप्रदः।
कृष्णगावप्रियश्चैव कपिलापद्युषुप्रियः॥
कपिलाक्षीरपानस्य कोमपानफलप्रदः।
कपिलादानसुप्रीतः कपिलाज्यहुतप्रियः॥
कृष्णश्च कृत्तिकान्तस्थः कृष्णगोवत्ससुप्रियः।
कृष्णमाल्याम्बरधरः कृष्णवर्णतनूरुहः॥
कृष्णकेतुः कृशकृष्णदेहः कृष्णाम्बरप्रियः।
क्रूरचेष्टः क्रूरभाव क्रूरद्रष्टः कुरूपि च॥
कमलापति सं सेव्यः कमलोद्भवपूजितः।
कामितार्थप्रदः कामधेनु पूजनसुप्रियः॥
कामधेनुसमाराध्यः कृपायुष विवर्धनः।
कामधेनु वैकचित्तश्च कृपराज सुपूजितः॥
कामदोग्धा च क्रुद्धश्च कुरुवंशसुपूजितः।
कृष्णाङ्गमहिषीदोग्धा कृष्णेन कृतपूजनः॥
कृष्णाङ्गमहिषीदानप्रियः कोणस्थ एव च।
कृष्णाङ्गमहिषीदानलोलुपः कामपूजितः॥
क्रूरावलोकनात् सर्वनाशः कृष्णाङ्गदप्रियः।
खद्योतः खण्डनः खड्गधरः खेचरपूजितः॥
खरांशुतनयश्चैव खगानां पतिवाहनः।
गोसेवासक्तहृदयः गोचरस्थानदोषहृत्॥
गृहराश्याधिपश्चैव गृहराज महाबलः।
गृध्रवाहो गृहपतिः गोचरो गानलोलुपः॥
घोरो घर्मो घनतमो घर्मी घनकृपान्वितः।
घननीलाम्बरधरो ङादिवर्ण सुसंज्ञितः॥

चक्रवतिसमाराध्यः चन्द्रमत्या समर्चितः ।
चन्द्रमत्यार्तिहारी च चराचर सुखप्रदः ॥
चतुर्भुजश्चापहस्तः चराचरहितप्रतः ।
छायापुत्र छत्रधरः छायादेवीसुतस्तथा ॥
जयप्रदो जगन्नीलो जपतां सर्वसिद्धिदः ।
जपविध्वस्तविमुखो जम्भारिपरिपूजितः ॥
जंभारिवन्द्यो जयदो जगज्जनमनोहरः ।
जगत्त्रप्रकुपितो जगत् त्राणपरायणः ॥
जयो जयप्रदश्चैव जगदानन्दकारकः ।
ज्योतिश्च ज्योतिषां श्रेष्ठो ज्योतिष्शास्त्र प्रवर्तकः ॥
झर्झरीकृतदेहश्च झल्लरीवाद्यसुप्रियः ।
ज्ञानमूर्तिर्ज्ञानगम्यो ज्ञानी ज्ञानमहानिधिः ॥
ज्ञानप्रबोधकश्चैव ज्ञानदृष्ट्यावलोकितः ।
टङ्कितखिलल्लोकश्च टङ्कितैनस्तमोरविः ॥
टङ्कारकारकश्चैव टिङ्कृतोटाम्भदप्रियः ।
ठकारमय सर्वस्वः ठकारकृतपूजितः ॥
डक्कावाद्यप्रीतिकरः डमडुमरुकप्रियः ।
डम्भरप्रभवो डम्भः डक्कानादप्रियङ्करः ॥
डाकिनीशाकिनीभूतसर्वोपद्रवकारकः ।
डाकिनीशाकिनीभूतसर्वोपद्रवनाशकः ॥
ढकाररूपो डाम्भीको णकारजपसुप्रियः ।
णकारमयमन्त्रार्थः णकारैकशिरोमणिः ॥
णकारवचनानन्दः णकारकरुणामयः ।
णकारमय सर्वस्वः णकारैकपरायणः ॥
तर्जनीधृतमुद्रश्च तपसां फलदायकः ।
त्रिविक्रमनुतश्चैव त्रयीमयवपुर्धरः ॥

तपस्वी तपसा दग्धदेहः ताम्राधरस्तथा।
त्रिकालवेदितव्यश्च त्रिकालमतितोषितः॥
तुलोच्चयः त्रासकरः तिलतैलप्रियस्तथा।
तेलान्न सन्तुष्टमनाः तिलदानप्रियस्तथाः॥
तिलभक्ष्यप्रियश्चैव तिलचूर्णप्रियस्तथा।
तिलखण्डप्रियश्चैव तिलापूपप्रियस्तथा॥
तिलहोमप्रियश्चैव तापत्रयनिवारकः।
तिलतर्पणसन्तुष्टः तिलतैलान्नतोषितः॥
तिलैकदत्तहृदयः तेजस्वी तेजसान्निधिः।
तेजसादित्यसङ्काशः तेजोमय वपुर्धरः॥
तत्वज्ञः तत्वगस्तीव्रः तपोरूपः तपोमयः।
तुष्टिस्तुष्टिकृत्तीक्ष्ण त्रिमूर्तिः त्रिगुणात्मकः॥
तिलदीपप्रियश्चैव तस्य पीडानिवारकः।
तिलोत्तमामेनकादिनर्तनप्रिय एव च॥
त्रिभागमष्टवर्गश्च स्थूलरोमा स्थिरस्तथा।
स्थितः स्थायी स्थापकश्च स्थूलसूक्ष्मप्रदर्शकः॥
दशरथार्चितपादश्च दशरथस्तोत्रतोषितः।
दशरथप्रार्थनाक्लप्त दुर्भिक्ष विनिवारकः॥
दशरथ प्रार्थनाक्लप्त वरद्वय प्रदायकः।
दशरथस्वात्मदर्शी च दशरथाभीष्टदायकः॥
दोर्भिर्धनुर्धरश्चैव दीर्घश्मश्रुजटाधरः।
दशरथस्तोत्रवरदः दशरथाभीप्सितप्रदः॥
दशरथस्तोत्रसन्तुष्टः दशरथेन सुपूजितः।
द्वादशऽष्टमजन्मस्थो देवपुङ्गवपूजितः॥
देवदानवदर्पघ्नो दिनं प्रतिमुनि स्तुत।
द्वादशस्थो द्वादशात्मा सुतो द्वादश नामभृत्॥

द्वितीयस्थो द्वादशार्कसूनुः दैवज्ञपूजितः।
दैवज्ञचित्तवासी च दमयन्या सुपूजितः॥
द्वादशाब्दन्तु दुर्भिक्षकारी दुस्स्वप्ननाशनः।
दुराराध्यो दुराधर्षः दमयन्ती वरप्रदः॥
दुष्टदूरो दुराचार शमनो दोषवर्जितः।
दुस्सहो दोषहन्ता च दुर्लभो दुर्गमस्तथा॥
दुःखप्रदो दुःखहन्ता दीप्तरन्जित दिङ्भुखः।
दीप्यमान मुखाम्भोजः दमयन्त्याशिशवप्रदः॥
दुर्निरोक्षो दृष्टमात्र दैत्यमण्डलनाशकः।
द्विजदानैकनिरतो द्विजाराधनतत्परः॥
द्विजसर्वार्तिहरी च द्विजराज समर्चित।
द्विजदानैकचित्तश्च द्विजराज प्रियङ्करः॥
द्विजौ द्विजप्रियश्चैव द्विजराजेष्टदायकः।
द्विजरूपो द्विजश्रेष्ठः दोषदो दुस्सहोपिच॥
देवादिदेवो देवेशो देवराज सुपूजितः।
देवराजेष्ट वरदो देवराज प्रियङ्करः॥
देवादिवन्दितो दिव्यतनुर्देवशिखामणिः।
देवगानप्रियश्चैव देवदेशिकपुङ्गवः॥
द्विजात्मजसमाराध्यः ध्येयो धर्मी धनुर्धरः।
धनुष्मान् धनदाता च धर्माधर्मविवर्जितः॥
धर्मरूपो धनुर्दिव्यो धर्मशास्त्रात्मचेतनः।
धर्मराज प्रियकरो धर्मराज सुपूजितः॥
धर्मराजेष्टवरदो धर्माभीष्टफलप्रदः।
नित्यतृप्तस्वभावश्च नित्यकर्मरतस्तथा॥
निजपीडार्तिहारी च निजभक्तेष्टदायकः।
निर्मांसदेहो नीलश्च निजस्तोत्र बहुप्रियः॥

नलस्तोत्र प्रियश्चैव नलराजसुपूजितः ।
नक्षत्रमण्डलगतो नमतां प्रियकारकः ॥
नित्यार्चितपदाम्भोजो निजाज्ञा परिपालकः ।
नवग्रहवरो नीलवपुर्नलकरार्चितः ॥
नलप्रियानन्दितश्च नलक्षेत्रनिवासकः ।
नलपाक प्रियश्चैव नलपद्भञ्जनक्षमः ॥
नलसर्वार्तिहारी च नलेनात्मार्थपूजितः ।
निपाटवीनिवासश्च नलाभीष्टवरप्रदः ॥
नलतीर्थसकृत्स्नान सर्वपीडानिवारकः ।
नलेशदर्शनस्याशुसाम्राज्यपदवीप्रदः ॥
नक्षत्रराश्याधिपश्च नीलध्वजविराजितः ।
नित्ययोगरतश्चैव नवरत्नविभूषितः ॥
विधा भज्यदेहश्च नवीकृतजगत्त्रयः ।
नवग्रहाधिपश्चैव नवाक्षरजपप्रियः ॥
नवात्मा नवचक्रात्मा नवतत्त्वाधिपस्तथा ।
नवोदन प्रियश्चैव नवधान्यप्रियस्तथा ॥
निष्कण्टको निस्पृहश्च निरपेक्षो निरामयः ।
नागराजार्चिपदो नागाराजप्रियङ्करः ॥
नागराजेष्टवरदो नागाभरण भूषितः ।
नागेन्द्रगान निरतः नानाभरणभूषितः ॥
नवमित्र स्वरूपश्च नानाश्चर्यविधायकः ।
नानाद्वीपाधिकर्ता च नानालिपिसमावृतः ॥
नानारूपजगत् स्त्रष्टा नानारूपजनाश्रयः ।
नानालोकाधिपश्चैव नानाभाषाप्रियस्तथा ॥
नानारूपाधिकारी च नवरत्नप्रियस्तथा ।
नानाविचित्रवेषाढ्यः नानाचित्रविधायकः ॥

नीलजीमूतसङ्काशो नीलमेघसमप्रभः ।
नीलाञ्जनचयप्रख्यः नीलवस्त्रधरप्रियः ॥
नीचभाषा प्रचारज्ञो नीचे स्वल्पफलप्रदः ।
नानागम विधानज्ञो नानानृपसमावृतः ॥
नानावर्णाकृतिश्चैव नानावर्णस्वरार्तवः ।
नानालोकान्तवासी च नक्षत्रत्रयसंयुतः ॥
नभादिलोकसम्भूतो नामस्तोत्रबहुप्रियः ।
नामपारायणप्रीतो नामार्श्चनवरप्रदः ॥
नामस्तोत्रैकचित्तश्च नानारोगार्तिभञ्जनः ।
नवग्रहसमाराध्यः न सग्रहभयापहः ॥
नवग्रहसुसंपूज्यो नानावेद सुरक्षकः ।
नवग्रहाधिराजश्च नवग्रहजपप्रियः ॥
नवग्रहमयज्योतिः नवग्रह वरप्रदः ।
नवग्रहाणामधिपो नवग्रहसुपीडितः ॥
नवग्रहाधीश्वरश्च नवमाणिक्यशोभितः ।
परमात्मा परब्रह्म परमैश्वर्यकारणः ॥
प्रपन्नभयहारी च प्रमत्तासुरशिक्षकः ।
प्रासहस्तः पङ्गुपादो प्रकाशात्मा प्रतापवान् ॥
पावनः परिशुद्धात्मा पुत्रपौत्रप्रवर्धनः ।
प्रसन्नात्सर्वसुखदः प्रसन्नेक्षण एव च ॥
प्रजापत्यः प्रियकरः प्रणतेप्सितराज्यदः ।
प्रजानां जीवहेतुश्च प्राणिनां परिपालकः ॥
प्राणरूपी प्राणधारी प्रजानां हितकारकः ।
प्राज्ञः प्रशान्तः प्रज्ञावान् प्रजारक्षणदीक्षितः ॥
प्रावृषेण्यः प्राणकारी प्रसन्नोत्सर्ववन्दितः ।
प्रज्ञानिवासहेतुश्च पुरुषार्थैकसाधनः ॥

अजाकरः प्रानुकूल्यः पिङ्गलाक्षः प्रसन्नधीः ।
प्रपञ्चात्मा प्रसविता पुराण पुरुषोत्तमः ॥
पुराण पुरुषश्चैव पुरुहूतः प्रपञ्चधृत् ।
प्रतिष्ठितः प्रीतिकरः प्रियकारी प्रयोजनः ॥
प्रीतिमान् प्रस्वरस्तुत्यः पुरूरवसमर्चितः ।
प्रपञ्चकारी पुण्यश्च पुरुहूत समर्चितः ॥
पाण्डवादि सुसंसेव्यः प्रणवः पुरुषार्थदः ।
पयोदसमवर्णश्च पाण्डुपुत्रार्तिभञ्जनः ॥
पाण्डुपुत्रेष्टदाता च पाण्डवानां हितङ्करः ।
पञ्चपाण्डवपुत्राणां सर्वाभीष्टफलप्रदः ॥
पञ्चपाण्डवपुत्राणां सर्वारिष्टनिवारकः ।
पाण्डुपत्राद्यर्चितश्च पूर्वजश्च प्रपञ्चभृत् ॥
परचक्रप्रभेदी च पाण्डुवेषु वनप्रदः ।
परब्रह्म स्वरूपश्च पराज्ञा परिवर्जितः ॥
परात्परः पाशहन्ता परमाणुः प्रपञ्चकृत् ।
पातङ्गी पुरुषाकारः परशम्भुसमुद्भवः ॥
प्रसन्नात्सर्वसुखदः प्रपञ्चोद्भवसम्भवः ।
प्रसन्नः परमोदारः पराहङ्कारभञ्जनः ॥
परः परमकारुण्यः परब्रह्ममयस्तथ ।
प्रपन्नभयहारी च प्रणतार्तिहरस्तथा ॥
अप्रसादकृत्प्रपञ्चश्च पराशक्तिसमुद्भवः ।
प्रदानपावनश्चैव प्रशान्तात्मा प्रभाकरः ॥
प्रपञ्चात्मा प्रपञ्चोपशमनः पृथिवीपतिः ।
परशुरामसमाराध्यः परशुरामवरप्रदः ॥
परशुराम चिरञ्जीविप्रदः परमसावनः ।
परमहंसस्वरूपश्च परमहंससुपूजितः ॥

पंचनक्षत्राधिपश्च पंचनक्षत्रसेवितः।
प्रपञ्चरक्षितश्चैव प्रपञ्चस्यभयङ्करः॥
फलदानप्रियश्चैव फलहस्तः फलप्रदः।
फलाभिषेकप्रियश्च फल्गुनस्य वरप्रदः॥
पुटच्छमित पापौघः फल्गुनेन प्रपूजितः।
फणिराजप्रियश्चैव पुलाम्बुज विलोचनः॥
बलिप्रियो बली बभ्रुः ब्रह्मविष्ण्वीश क्लेशकृत्।
ब्रह्मविष्णीशरूपश्च ब्रह्मशक्रादिदुर्लभः॥
बासदष्ट्र्या प्रमेयाङ्गो बिभ्रत् कवचकुण्डलः।
बहुश्रुतो बहुमतिः ब्रह्मण्यो ब्राह्मणप्रियः॥
बलप्रमथनो ब्रह्मा बहुरूपो बहुप्रदः।
बालार्कद्युतिमान् बालो बृहद्वक्षो बृहत्तमः॥
ब्रह्मण्डभेदकृंचैव भक्तसर्वार्थसाधकः।
भव्यो भोक्ता भीतिकृच्च भक्तानुग्रहकारकः॥
भीषणो भैक्षकारी च भूसुरादि सुपूजितः।
भोगभाग्यपदश्चैव भस्मीकृत जगत् त्रयः॥
भयानको भानुसूनुः भूतिभूषित विग्रहः।
भास्वद्रतो भक्तिमतां सुलभो भ्रुकुटीमुखः॥
भवभूत गणैस्स्तुत्यो भूतसङ्घसमावृतः।
भ्राजिष्णु र्भगवान् भीमो भक्ताभीष्टवरप्रदः॥
भवभक्तैकचित्तश्च भक्तिगीतस्तवोन्मुखः।
भूतसन्तोषकारी च भक्तानां चित्तशोधकः॥
भक्तिगम्यो भयहरो भावज्ञो भक्तसुप्रियः।
भूतिदो भूतिकृत् भोज्यो भूतात्मा भुवनेश्वरः॥
मन्दो मन्दगतिश्चैव मासमेव प्रपूजितः।
मुचुकुन्द समाराध्यो मुचुकन्द वरप्रदः॥

मुचुकुन्दार्चितपदो महारूपो महायशाः ।
महाभोगी महायोगी महाकायो महाप्रभुः ॥
महेशो महदैश्वर्यो मन्दारकुसुमप्रियः ।
महाक्रतुर्महामानी महाधीरो महाजयः ॥
महावीरो महाशान्तो मण्डलस्थो महाद्युतिः ।
महासुतो मेहादारो महनीयो महोदयः ॥
मैथिलीवरदायी च मार्ताण्डस्य द्वितीयजः ।
मैथिलीप्रार्थनाकल्प दशकण्ठ शिरोपहृत् ॥
मरामरहराराध्यो महेन्द्रादिसुरार्चितः ।
महारथो महावेगो मणिरत्नविभूषितः ॥
मेषनीचो महाघोरो महासौरिर्मनुप्रियः ।
महादीर्घो महाग्रासो महदैश्वर्यदायकः ॥
महाशुष्को महारौद्रो मुक्तिमार्ग प्रदर्शकः ।
मकरकुम्भाधिपश्चैव मृकण्डुतनयार्चितः ॥
मन्त्राधिष्ठानरूपश्च मल्लिकाकुसुमप्रियः ।
महामन्त्र स्वरूपश्च महायन्त्रस्थितस्तथा ॥
महाप्रकाशदिव्यात्मा महादेवप्रियस्तथा ।
महाबलि समाराध्यो महर्षिगणपूजितः ॥
मन्दारी महामायी माषदानप्रियस्तथा ।
माषोदन प्रीतचित्तो महाशक्तिर्महागुणः ॥
यशस्करो योगदाता यज्ञाङ्गोऽपि युगन्धरः ।
योगी योग्यश्च याम्यश्च योगरूपी युगाधिपः ॥
यज्ञभृद्यजमानश्च योगो योगविदां वरः ।
यक्षराक्षसवेताल कूष्माण्डादिप्रपूजितः ॥
यमप्रत्यधितेवश्च युगपत्भोगदायकः ।
योगप्रियो योगयुक्तो यज्ञरूपो युगान्तकृत् ॥

रघुवंश समाराध्यो रौद्रो रौद्राकृति स्तथा।
रघुनन्दन सल्लापो रघुप्रोक्त जपप्रियः॥
रौद्ररूपी रथारूढो राघवेष्ट वरप्रदः।
रथी रौद्राधिकारी च राघवेण समर्चितः॥
रोषात् सर्वस्वहारी च राघवेण सुपूजितः।
राशिद्वयाधिपश्चैव रघुभिः परिपूजितः॥
राज्यभूपाकरश्चैव राजराजेन्द्र वन्दितः।
रत्नकेयूरभूषाढ्यो रमानन्दनवन्दितः॥
रघुपौषसन्तुष्टो रघुस्तोत्रबहुप्रियः।
रघुवंशनृपैपूज्यो रणन्मञ्जीरनूपुरः॥
रविनन्दन राजेन्द्रो रघुवंशप्रियस्तथा।
लोहजप्रतिमादानप्रियो लावण्यविग्रहः॥
लोकचूडामणिश्चैव लक्ष्मीवाणीस्तुतिप्रियः।
लोकरक्षो लोकशिक्षो लोकलोचनरञ्जितः॥
लोकाध्यक्षो लोकवन्द्यो क्ष्मणाग्रजपूजितः।
वेदवेद्यो वज्रदेहो वज्राङ्कुशधरस्तथा॥
विश्ववन्द्यो विरूपाक्षो विमलाङ्गविराजितः।
विश्वस्थो वायसारूढो विशेषसुखकारका॥
विश्वरूपी विश्वगोप्ता विभावसु सुतस्तथा।
विप्रप्रियो विप्ररूपो विप्राराधन तत्परः॥
विशालनेत्रो विशिखो विप्रदानबहुप्रियः।
विश्वसृष्टि समुद्भूतो वैश्वानरसमद्युतिः॥
विष्णुर्विरिञ्चिर्विश्वेशो विश्वकर्ता विशाम्पतिः।
विराडाधारचक्रस्थो विश्वभुग्विश्वभावनः॥
विश्वव्यापारहेतुश्च वक्रक्रूरविवर्जितः।
विश्वोद्भवो विश्वकर्मा विश्वसृष्टि विनायकः॥

विश्वमूलनिवासी च विश्वचित्रविधायकः ।
विश्वधारविलासी च व्यासेन कृतपूजितः ॥
विभीषणेष्टवरदो वाञ्छितार्थप्रदायकः ।
विभीषणसमाराध्यो विशेषसुखदायकः ॥
विषमव्ययाष्टजन्मस्थोप्येकादशफलप्रदः ।
वासवात्मजसुप्रीतो वसुदो वासवार्श्चितः ॥
विश्वत्राणैकनिरतो वाङ्भनोतीतविग्रहः ।
विराण्मन्दिरमूलस्थो वलीमुखसुखप्रदः ॥
विपाशो विगतातङ्को विकल्पपरिवर्जितः ।
वरिष्ठो वरदो वन्द्यो विचित्राङ्गो विरोचनः ॥
शुष्कोदरः शुक्लवपुः शान्तरूपी शनैश्चरः ।
शूलीशरण्यः शान्तश्च शिवायामप्रियङ्करः ॥
शिवभक्तिमतां श्रेष्ठः शूलपाणिश्युचिप्रियः ।
श्रुतिस्मृतिपुराणज्ञः श्रुतिजालप्रबोधकः ॥
श्रुतिपारगसंपूज्यः श्रुतिश्रवणलोलुपः ।
श्रुत्यन्तर्गतमर्मज्ञः श्रुत्येष्टवरदायकः ॥
श्रुतिरूपः श्रुतिप्रीतः श्रुतीस्प्सितफलप्रदः ।
शुचिश्रुतः शान्तमूर्तिः श्रुतिः श्रवणकीर्तनः ॥
शमीमूलनिवासी च शमीकृतफलप्रदः ।
शमीकृतमहाघोरः शरणागतवत्सलः ॥
शमीतरुस्वरूपश्च शिवमन्त्रज्ञमुक्तिदः ।
शिवागमैकनिलयः शिवमन्त्रजपप्रियः ॥
शमीपत्रप्रियश्चैव शमीपर्णसमर्चितः ।
शतोपनिषद्स्तुत्यो शान्त्यादिगुणभूषितः ॥
शान्तयादिषड्गुणोपपेतः शङ्खवाद्यप्रियस्तथा ।
श्यामरक्तसितज्योतिः शुद्धपञ्चाक्षरप्रियः ॥

श्रीहालास्यक्षेत्रवासी श्रीमान् शक्तिधरस्तथा।
षोडशद्वयसम्पूर्णलक्षणः षण्मुखप्रियः॥
षड्गुणैश्वर्यसंयुक्तः षडङ्गावरणोज्वलः।
षडक्षरस्वरूपश्च षट्चक्रोपरि संस्थितः॥
षोडसी षोडशान्तश्च षट्छक्तिव्यक्तपूर्तिमान्।
षड्भावरहितश्चैव षडङ्गश्रुतिपारगः॥
षट्कोणमध्यनिलयः षट्शास्त्रस्मृतिपारगः।
स्वर्णेन्द्रनीलमुकुटः सर्वाभीष्टप्रदायकः॥
सर्वात्मासर्वदोषघ्नः सर्वगर्वप्रभञ्जनः।
समस्तलोकाभयदः सर्वदोषाङ्गनाशकः॥
समस्तभक्तसुखदः सर्वदोषनिवर्तकः।
सर्वनाशक्षमस्सौम्यः सर्वक्लेशनिवारकः॥
सर्वात्मा सर्वदा तुष्टः सर्वपीडानिवारकः।
सर्वरूपी सर्वकर्मा सर्वः सर्वकारकः॥
सुकृती सुलभश्चैव सर्वाभीष्टफलप्रदः।
सूरात्मजस्सदातुष्टः सूर्यवंशप्रदींपनः॥
सप्तद्वीपाधिपश्चैव सुरासुरभयङ्करः।
सर्वसंक्षोभहारी च सर्वलोकहितङ्करः॥
सर्वोदार्यस्वभावश्च सन्तोषात्सकलेष्टदः।
समस्तऋषिभिसंस्तुत्यः समस्तगणपावृतः॥
समस्तगणसंसेव्यः सर्वारिष्टविनाशनः।
सर्वसौख्यप्रदाता च सर्वव्याकुलनाशनः॥
सर्वसंक्षोभहारी च सर्वारिष्टफलप्रदः।
सर्वव्याधिप्रशमनः सर्वमृत्युनिवारकः॥
सर्वानुकूलकारी च सौन्दर्यमृदुभाषितः।
सौराष्ट्रदेशोद्भवश्च स्वक्षेत्रेष्टवरप्रदः॥

सोमयाजि समाराध्यः सीताभीष्ट वरप्रदः।
सुखासनोपविष्टश्च सद्यः पीडानिवारकः॥
सौदामनीसन्निभश्च सर्वानुल्लङ्घ्यशासनः।
सूर्यमण्डलसंचारी संहाराश्त्रनियोजितः॥
सर्वलोकक्षयकरः सर्वारिष्टविधायकः।
सर्वव्याकुलकारी च सहस्त्रजपसुप्रियः॥
सुखासनोपविष्टश्च संहारास्त्रप्रदर्शितः।
सर्वालङ्कारसंयुक्त कृष्णगोदानसुप्रियः॥
सुप्रसन्नस्सुरश्रेष्ठ सुघोषः सुखदस्सुहृत्।
सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सर्वज्ञस्सर्वदस्सुखी॥
सुग्रीवस्सुधृतिस्सारस्सुकुमार स्सुलोचनः।
सुव्यक्तस्सच्चिदानन्दः सुवीरस्सुजनाश्रयः॥
हरिश्चन्द्रसमाराध्यो हेयेपादेयवर्जितः।
हरिश्चन्द्रेष्टवरदो हन्समन्त्रादि संस्तुतः॥
हन्सवाह समाराध्यो हन्सवाहवरप्रदः।
हृद्यो हृष्टो हरिसखो हन्सो हन्सगतिर्हविः॥
हिरण्यवर्णोहितकृद्धर्षदो हेमभूषणः।
हरिर्होता हन्सगति हन्समन्त्रादिसंस्तुतः॥
हनूमदर्चितपदो हलधृत् पूजितसदा।
क्षेमदः क्षेमकृत्क्षेम्यः क्षेत्रज्ञः क्षामवर्जितः॥
क्षुद्रघ्नः क्षान्तिदः क्षेमः क्षितिभूषः क्षमाश्रयः।
क्षमाधरः क्षयद्वारो नाम्नामष्टसहस्त्रकम्॥
वाक्येनैकेन वक्ष्यामि वाञ्छितार्थं प्रयच्छति।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन नियमेन जपेत् सुधीः॥

श्रीशनिस्तवराजस्तोत्रम्

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीशनैश्चरस्तवराजस्य सिन्धुद्वीपऋषिः। गायत्री-छन्दः, आपो देवता, शनैश्चरप्रीत्यर्थं पाठे विनियोगः।

नारद उवाच

ध्यात्वा गणपतिं राजा धर्मराजो युधिष्ठिरः।
धीरः शनैश्चरस्येमं चकार स्तवमुत्तमम्॥ १ ॥
शिरो मे भास्करः पातु भालं छायासुतोऽवतु।
कोटराक्षो दृशौ पातु शिखिकण्ठनिभः श्रुती॥ २ ॥
घ्राणं मे भीषणः पातु मुखं बलिमुखोऽवतु।
स्कन्धौ संवर्त्तकः पातु भुजौ मे भयदोऽवतु॥ ३ ॥
सौरि मे हृदयं पातु नाभिं शनैश्चरोऽवतु।
ग्रहराजः कटिं पातु सर्वतो रविनन्दनः॥ ४ ॥
पादौ मन्दगतिः पातु कृष्णः पात्वखिलं वपुः।
रक्षामेतां पठेन्नित्यं सौरेर्नामबलैर्युताम्॥ ५ ॥
सुखी पुत्री चिरायुश्च स भवेन्नात्र संशयः।
सौरिः शनैश्चरः कृष्णो नीलोत्पलनिभः शानिः॥ ६ ॥
शुष्कोदरो विशालाक्षो दुर्निरीक्ष्यो विभीषणः।
शिखिकण्ठनिभो निलच्छायाहृदयनन्दनः॥ ७ ॥
कालदृष्टिः कोटराक्षः स्थूलरोमावलीमुखः।
दीर्घो निर्मांसगात्रस्तु शुष्को घोरो भयानकः॥ ८ ॥
नीलांशुः क्रोधनो रौद्रो दीर्घश्मश्रुर्जटाधरः।
मन्दो मन्दगतिः खंजो तृप्तः संवर्त्तको यमः॥ ९ ॥
ग्रहराजः कराली च सूर्यपुत्रो रविः शशी।
कुजो बुधो गुरुः काव्यो भानुजः सिंहिकासुतः॥ १० ॥
केतुर्देवपतिर्बाहुः कृतान्तो नैर्ऋतस्तथा।
शशी मरुत् कुबेरश्च ईशानः सुर आत्मभूः॥ ११ ॥

विष्णुर्हरो गणपतिः कुमारः काम ईश्वरः।
कर्ता-हर्ता पालयिता राज्येशो राज्यदायकः॥ १२॥
छायासुतः श्यामलाङ्गो धनहर्त्ता धनप्रदः।
क्रूरकर्मविधाता च सर्वकर्मावरोधकः॥ १३॥
तुष्टो रुष्टः कामरूपः कामदो रविनन्दनः।
ग्रहपीडाहरः शान्तो नक्षत्रेशो ग्रहेश्वरः॥ १४॥
स्थिरासनः स्थिरगतिंर्महाकायो महाबलः।
महाप्रभो महाकालः कालात्मा कालकालकः॥ १५॥
आदित्यभयदाता च मृत्युरादित्यनन्दनः।
शतभिरुक्षदयिता त्रयोदशीतिथिप्रियः॥ १६॥
शमीपुष्पप्रियः श्यास्त्रैलोक्याभयदायकः।
नीलवासः क्रियासिन्धुर्नीलाञ्जनचयच्छविः॥ १७॥
सर्वरोगहरो देवः सिद्धो देवगणस्तुतः।
अष्टोत्तरशंत नाम्ना सौरेश्छायासुतस्य यः॥ १८॥
पठेन्नित्यं तस्य पीडा समस्ता नश्यति ध्रुवम्।
कृत्वा पूजां पठेनमर्त्यो भक्तिमान् यः स्तवं सदा॥ १९॥
विशेषतः शनिदिने पीडा तस्य विनश्यति।
जन्म लगने स्थितिर्वापि गोचरे क्रूरराशीगे॥ २०॥
दशासु च गते ससौरेस्तदा स्तवमिमं पठेत्।
पूजयेद्यः शनिं भक्त्या शमी पुष्पाक्षताम्वरैः॥ २१॥
विधाय लोहप्रतिमां नरो दुःखाद्विमुच्यते।
बाधा याऽन्यग्रहाणां च यः पठेस्तस्य नश्यति॥ २२॥
रोगौ रोगाद्विमुच्येत नरः स्तवमिमं पठेत्।
पुत्रवान् धनवान् श्रीमान् जायते नात्र संशयः॥ २३॥
स्तवं निशम्य पार्थस्य प्रत्यक्षोऽभूत् शनैश्चरः।
दत्त्वा राज्ञे वरः कामं शनिश्चान्तर्दधे तदा॥ २४॥

श्रीशनैश्चरस्तोत्रम्

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीशनैश्चरस्तोत्रस्य दशरथ ऋषिः। शनैश्चरो देवता, त्रिष्टुप् छन्दः, शनैश्चरप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

कोणोऽन्तको रौद्रयमोऽथ बभ्रुः,कृष्णः शनिः पिंगलमन्दसौरीः।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥ १॥
सुराऽसुराः किं पुरुषोरगेन्द्रा गन्धर्व विद्याधरपन्नगाश्च।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै०॥ २॥
नरानरेन्द्राः पश्वो मृगेन्द्रा वन्याश्च ये कीटपतंगभृंगाः।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै०॥ ३॥
देशाश्च दुर्गाणि वनानी यत्र सेनानीवेशाः पुरपत्तनानि।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै०॥ ४॥
तिलैर्यवैर्मार्षगुडान्नदानैर्लोंहेन नीलाम्बरदानतो वा।
प्रीणाति मन्त्रैर्निजवासरे च तस्मै०॥ ५॥
प्रयागकूले यमुना तटे च सरस्वती पुण्य जले गुहायाम्।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै०॥ ६॥
अन्य प्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात्।
गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै०॥ ७॥
स्त्रश्टा स्वयं भूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी।
एकस्विधा ऋग्यजुः साममूर्तिस्तस्मै०॥ ८॥
शन्यषृकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रै पशुबान्धवैश्च।
पठेत्तु सौख्यं भुवि भौगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्त ते॥ ९॥
कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः प्पिलादेन संस्तुतः॥ १०॥
एतानि दश नामनि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
श्नैश्चकृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति॥ ११॥

शनिकवचम्

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीशनैश्चरकवचस्तोत्रमन्त्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शनैश्चरो देवता, श्रीं शक्तिः शूं कीलकम्। शनैश्चरप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चर्तुभुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः॥ १ ॥
शृणुध्वमृषयः सर्वे शनिपीडाहरं महत्।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम्॥ २ ॥
कवचं देवतावासं वज्रपञ्जरसंज्ञकम्।
शनैश्चरप्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम्॥ ३ ॥
ॐ श्रीशनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनन्दनः।
नेत्रे छायात्मजः पातु कर्णौ यमानुजः॥ ४ ॥
नासां वैवस्वतः पातु मुखं मे भास्करः सदा।
स्निग्धकण्ठश्च मे कण्ठं भुजौ पातु महाभुजः॥ ५ ॥
स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रदः।
वक्षः पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा॥ ६ ॥
नाभिं ग्रहपतिः पातु मन्दः पातु कटिं तथा।
ऊरू ममाऽन्तकः पातु यमो जानुयुगं तथा॥ ७ ॥
पदौ मन्दगतिः पातु सर्वांगं पातु पिप्पलः।
अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि रक्षेन् मे सूर्यनन्दनः॥ ८ ॥
इत्येतत् कवचं दिव्यं पठेत् सूर्यसुतस्य यः।
न तस्य जायते पीडा प्रीतो भवति सूर्यजः॥ ९ ॥
व्ययजन्मद्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वा।
कलत्रस्थो गतोवाऽपि सुप्रीतस्तु सदा शनिः॥ १० ॥
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे।
कवचं पठते नित्यं न पीडा जायते क्वचित्॥ ११ ॥
इत्येतत् कवचं दिव्यं सौरेर्यन्निर्मितं पुरा।
जन्मलग्नस्थितान्दोषान् सर्वान् नाशयते प्रभुः॥ १२ ॥

शनिमृत्युञ्जयस्तोत्रम्

नीलाद्रिशोभाञ्चितदिव्यमूर्तिः खड्गी त्रिदण्डी शरचापहस्तः।
शम्भुर्महाकालशनिः पुरारिर्जयत्यशेषासुरनाशकारी॥ १ ॥
मेरुपृष्ठे समासीनं सामरस्ये स्थितं शिवम्।
प्रणम्य शिरसा गौरी पृच्छतिस्म जगद्धितम्॥ २ ॥

पार्वतीउवाच

भगवन्! देवदेवेश! भक्तानुग्रहकारक!।
अल्पमृत्युविनाशाय यत्त्वया पूर्व सूचितम्॥ ३ ॥
तदेव त्वं महाबाहो! लोकानां हितकारम्।
तव मूर्तिप्रभेदस्य महाकालस्य साम्प्रतम्॥ ४ ॥
शनैर्मृत्युञ्जय स्तोत्रं ब्रूहि मे नेत्र जन्मनः।
अकाल मृत्युहरणमपमृत्यु निवारणम्॥ ५ ॥
शनिमन्त्रप्रभेदा ये तैर्युक्तं यत्स्तवं शुभम्।
प्रतिनाम चतुर्थ्यन्तं नमो ऽन्तं मनुनायुतम्॥ ६ ॥

ईश्वर उवाच

नित्ये प्रियतमे गौरि सर्वलोकहितेरते।
गुह्याद्गुह्यतमं दिव्य सर्वलोकोपकारकम्॥ ७ ॥
शनिमृत्युञ्जयस्तोत्रं प्रवक्ष्यामि तवा ऽधुना।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वशत्रुविमर्दनम्॥ ८ ॥
सर्वं रोगप्रमनं सर्वापद्विनिवारणम्।
शरीरारोग्यकरण आयुर्वद्धिकरं नृणाम्॥ ९ ॥
यदि भक्तासि मे गौरी गोपनीयं प्रयत्नतः।
गोपितं सर्वतन्त्रेषु तच्छृणुष्व महेश्वरि!॥ १० ॥

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीमहाकालशनि मृत्युञ्जयस्तोत्रमन्त्रस्य पिप्पलाद-ऋषि, अनुष्टुप्छन्दो, महाकालशनिर्देवता, शं बीजमायसीशक्तिः, कालपुरुपायेति कीलकं, ममअकालमृत्युनिवारणार्थे पाठे विनियोगः।

ऋषिन्यासं करन्यासं देहन्यासं समाचरेत्।
महोग्रं मूर्ध्नि विन्यस्य मुखे वैवस्वतं न्यसेत्॥ ११॥
गले तु विन्यसेन्मन्दं बाह्वोर्महाग्रहं न्यसेत्।
हृदिन्यसेत् महाकालं गुह्ये कृशतनुं न्यसेत्॥ १२॥
जान्वो स्तूड्डुचरं नयस्य पादयोस्तु शनैश्चरम्।
एवं न्यासविधिं कृत्वा पश्चात् कालात्मनः शनैः॥ १३॥
न्यासं ध्यानं प्रवक्ष्यामि तनौ ध्यात्वा पठेन्नरः।
कल्पादियुगभेदांश्च कराङ्गन्यासरुपिणः॥ १४॥
कालात् मनो न्यसेद् गात्रे मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते।
मन्वन्तराणि सर्वाणि महाकालस्वरूपिणः॥ १५॥
भावयेत्प्रति प्रत्यङ्गे महाकालाय ते नमः।
भावयेत् प्रभवाद्यब्दान् शीर्षे कालजिते नमः॥ १६॥
नमस्ते नित्यसेव्याय विन्यसेदयने भ्रुवोः।
सौरये च नमस्तेऽस्तु गण्डयोर्विन्यसेदृतून्॥ १७॥
श्रावणं भावयेदक्ष्णोनर्मः कृष्णनिभाय च।
महोग्राय नमो भाद्रं तथा श्रवणयोर्न्यसेत्॥ १८॥
नमो वै दुर्निरीक्ष्याय चाश्विनं विन्यसेन् मुखे।
नमो नीलमयूखाय ग्रीवायां कार्तिकं न्यसेत्॥ १९॥
मार्गशीर्ष न्यसेदबाह्वोर्महारौद्राय ते नमः।
ऊर्ध्वलोकनिवासाय पौषं तु हृदये नयसेत्॥ २०॥
नमः कालप्रबोधाय माघं वै चौदरे न्यसेत।
मन्दगाय नमो मेढ्रे न्यसेद्वैफाल्गुनं तथा॥ २१॥
ऊर्वोर्न्यसेच्चैत्रमासं नमः शिवोदद्भवाय च।
वैशाखं विन्यसेज्जान्वोर्नमः संवत्तकाय च॥ २२॥
जङ्घयोर्भावयेज्येष्ठं भैरवाय नमस्तथा।
आषाढ पाद्योश्चैव शनये च नमस्तथा॥ २३॥

कृष्णपक्षं च क्रूराय नमः आपादमस्तके।
न्यसेदशीर्षपादान्ते शुक्लपक्षं ग्रहाय च॥ २४॥
न्यसेन् मूलं पादयोश्च ग्रहाय शनये नमः।
नमः सर्वजिते चैव तोयं ससर्वांगुलौ न्यसेत्॥ २५॥
न्यसेत्गुल्फद्वये विश्वं नमः शुष्कतराय चः।
विष्णुभं भावयेज्जङ्घोभये शिष्टतमाय ते॥ २६॥
जानुद्वये धनिष्ठां च न्यसेत् कृष्णरुचे नमः।
ऊरुद्वये वारुणर्क्षं न्यसेत् कालभृते नमः॥ २७॥
पूर्वभाद्रं न्यसेन्मेढ्रे जटा-जूट-धराय च।
पृष्ठ उत्तरभाद्रं च करालाय नमस्तथा॥ २८॥
रेवतीं च न्यसेन् नाभौ नमो मन्दचराय च।
गर्भदेशे न्यसेद्दस्त्रं नमः श्यामतराय च॥ २९॥
नमो भोगिस्त्रजे नित्यं यमं स्तनयुगे न्यसेत्।
न्यसेत् कृर्त्तिकां हृदये नमस्तैलप्रियाय च॥ ३०॥
रोहिणीं भावयेद्धस्ते नमस्ते खड्गधारिणे।
मृगं न्यसेद्वामस्ते त्रिदण्डोल्लसिताय च॥ ३१॥
दक्षोद्र्ध्वे भावयेरौद्रं नमो वै बाणधारिणे।
पुनर्वसुमूद्र्ध्ववामे नमो वै चापधारिणे॥ ३२॥
तिष्यं न्यसेद्दक्षबाहौ नमस्ते हर मन्यवे।
सार्प न्यसेद्वामबाहौ चोग्रचापाय ते नमः॥ ३३॥
मघां विभावयेत्कण्ढे नमस्ते भस्मधारिणे।
मुखे न्यसेद्भगर्क्षं च नमः क्रूरग्रहाय च॥ ३४॥
भावयेद्दक्षनासायामर्यामाणश्चयोगिने ।
भावयेद्वामनासायं हस्तर्क्षं धारिणे नमः॥ ३५॥
त्ववाष्ट्रं न्यसेद्दक्षकर्णे नमो ब्रह्ममयाय ते॥ ३६॥

विशाखां च दक्ष नेत्रे नमस्ते ज्ञानदृष्टये।
विष्कुम्भं भावयेच्छीर्षसन्धौ कालाय ते नमः॥ ३७॥
प्रीतियोगं भ्रुवोः सन्धौमहामन्द! नमोऽस्तुते।
नेत्रयोः सन्धावायुष्मोद्योगं भीष्माय ते नमः॥ ३८॥
सौभाग्यं भावयेन् नासासन्धौ फलाशनाय च।
शोभनं भावयेत्कर्णे सन्धौ पुण्यात्मने नमः॥ ३९॥
नमः कृष्णा यातिगण्डं हनुसन्धौ विभावयेत्।
नमो निर्मांसदेहाय सुकर्माणं शिरोधरे॥ ४०॥
धृतिं न्यसेद् दक्षबाहौ पृष्ठे छायासुताय च।
तन्मूलस्धौ शूलं च न्यसेदुग्राय ते नमः॥ ४१॥
तत्कूर्परं न्यसेद् गण्डे नित्यानन्दाय ते नमः।
वृद्धिं तन् मणिबन्धे च कालज्ञाय नमो न्यसेत्॥ ४२॥
ध्रुवं तदङ्गुलीमूलसन्धौ कृष्णायते नमः।
व्याघातं भावयेद्वामबाहुपृष्ठे कृशाय च॥ ४३॥
हर्षणं तन्मूलसन्धौ भूतसन्तापिने नमः।
तत्कूर्परे न्यसेद्वज्रं सानन्दाय नमोऽस्तु ते॥ ४४॥
सिद्धिं तन्मणिबन्धे च न्यसेत् कालाग्रये नमः।
व्यतीपातं कराग्रेषु न्यसेत् कालकृते नमः॥ ४५॥
वरीयां सं दक्षपार्श्वसन्धौ कालात्मने नमः।
परिघं भावयेद्वामपार्श्वसन्धौ नमोऽस्तुते॥ ४६॥
न्यसेद् दक्षोरुसन्धौ च शिवं वै कालसाक्षिणे।
तज्जानौ भावयेत्सिसिद्धिं महादेवाय ते नमः॥ ४७॥
साध्यं न्यसेच्च तद्गुल्फसन्धौ घोराय ते नमः।
न्यसेत्तदङ्गुलीसन्धौ शुभ्रं रौद्राय ते नमः॥ ४८॥
न्यसेद्वामोरुसन्धौ च शुक्लकालविदे नमः।
ब्रह्मयोगं च तज्जानौ न्यसेतद्योगिने नमः॥ ४९॥

ऐन्द्रं तद्गुल्फसन्धौ योगाऽधीशाय ते नमः।
न्यसेत्तदङ्गुलीसन्धौ नमो भवय वैधृतिम्॥५०॥
चर्मणि बवकरणं भावयेद्यज्वने नमः।
बावं भावयेद्रक्ते संहारक नमोऽस्तुते॥५१॥
कौलवं भावयेदस्थिन नमस्ते सर्वभक्षिणे।
तैतिलं भावयेन्मांसे आममांसप्रियाय ते॥५२॥
गरं न्यसेद्वपायां च सर्वग्रासाय ते नमः :
न्यसेद्वणिजं मज्जायां सर्वान्तक नमोऽस्तुते॥५३॥
विर्येभावयेद्विष्टिं नमो मन्यूग्रतेजसे।
रुद्रमित्र पितृवसुवारीण्येतांश्च पञ्च च॥५४॥
मुहुर्तांश्च दक्षपादनखेशु भावयेन् नमः।
खगेशाय च खस्थाय खेचराय स्वरूपिणे॥५५॥
पुरुहूतशतमखे विश्ववैधो विधूंस्तथा।
मुहूर्त्तांश्च वामपादनखेषु भावयेन्नमः॥५६॥
सत्यव्रताय सत्याय नित्यसत्याय ते नमः।
सिद्धेश्वर! नमस्तुभ्यं योगेश्वर नमोऽस्तुते॥५७॥
वह्निनक्तं चरांश्चैव वरुणार्यमयोनिकान्।
मुहुर्तांश्च दक्षहस्तनखेषु भावयेन् नमः॥५८॥
लग्नोदयाय दीर्गायमार्गिणे दक्षदृष्टये।
वक्राय चातिक्रूराय नमस्ते वामदृष्टये॥५९॥
वामहस्तनखेष्वन्त्यवर्णेशाय नमोऽस्तुते।
गिरिशाहिर्बुध्न्यपूषा जपाद् दसांश्च भावयेत्॥६०॥
राशिभोक्त्रे राशिगाय राशिभ्रमणकारिणे।
राशिनाथाय राशिनां फलदात्रे नमोऽस्तुते॥६१॥
यमाग्निचन्द्रादितिकविधतृश्च विभावयेत्।
ऊर्ध्वहस्तदक्षनखेष्वन्त्य कालाय ते नमः॥६२॥

तुलोच्चस्थाय सौम्याय नक्र कुम्भगृहाय च।
समीरत्वष्ट जीवांश्च विष्णुतिग्म द्युतीन् नयसेत्॥ ६३॥
ऊर्ध्ववामहस्तनखेष्वन्य ग्रहनिवारिणे।
तुष्टाय च वरिष्ठाय नमो राहु सखाय च॥ ६४॥
रविवारंललाटे च न्यसेद्धीमदृशे नमः।
सोमवारं न्यसेदास्ये नमो मृतप्रियाय च॥ ६५॥
भौमवारं न्यसेत् स्वान्ते नमो ब्रह्मस्वरूपिणे।
मेढ्रे न्यसेत् सौम्वारं नलो जीवस्वरूपिणे॥ ६६॥
वृषणे गुरुवारं च नमो मन्त्रस्वरूपिणे।
भृगुवारं मलद्वारे नमः प्रलयकारिणे॥ ६७॥
पादयोः शनिवारं च निर्मासाय नमोस्तुते।
घटिकां न्यसेत् केशेषु नमस्ते सूक्ष्मरुपिणे॥ ६८॥
कालरूपिन् नमस्तेऽस्तु सर्वपापप्रणाशक!।
त्रिपुरस्य वधार्थाय शम्भुजाताय ते नमः॥ ६९॥
नमः कालशरीराय कालनुन्नाय ते नमः।
कालहेतो नमस्तुभ्यं कानन्दाय वै नमः॥ ७०॥
अखण्डदण्डमानाय त्वनाद्यंताय वै नमः।
कालदेवाय कालाय कालकालाय ते नमः॥ ७१॥
निमेषादिमहाकल्पकालरूपं च भैरवम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥ ७२॥
दातारं सर्वभव्यानां भक्तानामभयङ्करम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥ ७३॥
कर्तारं सर्वदुःखानां दुष्टानां भयवर्धनम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥ ७४॥
हर्त्तारं ग्रहजातानां फलानामघ्यकारिणाम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥ ७५॥

सर्वेषामेव भूतानां सुखद शान्तिमव्ययम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥ ७६ ॥
कारणं सुखदुःखानां भावाऽभावस्वरूपिण्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥ ७७ ॥
अकालमृत्युहरण अपमृत्युनिवारणम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥ ७८ ॥
कालरूपेण संसारं भक्षयन्तं महाग्रहम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥ ७९ ॥
दुर्निरीक्ष्यं स्थूलरोमं भीषणं दीघ्रलोचनम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥ ८० ॥
ग्रहाणां ग्रहभूतं च सर्वग्रहनिवारणम्।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम्॥ ८१ ॥
कालस्य वशगाः सर्वे न कालः कस्यचिद्वशः।
तस्मात्त्वां कालपुरुषं प्रणतोऽस्मि शनैश्चरम्॥ ८२ ॥
कालदेव जगत्सर्वं काल एव विलीयते।
कालरूपः स्वयं शम्भुः कालात्मा ग्रहदेवता॥ ८३ ॥
चण्डीशोरुद्रडाकिन्याक्रान्तश्चण्डीशउच्यते ।
विद्युदाकलितो नद्या समारुढो रसाधिपः॥ ८४ ॥
चण्डीशः शुकसंयुक्तो जिह्वया ललितः पुनः।
क्षतजस्तामसी शोभी स्थिरात्मा विद्युतद्युतः॥ ८५ ॥
नमोऽन्तो मनुरित्येष शनितुष्टिकरः शिवे।
आद्यन्तेष्टोत्तरशतं मनुमेनं जपेन्नरः॥८६ ॥
य पठेच्छृणुयाद्वाऽपि ध्यात्वा सम्पूज्य भक्तितः।
तस्य मृत्योर्भयं नैव शतवर्षावधिप्रिये!॥ ८७ ॥
ज्वराः सर्वे विनश्यन्तिदद्रुविस्फोटकच्छुकाः।
दिवा सौरि स्मरेत् रात्रौ महाकाल यजन् पठेत्॥ ८८ ॥

जन्मर्क्षो च यदा सौरिर्जपेदेतत् सहस्रकम्।
वैधगे वामवेधे वा जपेदर्द्धसहस्रकम्॥ ८९॥
द्वितीये द्वादशे मन्दे तनौ वा चाष्टमेऽपि वा।
तत्तद्राशौ भवेद्यावत् पठेत्तावद्दीनावधि॥ ९०॥
चतुर्थे दशमे वाऽपि सप्तमे नवपञ्चमे।
गोचरे जन्मलग्नेशे दशास्वन्तर्दशासु च॥ ९१॥
गुरुलाघवज्ञानेन पठेदावृतिसंख्यया।
शतमेकं त्रयं वाऽथ शतयुग्मं कदाचन॥ ९२॥
आपदस्तस्य नश्यन्ति पापानि च जयं भवेत्।
महाकालालये पीठे ह्यथ्वा जल सन्निधौ॥ ९३॥
पुण्यक्षेत्रेऽश्वत्थमूले तैलकुम्भाग्रतोगृहे।
नियमेनैकभक्तेन ब्रह्मचर्येण मौनिना॥ ९४॥
श्रोत्तव्यं पठितव्यं च साधकानां सुखावहम्।
परं स्वस्त्ययनं पुण्यं स्तोत्रं मृत्युञ्जयाभिधम्॥ ९५॥
कालक्रमेण कथितं न्यासक्रमसमन्वितम्।
प्रातः काले शुचिर्भूत्वा पूजायां च निशामुखे॥ ९६॥
पठतां नैव दुष्टेभ्यो व्याघ्रसर्पादितो भयम्।
नाग्नितो न जलाद्वायोर्देशेदेशान्तरेऽथवा॥ ९७॥
नाऽकाले मरणं तेषां नाअपमृत्युभयं भवेत्।
आयुर्वर्षशतं सायं भवन्ति चिरजीविनः॥ ९८॥
नाऽतः परतरं स्तोत्रं शनितुष्टिकरं महत्।
शान्तिकं शीघ्रफलदं स्तोत्रमेतन्मयोदितम्॥ ९९॥
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन यदीच्छेदात्मनोहितम्।
कथनीयं महादेवि नैवाभक्तस्य कस्यचित्॥१००॥

शन्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

शनैश्चराय शान्ताय सर्वाभीष्टप्रदायिने।
शरण्याय वरेण्याय सर्वेशाय नमो नमः॥ १ ॥
सौम्याय सुरवन्द्याय सुरलोकविहारिणे।
सुखासनोपविष्टाय सुन्दराय नमो नमः॥ २ ॥
घनाय घनरूपाय घनाभरणधारिणे।
घनसारविलेपाय खद्योताञ नमो नमः॥ ३ ॥
मन्दाय मन्दचेष्टाय महनीय गुणात्मने।
मर्त्यपावनपादाय महेशाय नमो नमः॥ ४ ॥
छायापुत्राय शर्वाय शततूणीरधारिणे।
चरस्थिर स्वभावाय चञ्चलाय नमो नमः॥ ५ ॥
नीलवर्णाय नित्याय नीलाञ्जननिभाय च।
नीलांबरविभूषाय निश्चलाय नमो नमः॥ ६ ॥
वेद्याय विधिरूपाय विरोधाधारभूमये।
वेदास्पदस्वभावाय वज्रदेहाय ते नमः॥ ७ ॥
वैराग्यदाय वीराय वीतरोगभयाय च।
विपत्परम्परेशाय विश्ववन्द्याय ते नमः॥ ८ ॥
गृध्रवाहाय गूढाय कूर्माङ्गाय कुरूपिणे।
कुत्सिताय गुणाढ्याय गोचराय नमो नमः॥ ९ ॥
अविद्यामूलनाशाय विद्याविद्यास्वरूपिणे।
आयुष्यकारणायापदुद्धर्त्रे च नमो नमः॥ १० ॥
विष्णुभक्ताय वशिने विविधागमवेदिने।
विधिस्तुत्याय वन्द्याय विरूपाक्षाय ते नमः॥ ११ ॥
वरिष्ठाय गरिष्ठाय वज्राङ्कुशधराय च।
वरदाभयहस्ताय वामनाय नमो नमः॥ १२ ॥

ज्येष्ठापत्नीसमेताय श्रेष्ठाय मितभाषिणे।
अष्टौघनाशकार्याय पुष्टिदाय नमो नमः॥ १३॥
स्तुत्याय स्तोत्रगम्याय भक्तिवश्याय भानवे।
भानुपुत्राय भव्याय पावनाय नमो नमः॥ १४॥
धनुर्मण्डलसंस्थाय धनदाय धनुष्मते।
तनुप्रकाशदेहाय तामसाय नमो नमः॥ १५॥
अशेषजनवन्द्याय विशेषफलदायिने।
वशीकृतजनेशाय पशूनां पतये नमः॥ १६॥
खेचराय खगेशाय घननीलाम्बराय च।
काठिन्यमानसायार्य गणस्तुत्याय ते नमः॥ १७॥
नीलछत्राय नित्याय निर्गुणाय गुणात्मने।
निरामयाय निन्द्याय वन्दनीयाय ते नमः॥ १८॥
धीराय दिव्यदेहाय दीनार्तिहरणाय च।
दैन्यनाशकरायार्यजनगण्याय ते नमः॥ १९॥
क्रूराय क्रूरचेष्टाय कामक्रोधकराय च।
कळत्र पुत्र शत्रुत्वकारणाय नमो नमः॥ २०॥
परिपोषित भक्ताय वरभीतिहराय च।
भक्तसंघमनोभीष्ट फलदाय नमो नमः॥ २१॥
इत्थं शनैश्चरस्येदं नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
प्रत्यहं प्रजपन्मर्त्यो दीर्घमायुरवाप्नुयात्॥ २२॥

शनिसहस्रनामावल्याः जपविधिः

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीशनैश्चरसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य कश्यपऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शनैश्चरो देवता, शं बीजम्, नम् शक्तिः, मम् कीलकम्, शनैश्चरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

करन्यासः—शनैश्चराय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः, अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः, सौरये अनामिकाभ्यां नमः, शुष्कोदराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः, छायात्मजाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—शनैश्चराय हृदयाय नमः, मन्दगतये शिरसे स्वाहा, अधोक्षजाय शिखायै वषट्, सौरये कवचाय हुम्, शुष्कोदराय नेत्रत्रयाय वौषट्, छायात्मजाय अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

चापासनो गृध्रघरस्तु नीलः प्रत्यङ्गमुखः काश्यप-गोत्रजातः।
स-शूल-चापेषु गदाधरोऽव्यात् सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च शौरिः॥ १॥
नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रासनस्थो विकृताननश्च।
केयूर-हारादि-विभूषिताङ्गः सदाऽस्तु मे मन्दगतिः प्रसन्नः॥ २॥

१. ॐ अमितभाषिणे नमः
२. ॐ अघहराय नमः
३. ॐ अशेषदुरितापहाय नमः
४. ॐ अघोररूपाय नमः
५. ॐ अतिदीर्घकायाय नमः
६. ॐ अशेषभयानकाय नमः
७. ॐ अनन्ताय नमः
८. ॐ अन्नदात्रे नमः
९. ॐ अश्वत्थमूलजपप्रियाय नमः
१०. ॐ अतिसम्पत्प्रदाय नमः
११. ॐ अमोघाय नमः
१२. ॐ अन्यस्तुत्याप्रकोपिताय नमः
१३. ॐ अपराजिताय नमः
१४. ॐ अद्वितीयाय नमः
१५. ॐ अतितेजसे नमः
१६. ॐ अभयप्रदाय नमः
१७. ॐ अष्टमस्थाय नमः
१८. ॐ अञ्जननिभाय नमः
१९. ॐ अखिलात्मने नमः
२०. ॐ अर्कनन्दनाय नमः
२१. ॐ अतिदारुणाय नमः
२२. ॐ अक्षोभ्याय नमः
२३. ॐ अप्सरोभिः प्रपूजिताय नमः
२४. ॐ अभीष्टफलदाय नमः

२५. ॐ अरिष्टमथनाय नमः
२६. ॐ अमरपूजिताय नमः
२७. ॐ अनुग्राहाय नमः
२८. ॐ अप्रमेयपराक्रमविभीषणायनमः
२९. ॐ असाध्ययोगाय नमः
३०. ॐ अखिलदोषघ्नाय नमः
३१. ॐ अपराकृताय नमः
३२. ॐ अप्रमेयाय नमः
३३. ॐ अतिसुखदाय नमः
३४. ॐ अमराधिपपूजिताय नमः
३५. ॐ अवलोकात्सर्वनाशाय नमः
३६. ॐ अश्वत्थामद्विरायुधाय नमः
३७. ॐ अपराधसहिष्णवे नमः
३८. ॐ अश्वत्थामसुपूजिताय नमः
३९. ॐ अनन्तपुण्यफलदाय नमः
४०. ॐ अतृप्ताय नमः
४१. ॐ अतिबलाय नमः
४२. ॐ अवलोकात्सर्ववन्द्याय नमः
४३. ॐ अक्षीणकरुणानिधये नमः
४४. ॐ अविद्यामूलनाशाय नमः
४५. ॐ अक्षय्यफलदायकाय नमः
४६. ॐ आनन्दपरिपूर्णाय नमः
४७. ॐ आयुष्कारकाय नमः
४८. ॐ आश्रितेष्टार्थवरदाय नमः
४९. ॐ आधिव्याधिहराय नमः
५०. ॐ आनन्दमयाय नमः
५१. ॐ आनन्दकराय नमः
५२. ॐ आयुधधारकाय नमः
५३. ॐ आत्मचक्राधिकारिणे नमः
५४. ॐ आत्मस्तुत्यपरायणाय नमः
५५. ॐ आयुष्कराय नमः
५६. ॐ आनुपूर्व्यय नमः
५७. ॐ आत्मायत्तजगत्त्रयाय नमः
५८. ॐ आत्मनामजपप्रीताय नमः
५९. ॐ आत्माधिकफलप्रदाय नमः
६०. ॐ आदित्यसम्भवाय नमः
६१. ॐ आर्तिभञ्जनाय नमः
६२. ॐ आत्मरक्षकाय नमः
६३. ॐ आपद्बान्धवाय नमः
६४. ॐ आनन्दरूपाय नमः
६५. ॐ आयुःप्रदाय नमः
६६. ॐ आकर्णपूर्णचापाय नमः
६७. ॐ आत्मोद्दिष्टद्विजप्रदाय नमः
६८. ॐ आनुकूल्याय नमः
६९. ॐ आत्मरूपप्रतिमादानसुप्रियाय नमः
७०. ॐ आमारामाय नमः
७१. ॐ आदिदेवाय नमः
७२. ॐ आपन्नार्तिविनाशनाय नमः
७३. ॐ इन्दिरार्चितपादाय नमः
७४. ॐ इन्द्रभोगफलप्रदाय नमः
७५. ॐ इन्द्रदेवस्वरूपाय नमः
७६. ॐ इष्टवरदायकाय नमः
७७. ॐ इष्टापूर्तिप्रदाय नमः
७८. ॐ इन्दुमतीष्टवरदायकाय नमः
७९. ॐ इन्दिरारमणप्रीताय नमः
८०. ॐ इन्द्रवंशनृपार्चिताय नमः

८१. ॐ इहामुत्रेष्टफलदाय नमः
८२. ॐ इन्दिरारमणार्चिताय नमः
८३. ॐ ईड्ढियाय नमः
८४. ॐ ईश्वरप्रीताय नमः
८५. ॐ ईषणात्रयवर्जिताय नमः
८६. ॐ उमास्वरूपाय नमः
८७. ॐ उद्बोध्याय नमः
८८. ॐ उशनाय नमः
८९. ॐ उत्सवप्रियाय नमः
९०. ॐ उमादेव्यार्चनप्रीताय नमः
९१. ॐ उच्चस्थोच्चफलप्रदाय नमः
९२. ॐ उरुप्रकाशाय नमः
९३. ॐ उच्चस्थयोगदाय नमः
९४. ॐ उरुपराक्रमाय नमः
९५. ॐ ऊर्ध्वलोकादिसञ्चारिणे नमः
९६. ॐ ऊर्ध्वलोकादिनायकाय नमः
९७. ॐ ऊर्जस्विने नमः
९८. ॐ ऊनपादाय नमः
९९. ॐ ऋकाराक्षरपूजिताय नमः
१००. ॐ ऋषिप्रोक्तपुराणज्ञाय नमः
१०१. ॐ ऋषिभिः परिपूजिताय नमः
१०२. ॐ ऋग्वेदवन्द्याय नमः
१०३. ॐ ऋग्रूपिणे नमः
१०४. ॐ ऋजुमार्गप्रवर्तकाय नमः
१०५. ॐ लुलितोद्धारकाय नमः
१०६. ॐ लूतभवपाशप्रभञ्जनाय नमः
१०७. ॐ लूकाररूपकाय नमः
१०८. ॐ लब्धधर्ममार्गप्रवर्तकाय नमः
१०९. ॐ एकाधिपत्यसाम्राज्यप्रदाय नमः
११०. ॐ ऐनौघनाशनाय नमः
१११. ॐ एकपादे नमः
११२. ॐ एकस्मै नमः
११३. ॐ एकोनविंशतिमासभुक्तिदाय नमः
११४. ॐ एकोनविंशतिवर्षदशाय नमः
११५. ॐ एणाङ्कपूजिताय नमः
११६. ॐ ऐश्वर्यफलप्रदाय नमः
११७. ॐ ऐन्द्राय नमः
११८. ॐ ऐरावतसुपूजिताय नमः
११९. ॐ ओङ्कारजपसुप्रीताय नमः
१२०. ॐ ओङ्कारपरिपूजिताय नमः
१२१. ॐ ओङ्कारबीजाय नमः
१२२. ॐ औदार्यहस्ताय नमः
१२३. ॐ औन्नत्यदायकाय नमः
१२४. ॐ औदार्यगुणाय नमः
१२५. ॐ औदार्यशीलाय नमः
१२६. ॐ औषधकारकाय नमः
१२७. ॐ करपङ्कजसन्नद्धधनुषे नमः
१२८. ॐ करुणानिधये नमः
१२९. ॐ कालाय नमः
१३०. ॐ कठिनचित्ताय नमः
१३१. ॐ कालमेघसमप्रभाय नमः
१३२. ॐ किरीटिने नमः
१३३. ॐ कर्मकृते नमः
१३४. ॐ कारयित्रे नमः
१३५. ॐ कालसहोदराय नमः
१३६. ॐ कालाम्बराय नमः

१३७. ॐ काकवाहाय नमः
१३८. ॐ कर्मठाय नमः
१३९. ॐ काश्यपान्वयाय नमः
१४०. ॐ कालचक्रप्रभेदिने नमः
१४१. ॐ कालरूपिणे नमः
१४२. ॐ कारणाय नमः
१४३.ॐ कारिमूर्तये नमः
१४४. ॐ कालभर्त्रे नमः
१४५. ॐ किरीटमकूटोज्ज्वलाय नमः
१४६. ॐ कार्यकारणकालज्ञाय नमः
१४७. ॐ काञ्चनाभरथान्विताय नमः
१४८. ॐ कालदंष्ट्राय नमः
१४९. ॐ क्रोधरूपाय नमः
१५०. ॐ करालिने नमः
१५१. ॐ कृष्णकेतनाय नमः
१५२. ॐ कालात्मने नमः
१५३. ॐ कालकर्त्रे नमः
१५४. ॐ कृतान्ताय नमः
१५५. ॐ कृष्णगोप्रियाय नमः
१५६. ॐ कालाग्निरुद्ररूपाय नमः
१५७. ॐ कश्यपात्मजसम्भवाय नमः
१५८. ॐ कृष्णवर्णहयाय नमः
१५९. ॐ कृष्णगोक्षीरसुप्रियाय नमः
१६०. ॐ कृष्णगोघृतसुप्रीताय नमः
१६१. ॐ कृष्णगोदधिसुप्रियाय नमः
१६२. ॐ कृष्णगावैकचित्ताय नमः
१६३. ॐ कृष्णगोदानसुप्रियाय नमः
१६४. ॐ कृष्णगोदत्तहृदयाय नमः
१६५. ॐ कृष्णगोग्रासचित्तस्य सर्वपीडानिवारकाय नमः
१६६. ॐ कृष्णगोरक्षणप्रियाय नमः
१६७. ॐ कृष्णगोदानशान्तस्य सर्वशान्तिफलप्रदाय नमः
१६८. ॐ कृष्णगोस्नानकामस्य-गङ्गास्नानफलप्रदाय नमः
१६९. ॐ कृष्णगोरक्षणस्नान-सर्वाभीष्टफलप्रदाय नमः
१७०. ॐ कृष्णगावप्रियाय नमः
१७१. ॐ कपिलापशुषुप्रियाय नमः
१७२. ॐ कपिलाक्षीरपानस्य सोमपानफलप्रदाय नमः
१७३. ॐ कपिलादानसुप्रीताय नमः
१७४. ॐ कपिलाज्यहुतप्रियाय नमः
१७५. ॐ कृष्णाय नमः
१७६. ॐ कृत्तिकान्तस्थाय नमः
१७७. ॐ कृष्णगोवत्ससुप्रियाय नमः
१७८. ॐ कृष्णमाल्याम्बरधराय नमः
१७९. ॐ कृष्णवर्णतनूरुहाय नमः
१८०. ॐ कृष्णकेतवे नमः
१८१. ॐ कृशकृष्णदेहाय नमः
१८२. ॐ कृष्णाम्बरप्रियाय नमः
१८३. ॐ क्रूरचेष्टाय नमः
१८४. ॐ क्रूरभावाय नमः
१८५. ॐ क्रूरदंष्ट्राय नमः
१८६. ॐ कुरूपिणे नमः
१८७. ॐ कमलापतिसंसेव्याय नमः

१८८. ॐ कमलोद्भवपूजिताय नमः
१८९. ॐ कामितार्थप्रदाय नमः
१९०. ॐ कामधेनुपूजनसुप्रियाय नमः
१९१. ॐ कामधेनुसमाराध्याय नमः
१९२. ॐ कृपापीयूषविवर्धनादाय नमः
१९३. ॐ कामधेन्वैकचित्ताय नमः
१९४. ॐ कृपराजसुपूजिताय नमः
१९५. ॐ कामदोग्ध्रे नमः
१९६. ॐ क्रुद्धाय नमः
१९७. ॐ कुरुवंशसुपूजिताय नमः
१९८. ॐ कृष्णाङ्गमहिषीदोग्ध्रे नमः
१९९. ॐ कृष्णेन कृतपूजनाय नमः
२००. ॐ कृष्णाङ्गमहिषीदानप्रियाय नमः
२०१. ॐ कोणस्थाय नमः
२०२. ॐ कृष्णाङ्गमहिषीदानलोलुपायनमः
२०३. ॐ कामपूजिताय नमः
२०४. ॐ क्रूरावलोकनात्सर्वनाशाय नमः
२०५. ॐ कृष्णाङ्गदप्रियाय नमः
२०६. ॐ खद्योताय नमः
२०७. ॐ खण्डनाय नमः
२०८. ॐ खड्गधराय नमः
२०९. ॐ खेचरपूजिताय नमः
२१०. ॐ खरांशुतनयाय नमः
२११. ॐ खगानाम्पतिवाहनाय नमः
२१२. ॐ गोसवासक्तहृदयाय नमः
२१३. ॐ गोचरस्थानदोषहृते नमः
२१४. ॐ गृहराश्यधिपाय नमः
२१५. ॐ गृहराजमहाबलाय नमः
२१६. ॐ गृध्रवाहाय नमः
२१७. ॐ गृहपतये नमः
२१८. ॐ गोचराय नमः
२१९. ॐ गानलोलुपाय नमः
२२०. ॐ घोराय नमः
२२१. ॐ घर्माय नमः
२२२. ॐ घनतमसे नमः
२२३. ॐ घर्मिणे नमः
२२४. ॐ घनकृपान्विताय नमः
२२५. ॐ घननीलाम्बरधराय नमः
२२६. ॐ ङादिवर्णसुसंजिताय नमः
२२७. ॐ चक्रवर्तिसमाराध्याय नमः
२२८. ॐ चन्द्रमत्यासमर्चिताय नमः
२२९. ॐ चन्द्रमत्यार्तिहारिणे नमः
२३०. ॐ चराचरसुखप्रदाय नमः
२३१. ॐ चतुर्भुजाय नमः
२३२. ॐ चापहस्ताय नमः
२३३. ॐ चराचरहितप्रदाय नमः
२३४. ॐ छायापुत्राय नमः
२३५. ॐ छत्रधराय नमः
२३६. ॐ छायादेवीसुताय नमः
२३७. ॐ जयप्रदाय नमः
२३८. ॐ जगन्नीलाय नमः
२३९. ॐ जपतां सर्वसिद्धिदाय नमः
२४०. ॐ जपविध्वस्तविमुखाय नमः
२४१. ॐ जम्भारिपरिपूजिताय नमः
२४२. ॐ जम्भारिवन्द्याय नमः
२४३. ॐ जयदाय नमः

२४४. ॐ जगज्जनमनोहराय नमः
२४५. ॐ जगत्त्रयप्रकुपिताय नमः
२४६. ॐ जगत्त्राणपरायणाय नमः
२४७. ॐ जयाय नमः
२४८. ॐ अयप्रदाय नमः
२४९. ॐ जगदानन्दकारकाय नमः
२५०. ॐ ज्योतिषे नमः
२५१. ॐ ज्योतिषांश्रेष्ठाय नमः
२५२. ॐ ज्योतिश्शास्त्रप्रवर्तकाय नमः
२५३. ॐ झर्झरीकृतहेदाय नमः
२५४. ॐ झल्लरीवाद्यसुप्रियाय नमः
२५५. ॐ ज्ञानमूर्त्तये नमः
२५६. ॐ ज्ञानगम्याय नमः
२५७. ॐ ज्ञानिने नमः
२५८. ॐ ज्ञानमहानिधये नमः
२५९. ॐ ज्ञानप्रबोधकाय नमः
२६०. ॐ ज्ञानदृष्ट्यावलोकिताय नमः
२६१. ॐ टङ्कितखिललोकाय नमः
२६२. ॐ टङ्कितैनस्तमेरवे नमः
२६३. ॐ टङ्कारकारकाय नमः
२६४. ॐ टङ्कृताय नमः
२६५. ॐ टाम्भदप्रियाय नमः
२६६. ॐ ठकारमयसर्वस्वाय नमः
२६७. ॐ ठकारकृतपूजिताय नमः
२६८. ॐ ढक्कावाद्यप्रीतिकराय नमः
२६९. ॐ डमड्डुमरुकप्रिया नमः
२७०. ॐ डम्बरप्रभवाय नमः
२७१. ॐ डम्भाय नमः
२७२. ॐ डाकिनीशाकिनीभूत-
सर्वोपद्रवकारकाय नमः
२७३. ॐ ढक्कानादप्रियङ्कराय नमः
२७४. ॐ डाकिनीशाकिनीभूत-
सर्वोपद्रवनाशकाय नमः
२७५. ॐ ढकाररूपाय नमः
२७६. ॐ ढांभिकाय नमः
२७७. ॐ णकारजपसुप्रियाय नमः
२७८. ॐ णकारमयमन्त्रार्थाय नमः
२७९. ॐ णकारैकशिरोमणये नमः
२८०. ॐ णकारवचनानन्दाय नमः
२८१. ॐ णकारकरुणामयाय नमः
२८२. ॐ णकारमयसर्वस्वाय नमः
२८३. ॐ णकारैकपरायणाय नमः
२८४. ॐ तर्जनीधृतमुद्राय नमः
२८५. ॐ तपसांफलदायकाय नमः
२८६. ॐ त्रिविक्रमनुताय नमः
२८७. ॐ त्रयीमयवपुर्धराय नमः
२८८. ॐ तपस्विने नमः
२८९. ॐ तपसादग्धदेहाय नमः
२९०. ॐ ताम्राधराय नमः
२९१. ॐ त्रिकालवेदितव्याय नमः
२९२. ॐ त्रिकालमतितोषिताय नमः
२९३. ॐ तुलोच्चयाय नमः
२९४. ॐ त्रासकराय नमः
२९५. ॐ तिलतैलप्रियाय नमः
२९६. ॐ तिलान्नसन्तुष्टमनसे नमः
२९७. ॐ तिलदानप्रियाय नमः

२९८. ॐ तिलभक्ष्यप्रियाय नमः
२९९. ॐ तिलचूर्णप्रियाय नमः
३००. ॐ तिलखण्डप्रियाय नमः
३०१. ॐ तिलापूपप्रियाय नमः
३०२. ॐ तिलहोमप्रियाय नमः
३०३. ॐ तापत्रयनिवारकाय नमः
३०४. ॐ तिलतर्पणसन्तुष्टाय नमः
३०५. ॐ तिलतैलान्नतोषिताय नमः
३०६. ॐ तिलैकदत्तहृदयाय नमः
३०७. ॐ तेजस्विने नमः
३०८. ॐ तेजसान्निधये नमः
३०९. ॐ तेजसादित्यसङ्काशाय नमः
३१०. ॐ तेजोमयवपुर्धराय नमः
३११. ॐ तत्त्वज्ञाय नमः
३१२. ॐ तीव्राय नमः
३१३. ॐ तपोरूपाय नमः
३१४. ॐ तपोमयाय नमः
३१५. ॐ तुष्टिदाय नमः
३१६. ॐ तुष्टिकृते नमः
३१७. ॐ तीक्ष्णाय नमः
३१८. ॐ त्रिमूर्तये नमः
३१९. ॐ त्रिगुणात्मकाय नमः
३२०. ॐ तिलदीपप्रियाय नमः
३२१. ॐ तस्यपीडानिवारकाय नमः
३२२. ॐ तिलोत्तमामेनकादिनर्तनप्रियाय नमः
३२३. ॐ त्रिभागमष्टवर्गाय नमः
३२४. ॐ स्थूलरोम्णे नमः
३२५. ॐ स्थिराय नमः
३२६. ॐ स्थिताय नमः
३२७. ॐ स्थायिने नमः
३२८. ॐ स्थपकाय नमः
३२९. ॐ स्थूलसूक्ष्मप्रदर्शकाय नमः
३३०. ॐ दशरथार्चितपादाय नमः
३३१. ॐ दशरथस्तोत्रतोषिताय नमः
३३२. ॐ दशरथप्रार्थनाक्लृप्तदुर्भिक्षविनिवारकाय नमः
३३३. ॐ दशरथप्रार्थनाक्लृप्तवरद्वयप्रदायकाय नमः
३३४. ॐ दशरथस्वात्मदर्शिने नमः
३३५. ॐ दशरथाभीष्टदायकाय नमः
३३६. ॐ दोर्भिर्धनुर्धराय नमः
३३७. ॐ दीर्घश्मश्रुजटाधराय नमः
३३८. ॐ दशरथस्तोत्रवरदाय नमः
३३९. ॐ दशरथाभीप्सितप्रदाय नमः
३४०. ॐ दशरथस्तोत्रसन्तुष्टाय नमः
३४१. ॐ दशरथेन सुपूजिताय नमः
३४२. ॐ द्वादशाष्टमजन्मस्थाय नमः
३४३. ॐ देवपुङ्गवपूजिताय नमः
३४४. ॐ देवदानवदर्पघ्नाय नमः
३४५. ॐ दिनंप्रतिमुनिस्तुताय नमः
३४६. ॐ द्वादशस्थाय नमः
३४७. ॐ द्वादशात्मसुताय नमः
३४८. ॐ द्वादशनामभृते नमः
३४९. ॐ द्वितीयस्थाय नमः
३५०. ॐ द्वादशार्कसूनवे नमः

३५१. ॐ दैवज्ञपूजिताय नमः
३५२. ॐ दैवज्ञचित्तवासिने नमः
३५३. ॐ दमयन्त्यासुपूजिताय नमः
३५४. ॐ द्वादशाब्दंतुदुर्भिक्षकारिणे नमः
३५५. ॐ दुःस्वप्ननाशनाय नमः
३५६. ॐ दुराराध्याय नमः
३५७. ॐ दुराधर्षाय नमः
३५८. ॐ दमयन्तीवरप्रदाय नमः
३५९. ॐ दुष्टदूराय नमः
३६०. ॐ दुराचारशमनाय नमः
३६१. ॐ दोषवर्जिताय नमः
३६२. ॐ दुस्सहाय नमः
३६३. ॐ दोषहन्त्रे नमः
३६४. ॐ दुर्लभाय नमः
३६५. ॐ दुर्गमाय नमः
३६६. ॐ दुःखप्रदाय नमः
३६७. ॐ दुःखहन्त्रे नमः
३६८. ॐ दीप्तरञ्जितदिङ्मुखाय नमः
३६९. ॐ दीप्यमानमुखाम्भोजाय नमः
३७०. ॐ दमयन्त्याशिशवप्रदाय नमः
३७१. ॐ दुर्निरीक्ष्याय नमः
३७२. ॐ दुष्टमात्रदैत्यमण्डलनाशकायनमः
३७३. ॐ द्विजदानैकनिरताय नमः
३७४. ॐ द्विजाराधनतत्पराय नमः
३७५. ॐ द्विजसर्वार्तिहारिणे नमः
३७६. ॐ द्विजराजसमर्चिताय नमः
३७७. ॐ द्विजदानैकचित्ताय नमः
३७८. ॐ द्विजराजप्रियङ्कराय नमः
३७९. ॐ द्विजाय नमः
३८०. ॐ द्विजप्रियाय नमः
३८१. ॐ द्विजराजेष्टदायकाय नमः
३८२. ॐ द्विजरूपाय नमः
३८३. ॐ द्विजश्रेष्ठाय नमः
३८४. ॐ दोषदाय नमः
३८५. ॐ दुस्सदाय नमः
३८६. ॐ देवादिदेवाय नमः
३८७. ॐ देवेशाय नमः
३८८. ॐ देवराजसुपूजिताय नमः
३८९. ॐ देवराजेष्टवरदाय नमः
३९०. ॐ देवराजप्रियङ्कराय नमः
३९१. ॐ देवादिवन्दिताय नमः
३९२. ॐ दिव्यतनवे नमः
३९३. ॐ देवशिखामणय नमः
३९४. ॐ देवगानप्रियाय नमः
३९५. ॐ देवदेशिकपुङ्गवाय नमः
३९६. ॐ द्विजात्मजासमाराध्याय नमः
३९७. ॐ ध्येयाय नमः
३९८. ॐ धर्मिणे नमः
३९९. ॐ धनुर्धराय नमः
४००. ॐ धनुष्मते नमः
४०१. ॐ धनदात्रे नमः
४०२. ॐ धर्माधर्मविवर्जिताय नमः
४०३. ॐ धर्मरूपाय नमः
४०४. ॐ धनुर्दिव्याय नमः
४०५. ॐ धर्मशास्त्रात्मचेतनाय नमः
४०६. ॐ धर्मराजप्रियकराय नमः

४०७. ॐ धर्मराजसुपूजिताय नमः
४०८. ॐ धर्मराजेष्टवरदाय नमः
४०९. ॐ धर्माभीष्टफलप्रदाय नमः
४१०. ॐ नित्यतृप्तस्वभावाय नमः
४११. ॐ नित्यकर्मरताय नमः
४१२. ॐ निजपीडार्तिहारिणे नमः
४१३. ॐ निजभक्तेष्टदायकाय नमः
४१४. ॐ निर्मांसदेहाय नमः
४१५. ॐ नीलाय नमः
४१६. ॐ निजस्तोत्रबहुप्रियाय नमः
४१७. ॐ नलस्तोत्रप्रियाय नमः
४१८. ॐ नलराजसुपूजिताय नमः
४१९. ॐ नक्षत्रमण्डलगताय नमः
४२०. ॐ नमतां प्रियकारकाय नमः
४२१. ॐ नित्यार्चितपदाम्भोजाय नमः
४२२. ॐ निजाज्ञापरिपालकाय नमः
४२३. ॐ नवग्रहवराय नमः
४२४. ॐ नीलवपुषे नमः
४२५. ॐ नलकरार्चिताय नमः
४२६. ॐ नलप्रियानन्दिताय नमः
४२७. ॐ नलक्षेत्रनिवासकाय नमः
४२८. ॐ नलपाकप्रियाय नमः
४२९. ॐ नलापद्भञ्जनक्षमाय नमः
४३०. ॐ नलसर्वार्तहारिणे नमः
४३१. ॐ नलेनात्मार्थपूजिताय नमः
४३२. ॐ नीपाटवीनिवासाय नमः
४३३. ॐ नलाभीष्टवरप्रदाय नमः
४३४. ॐ नक्षत्रराश्यधिपाय नमः
४३५. ॐ नलेशदर्शनस्याशुसाम्रा-
ज्यपदवीप्रदाय नमः
४३६. ॐ नक्षतीर्थसकृत्स्नान-
सर्वपीडानिवारकाय नमः
४३७. ॐ नीलध्वजविराजिताय नमः
४३८. ॐ नित्ययोगरताय नमः
४३९. ॐ नवरत्नविभूषिताय नमः
४४०. ॐ नवधाभज्यदेहाय नमः
४४१. ॐ नवीकृतजगत्त्रयाय नमः
४४२. ॐ नवग्रहाधिपाय नमः
४४३. ॐ नवाक्षरजपप्रियाय नमः
४४४. ॐ नवात्मने नमः
४४५. ॐ नवचक्रात्मने नमः
४४६. ॐ नवतत्त्वाधिपाय नमः
४४७. ॐ नवोदनप्रियाय नमः
४४८. ॐ नवधान्यप्रियाय नमः
४४९. ॐ निष्कण्टकाय नमः
४५०. ॐ निःस्पृहाय नमः
४५१. ॐ निरपेक्षाय नमः
४५२. ॐ निरामयाय नमः
४५३. ॐ नागराजार्चितपादाय नमः
४५४. ॐ नागराजप्रियङ्कराय नमः
४५५. ॐ नागराजेष्टवरदाय नमः
४५६. ॐ नागाभरणभूपिताय नमः
४५७. ॐ नागेन्द्रगाननिरताय नमः
४५८. ॐ नागाभरणभूषिताय नमः
४५९. ॐ नवमित्रस्वरूपाय नमः
४६०. ॐ नानाश्चर्यविधायकाय नमः

४६१. ॐ नानाद्वीपाधिकर्त्रे नमः
४६२. ॐ नानालिपिसमावृताय नमः
४६३. ॐ नानारूपजगत्स्रष्ट्रे नमः
४६४. ॐ नानारूपजनाश्रयाय नमः
४६५. ॐ नानालोकाधिपाय नमः
४६६. ॐ नानाभाषाप्रियाय नमः
४६७. ॐ नानारूपाधिकारिणे नमः
४६८. ॐ नवरत्नप्रियाय नमः
४६९. ॐ नानाविचित्रवेषाढ्याय नमः
४७०. ॐ नानाविचित्रविधायकाय नमः
४७१. ॐ नीलजीमूतसङ्काशाय नमः
४७२. ॐ नीलमेघसमप्रभाय नमः
४७३. ॐ नीलाञ्जनचयप्रख्याय नमः
४७४. ॐ नीलवस्त्रधरप्रियाय नमः
४७५. ॐ नीचभाषाप्रचारज्ञाय नमः
४७६. ॐ नीचेस्वल्पफलप्रदाय नमः
४७७. ॐ नानागमविधानज्ञाय नमः
४७८. ॐ नानानृपसमावृताय नमः
४७९. ॐ नानावर्णाकृतये नमः
४८०. ॐ नानावर्णस्वरार्तवाय नमः
४८१. ॐ नागलोकान्तवासिने नमः
४८२. ॐ नक्षत्रत्रयसंयुताय नमः
४८३. ॐ नभादिलोकसम्भूताय नमः
४८४. ॐ नामस्तोत्रबहुप्रियाय नमः
४८५. ॐ नामपारायणप्रीताय नमः
४८६. ॐ नामार्चनवरप्रदाय नमः
४८७. ॐ नामस्तोत्रैकचित्ताय नमः
४८८. ॐ नानारोगार्तिभञ्जनाय नमः
४८९. ॐ नवग्रहसमाराध्याय नमः
४९०. ॐ नवग्रहभयापहाय नमः
४९१. ॐ नवग्रहसुसम्पूज्याय नमः
४९२. ॐ नानावेधासुरक्षकाय नमः
४९३. ॐ नवग्रहाधिराजाय नमः
४९४. ॐ नवग्रहजपप्रियाय नमः
४९५. ॐ नवग्रहमयज्योतिषे नमः
४९६. ॐ नवग्रहवरप्रदाय नमः
४९७. ॐ नवग्रहाणामधिपाय नमः
४९८. ॐ नवग्रहसुपीडिताय नमः
४९९. ॐ नवग्रहधीश्वराय नमः
५००. ॐ नवमाणिक्यशोभिताय नमः
५०१. ॐ परमात्मने नमः
५०२. ॐ परब्रह्मणे नमः
५०३. ॐ परमैश्वर्यकारणाय नमः
५०४. ॐ प्रपन्नभयहारिणे नमः
५०५. ॐ प्रमत्तासुरशिक्षकाय नमः
५०६. ॐ प्रासहस्ताय नमः
५०७. ॐ पङ्गुपादाय नमः
५०८. ॐ प्रकाशात्मने नमः
५०९. ॐ प्रतापवते नमः
५१०. ॐ पावनाय नमः
५११. ॐ परिशुद्धात्मने नमः
५१२. ॐ पुत्रपौत्रप्रवर्धनाय नमः
५१३. ॐ प्रसन्नात्सर्वसुखदाय नमः
५१४. ॐ प्रसन्नेक्षणाय नमः
५१५. ॐ प्रजापत्याय नमः
५१६. ॐ प्रियकराय नमः

५१७. ॐ प्रणतेप्सितराज्यदाय नमः
५१८. ॐ प्रजानां जीवहेतये नमः
५१९. ॐ प्राणिनां परिपालकाय नमः
५२०. ॐ प्राणरूपिणे नमः
५२१. ॐ प्राणधारिणे नमः
५२२. ॐ प्रजानां हितकारकाय नमः
५२३. ॐ प्राज्ञाय नमः
५२४. ॐ प्रशान्ताय नमः
५२५. ॐ प्रज्ञावते नमः
५२६. ॐ प्रजारक्षणदीक्षिताय नमः
५२७. ॐ प्रावृषेण्याय नमः
५२८. ॐ प्राणकारिणे नमः
५२९. ॐ प्रसन्नोत्सववन्दिताय नमः
५३०. ॐ प्रज्ञानिवासहेतवे नमः
५३१. ॐ पुरुषार्थैकसाधनाय नमः
५३२. ॐ प्रजाकराय नमः
५३३. ॐ प्रातिकूल्याय नमः
५३४. ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः
५३५. ॐ प्रसन्नधिये नमः
५३६. ॐ प्रपञ्चात्मने नमः
५३७. ॐ प्रसवित्रे नमः
५३८. ॐ पुराणपुरुषोत्तमाय नमः
५३९. ॐ पुराणपुरुषाय नमः
५४०. ॐ पुरुहूताय नमः
५४१. ॐ प्रपञ्चधृते नमः
५४२. ॐ प्रतिष्ठिताय नमः
५४३. ॐ प्रीतिकराय नमः
५४४. ॐ प्रियकारिणे नमः
५४५. ॐ प्रयोजनाय नमः
५४६. ॐ प्रीतिमते नमः
५४७. ॐ प्रवरस्तुत्याय नमः
५४८. ॐ पुरूरवसमर्चिताय नमः
५४९. ॐ प्रपञ्चकारिणे नमः
५५०. ॐ पुण्याय नमः
५५१. ॐ पुरुहूतसमर्चिताय नमः
५५२. ॐ पाण्डवादिसुसंसेव्याय नमः
५५३. ॐ प्रणवाय नमः
५५४. ॐ पुरुषार्थदाय नमः
५५५. ॐ पयोदसमवर्णाय नमः
५५६. ॐ पाण्डुपुत्रर्तिभञ्जनाय नमः
५५७. ॐ पाण्डुपुत्रेष्टदात्रे नमः
५५८. ॐ पाण्डवानां हितङ्कराय नमः
५५९. ॐ पञ्चपाण्डवपुत्राणां
सर्वाभीष्टफलप्रदाय नमः
५६०. ॐ पञ्चपाण्डवपुत्राणां सर्वारिष्टनिवारकाय नमः
५६१. ॐ पाण्डुपुत्राद्यर्चिताय नमः
५६२. ॐ पूर्वजाय नमः
५६३. ॐ प्रपञ्चभृते नमः
५६४. ॐ परचक्रप्रभेदिने नमः
५६५. ॐ पाण्डवेषुवरप्रदाय नमः
५६६. ॐ परब्रह्मस्वरूपाय नमः
५६७. ॐ पराज्ञापरिवर्जिताय नमंः
५६८. ॐ परात्पराय नमः
५६९. ॐ पाशहन्त्रे नमः
५७०. ॐ परमाणवे नमः

५७१. ॐ प्रपञ्चकृते नमः
५७२. ॐ पातङ्गिने नमः
५७३. ॐ पुरुषाकाराय नमः
५७४. ॐ परशंभुसमुद्भवाय नमः
५७५. ॐ प्रसन्नात्सर्वसुखदाय नमः
५७६. ॐ प्रपञ्चोद्भवसम्भवाय नमः
५७७. ॐ प्रसन्नाय नमः
५७८. ॐ परमोदाराय नमः
५७९. ॐ पराहङ्कारभञ्जनाय नमः
५८०. ॐ पराय नमः
५८१. ॐ परमकारुण्याय नमः
५८२. ॐ परब्रह्ममयाय नमः
५८३. ॐ प्रपन्नभयहारिणे नमः
५८४. ॐ प्रणतार्तिहराय नमः
५८५. ॐ प्रसादकृते नमः
५८६. ॐ प्रपञ्चायं नमः
५८७. ॐ पराशक्तिसमुद्भवाय नमः
५८८. ॐ प्रदानपावनाय नमः
५८९. ॐ प्रशान्तात्मने नमः
५९०. ॐ प्रभाकराय नमः
५९१. ॐ प्रपञ्चात्मने नमः
५९२. ॐ प्रपञ्चोपशमनाय नमः
५९३. ॐ पृथिवीपतये नमः
५९४. ॐ परशुरामसमाराध्याय नमः
५९५. ॐ परशुरामवरप्रदाय नमः
५९६. ॐ परशुरामचिरञ्जीत्विप्रदाय नमः
५९७. ॐ परमपावनाय नमः
५९८. ॐ परमहंसस्वरूपाय नमः
५९९. ॐ परमहंससुपूजिताय नमः
६००. ॐ पञ्चनक्षत्राधिपाय नमः
६०१. ॐ पञ्नक्षत्रसेविताय नमः
६०२. ॐ प्रपञ्चरक्षिते नमः
६०३. ॐ प्रपञ्चस्य भयङ्कराय नमः
६०४. ॐ फलदानप्रियाय नमः
६०५. ॐ फलहस्ताय नमः
६०६. ॐ फलप्रदाय नमः
६०७. ॐ फलाभिषेकप्रियाय नमः
६०८. ॐ फल्गुनस्य वरप्रदाय नमः
६०९. ॐ फुटच्छमितपापौघाय नमः
६१०. ॐ फल्गुनेनप्रपूजिताय नमः
६११. ॐ फणिराजप्रियाय नमः
६१२. ॐ फुल्लाम्बुजविलोचनाय नमः
६१३. ॐ बलप्रियाय नमः
६१४. ॐ बलिने नमः
६१५. ॐ बभ्रुवे नमः
६१६. ॐ ब्रह्मविष्णवीशक्लेशकृते नमः
६१७. ॐ ब्रह्मविष्णवीशरूपाय नमः
६१८. ॐ ब्रह्मशक्रादिदुर्लभाय नमः
६१९. ॐ बासदष्ट्र्याप्रमेयाङ्गाय नमः
६२०. ॐ बिभ्रत्कवचकुण्लाय नमः
६२१. ॐ बहुश्रुताय नमः
६२२. ॐ बहुमतये नमः
६२३. ॐ ब्रह्मण्याय नमः
६२४. ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः
६२५. ॐ बलप्रमथनाय नमः

६२६. ॐ ब्रह्मणे नमः
६२७. ॐ बहुरूपाय नमः
६२८. ॐ बहुप्रदाय नमः
६२९. ॐ बालर्कद्युतिमते नमः
६३०. ॐ बालाय नमः
६३१. ॐ बृहद्वक्षसे नमः
६३२. ॐ बृहत्तनवे नमः
६३३. ॐ ब्रह्माण्डभेदकृते नमः
६३४. ॐ भक्तसर्वार्थसाधकाय नमः
६३५. ॐ भव्याय नमः
६३६. ॐ भोक्त्रे नमः
६३७. ॐ भीतिकृते नमः
६३८. ॐ भक्तानुग्रहकारकाय नमः
६३९. ॐ भीषणाय नमः
६४०. ॐ भैक्षकारिणे नमः
६४१. ॐ भूसुरादिसुपूजिताय नमः
६४२. ॐ भोगभाग्यप्रदाय नमः
६४३. ॐ भस्मीकृतजगत्त्रयाय नमः
६४४. ॐ भयानकाय नमः
६४५. ॐ भानुसूनवे नमः
६४६. ॐ भूतिभूषितविग्रहाय नमः
६४७. ॐ भास्वद्रताय नमः
६४८. ॐ भक्तिमतां सुलभाय नमः
६४९. ॐ भ्रुकुटीमुखाय नमः
६५०. ॐ भवभूतगणैस्स्तुत्याय नमः
६५१. ॐ भूतसंघसमावृताय नमः
६५२. ॐ भ्राजिष्णवे नमः
६५३. ॐ भगवते नमः
६५४. ॐ भीमाय नमः
६५५. ॐ भक्ताभीष्टवरप्रदाय नमः
६५६. ॐ भवभक्तैकचित्ताय नमः
६५७. ॐ भक्तिगीतस्तवोन्मुखाय नमः
६५८. ॐ भूतसन्तोषकारिणे नमः
६५९. ॐ भक्तानां चित्तशोधनाय नमः
६६०. ॐ भक्तिगम्याय नमः
६६१. ॐ भयहराय नमः
६६२. ॐ भावज्ञाय नमः
६६३. ॐ भक्तसुप्रियाय नमः
६६४. ॐ भूतिदाय नमः
६६५. ॐ भूतिकृते नमः
६६६. ॐ भोज्याय नमः
६६७. ॐ भूतात्मने नमः
६६८. ॐ भुवनेश्वराय नमः
६६९. ॐ मन्दाय नमः
६७०. ॐ मन्दगतये नमः
६७१. ॐ मासमेव प्रपूजिताय नमः
६७२. ॐ मुचुकुन्दसमाराध्याय नमः
६७३. ॐ मुचुकुन्दवरप्रदाय नमः
६७४. ॐ मुचुकुन्दार्चितपदाय नमः
६७५. ॐ महारूपाय नमः
६७६. ॐ महायशसे नमः
६७७. ॐ महाभोगिने नमः
६७८. ॐ महायोगिने नमः
६७९. ॐ महाकायाय नमः
६८०. ॐ महाप्रभवे नमः
६८१. ॐ महेशाय नमः

६८२. ॐ महदैश्वर्याय नमः
६८३. ॐ मन्दारकुसुमप्रियाय नमः
६८४. ॐ महाक्रतवे नमः
६८५. ॐ महामानिने नमः
६८६. ॐ महाधीराय नमः
६८७. ॐ महाजयाय नमः
६८८. ॐ महावीराय नमः
६८९. ॐ महाशान्ताय नमः
६९०. ॐ मण्डलस्थाय नमः
६९१. ॐ महाद्युतये नमः
६९२. ॐ महानुताय नमः
६९३. ॐ महोदराय नमः
६९४. ॐ महानीयाय नमः
६९५. ॐ महोदयाय नमः
६९६. ॐ मैथिलीवरदायिने नमः
६९७. ॐ मार्तण्डस्य द्वितीयजाय नमः
६९८. ॐ मैथिलीप्रार्थनाक्लृप्त-
दशकण्ठशिरोपहृते नमः
६९९. ॐ मरामरहराराध्याय नमः
७००. ॐ महेन्द्रादिसुरार्चिताय नमः
७०१. ॐ महारथाय नमः
७०२.. ॐ महावेगाय नमः
७०३. ॐ मणिरत्नविभूषिताय नमः
७०४. ॐ मेषनीचाय नमः
७०५. ॐ महाघोराय नमः
७०६. ॐ महासौरये नमः
७०७. ॐ मनुप्रियाय नमः
७०८. ॐ महादीर्घाय नमः
७०९. ॐ महाग्रासाय नमः
७१०. ॐ महदैश्वर्यदायकाय नमः
७११. ॐ महाशुष्काय नमः
७१२. ॐ महारौद्राय नमः
७१३. ॐ मुक्तिमार्गप्रदर्शकाय नमः
७१४. ॐ मकरकुम्भाधिपाय नमः
७१५. ॐ मृकण्डुतनयार्चिताय नमः
७१६. ॐ मन्त्राधिष्ठानरूपाय नमः
७१७. ॐ मल्लिकाकुसुमप्रियाय नमः
७१८. ॐ महामन्त्रस्वरूपाय नमः
७१९. ॐ महायन्त्रस्थिताय नमः
७२०. ॐ महाप्रकाशदि०यात्मने नमः
७२१. ॐ महादेवप्रियाय नमः
७२२. ॐ महाबलिसमाराध्याय नमः
७२३. ॐ महर्षिगणपूजिताय नमः
७२४. ॐ मन्दचारिणे नमः
७२५. ॐ महामायिने नमः
७२६. ॐ माषदानप्रियाय नमः
७२७. ॐ माषोदनप्रीतचित्ताय नमः
७२८. ॐ महाशक्तये नमः
७२९. ॐ महागुणाय नमः
७३०. ॐ यशस्कराय नमः
७३१. ॐ योगदात्रे नमः
७३२. ॐ यज्ञाङ्गाय नमः
७३३. ॐ युगन्धराय नमः
७३४. ॐ योगिने नमः
७३५. ॐ योग्याय नमः
७३६. ॐ याम्याय नमः

७३७. ॐ योगरूपिणे नमः
७३८. ॐ युगाधिपाय नमः
७३९. ॐ यज्ञभृते नमः
७४०. ॐ यजमानाय नमः
७४१. ॐ योगाय नमः
७४२. ॐ योगविदाम्वराय नमः
७४३. ॐ यक्षराक्षसवेतालकूष्माण्डादिप्रपूजिताय नमः
७४४. ॐ यमप्रत्यधिदेवाय नमः
७४५. ॐ युगपद्भोगदायकाय नमः
७४६. ॐ योगप्रियाय नमः
७४७. ॐ योगयुक्ताय नमः
७४८. ॐ यज्ञरूपाय नमः
७४९. ॐ युगान्तकृते नमः
७५०. ॐ रघुवंशसमाराध्याय नमः
७५१. ॐ रौद्राय नमः
७५२. ॐ रौद्राकृतये नमः
७५३. ॐ रघुनन्दनसंल्लापाय नमः
७५४. ॐ रघुप्रोक्तजपप्रियाय नमः
७५५. ॐ रौद्ररूपिणे नमः
७५६. ॐ रथारूढाय नमः
७५७. ॐ राघवेष्टवरप्रदाय नमः
७५८. ॐ रथिने नमः
७५९. ॐ रौद्राधिकारिणे नमः
७६०. ॐ राघवेणसमर्चिताय नमः
७६१. ॐ रोषात्सर्वस्वहारिणे नमः
७६२. ॐ राघवेणसुपूजिताय नमः
७६३. ॐ राशिद्वयाधिपाय नमः
७६४. ॐ रघुभिः परिपूजिताय नमः
७६५. ॐ राज्यभूपाकराय नमः
७६६. ॐ राजराजेन्द्रवन्दिताय नमः
७६७. ॐ रत्नकेयूरभूषाढ्याय नमः
७६८. ॐ रमानन्दनवन्दिताय नमः
७६९. ॐ रघुपौरुषसन्तुष्टाय नमः
७७०. ॐ रघुवंशनृपैःपूज्याय नमः
७७१. ॐ रणन्मञ्जीरनूपुराय नमः
७७२. ॐ रविनन्दनाय नमः
७७३. ॐ राजेन्द्राय नमः
७७४. ॐ रघुवंशप्रियाय नमः
७७५. ॐ लोहजप्रतिमादानप्रियाय नमः
७७६. ॐ लावण्यविग्रहाय नमः
७७७. ॐ लोकचूडामणये नमः
७७८. ॐ लक्ष्मीवाणीस्तुतिप्रियाय नमः
७७९. ॐ लोकरक्षाय नमः
७८०. ॐ लोकशिक्षाय नमः
७८१. ॐ लोकलोचनरञ्जिताय नमः
७८२. ॐ लोकाध्यक्षाय नमः
७८३. ॐ लोकवन्द्याय नमः
७८४. ॐ लक्ष्मणाग्रजपूजिताय नमः
७८५. ॐ वेदवेद्याय नमः
७८६. ॐ वज्रदेहाय नमः
७८७. ॐ वज्राङ्कुशधराय नमः
७८८. ॐ विश्ववन्द्याय नमः
७८९. ॐ विरूपाक्षाय नमः
७९०. ॐ विमलाङ्गविराजिताय नमः
७९१. ॐ विश्वस्थाय नमः

७९२. ॐ वायसारूढाय नमः
७९३. ॐ विशेषसुखकारकाय नमः
७९४. ॐ विश्वरूपिणे नमः
७९५. ॐ विश्वगोप्त्रे नमः
७९६. ॐ विभावसुनुताय नमः
७९७. ॐ विप्रप्रियाय नमः
७९८. ॐ विप्ररूपाय नमः
७९९. ॐ विप्राराधनतत्पराय नमः
८००. ॐ विशालनेत्राय नमः
८०१. ॐ विशिखाय नमः
८०२. ॐ विप्रदानबहुप्रियाय नमः
८०३. ॐ विश्वसृष्टिसमुद्भूताय नमः
८०४. ॐ वैश्वानरसमद्युतये नमः
८०५. ॐ विष्णवे नमः
८०६. ॐ विरिञ्चये नमः
८०७. ॐ विश्वेशाय नमः
८०८. ॐ विश्वकर्त्रे नमः
८०९. ॐ विशाम्पतये नमः
८१०. ॐ विराडाधारचक्रस्थाय नमः
८११. ॐ विश्वभुजे नमः
८१२. ॐ विश्वभावाय नमः
८१३. ॐ विश्वव्यापारहेतवे नमः
८१४. ॐ वक्रक्रूरविवर्जिताय नमः
८१५. ॐ विश्वोद्भवाय नमः
८१६. ॐ विश्वकर्मणे नमः
८१७. ॐ विश्वसृष्टिविधायकाय नमः
८१८. ॐ विश्वमूलनिवासिने नमः
८१९. ॐ विश्वचित्रविधायकाय नमः
८२०. ॐ विश्वाधारविलासिने नमः
८२१. ॐ व्यासेन कृतपूजिताय नमः
८२२. ॐ विभीषणेष्टवरदाय नमः
८२३. ॐ वाञ्छितार्थप्रदायकाय नमः
८२४. ॐ विभीषणसमाराध्याय नमः
८२५. ॐ विशेषसुखदायकाय नमः
८२६. ॐ विषमव्ययाष्टजन्मस्थैकादशफलप्रदाय नमः
८२७. ॐ वासवात्मजसुप्रीताय नमः
८२८. ॐ वसुदाय नमः
८२९. ॐ वासवार्चिताय नमः
८३०. ॐ विश्वत्राणैकनिरताय नमः
८३१. ॐ वाङ्मनोतीतविग्रहाय नमः
८३२. ॐ विराणमन्दिरमूलस्थाय नमः
८३३. ॐ वलीमुखसुखप्रदाय नमः
८३४. ॐ विपाशाय नमः
८३५. ॐ विगतातङ्काय नमः
८३६. ॐ विकल्पपरिवर्जिताय नमः
८३७. ॐ वरिष्ठाय नमः
८३८. ॐ वरदाय नमः
८३९. ॐ वन्द्याय नमः
८४०. ॐ विचित्राङ्गाय नमः
८४१. ॐ विरोचनाय नमः
८४२. ॐ शुष्कोदराय नमः
८४३. ॐ शुक्लवपुषे नमः
८४४. ॐ शान्तरूपिणे नमः
८४५. ॐ शनैश्चराय नमः
८४६. ॐ शूलिने नमः

८४७. ॐ शरण्याय नमः
८४८. ॐ शान्ताय नमः
८४९. ॐ शिवायामप्रियङ्कराय नमः
८५०. ॐ शिवभक्तिमतांश्रेष्ठाय नमः
८५१. ॐ शूलपाणये नमः
८५२. ॐ शुचिप्रियाय नमः
८५३. ॐ श्रुतिस्मृतिपुराणज्ञाय नमः
८५४. ॐ श्रुतिजालप्रबोधकाय नमः
८५५. ॐ श्रुतिपारगसम्पूज्याय नमः
८५६. ॐ श्रुतिश्रवणलोलुपाय नमः
८५७. ॐ श्रुत्यन्तर्गतमर्मज्ञाय नमः
८५८. ॐ श्रुत्येष्टवरदायकाय नमः
८५९. ॐ श्रुतिरूपाय नमः
८६०. ॐ श्रुतिप्रीताय नमः
८६१. ॐ श्रुतीप्सितफलप्रदाय नमः
८६२. ॐ श्रुतिश्रुताय नमः
८६३. ॐ शान्तमूर्तये नमः
८६४. ॐ श्रुतिश्रवणकीर्तनाय नमः
८६५. ॐ शमीमूलनिवासिने नमः
८६६. ॐ शमीकृतफलप्रदाय नमः
८६७. ॐ शमीकृतमहाघोराय नमः
८६८. ॐ शरणागतवत्सलाय नमः
८६९. ॐ शमीतरुस्वरूपाय नमः
८७०. ॐ विमन्त्रज्ञमुक्तिदाय नमः
८७१. ॐ शिवागमैकनिलयाय नमः
८७२. ॐ शिवमन्त्रजपप्रियाय नमः
८७३. ॐ शमीपत्रप्रियाय नमः
८७४. ॐ मीपर्णसमर्चिताय नमः
८७५. ॐ शतोपनिषदस्तुत्याय नमः
८७६. ॐ शान्त्यादिगुणभूषिताय०
८७७. ॐ शान्त्यादिषड्गुणोपेताय नमः
८७८. ॐ शङ्खवाद्यप्रियाय नमः
८७९. ॐ श्यामरक्तसितज्योतिषे नमः
८८०. ॐ शुद्धपञ्चाक्षरप्रियाय नमः
८८१. ॐ श्रीहालास्यक्षेत्रवासिने०
८८२. ॐ श्रीमते नमः
८८३. ॐ शक्तिधराय नमः
८८४. ॐ षोडशद्वयसम्पूर्णलक्षणाय नमः
८८५. ॐ षणमुखप्रियाय नमः
८८६. ॐ षड्गुणैश्वर्यसंयुक्ताय नमः
८८७. ॐ षडङ्गावरणोज्ज्वलाय नमः
८८८. ॐ षडक्षरस्वरूपाय नमः
८८९. ॐ षट्चक्रोपरिसंस्थिताय नमः
८९०. ॐ षोशशिने नमः
८९१. ॐ षोडशान्ताय नमः
८९२. ॐ षट्छक्तिव्यक्तमूर्तिमते नमः
८९३. ॐ षड्भावरहिताय नमः
८९४. ॐ षडङ्गश्रुतिपारगाय नमः
८९५. ॐ षट्कोणमध्यनिलयाय०
८९६. ॐ षट्छास्त्रस्मृतिपारगाय०
८९७. ॐ स्वर्णेन्द्रनीलमकुटाय नमः
८९८. ॐ सर्वाभीष्टप्रदायकाय नमः
८९९. ॐ सर्वात्मने नमः
९००. ॐ सर्वदोषघ्नाय नमः
९०१. ॐ सर्वगर्वप्रभञ्जनाय नमः
९०२. ॐ समस्तलोकाभयदाय नमः

१०३. ॐ सर्वदोषाङ्गनाशकाय नमः
१०४. ॐ समस्तभक्तसुखदाय नमः
१०५. ॐ सर्वदोषनिवर्तकाय नमः
१०६. ॐ सर्वनाशक्षमाय नमः
१०७. ॐ सौम्याय नमः
१०८. ॐ सर्वक्लेशनिवारकाय नमः
१०९. ॐ सर्वात्मने नमः
११०. ॐ सर्वदातुष्टाय नमः
१११. ॐ सर्वपीडानिवारकाय नमः
११२. ॐ सर्वरूपिणे नमः
११३. ॐ सर्वकर्मणे नमः
११४. ॐ सर्वज्ञाय नमः
११५. ॐ सर्वकारकाय नमः
११६. ॐ सुकृते नमः
११७. ॐ सुलभाय नमः
११८. ॐ सर्वाभीष्टफलप्रदाय नमः
११९. ॐ सूर्यात्मजाय नमः
१२०. ॐ सदातुष्टाय नमः
१२१. ॐ सूर्यवंशप्रदीपनाय नमः
१२२. ॐ सप्तद्वीपाधिपाय नमः
१२३. ॐ सुरासुरभयङ्कराय नमः
१२४. ॐ सर्वसंक्षोभहारिणे नमः
१२५. ॐ सर्वलोकहितङ्कराय नमः
१२६. ॐ सर्वौदार्यस्वभावाय नमः
१२७. ॐ सन्तोषात्सकलेष्टदाय नमः
१२८. ॐ समस्तऋषिभिः स्तुत्याय नमः
१२९. ॐ समस्तगणपावृताय नमः
१३०. ॐ समस्तगणसंसेव्याय नमः
१३१. ॐ सर्वारिष्टविनाशनाय नमः
१३२. ॐ सर्वसौख्यप्रदात्रे नमः
१३३. ॐ सर्वव्याकुलनाशनाय नमः
१३४. ॐ सर्वसंक्षोभहारिणे नमः
१३५. ॐ सर्वारिष्टफलप्रदाय नमः
१३६. ॐ सर्वव्याधिप्रशमनाय नमः
१३७. ॐ सर्वमृत्युनिवारकाय नमः
१३८. ॐ सर्वानुकूलकारिणे नमः
१३९. ॐ सौन्दर्यमृदुभाषिताय नमः
१४०. ॐ सौराष्ट्रदेशोद्भवाय नमः
१४१. ॐ स्वक्षेत्रेष्टवरप्रदाय नमः
१४२. ॐ सोमयाजिसमाराध्याय नमः
१४३. ॐ सीताभीष्टवरप्रदाय नमः
१४४. ॐ सुखासनोपविष्टाय नमः
१४५. ॐ सद्यःपीडानिवारकाय नमः
१४६. ॐ सौदामिनीसन्निभाय नमः
१४७. ॐ सर्वानुल्लङ्घ्यशासनाय नमः
१४८. ॐ सूर्यमण्डलसञ्चारिणे नमः
१४९. ॐ संहारास्त्रनियोजिताय नमः
१५०. ॐ सर्वलोकक्षयकराय नमः
१५१. ॐ सर्वारिष्टविधायकाय नमः
१५२. ॐ सर्वव्याकुलकारिणे नमः
१५३. ॐ सहस्रजपसुप्रियाय नमः
१५४. ॐ सुखासनोपविष्टाय नमः
१५५. ॐ संहारास्त्रप्रदर्शिताय नमः
१५६. ॐ सर्वालङ्कारसंयुक्तकृष्णगोदानसुप्रियाय नमः
१५७. ॐ सुप्रसन्नाय नमः
१५८. ॐ सुरश्रेष्ठाय नमः
१५९. ॐ सुघोषाय नमः

९६०. ॐ सुखदाय नमः
९६१. ॐ सुहृदे नमः
९६२. ॐ सिद्धार्थाय नमः
९६३. ॐ सिद्धसङ्कल्पाय नमः
९६४. ॐ सर्वज्ञाय नमः
९६५. ॐ सर्वदाय नमः
९६६. ॐ सुखिने नमः
९६७. ॐ सुग्रीवाय नमः
९६८. ॐ सुधृतये नमः
९६९. ॐ साराय नमः
९७०. ॐ सुकुमाराय नमः
९७१. ॐ सुलोचनाय नमः
९७२. ॐ सुव्यक्ताय नमः
९७३. ॐ सच्चिदानन्दाय नमः
९७४. ॐ सुवीराय नमः
९७५. ॐ सुजनाश्रयाय नमः
९७६. ॐ हरिश्चन्द्रसमाराध्याय नमः
९७७. ॐ हेयोपादेयवर्जिताय नमः
९७८. ॐ हरिश्चन्द्रेष्टवरदाय नमः
९७९. ॐ हंसमन्त्रादिसंस्तुताय नमः
९८०. ॐ हंसवाहसमाराध्याय नमः
९८१. ॐ हंसग्राहवरप्रदाय नमः
९८२. ॐ हृद्याय नमः
९८३. ॐ हृष्टाय नमः
९८४. ॐ हरिसखाय नमः
९८५. ॐ हंसाय नमः
९८६. ॐ हंसगतये नमः
९८७. ॐ हविषे नमः
९८८. ॐ हिरण्यवर्णाय नमः
९८९. ॐ हितकृते नमः
९९०. ॐ हर्षदाय नमः
९९१. ॐ हेमभूषणाय नमः
९९२. ॐ हविर्होत्रे नमः
९९३. ॐ हंसगतये नमः
९९४. ॐ हंसमन्त्रादिसंस्तुताय नमः
९९५. ॐ हनूमदर्चितपदाय नमः
९९६. ॐ हलधृत्पूजिताय नमः
९९७. ॐ क्षेमदाय नमः
९९८. ॐ क्षेमकृते नमः
९९९. ॐ क्षेम्याय नमः
१०००. ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः
१००१. ॐ क्षामवर्जिताय नमः
१००२. ॐ क्षुद्रघ्नाय नमः
१००३. ॐ क्षान्तिदाय नमः
१००४. ॐ क्षमाय नमः
१००५. ॐ क्षितिभूषाय नमः
१००६. ॐ क्षमाश्रयाय नमः
१००७. ॐ क्षमाधराय नमः
१००८. ॐ क्षयद्वाराय नमः

शन्यष्टोत्तरशतनामावल्याः जपविधिः

१. ॐ शनैश्चराय नमः।
२. ॐ शान्ताय नमः।
३. ॐ सर्वाभीष्टप्रदायिने नमः।
४. ॐ शरण्याय नमः।
५. ॐ वरेण्याय नमः।
६. ॐ सर्वेशाय नमः।
७. ॐ सौम्याय नमः।
८. ॐ सुरवन्द्याय नमः।
९. ॐ सुरलसोकविहारिणे नमः।
१०. ॐ सुखासनोपविष्टाय नमः।
११. ॐ सुन्दराय नमः।
१२. ॐ घनाय नमः।
१३. ॐ घनरूपाय नमः।
१४. ॐ घनाभरणधारिणे नमः।
१५. ॐ घनसारविलेपनाय नमः।
१६. ॐ खद्योताय नमः।
१७. ॐ मन्दाय नमः।
१८. ॐ मन्दचेष्टाय नमः।
१९. ॐ महनीयगुणात्मने नमः।
२०. ॐ मर्त्यपावनपादाय नमः।
२१. ॐ महेशाय नमः।
२२. ॐ छायापुत्राय नमः।
२३. ॐ शर्वाय नमः।
२४. ॐ शरतूणीरधारिणे नमः।
२५. ॐ चरस्थिरस्वभावाय नमः।
२६. ॐ चञ्चलाय नमः।
२७. ॐ नीलवर्णाय नमः।
२८. ॐ नित्याय नमः।
२९. ॐ नीलाञ्जननिभाय नमः।
३०. ॐ नीलाम्बरविभूषाय नमः।
३१. ॐ निश्चलाय नमः।
३२. ॐ विधिरूपाय नमः।
३३. ॐ वैद्याय नमः।
३४. ॐ विरोधाधारभूमये नमः।
३५. ॐ वेदास्पदस्वभावाय नमः।
३६. ॐ वज्रदेहाय नमः।
३७. ॐ वैराग्यदाय नमः।
३८. ॐ वीराय नमः।
३९. ॐ वीतरोगभयाय नमः।
४०. ॐ विपत्परंपरेशाय नमः।
४१. ॐ विश्ववन्द्याय नमः।
४२. ॐ गृध्रवाहनाय नमः।
४३. ॐ गूढाय नमः।
४४. ॐ कूर्माङ्गाय नमः।
४५. ॐ कुरूपिणे नमः।
४६. ॐ कुत्सिताय नमः।
४७. ॐ गुणाढ्याय नमः।
४८. ॐ गोचराय नमः।
४९. ॐ अविद्यामूलनाशनाय नमः।
५०. ॐ विद्याऽविद्यास्वरूपिणे नमः
५१. ॐ आयुष्यकारणाय नमः।
५२. ॐ आपदुद्धर्त्रे नमः।
५३. ॐ विष्णुभक्ताय नमः।
५४. ॐ वशिने नमः।

५५. ॐ विविधागमवेदिने नमः ।
५६. ॐ विधिस्तुत्याय नमः ।
५७. ॐ वन्द्याय नमः ।
५८. ॐ विरूपाक्षाय नमः ।
५९. ॐ वरिष्ठाय नमः ।
६०. ॐ गरिष्ठाय नमः ।
६१. ॐ वज्राङ्कुशधराय नमः ।
६२. ॐ वरदाय नमः ।
६३. ॐ अभय हस्ताय नमः ।
६४. ॐ वामनाय नमः ।
६५. ॐ ज्येष्ठापत्नीसमेताय नमः ।
६६. ॐ श्रेष्ठाय नमः ।
६७. ॐ मितभाषिणे नमः ।
६८. ॐ अष्टौघनाशनाय नमः ।
६९. ॐ आर्यपुष्टिदाय नमः ।
७०. ॐ स्तुत्याय नमः ।
७१. ॐ स्तोत्रगम्याय नमः ।
७२. ॐ भक्तिवश्याय नमः ।
७३. ॐ भानवे नमः ।
७४. ॐ भानुपुत्राय नमः ।
७५. ॐ भव्याय नमः ।
७६. ॐ पावनाय नमः ।
७७. ॐ धनुर्मण्डलसंस्थाय नमः ।
७८. ॐ धनदाय नमः ।
७९. ॐ धनुष्मते नमः ।
८०. ॐ तनुप्रकाशदेहाय नमः ।
८१. ॐ तामसाय नमः ।
८२. ॐ अशेषजनवन्द्याय नमः ।
८३. ॐ विशेषफलदायिने नमः ।
८४. ॐ वशीकृतजनेशाय नमः ।
८५. ॐ पशूनाम्पत्ये नमः ।
८६. ॐ खेचराय नमः ।
८७. ॐ घननीलाम्बराय नमः ।
८८. ॐ काठिन्यमानसाय नमः ।
८९. ॐ आर्यगणस्तुत्याय नमः ।
९०. ॐ नीलच्छत्राय नमः ।
९१. ॐ नित्याय नमः ।
९२. ॐ निर्गुणाय नमः ।
९३. ॐ गुणात्मने नमः ।
९४. ॐ निरामयाय नमः ।
९५. ॐ निन्द्याय नमः ।
९६. ॐ वन्दनीयाय नमः ।
९७. ॐ धीराय नमः ।
९८. ॐ दिव्यदेहाय नमः ।
९९. ॐ दीनार्तिहरणाय नमः ।
१००. ॐ दैत्यानाशनाय नमः ।
१०१. ॐ आर्यजनगण्याय नमः ।
१०२. ॐ क्रूराय नमः ।
१०३. ॐ क्रूरचेष्टाय नमः ।
१०४. ॐ कामक्रोधकराय नमः ।
१०५. ॐ कलत्रपुत्रशत्रुत्वकारणाय नमः
१०६. ॐ परिपोषितभक्ताय नमः ।
१०७. ॐ परभीतिहराय नमः ।
१०८. ॐ भक्तसङ्घमनोभीष्टफलदाय नमः

शन्यष्टोत्तरशतनामावल्याः हवनम्

१. ॐ शनैश्चराय स्वाहा।
२. ॐ शान्ताय स्वाहा।
३. ॐ सर्वाभीष्टप्रदायिने स्वाहा।
४. ॐ शरण्याय स्वाहा।
५. ॐ वरेण्याय स्वाहा।
६. ॐ सर्वेशाय स्वाहा।
७. ॐ सौम्याय स्वाहा।
८. ॐ सुरवन्द्याय स्वाहा।
९. ॐ सुरलसोकविहारिणे स्वाहा।
१०. ॐ सुखासनोपविष्टाय स्वाहा।
११. ॐ सुन्दराय स्वाहा।
१२. ॐ घनाय स्वाहा।
१३. ॐ घनरूपाय स्वाहा।
१४. ॐ घनाभरणधारिणे स्वाहा।
१५. ॐ घनसारविलेपनाय स्वाहा।
१६. ॐ खद्योताय स्वाहा।
१७. ॐ मन्दाय स्वाहा।
१८. ॐ मन्दचेष्टाय स्वाहा।
१९. ॐ महनीयगुणात्मने स्वाहा।
२०. ॐ मर्त्यपावनपादाय स्वाहा।
२१. ॐ महेशाय स्वाहा।
२२. ॐ छायापुत्राय स्वाहा।
२३. ॐ शर्वाय स्वाहा।
२४. ॐ शरतूणीरधारिणे स्वाहा।
२५. ॐ चरस्थिरस्वभावाय स्वाहा।
२६. ॐ चञ्चलाय स्वाहा।
२७. ॐ नीलवर्णाय स्वाहा।
२८. ॐ नित्याय स्वाहा।
२९. ॐ नीलाञ्जननिभाय स्वाहा।
३०. ॐ नीलाम्बरविभूषाय स्वाहा।
३१. ॐ निश्चलाय स्वाहा।
३२. ॐ विधिरूपाय स्वाहा।
३३. ॐ वैद्याय स्वाहा।
३४. ॐ विरोधाधारभूमये स्वाहा।
३५. ॐ वेदास्पदस्वभावाय स्वाहा।
३६. ॐ वज्रदेहाय स्वाहा।
३७. ॐ वैराग्यदाय स्वाहा।
३८. ॐ वीराय स्वाहा।
३९. ॐ वीतरोगभयाय स्वाहा।
४०. ॐ विपत्परंपरेशाय स्वाहा।
४१. ॐ विश्ववन्द्याय स्वाहा।
४२. ॐ गृध्रवाहनाय स्वाहा।
४३. ॐ गूढाय स्वाहा।
४४. ॐ कूर्माङ्गाय स्वाहा।
४५. ॐ कुरूपिणे स्वाहा।
४६. ॐ कुत्सिताय स्वाहा।
४७. ॐ गुणाढ्याय स्वाहा।
४८. ॐ गोचराय स्वाहा।
४९. ॐ अविद्यामूलनाशनाय स्वाहा।
५०. ॐ विद्याऽविद्यास्वरूपिणे स्वाहा
५१. ॐ आयुष्यकारणाय स्वाहा।
५२. ॐ आपदुद्धर्त्रे स्वाहा।
५३. ॐ विष्णुभक्ताय स्वाहा।
५४. ॐ वशिने स्वाहा।

५५. ॐ विविधागमवेदिने स्वाहा।
५६. ॐ विधिस्तुत्याय स्वाहा।
५७. ॐ वन्द्याय स्वाहा।
५८. ॐ विरूपाक्षाय स्वाहा।
५९. ॐ वरिष्ठाय स्वाहा।
६०. ॐ गरिष्ठाय स्वाहा।
६१. ॐ वज्राङ्कुशधराय स्वाहा।
६२. ॐ वरदाय स्वाहा।
६३. ॐ अभय हस्ताय स्वाहा।
६४. ॐ वामनाय स्वाहा।
६५. ॐ ज्येष्ठापत्नीसमेताय स्वाहा।
६६. ॐ श्रेष्ठाय स्वाहा।
६७. ॐ मितभाषिणे स्वाहा।
६८. ॐ अष्टौघनाशनाय स्वाहा।
६९. ॐ आर्यपुष्टिदाय स्वाहा।
७०. ॐ स्तुत्याय स्वाहा।
७१. ॐ स्तोत्रगम्याय स्वाहा।
७२. ॐ भक्तिवश्याय स्वाहा।
७३. ॐ भानवे स्वाहा।
७४. ॐ भानुपुत्राय स्वाहा।
७५. ॐ भव्याय स्वाहा।
७६. ॐ पावनाय स्वाहा।
७७. ॐ धनुर्मण्डलसंस्थाय स्वाहा।
७८. ॐ धनदाय स्वाहा।
७९. ॐ धनुष्मते स्वाहा।
८०. ॐ तनुप्रकाशदेहाय स्वाहा।
८१. ॐ तामसाय स्वाहा।
८२. ॐ अशेषजनवन्द्याय स्वाहा।
८३. ॐ विशेषफलदायिने स्वाहा।
८४. ॐ वशीकृतजनेशाय स्वाहा।
८५. ॐ पशूनाम्पत्ये स्वाहा।
८६. ॐ खेचराय स्वाहा।
८७. ॐ घननीलाम्बराय स्वाहा।
८८. ॐ काठिन्यमानसाय स्वाहा।
८९. ॐ आर्यगणस्तुत्याय स्वाहा।
९०. ॐ नीलच्छत्राय स्वाहा।
९१. ॐ नित्याय स्वाहा।
९२. ॐ निर्गुणाय स्वाहा।
९३. ॐ गुणात्मने स्वाहा।
९४. ॐ निरामयाय स्वाहा।
९५. ॐ निन्द्याय स्वाहा।
९६. ॐ वन्दनीयाय स्वाहा।
९७. ॐ धीराय स्वाहा।
९८. ॐ दिव्यदेहाय स्वाहा।
९९. ॐ दीनार्तिहरणाय स्वाहा।
१००. ॐ दैत्यानाशनाय स्वाहा।
१०१. ॐ आर्यजनगण्याय स्वाहा।
१०२. ॐ क्रूराय स्वाहा।
१०३. ॐ क्रूरचेष्टाय स्वाहा।
१०४. ॐ कामक्रोधकराय स्वाहा।
१०५. ॐ कलत्रपुत्रशत्रुत्वकारणाय स्वाहा
१०६. ॐ परिपोषितभक्ताय स्वाहा।
१०७. ॐ परभीतिहराय स्वाहा।
१०८. ॐ भक्तसङ्घमनोभीष्टफलदाय स्वाहा

शनिप्रतिष्ठायां विहितन्यासाः

इसके बाद वेदी पर उत्तराभिमुख अथवा पूर्वाभिमुख शनिदेवता के सम्मुख होकर देशकाल काल संकीर्त्यन (नाम लेकर) निम्न संकल्प करें—

देशकालौ संकीर्त्य, अस्मिन् शनिदेवार्चाधिवासनकर्मणि देवकलासान्निध्यार्थं प्रणवादिन्यासान् करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करके हाथ में पुष्प लेकर निम्न क्रम से न्यास करें—

प्रणवन्यासः

१. ॐ अं नमः पादयोर्न्यसामि। २. ॐ उं नमः हृदये न्यसामि। ३. ॐ मं नमः ललाटे न्यसामि।

व्याहृतिन्यासः

१. ॐ भूः नमः पादयोः न्यसामि। २. ॐ भुवः नमः हृदये न्यसामि। ३. ॐ स्वः नमः ललाटे न्यसामि।

मातृकान्यासः

१. ॐ अं नमः शिरसि न्यसामि। २. ॐ आं नमः मुखे न्यसामि। ३. ॐ इं नम : दक्षिणनेत्रे न्यसामि। ४. ॐ ईं नमः वामनेत्रे न्यसामि। ५. ॐ उं नमः दक्षिणश्रवणे न्यसामि। ६. ॐ ऊं नमः वामश्रवणे न्यसामि। ७. ॐ ऋं नमः दक्षिणगण्डे न्यसामि। ८. ॐ ॠं वामगण्डे न्यसामि। ९. ॐ लृं नमः दक्षिणनासापुटे न्यसामि। १०. ॐ लॄं नमः वामनासापुटे न्यसामि। ११. ॐ एं नमः ऊर्ध्वदंशनेषु न्यसामि। १२. ॐ ऐं अधोदशनेषु न्यसामि। १३. ॐ ओं नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यसामि। १४. औं नमः अधोरोष्ठे न्यसामि। १५. ॐ अं नमः ललाटे न्यसामि। १६. ॐ अः नमः जिह्वायां न्यसामि। १७. ॐ यं नमः त्वचि न्यसामि। १८. ॐ रं नमः चक्षुषोर्न्यसामि। १९. ॐ लं नमः नासिकायां न्यसामि। २०. ॐ वं नमः दशनेषु न्यसामि। २१. ॐ शं नमः श्रोत्रयोर्न्यसामि। २२. ॐ षं नमः उदरे न्यसामि। २३. ॐ सं नमः कटिदेशे न्यसामि। २४. ॐ हं नमः हृदये न्यसामि। २५. ॐ क्षं नमः नाभौ

न्यसामि। २६. ॐ लं लिङ्गे न्यसामि। २७. ॐ पं फं बं भं मं दक्षिणबाहौ न्यसामि। २८. ॐ तं थं दं धं नं वामबाहौ न्यसामि। २९. ॐ टं ठं डं ढं णं दक्षिणजङ्घायां न्यसामि। ३०. ॐ चं छं जं झं ञं वामजङ्घायां न्यसामि। ३१. ॐ कं खं गं घं ङं सर्वाङ्गुलिषु न्यसामि।

ऋक्षन्यासः

१. ॐ रविचन्द्राभ्यां नमः नेत्रे न्यसामि। २. ॐ भौमाय नमः हृदये न्यसामि। ३. ॐ बुधाय नमः स्कन्धे न्यसामि। ४. ॐ बृहस्पतये नमः जिह्वायां न्यसामि। ५. ॐ शुक्राय नमः लिङ्गे न्यसामि। ६. ॐ शनैश्चराय नमः ललाटे न्यसामि। ७. ॐ राहवे नमः पादयोर्न्यसामि। ८. ॐ केतुभ्यो नमः केशेषु न्यसामि। ९. ॐ रोहिणोभ्यो नमः हृदये न्यसामि। १०. ॐ मृगशिरसे नमः शिरसि न्यसामि। ११. ॐ आर्द्रायै नमः केशेषु न्यसामि। १२. पुनर्वसुभ्यां नमः ललाटे न्यसामि। १३. ॐ पुष्याय नमः मुखे न्यसामि। १४. ॐ आश्लेषाभ्यो नमः नासिकायां न्यसामि। १५. ॐ मघाभ्यो नमः दन्तेषु न्यसामि। १६. ॐ पूर्वाफाल्गुनोभ्यो नमः दक्षिणश्रवणे न्यसामि। १७. ॐ उत्तराफाल्गुनीभ्यो नमः वामश्रवणे न्यसामि। १८. ॐ हस्ताय नमः हस्तयो न्यसामि। १९. ॐ चित्रायै नमः दक्षिणभुजे न्यसामि। २०. ॐ स्वात्यै नमः वामभुजे न्यसामि। २१. ॐ विशाखाभ्यां नमः हृदि न्यसामि। २२. ॐ अनुराधाभ्यो नमः स्तनयो न्यसामि। २३. जेष्ठाभ्यो नमः दक्षिणकुक्षौ न्यसामि। २४. ॐ मूलाय नमः वामकुक्षौ न्यसामि। २५. ॐ पूर्वाषाढाभ्यो नमः कटिपार्श्वे न्यसामि। २६. ॐ उत्तराषाढाभ्यो नमः लिङ्गे न्यसामि। २७. ॐ श्रवणधनिष्ठाभ्यो नमः वृषणयो न्यसामि। २८. ॐ शतभिषाभ्यो नमः नेत्रे न्यसामि। २९. ॐ पूर्वाभाद्रपदाभ्यो नमः दक्षिणोरौ न्यसामि। ३०. ॐ उत्तराभाद्रपदाभ्यो नमः वामोरौ न्यसामि। ३१. ॐ रेवतीभ्यो दक्षिणजङ्घाया न्यसामि। ३२. ॐ अश्विनीभ्यां नमः वामजङ्घाया

न्यसामि। ३३. ॐ भरणीभ्यो नमः दक्षिणपादे न्यसामि। ३४. ॐ कृत्तिकाभ्यो नमः वामपादे न्यसामि। ३५. ॐ ध्रुवाय नमः नाभ्यां न्यसामि। ३६. ॐ सप्तर्षिभ्यो नमः कण्ठे न्यसामि। ३७. ॐ मातृमण्डलाय नमः कटिदेशे न्यसामि। ३८. ॐ विष्णुपदेभ्यो नमः पादयो न्यसामि। ३९. ॐ नागवीथ्यै नमः, ॐ अङ्गवीथ्यै नमः, वनमालादेशे न्यसामि। ४०. ॐ ताराभ्यो नमः रोमकूपेषू न्यसामि। ४१. ॐ अगस्त्याय नमः कौस्तुभदेशे न्यसामि।

कालन्यासः

१. ॐ चैत्राय नमः शिरसि न्यसामि। २. ॐ वैशाखाय नमः मुखे न्यसामि। ३. ॐ ज्यैष्ठ्याय नमः हृदये न्यसामि। ४. ॐ आषाढाय नमः दक्षिणस्तने न्यसामि। ५. ॐ श्रवणाय नमः वामस्तने न्यसामि। ६. ॐ भाद्रपदाय नमः उदरे न्यसमि। ७. ॐ आश्विनाय नमः कट्यां न्यसामि। ८. ॐ कार्तिकाय नमः दक्षिणोरौ न्यसामि। ९. ॐ मार्गशीर्षाय नमः वामोरौ न्यसामि। १०. ॐ पौषाय नमः दक्षिणजङ्घायां न्यसामि। ११. ॐ माघाय नमः वामजङ्घायां न्यसामि। १२. ॐ फाल्गुनाय नमः पादयो न्यसामि। १३. ॐ सम्वत्सराय नमः दक्षिणोर्ध्वबाहौ न्यसामि। १४. ॐ परिवत्वसराय नमः दक्षिणाधोबाहौ न्यसामि। १५. ॐ इद्वत्सराय नमः वामोधोबाहौ न्यसामि। १६. ॐ अनुवत्सराय नमः वामोर्ध्वबाहौ न्यसामि। १७. ॐ पर्वतेभ्यो नमः सन्धिषु न्यसामि। १८. ॐ ऋतुभ्यो नमः लिङ्गे न्यसामि। १९. ॐ अहोरात्रेभ्यो नमः अस्थिुष न्यसामि। २०. ॐ क्षणाय नमः, ॐ लवाय नमः, ॐ कामायै नमः, ॐ काष्ठायै नमः रोमसु न्यसामि। २१. ॐ कृतयुगाय नमः मुखे न्यसामि। २२. ॐ त्रेतायुगाय नमः हृदये न्यसामि। २३. ॐ द्वापराय नमः नितम्बे न्यसामि। २४. ॐ कलियुगाय नमः पादयो न्यसामि। २५. ॐ चतुर्दशमन्वन्तरेभ्यो नमः बाह्वो न्यसामि। २६. ॐ पराय नमः, ॐ परार्द्धाय नमः, ॐ जङ्घयो

न्यसामि। २७. ॐ महाकलपाय नमः शरीरे न्यसामि। २८. ॐ उदगयनाय नमः, ॐ दक्षिणाय नमः पादयो न्यसामि। २९. ॐ विषुवद्भ्यो नमः सर्वाङ्गुलिषु न्यसामि।

वर्णन्यासः

१. ॐ ब्राह्मणाय नमः मुखे न्यसामि। २. ॐ क्षत्रियाय नमः बाह्वो न्यसामि। ३. ॐ वैश्याय नमः ऊर्वो न्यसामि। ४. ॐ शूद्राय नमः पादयो न्यसामि। ५. शङ्करजेभ्यो नमः पादाग्रे न्यसामि। ६. ॐ अनुलोमजेभ्यो नमः सर्वाङ्गसन्धिषु न्यसामि। ७. ॐ गोभ्यो नमः मुखे न्यसामि। ८. ॐ अजाभ्यो नमः, ॐ आविकाभ्यो नमः हस्तयो न्यसामि। ९. ॐ ग्रामपशुभ्यो नमः, आरण्यपशुभ्यो नमः ऊर्वो न्यसामि।

तोयन्यासः

१. ॐ मेघेभ्यो नमः केशेषु न्यसामि। २. ॐ अभ्रेभ्यो नमः रोमसु न्यसामि। ३. ॐ नदीभ्यो नमः सर्वगात्रेषु न्यसामि। ४. ॐ समुद्रेभ्यो नमः कुक्षिदेशे न्यसामि।

वेदन्यासः

१. ॐ ऋग्वेदाय नमः शिरसि न्यसामि। २. ॐ यजुर्वेदाय नमः दक्षिणभुजे न्यसामि। ३. ॐ सामवेदाय नमः वामभुजे न्यसामि। ४. ॐ सर्वोपनिषद्भ्यो नमः हृदये न्यसामि। ५. ॐ इतिहासपुराणेभ्यो नमः जङ्घयो न्यसामि। ६. ॐ अर्थर्वाङ्गिरसेभ्यो नमः नाभौ न्यसामि। ७. ॐ कल्पसूत्रेभ्यो नमः पादयो न्यसामि। ८. ॐ व्याकरणेभ्यो नमः वक्त्रे न्यसामि। ९. ॐ तर्केभ्यो नमः कण्ठे न्यसामि। १०. ॐ मीमांसायै नमः, ॐ निरुक्ताय नमः हृदये न्यसामि। ११. ॐ छन्दःशास्त्रेभ्यो नमः, ॐ ज्योतिःशास्त्रेभ्यो नमः नेत्रे न्यसामि। १२. ॐ गीताशास्त्रेभ्यो नमः, ॐ भूतशास्त्रेभ्यो नमः श्रोत्रयो न्यसामि। १३. ॐ आयुर्वेदाय नमः

दक्षिणभुजे न्यसामि। १४. ॐ धननुर्वेदाय नमः वामभुजे न्यसामि। १५. ॐ योगशास्त्रेभ्यो नमः हृदये न्यसामि। १६. ॐ नीतिशास्त्रेभ्यो नमः पादयो न्यसामि। १७. ॐ वश्यतन्त्राय नमः ओष्ठयो न्यसामि।

वैराजन्यासः

१. ॐ दिवे नमः मूर्ध्नि न्यसामि। २. ॐ सूर्यलोकाय नमः, चन्द्रालोकाय नमः नेत्रयो न्यसामि। ३. ॐ वायुलोकाय नमः घ्राणे न्यसामि। ४. ॐ व्योम्ने नमः नाभौ न्यसामि। ५. ॐ समुद्रेभ्यो नमः वस्तिदेशे न्यसामि ६. ॐ पृथिव्यै नमः पादयो न्यसामि।

मूर्तिन्यासः

१. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः शिरसि न्यसामि। २. ॐ कृष्णाय नमः केशेषु न्यसामि। ३. ॐ रुद्राय नमः ललाटे न्यसामि। ४. ॐ यमाय नमः भ्रुवो न्यसामि। ५. ॐ अश्विभ्यां नमः कर्णयो न्यसामि। ६. ॐ वैश्वानराय नमः मुखे न्यसामि। ७. ॐ मरुद्भ्यो नमः घ्राणे न्यसामि। ८. ॐ वसुभ्यो नमः कण्ठे न्यसामि। ९. ॐ रुद्रेभ्यो नमः दन्तेषु न्यसामि। १०. ॐ सरस्वत्यै नमः जिह्वायां न्यसामि। ११. ॐ इन्द्राय नमः दक्षिणभुजे न्यसामि। १२. ॐ वलये नमः वामभुजे न्यसामि। १३. ॐ प्रह्लादाय नमः दक्षिणस्तने न्यसामि। १४. ॐ विश्वकर्मणे नमः वामस्तने न्यसामि। १५. ॐ नारदाय नमः दक्षिणकुक्षौ न्यसामि। १६. ॐ अनन्तादिभ्यो वामकुक्षौ न्यसामि। १७. ॐ वरुणाय नमः हस्तयो न्यसामि। १८. ॐ मित्राय नमः पादयो न्यसामि। १९. ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ऊर्वो न्यसामि। २०. ॐ पितृभ्यो नमः जान्वो न्यसामि। २१. ॐ यक्षेभ्यो नमः जङ्घ्यो न्यसामि। २२. ॐ राक्षसेभ्यो नमः गुल्फयो न्यसामि। २३. ॐ पिशाचेभ्यो नमः पादयो न्यसामि। २४. ॐ असुरेभ्यो नमः पादाङ्गुङ्गुलिषु न्यसामि। २५. ॐ विद्याधरेभ्यो नमः पार्ष्ण्यो न्यसामि। २६. ॐ ग्रहेभ्यो नमः पादतलयो न्यसामि। २७. ॐ गुह्यकेभ्यो

नमः गुह्ये न्यसामि। २८. ॐ पूतनादिभ्यो नमः नखेषु न्यसामि। २९. ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः ओष्ठयो न्यसामि। ३०. ॐ कार्तिकेताय नमः दक्षिणपार्श्वे न्यसामि। ३१. ॐ गणेशाय नमः वामपार्श्वे न्यसामि। ३२. ॐ मत्स्याय नमः मूर्ध्नि न्यसामि। ३३. ॐ कूर्माय नमः पादयो न्यसामि। ३४. ॐ नृसिंहाय नमः ललाटे न्यसामि। ३५. ॐ वराहाय नमः जङ्घयो न्यसामि। ३६. ॐ वामनाय नमः मुखे न्यसामि। ३७. ॐ परशुराम नमः हृदये न्यसामि। ३८. ॐ रामाय नमः वाहुषु न्यसामि। ३९. ॐ कृष्णाय नमः नाभ्यां न्यसामि। ४०. ॐ बुद्धाय नमः बुद्धौ न्यसामि। ४१. ॐ कलङ्किने नमः जानवोः न्यसामि। ४२. ॐ केशवाय नमः शिरसि न्यसामि। ४३. ॐ नारायणाय नम : मुखे न्यसामि। ४४. ॐ माधवाय नमः ग्रीवायां न्यसामि। ४५. ॐ गोविन्दाय नमः बाह्वोः न्यसामि। ४६. ॐ विष्णवे नमः हृदये न्यसामि। ४७. ॐ मधुसूदनाय नमः पृष्ठे न्यसामि। ४८. ॐ त्रिविक्रमाय नमः कट्यां न्यसामि। ४९. ॐ वामनाय नमः जठरे न्यसामि। ५०. ॐ श्रीधरहृषीकेशाय नमः जङ्घयो न्यसामि। ५१. ॐ पद्मनाभाय नमः गुल्फयो न्यसामि। ५२. ॐ दामोदराय नमः पादयो न्यसामि।

क्रतुन्यासः

१. ॐ अश्वमेधाय नमः मूर्ध्नि न्यसामि। २. ॐ नरमेधाय नमः ललाटे न्यसामि। ३. ॐ राजसूयाय नमः मुखे न्यसामि। ४. ॐ गोसवाय नमः कण्ठे न्यसामि। ५. ॐ द्वादशाय नमः हृदि न्यसामि। ६. ॐ आधीनेभ्यो नमः नाभौ न्यसामि। ७. ॐ सर्वजितेभ्यो नमः दक्षिणकट्यां न्यसामि। ८. ॐ सर्वमेधाय नमः वामकट्यां न्यसामि। ९. ॐ अग्निष्टोमाय नमः लिङ्गे न्यसामि। १०. ॐ अतिराग्रय नमः वृषणयोः न्यसामि। ११. ॐ आप्तोर्यामाय नमः ऊर्वो न्यसामि। १२. ॐ षोडशिने नमः जान्वो न्यसामि १३. ॐ उक्त्थ्याय नमः दक्षिणजङ्घाया न्यसामि। १४. ॐ वाजपेयाय नमः वामजङ्घायां न्यसामि। १५. ॐ अत्यग्निष्टोमाय नमः दक्षिबाहौ

न्यसामि। १६. ॐ चातुर्मास्याय नमः वामबाहौ न्यसामि। १७. ॐ सौत्रामणये नमः हस्तेषु न्यसामि। १८. ॐ पशिवष्टिभ्यो नमः अङ्गुलिषु न्यसामि। १९. ॐ दर्शपौर्णमासाभ्यां नमः नेत्रयो न्यसामि। २०. ॐ सर्वेष्टिभ्यो नमः रोमकूपेषु न्यसामि। २१. ॐ स्वाहाकाराय नमः, ॐ वषट्काराय नमः स्तनयो न्यसामि। २२. ॐ पञ्चमहायज्ञेभ्यो नमः पादाङ्गुलीषु न्यसामि। २३. ॐ आहवनीयाय नमः मुखे न्यसामि। २४. ॐ दक्षिणाग्नये नमः हृदये न्यसामि। २५. ॐ गार्हपत्याय नमः नाभौ न्यसामि। २६. ॐ वेद्यै नमः उदरे न्यसामि। २७. ॐ प्रवर्ग्याय नमः भूषणे न्यसामि। २८. ॐ सवनेभ्यो नमः पादयो न्यसामि। २९. ॐ एधोभ्यो नमः बाहुषु न्यसामि। ३०. ॐ दर्भेभ्यो नमः केशेषु न्यसामि।

गुणन्यासः

ॐ धर्माय नमः मूर्ध्नि न्य० ॥ १ ॥ ॐ ज्ञानाय नमः हृदि न्य० ॥ २ ॥ ॐ वैराग्याय नमः गुह्ये न्य० ॥ ३ ॥ ॐ ऐश्वर्याय नमः पादयोर्न्या० ॥ ४ ॥

शन्यायुधन्यासः

१. ॐ वज्राय नमः शिरसि न्यसामि। २. ॐ दण्डाय नमः मस्तके न्यसामि। ३. ॐ खड्गाय नमः दक्षिणभुजे न्यसामि। ४. ॐ पाशाय नमः वामभुजे न्यसामि। ५. ॐ ध्वजाय नमः नाभ्याम् न्यसामि। ६. ॐ अङ्कुशाय नमः लिङ्गे वृषणयोश्च न्यसामि। ७. ॐ त्रिशूलाय नमः जङ्घयोर्जान्वोश्च न्यसामि। ८. ॐ पद्माय नमः गुल्फपादयोः न्यसामि।

शक्तिन्यासः

ॐ तीव्रायै नमः-ललाटे। ॐ ज्वालिन्यै नमः-मुखे। ॐ नन्दायै नमः-गुह्ये। ॐ भोगदायै नमः-कण्ठे। ॐ कामरूपिण्यै नमः-दन्तेषु। ॐ उग्रायै नमः-हृदये। ॐ तेजोवत्यै नमः-नाभौ। ॐ सत्यायै नमः-ऊदरे। ॐ सर्वविघ्नविनाशायै नमः-सर्वाङ्गेषु।

ऋष्यादिन्यासः—ॐ दध्यङ्ङाथर्वण ऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे। ॐ शनैश्चराय नमः हृदये। ॐ आपोबीजाय नमः गुह्ये। ॐ वर्तमानशक्तये नमः पादयोः।

करन्यासः—ॐ शन्नोदेवीः इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ अभीष्टय इति तर्जनीभ्यां नमः। ॐ आपोभवन्तु इति मध्यमाभ्यां नमः। ॐ पीतये इत्यनामिकाभ्यां नमः। ॐ शंय्यो इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अभिस्त्रवन्तु नः इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—ॐ शन्नोदेवीः इति हृदयाय नमः। ॐ अभिष्टये इति शिरसे स्वाहा। ॐ आपोभवन्तु इति शिखायै वषट्। ॐ पीतये इति कवचाय हुम्। ॐ शय्यो इति नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अभिस्त्रवन्तु नः इत्यस्त्राय फट्।

मन्त्रन्यासः—ॐ शन्न इति शिरसि। ॐ देवीः इति ललाटे। ॐ अभीष्टये इति मुखे। ॐ आपो इति हृदये। ॐ भवन्तु इति नाभौ। ॐ पीतये इति कट्याम्। ॐ शय्योः इति ऊर्वोः। ॐ अभिस्त्रवन्तु इति जानुनोः। ॐ नः इति पादयोः।

मन्त्रन्यासः

१. ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातम्॥ पादयो न्यसामि॥ २. ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघसर्ठ०सो ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्यपशून्पाहि॥ गुल्फयो न्यसामि॥ ३. ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि॥ जङ्घयो न्यसामि॥ ४. ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः। जान्वो न्यसामि॥ ५. ॐ एका च मे तिस्त्रश्च मे तिस्त्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च म एकादश च म एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे

पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म एकविर्ठ० शतिश्च म एकविर्ठ० शतिश्च मे त्रयोविर्ठ० शतिश्च मे त्रयोविर्ठ० शतिश्च म पञ्चविर्ठ० शतिश्च मे पञ्चविर्ठ० शतिश्च मे सप्तविर्ठ० शतिश्च मे सप्तविर्ठ० शतिश्च मे नवविर्ठ० शतिश्च मे नवविर्ठ० शतिश्च म एकत्रिर्ठ० शच्च म एकत्रिर्ठ० शच्च मे त्रयस्त्रिर्ठ० शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ६. ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ जठरे न्यसामि॥ ७. ॐ दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्॥ हृदये न्यसामि॥ ८. ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः॥ कण्ठे न्यसामि॥ ९. ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ वक्त्रे न्यसामि॥ १०. ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ स्तनयोर्नेत्रयोश्च न्यसामि॥ ११. ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्। कविर्ठ० सम्राजमतिथिं जनाना-मासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ मूर्ध्नि न्यसामि॥

शनिमूर्त्तौ रुद्रसूक्तन्यासः

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः-पादयोः॥ १॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि-जङ्घयोः॥ २॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिर्ठ०सीः पुरुषं जगत्-जानुनोः॥ ३॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठ० सुमना असत्-ऊर्वोः॥ ४॥ अध्यवोचदधिवक्ता

प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहीर्ठ०श्च सर्व्वान् जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव-वृषणे॥ ५॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनर्ठ० रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषार्ठ० हेड ईमहे-कट्याम्॥ ६॥ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः-नाभ्याम्॥ ७॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः-हृदि॥ ८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप-स्तनयोः॥ ९॥ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२। उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः-वाह्वोः॥ १०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज-मुखे॥ ११॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्-चक्षुषोः॥ १२॥ अवतत्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव-कर्णयोः॥ १३॥ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने-भ्रुवोः॥ १४॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः-भाले॥ १५॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषुमा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे-शिरसि॥ १६॥

श्रीशनिदेवव्रतकथा

समस्त प्राणियों के हितचिन्तक अठ्ठासी हजार मुनियों ने एक समय नैमिषारण्य में एक सभा का आयोजन किया। उस समय व्यासजी के परम प्रिय शिष्य श्रीसूतजी भी अपने शिष्यों के साथ श्रीहरि का स्मरण करते हुए वहाँ आये। सर्वशास्त्रमर्मज्ञ सूतजी को आया हुआ देखकर शौनकादि मुनि उनके स्वागत के लिए उठकर खड़े हो गए और उनका सादर अभिवादन किया। मुनियों द्वारा प्रदान किए गए आसन पर सूतजी विराजमान हुए।

श्रीसूतजी से शौनकादि मुनियों ने विनय पूर्वक पूछा कि हे महामुने! इस कलियुग में श्रीहरि की भक्ति किस प्रकार से और कैसे होगी? क्योंकि सभी प्राणी पापकृत्य में ही तत्पर होंगे, मनुष्यों की वास्तविक आयु कम होगी, ग्रह जन्य कष्ट होंगे और मनुष्य धन रहित होकर नाना प्रकार की पीड़ाओं से युक्त होंगे। हे सर्वशास्त्रमर्मज्ञ! इस कारण कलियुग में कोई भी प्राणी विशेष पुण्य के नष्ट होने से ही प्राणियों की प्रकृति पापयुक्त होगी। घृणित एवं तुच्छ विचार करने वाले प्राणी अपना ही विनाश स्वयं करेंगे और अपने वंश का सर्वनाश करेंगे।

इसलिए हे सर्वशास्त्र विशारद! मानव कल्याण के लिए कोई ऐसा सरल उपाय आप हमें बतलाइये, जिसमें थोड़ा सा परिश्रम लगे, थोड़ा ही धन व्यय हो और थोड़े ही समय में प्राणी को उसका शुभ फल प्राप्त हो जाय। हे महामुने! जो प्राणी रत्नरूपी ज्ञान द्वारा अन्य प्राणियों को सन्तुष्ट करते हैं, उन्हें मनुष्य रूप धारण किए हुए श्रीहरि ही समझना चाहिए। हे मुने! कोई ऐसा सरल व्रत बताइए, जिसके करने से शनिदेवता द्वारा दिए गए कष्ट प्राणियों को न भोगना पड़े और शनिदेव व्रत द्वारा यथाशीघ्र प्रसन्न हो जाएँ, क्योंकि शनि की ग्रहदशा में प्राणियों को बहुत ही घोर कष्ट सहन करने पड़ते हैं। शौनकादि मुनियों की वार्ता सुनने के पश्चात् श्रीसूतजी ने कहा—हे मुनिश्रेष्ठ! तुम धन्य हो और तुम्हीं वैष्णवों में अग्रगण्य हो।

क्योंकि तुम प्राणियों के शुभचिन्तक हो। अतः मैं उस उत्तम व्रत को कहता हूँ, जिसे ध्यान देकर सुनो, जिसके करने से शिवजी प्रसन्न होते हैं और शनि ग्रह से विशेष कष्ट भी प्राप्त नहीं होते। सूतजी ने कहा—जिस समय धर्मराज युधिष्ठिर अपने परिवार के सदस्यों के साथ वनवास में अनेकानेक कष्ट भोग रहे थे। उस समय उनके प्रिय मित्र भगवान् श्रीकृष्णजी उनके पास पहुँचे। राजा युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण को आया हुआ देखकर उनका बहुत ही आदर सत्कार किया। प्रेमपूर्वक सुन्दर आसन पर विराजमान होने के बाद श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से पूछा—हे युधिष्ठिर! सकुशल से तो हो? उन्होंने कहा—हे भगवन्! आपकी कृपा है। अब कृपा करके कोई ऐसा व्रत बतलाइए, जिसके करने से प्रभो! अब यह ग्रह कष्ट न आये, विशेषकर शनि ग्रह, हे प्रभु! यह शनिग्रह बहुत ही कष्ट देते हैं। इसलिए कोई इस प्रकार का व्रत बतलाइए, जिससे इस कष्ट से छुटकारा मिल सके। श्रीकृष्ण बोले—हे राजन्! आपने बहुत ही सुन्दर बात पूछी है। अतः मैं आपको एक उत्तमोत्तम व्रत बतलाता हूँ। भक्ति और श्रद्धायुक्त होकर शनिवार के दिन यदि व्यक्ति देवाधिदेव महादेव का व्रत करे, तो उन्हें शनि की ग्रहदशा में कोई कष्ट नहीं होता है। उन्हें निर्धनता नहीं सताती है और इस लोक में वे अनेक प्रकार के सुखों को भोगकर अन्त में शिवलोक को ही प्राप्त करते हैं।

युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से पूछा कि, हे प्रभो! सर्वप्रथम इस व्रत को किसने किया था? इस बात को कृपा करके विस्तारपूर्वक बताइए और इस व्रत की सम्पूर्ण विधि भी सविस्तार बताने की कृपा करें। भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा—विशेषकर श्रावण मास में शनिवार के दिन ही लोहे से ही निर्मित शनि प्रतिमा को पञ्चामृत से स्नान कराकर नाना प्रकार के गन्ध, पुष्प, दशांग धूप, फल और उत्तम प्रकार के नैवेद्य आदि से पूजन कर शनिदेव के दस नामों का उच्चारण कर काला तिल, जौ, उड़द (काली), गुड़, लौह, नीलवस्त्र और सरसों के तेल का दान करके भगवान् शंकरजी का विधिवत् पूजन कर आरती

व प्रार्थना करे—हे महादेव! अब मैं आपकी शरण में हूँ। मुझ दीन पर कृपा करें। मेरी रक्षा कीजिए। ऐसा करने से सभी प्रकार के अनिष्ट, कष्ट, दुःख आदि सम्पूर्ण व्याधियों का सर्वथा नाश होता है। इससे राहु, केतु और शनि जन्य दोष दूर होते हैं और नाना प्रकार के सुख साधन एवं पुत्र, पौत्रादि का सम्पूर्ण सुख प्राप्त होता है। सर्वप्रथम पूर्वकाल में इस धरती पर एक राजा राज्य करता था। उसने अपने शत्रुओं को अपने वश में कर लिया था। दैवगति से राजा और उसके पुत्र पर शनिग्रह की दशा आ गई और राजा को उसके शत्रुओं ने समाप्त कर दिया तथा उसके पुत्र धर्मगुप्त राजकुमार के लिए कोई सहारा नहीं रह गया। राजगुरु की बेचारी विधवा ब्राह्मणी अपने पुत्र शुचिव्रत के साथ राजकुमार को लेकर उस नगरी को छोड़कर कहीं और चली गई। बेचारी निर्धना ब्राह्मणी दोनों कुमारों का बहुत ही कठिनाई से निर्वाह कर पाती थी। कभी किसी नगर तो कभी किसी नगर में, उन दोनों सुकुमारों को अपने संग लिए घूमती रहती थी। एक दिन वह ब्राह्मणी दोनों कुमारों को लिए एक नगर से दूसरे नगर में जा रही थी तो मार्ग में महर्षि शाण्डिल्य मुनि के दर्शन हुए। ब्राह्मणी ने दोनों बालकों के साथ मुनि के चरणों में प्रणाम किया और बोली—मैं आज आपके दर्शन से पूर्णतः कृतार्थ हो गई हूँ और यह मेरे दोनों कुमार आपकी शरण में हैं। अब आप ही इनकी रक्षा करें।

हे मुनिवर! यह शुचिव्रत मेरा पुत्र है और यह धर्मगुप्त राजपुत्र है तथा मेरा धर्मपुत्र भी। हमलोग इस समय दरिद्रता से पीड़ित होकर नाना प्रकार के कष्टों को भोग रहे हैं। हमारा आप किसी भी प्रकार से उद्धार कीजिए। शाण्डिल्य मुनि ने उस ब्राह्मण की सम्पूर्ण बातें अत्यधिक ध्यान से सुनी और बोले—हे देवि! तुम्हारे ऊपर इस समय शनिदेव का पूर्णतः प्रकोप है, अतः तुम शनिवार के दिन शनिव्रत करके ही भगवान् शिवजी की आराधना श्रद्धा-भक्ति पूर्वक किया करो। इस व्रत से तुम्हारा अवश्य ही कल्याण होगा। ब्राह्मणी और दोनों कुमार शाण्डिल्य मुनि को प्रणाम करके चले गए।

शनिवार के दिन दोनों कुमारों और ब्राह्मणी ने मुनि के उपदेशानुसार शनिदेव का व्रत किया तथा शिवजी का विधिवत् पूजन भी किया। इस प्रकार व्रत करते-करते दोनों कुमारों को चार मास व्यतीत हो गए। एक दिन शुचिव्रत स्नानार्थ गया। उसके साथ उस समय धर्मगुप्त नहीं था। स्नान करते समय शुचिव्रत को कीचड़ में एक बहुत बड़ा कलश मिला। कलश को उठाकर उसने देखा तो उसमें अत्यधिक धन था। शुचिव्रत उस कलश को लेकर अपनी माता के पास चला आया और बोला कि हे माता! महादेवजी के इस प्रसाद को देखो, बाबा भोलेनाथ ने इस कलश के रूप में हमें धन प्रदान किया है।

शुचिव्रत की माता ने शुचिव्रत को आदेश दिया कि तुम दोनों भाई इस धन को आपस में समान रूप से बाँट लो। माता के वचन सुनकर शुचिव्रत बहुत ही प्रसन्न हुआ और राजकुमार धर्मगुप्त से बोला। किन्तु, भक्ति व पूजा में अटल विश्वास रखने के कारण धर्मगुप्त ने कलश के धन को लेने से मना कर दिया। साथ ही अपनी धर्ममाता से कहा कि हे माता! मैं हिस्सा नहीं लेना चाहता हूँ, क्योंकि जो कोई अपने सुकृत् से जो कुछ भी पाता है, वह उसी का हिस्सा होता है और उसका उपयोग उसे स्वयं ही करना चाहिए। भगवान् शिवजी मुझ पर भी कृपा करेंगे। धर्मगुप्त प्रेम और भक्ति के साथ शनि का व्रत और भगवान् शंकर की पूजा निरन्तर करता रहा और इस प्रकार से एक वर्ष और व्यतीत हो गया। चैत्र मास में वसन्त का शुभागमन हुआ और धर्मगुप्त व शुचिव्रत दोनों ही एक साथ वन में भ्रमण करने के लिए वन में घूमते-घूमते काफी दूर निकल गए। मार्ग में उन दोनों को सैकड़ों गन्धर्व कन्याएँ नाना प्रकार की क्रीड़ाएँ करती हुई मिलीं, जिन्हें देखकर राजकुमार धर्मगुप्त कुछ विचलित-सा हुआ और गन्धर्व कन्याओं के द्वारा की जाने वाली क्रीड़ाओं को सन्निकट से देखने की इच्छा करने लगा। शुचिव्रत के समझाने पर भी वह नहीं माना और अकेला ही चला गया।

किन्तु उसके साथ ब्राह्मण कुमार शुचिव्रत नहीं गया। क्रीड़ा करती हुई उन गन्धर्व कन्याओं के बीच एक अति सुन्दरी कुमारी बाला ने जब राजकुमार को देखा तो वह उस पर मोहित हो गई और अपनी सखियों को फूल लाने के बहाने वहाँ से हटा दिया। उसने राजकुमार को बैठने के लिए पल्लवों का आसन दिया। राजकुमार भी मन्त्रमुग्ध सा उस आसन पर बैठ गया। गन्धर्व कन्या को राजकुमार ने अपना परिचय देते हुए कहा कि मैं विदर्भ देश के राजा का पुत्र धर्मगुप्त हूँ।

मेरे माता-पिता इस संसार में नहीं हैं और मेरे शत्रुओं ने मेरा राज्य ले लिया। अत: मैं वर्तमान समय में अपने राजगुरु की विधवा पत्नी और उनके पुत्र शुचिव्रत के साथ ही रह रहा हूँ। अपना परिचय देने के पश्चात् राजकुमार ने गन्धर्व कन्या का परिचय पूछा तो गन्धर्व कन्या ने अपना पूरा परिचय इस प्रकार देते हुए राजकुमार से कहा—मैं गन्धर्वराज विद्रविक की कन्या हूँ, मेरा नाम अंशुमती है। आपको देखकर आपसे बात करने की मुझमें इच्छा जागृत हुई, इसी कारण से अपनी सखियों को यहाँ से पुष्प तोड़ने के बहाने भेज दिया है ताकि आपसे कुछ वार्तालाप कर सकूँ। समस्त गन्धर्व कन्याओं में मेरे समान कोई संगीत कला में निपुण नहीं है।

भगवान् शिवजी की कृपा से आप मुझे मिले हैं तथा मेरी यही अभिलाषा है कि, आपका और मेरा प्रेम कभी न टूटे। अपना इतना परिचय देने के बाद गन्धर्व कन्या अंशुमती ने अपने गले का मोतियों का अमूल्य हार राजकुमार धर्मगुप्त के गले में पहिना दिया। गन्धर्वराज की कन्या से राजकुमार धर्मगुप्त ने कहा कि मेरे पास न राज्य है और न धन ही है। ऐसी अवस्था में मेरी पत्नी बनना क्या उचित है ? तुम्हारे माता-पिता हैं, उनसे बिना आज्ञा लिए तुम्हारा यह किया गया निर्णय कदापि उचित नहीं है। राजकुमार की बातों को सुनने के बाद गन्धर्व कन्या ने कहा—अब आप अपने घर को जाइए और परसों प्रात:काल यहाँ पधारें। इतना कहकर गन्धर्व कन्या चली गई।

राजकुमार धर्मगुप्त अपने धर्म भ्राता शुचिव्रत के पास चला आया और उसे सभी समाचार से अवगत कराया। धर्मगुप्त तीसरे दिन शुचिव्रत को साथ लेकर उसी वन में आया। उसने देखा कि स्वयं गन्धर्वराज विद्रविक अपनी कन्या को साथ लेकर वहाँ उपस्थित हैं। गन्धर्वराज ने दोनों कुमारों का अभिवादन किया और दोनों को सुन्दर आसन पर बैठा कर राजकुमार से कहा कि मैं परसों कैलाश पर्वत पर पार्वती-शंकर के दर्शन हेतु गया था। भगवान् शिवजी ने मुझे अपने पास बुलाकर कहा कि इस पृथ्वी पर धर्मगुप्त नामक राजविहीन राजकुमार है। उसके परिवार के लोगों को शत्रुओं ने मार दिया है। वह बालक महर्षि शाण्डिल्य के कहने से शनिवार का व्रत करता है और सर्वदा मेरी भक्ति में मग्न रहता है। गन्धर्वराज तुम उसकी सहायता करो, जिससे वह अपने शत्रुओं को अपने वश में कर सके। उनकी आज्ञा को शिरोधार्य कर मैं अपने घर वापस चला आया। मेरी कन्या अंशुमती ने भी बहुतेरी प्रार्थना की। भगवान् शिवजी की आज्ञा तथा अंशुमती के मन की बात जानकर अंशुमती को लेकर मैं यहाँ आया हूँ। मैं अपनी इस कन्या को आपकी पत्नी के रूप में देता हूँ तथा आपके शत्रुओं को आपके वश में करके आपको आपका खोया हुआ राज्य भी वापिस दिलवा दूँगा। गन्धर्वराज ने अपनी कन्या अंशुमती का शुभ विवाह राजकुमार धर्मगुप्त के साथ कर दिया और अंशुमती की सहेली का विवाह ब्राह्मण कुमार शुचिव्रत के साथ कर दिया। साथ ही साथ धर्मगुप्त की सहायतार्थ गन्धर्वराज ने गन्धर्वों की चतुरंगिणी सेना दे दी। धर्मगुप्त के शत्रुओं ने जब यह समाचार सुना तो उन्होंने बिना किसी युद्ध-प्रपंच के ही धर्मगुप्त की अधीनता को स्वीकार करके उसके पिता का राज्य उसे वापस कर दिया। धर्मगुप्त सिंहासन पर राजा के रूप में बैठा और राजगुरु के पुत्र शुचिव्रत को उसने अपना महामन्त्री नियुक्त किया। उसने अपनी धर्ममाता को राजमाता बनाया। शनिवार के व्रत के प्रभाव से और देवाधिदेव शिवजी की असीम कृपा से ही धर्मगुप्त इस प्रकार विदर्भ का

राजा बना। भगवान् श्रीकृष्ण ने पाण्डुपुत्र महाराजा युधिष्ठिर से कहा—आप भी इस उत्तमोत्तम व्रत को करें, निःसन्देह कुछ समय पश्चात् आपको भी आपका खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त हो जायेगा और सभी प्रकार के सुख वैभव की प्राप्ति भी होगी इसके साथ ही आपके दुर्दिनों की यथाशीघ्र समाप्ति हो जायेगी। धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान् श्रीकृष्ण के आदेशानुसार नियमित रूप से शनिदेव का व्रत करना प्रारम्भ किया और इस व्रत के प्रभाव से सभी विपत्तियों पर विजय प्राप्त की तथा महाभारत के युद्ध में पूर्णतः विजय प्राप्त कर अपना खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त किया।

राजा विक्रमादित्य की कथा

शनिदेव के दोष निवारणार्थ कथा

प्राचीन समय की बात है सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु में अर्थात् इन नवग्रहों में वाद-विवाद होने लगा कि, हमलोगों में सबसे बड़ा और श्रेष्ठ कौन ग्रह है। बहुत तर्कों के बाद भी यह सिद्ध नहीं हो पाया कि कौन सा ग्रह किससे बड़ा है? अतः सभी ग्रह एकत्रित होकर अदिति के गर्भ से उत्पन्न देवराज इन्द्र के राजदरबार में गए और उनसे अपनी समस्या का समाधान करने को कहा। राजा इन्द्र ने उनकी समस्या को सुनकर तत्काल कह दिया कि मैं इसका निर्णय करने में मैं समर्थ नहीं हूँ। आप नौ ग्रहों में कौन बड़ा है और कौन छोटा है? इसका फैसला आपलोग स्वयं पृथ्वी पर जाकर आज के समय के सुविख्यात सम्राट विक्रमादित्यजी से इस विषय में निर्णय करवा लीजिए। उस समय सम्राट विक्रमादित्य उज्जैन नगरी के राजा थे। वह धर्मात्मा, न्यायप्रिय, दानपुण्य और सदैव प्रजा के हित में लगे रहने वाले राजा थे। सभी ग्रह राजा की राजसभा में एक साथ उपस्थित हुए और उनके समक्ष अपनी समस्या प्रस्तुत की। सभी ग्रहों की बातों को सुनकर राजा विक्रमादित्य अत्यन्त चिन्तित हो गए कि,

अब इन लोगों में मैं किसे बड़ा कहूँ और किसे छोटा कहूँ क्योंकि—मैं जिसे छोटा कहूँगा वही ग्रह मुझ पर क्रोधित होगा। अत्यधिक विचार के पश्चात् ग्रहों के आपसी इस विवाद को निपटाने के लिए राजा ने एक उपाय सोचा। उन्होंने सोना, चाँदी, पीतल, काँसा, ताँबा, सीसा, जस्ता, अभ्रक और लोहा इन नव धातुओं से निर्मित नौ सिंहासन बनवाएँ। उन सभी सिंहासनों को अपनी राज्य सभा में एक अच्छे स्थान पर स्थापित करवा दिया। उपरान्त ही उन्होंने अपने राजज्योतिषी को आदेश देकर राजसभा में बुलवाया और उन ज्योतिष महोदय को यह आदेश दिया ज्योतिषशास्त्र में जिस क्रम से ग्रहों का स्थापन है, उसी क्रम से ही नौ ग्रहों को उनके आसन पर ग्रहण करने के लिए उनसे कहे—इस कर्म में सर्वप्रथम आसन ग्रहण करने के लिए सूर्य से कहा गया। सूर्य को सोने का सिंहासन प्राप्त हुआ। चन्द्रमा को चाँदी का सिंहासन प्राप्त हुआ और अन्य सात ग्रहों को उनके अनुसार ही निर्मित धातुओं के सिंहासन क्रमानुसार प्राप्त हुए। सबसे पीछे लोहे का सिंहासन शनिदेव को प्राप्त हुआ, इस कारणवश शनि ने इस आसन को ग्रहण करने में अपना अपमान समझा और क्रोध से जलते हुए राजा विक्रमादित्य से कहने लगे, हे मूर्ख राजा! क्या तू मेरे बल और पराक्रम को नहीं जानता। सूर्य एक राशि पर एक महीना, चन्द्रमा सवाँ दो दिन, मंगल डेढ़ महीने, बृहस्पति तेरह महीने, बुध और शुक्र एक-एक महीने, राहु और केतु उल्टी चाल से चलते हुए केवल मात्र अट्ठारह महीने ही एक राशि पर निवास करते हैं, किन्तु अब मेरे विषय में सुनो—मैं एक राशि पर ढाई वर्षों तक निवास करता हूँ। मेरे क्रोधित होने पर तथा मेरी अकृपा होने पर बड़े-बड़े देवताओं को असहनीय कष्ट उठाने पड़े हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्रजी पर जब मेरी साढ़ेसाती आई तो उन्हें अपने राज्य का त्याग करके वन की ओर जाना पड़ा। अपने समय के अद्वितीय विद्वान् महापण्डितराज लंकाधिपति रावण पर मेरी साढ़ेसाती आई तो उसकी सोने की लंका जल गई। साथ ही साथ राम और

लक्ष्मण की सेनाओं के द्वारा रावण के समस्त कुल का विनाश हो गया। इसलिए हे विक्रमादित्य ! अब आज से तू सचेत रहना। शनि की इन बातों को सुनकर विक्रमादित्य कहने लगे—हे शनिदेव ! मैंने अपनी बुद्धि और विवेक के अनुसार आपके साथ पूर्णतः न्याय किया है, किन्तु यदि आप इसे अपना अपमान समझते हैं तो, यह आपकी इच्छा है। आपके महत्व को मैं भली-भाँति जानता हूँ इसके उपरान्त भी मैं आपकी इस प्रकार की बातों से भयभीत नहीं हूँ, क्योंकि जो मेरे भाग्य में लिखा है, उसका फल मुझे भोगना ही पड़ेगा चाहे वह अच्छा हो या बुरा। मैं इस विषय में चिन्तित नहीं होता क्योंकि—'भाग्य फलति सर्वतः' जो मेरे भाग्य में लिखा है वही मुझे भोगना है, क्योंकि आपके कथनानुसार जब राम, रावण आपसे नहीं बच पाये तो फिर मैं कलयुग का यह प्राणी आपके कोप से कैसे बचूँगा, फिर भी मैं आपसे डरता नहीं हूँ, क्योंकि मैंने जो निर्णय किया है वह शास्त्रसम्मत ही है।

कुछ समय व्यतीत हुआ राजा विक्रमादित्य पर शनिग्रह की साढ़ेसाती का प्रवेश हुआ। साक्षात् शनि घोड़े के व्यवसायी का रूप धारण करके अनेकानेक सुन्दर-सुन्दर घोड़ों के साथ राजा विक्रमादित्य की राजधानी उज्जैन नगरी में आए। राजा द्वारा उनसे एक घोड़ा खरीदा गया। राजा स्वयं सवारी करने के लिए उस घोड़े की पीठ पर बैठे, किन्तु उनके बैठते ही वह घोड़ा पवन वेग से भागने लगा, क्योंकि उसकी गति पवन के सदृश ही थी। राजा उस वायु वेग घोड़े को अपने वश में नहीं रख सके। वह घोड़ा उन्हें लेकर एक घनघोर जंगल में जा पहुँचा। साथ ही साथ राजा विक्रमादित्य को अपनी पीठ से पृथ्वी पर गिरा कर अदृश्य हो गया। क्षुधा और अपने प्यास से व्याकुल राजा उस घनघोर जंगल में भटकने लगे। सहसा उन्हें एक ग्वाला दिखाई दिया, ग्वाले ने उन्हें पानी पिलाया तथा एक नगर का रास्ता भी दिखाया। जो उस स्थान के निकट ही था। ग्वाले की इस सेवा से प्रसन्न होकर राजा ने उसे सोने की अपनी एक अंगूठी दे दी और ग्वाले के बताए नगर की ओर चल पड़े।

उस नगर में पहुँचकर राजा एक स्वर्ण व्यवसायी सेठकी दुकान पर बैठ गए और उस सेठ से बोले—मैं उज्जैन नगरी का निवासी हूँ और मेरा नाम बीका है, उस सेठ ने राजा विक्रमादित्य को सुसम्पन्न घर का समझते हुए उनका स्वागत सत्कार किया। भाग्यवश उस दिन सेठजी की दुकान पर पूर्व दिनों की अपेक्षा अत्यधिक बिक्री हुई। इसलिए उन्होंने उस आए हुए मनुष्य को भाग्यवान् समझते हुए अपने गृह में भोजन करने हेतु स्वयं ही अपने साथ ले गए। भोजन करते समय राजा विक्रमादित्य ने स्वयं अपनी आँखों से यह अलौकिक आश्चर्यचकित दृश्य देखा कि, एक खूँटी पर स्वर्ण का नौलखा हार लटका हुआ है और वह खूँटी उस हार को निगल रही है। इस दृश्य को देखकर उनके पैरों के नीचे से जमीन घिसकने लगी, लेकिन वे शान्त रहे। सहसा भोजन के बाद जब सेठजी ने खूँटी पर से हार उतारने के लिए गए तो वहाँ वह हार नहीं था। उन्होंने बीका से पूछा कि हार कहाँ गया? किन्तु बीका ने स्पष्ट कहा कि वह हार के विषय में नहीं जानता और मैंने हार नहीं चुराया है। उस दिन उस सेठ के गृह में कोई भी अन्य व्यक्ति बीका के अतिरिक्त नहीं आया था। अतः सेठ का सन्देह बीका पर होना स्वाभाविक ही था। अतः उसने बीका को पकड़कर उस राज्य के राजा के सामने प्रस्तुत कर बोला—हे राजन्! मैं इसे अतिथि समझकर अपने घर लाया था, किन्तु इसने अतिथि शब्द का घोर अपमान किया है और मेरे हार की चोरी की है। राजा ने इन सभी बातों को सुनकर राजदरबार में आदेश दिया कि बीका के हाथ-पैर काट कर इसे चौरंगा बना दिया जावे।

राजा के आदेश के अनुसार राजा विक्रमादित्य के दोनों हाथ-पैर काट दिए गए, अब वे दयनीय और असहनीय हालत में भूखे-प्यासे पड़े रहते थे। कुछ दिन बीतने पर एक तेली की नजर उन पर पड़ी, उसने अपने कोल्हू पर उनको बैठा दिया। जहाँ बीका मुँह से हाक कर बैल को चलाता था। इस प्रकार से वह अपना जीविकोपार्जन करने लगे।

समय बीतता गया। बीका अपनी उदासी मिटाने के लिए कभी-कभी मल्हार राग गाया करते थे। वह इतने अच्छे व कुशल ढंग से गाते थे कि, उस नगर की राजकुमारी स्वयं उन पर मोहित हो गई और उसने अपनी दासी से कहा--मैं तो उसी आदमी से विवाह करूँगी, जो यह मल्हार राग गा रहा है। राजकुमारी की इन बातों को सुनकर दासी ने कहा, मैं जा रही हूँ और पता लगा के आती हूँ कि यह आदमी कौन है। कुछ क्षणों के पश्चात् दासी ने आकर राजकुमारी से कहा—मैं जो कह रही हूँ, आप उसे ध्यान से सुनें। जो यह व्यक्ति मल्हार गा रहा है, उसके दोनों हाथ-पैर काट दिए गए हैं। वह पूर्णरूपेण अपाहिज है, क्या आप अपाहिज से अपना वरण करेंगी? इस पर उस राजकुमारी ने स्पष्ट रूप से कहा—मैं उसी से विवाह करूँगी, जो यह मल्हार गा रहा है। अपने इस दृढ़ निश्चय को पूरा करने के लिए राजकुमारी ने अन्न-जल का परित्याग कर दिया। उसके माता-पिता ने उसे बहुत समझाया कि तुम्हारा विवाह हम किसी राजकुमार से करेंगे, किन्तु उसने तो चौरंगे को अपने हृदय में पति का स्थान दे दिया और उसने निश्चित कर लिया था कि वह किसी भी अन्य पुरुष से विवाह नहीं करेगी। अपनी कन्या के इस बदलते रूप को देखकर राजा क्रोध से झुंझलाते हुए बोले—यदि तेरे भाग्य में ऐसा ही पति लिखा है, तो यह तेरी इच्छा है जैसा उचित समझ वैसा ही कर।

राजा ने तत्काल तेली को बुलाकर कहा तेरे यहाँ जो चौरंगा कार्य करता है। उससे मेरी पुत्री विवाह करना चाहती है। इसलिए तुम जाकर विवाह का पूर्ण प्रबन्ध करो। इसके पश्चात् उस तेली ने सम्पूर्ण तैयारी की और उस कन्या का विवाह हाथ-पैर कटे हुए राजा विक्रमादित्य के साथ कर दिया। उसी रात्रि शनिग्रह ने राजा विक्रमादित्य को स्वप्न दिया और कहा—हे राजन्! मुझे छोटा बताकर तूने कितने कष्ट और दु:ख उठाये हैं, इसकी कल्पना कर? राजा ने स्वप्न में ही शनिदेव से क्षमा-याचना की, जिसके परिणामस्वरूप शनि ने प्रसन्न होकर राजा को पुनः हाथ-पैर प्रदान किए।

विक्रमादित्य कहने लगे—हे शनिदेव! मेरी आपसे एक ही प्रार्थना है कि जिस प्रकार से आपने मुझे असहनीय कष्ट दिये हैं। ऐसे दुःख इस कलियुग में किसी भी प्राणी को न दें। शनिदेव ने राजा की इस प्रार्थना को स्वीकार करते हुए कहा—जो भी व्यक्ति नित्य मेरा ध्यान व स्मरण करेगा, विशेषतः शनिवार को मेरी कथा का श्रवण व मेरा पूजन-अर्चन करेगा, उसको मेरी दशाकाल में भी कभी भी कोई क्लेश, कष्ट और दुःख प्राप्त नहीं होगा। उसके समस्त मनोरथ पूर्ण होंगे।

रात्रि में जब राजकुमारी की आँख खुली तो उसने अपने पति के हाथ-पैर देखे तो उसे अत्यधिक आश्चर्य होने लगा। उसके इस आश्चर्य को देखकर राजा ने अपने बीते हुए समस्त वृत्तान्तों को बताते हुए कहा कि, हे प्राणप्रिये! मैं उज्जैन नगरी का राजा विक्रमादित्य हूँ। मेरी यह जो दुर्दशा हो रही थी, वह मात्र शनि ग्रह के कुपित होने के कारण ही हो रही थी। प्रातःकाल उस रानी ने अपनी सखी-सहेलियों को रात्रि का सारा वृत्तान्त सुनाया, यह बात जब उसी नगर के सेठ के कानों में पहुँची तो वह दौड़ा-दौड़ा विक्रमादित्य के पास आया और उनके दोनों पैरों में गिरकर क्षमा-याचना करने लगा। हे राजन्! मैं आपको नहीं जानता था, मैंने आप पर चोरी का जो झूठा दोष लगाया है, इसका जो दण्ड आप चाहें वह मुझे दे दें, किन्तु विक्रमादित्य ने धैर्य और संयम के साथ उस सेठ से कहा—इसमें तुम्हारा तनिक भी अपराध नहीं है, क्योंकि मेरे ऊपर शनिदेव क्रोधित थे। उन्हीं के प्रकोप से मैं समस्त कष्टों को प्राप्त कर रहा था। पुनः उसी सेठ ने राजा विक्रमादित्य को अपने आवास पर प्रीतिभोज दिया। जिस समय विक्रमादित्य भोजन कर रहे थे तो उन्होंने स्वयं और वहाँ उपस्थित समूह ने पुनः यह देखा कि जो खूंटी हार निगल गई थी वह खूंटी हार उगल रही है। इसके उपरान्त ही उस सेठ ने भी अपनी रूप-यौवन से सम्पन्न कन्या का विवाह राजा विक्रमादित्य के साथ कर दिया।

कुछ दिनों के पश्चात् उस सेठ के गृह से विदा लेकर राजकुमारी मनभावती व उस सेठ की पुत्री श्रीकंवरी रत्न, आभूषण, दास और दासियों के साथ राजा विक्रमादित्य अपनी पूर्व राजधानी उज्जैन नगरी में लौट आएँ। उन्होंने अपने नगर में घोषणा की कि शनिदेव ही सभी ग्रहों में सर्वोपरि है, क्योंकि मैंने इन्हें छोटा बताकर अनेकानेक दुखों को प्राप्त किया है। इसके उपरान्त ही उज्जैन नगरी में उस दिन से शनिदेव की पूजा होने लगी। जिसके कारण उस नगरी के निवासी समस्त सुखों को प्राप्त करते रहे। जो भी स्त्री-पुरुष इस शनिदेव की व्रत कथा को स्वयं पढ़ता है या किसी के द्वारा इसका श्रवण करता है, उसके सभी कष्ट-क्लेश व दरिद्रता का नाश होता है, इसमें संशय नहीं।

शनि की शापग्रस्त दृष्टि पड़ने से गणेश का सिरच्छेदन

कल्पान्तर (ब्रह्मवैवर्त्तपुराण) की कथा है कि—एक समय पार्वती के पुत्र गणपति के दर्शन के लिए श्यामवर्ण के पीताम्बरधारी सूर्य और छाया के पुत्र शनिदेव वहाँ आये, वे उस समय अपने हृदय में अपने प्रभु का चिन्तन और जाप कर रहे थे। वहाँ उन्होंने भगवान् विष्णु, ब्रह्मा और शूलपाणि तथा उपस्थित सभी देवताओं एवं मुनियों के चरणों में मस्तक रखकर प्रणाम किया। उन सभी की आज्ञा प्राप्त कर वे शंकर और पार्वती के पुत्र को देखने के लिए भवन के भीतर पहुँचे। जिस समय उन्होंने उस अलौकिक भवन में प्रवेश किया। उस समय माता पार्वती सोलहों श्रृंगारों से सुसज्जित हो बालक गणेश को गोद में लेकर रत्न से निर्मित सिंहासन पर बैठी हुई मन्द-मन्द हँस रही थी। उनके समीप उनकी पाँचों सखियाँ खड़ी थीं, वे उनके ऊपर श्वेत चँवर डुला रही थी। अब शनि ने तीनों लोकों में दुर्लभ इस संसार की जननी माता के चरणकमलों में अपने मस्तक को रखकर प्रणाम किया। इसके उपरान्त ही माता पार्वती ने उन्हें शुभाशीर्वाद देकर उनका कुशल समाचार

पूछा, हे शनिदेव! आपके नेत्र कुछ बन्द होते दिखाई दे रहे हैं। किस कारणवश आपने अपना मुख नीचे की ओर झुका रखा है। समस्त बाधाओं एवं कलाओं के स्वामी की जननी माता पार्वती ने पीताम्बरधारी शनि से पूछा, आप मेरी ओर तथा मेरे इस पुत्र की ओर क्यों नहीं देख रहे हैं? तब शनि ने कहा हे माता! इस संसार के सम्पूर्ण प्राणी अपने कर्मों का फल ही प्राप्त करते हैं। वे अपने अच्छे-बुरे कर्मों से ही सुख दुःख प्राप्त करते हैं। मैं आपको जो अपने विषय में बता रहा हूँ, वह अत्यन्त गोपनीय व लज्जाजनक है किन्तु आपकी आज्ञा से मैं उसे आपके समक्ष प्रकट कर रहा हूँ।

हे माता! बाल्यावस्था से ही मेरे हृदय में कृष्णपदपद्मानुरक्ति थी, मैं सदैव उन्हीं के सुन्दर ध्यान में तल्लीन रहता था। मेरे सम्पूर्ण हृदय में श्रीकृष्ण की भक्ति का समावेश रहता है, किन्तु सहसा मेरे पिताश्री ने चित्ररथ की पुत्री से मेरा विवाह कर दिया। मेरी पत्नी अत्यधिक साध्वी व तपस्विनी थी और उसके मुखारबिन्द पर तेजस्विता अंकित थी।

एक समय की बात है मेरी धर्मपत्नी ऋतुस्नान[१] के उपरान्त मेरे समीप आई, किन्तु मैं तो भगवान् के ध्यान में मग्न था और बाहरी ज्ञान से पूर्णतः शून्य था। इसलिए मैं अपनी धर्मपत्नी के समीप आने के कारण को नहीं समझ पाया। जिससे उसने मुझे कुंठित हृदय से यह शाप दे दिया कि तुम जिसकी ओर दृष्टिपात करोगे, वह वहीं नष्ट हो जाएगा। यह शाप उसने मुझे ऋतुकाल के विफल होने पर दुःखी हृदय से ही दिया था। हे माता! भगवान् श्रीकृष्ण के ध्यान से विरत् होने के पश्चात् मैंने उसे सन्तुष्ट किया, किन्तु वह लाख पश्चात्ताप करने के बाद भी अपने शाप से मुझे मुक्त न कर पाई। इसी कारणवश मैं जीव हिंसा के भय से अपने दग्ध नेत्रों से किसी की ओर नहीं

---

[१] पाराशरः-ऋतुस्नातां तु यो भार्यां सन्निधौ नोपगच्छति। घोरायां भ्रूणहत्यायां पच्यते नात्र संशयः॥

(निर्णयसिन्धु, पृ० ४८८)

देखता हूँ और सदैव मस्तक झुकाये ही रहता हूँ। शनि की इन बातों को सुनकर माता पार्वती जो नर्तकियों व किन्नरियों के समुदाय के मध्य में थीं, जोर–जोर से हँसते हुए बोली, हे ग्रहेश्वर! ये समस्त संसार प्रभु के आश्रित है, अतः समस्त कर्मों का फल देना ईश्वर के अधीन है। इसलिए तुम निर्विघ्न होकर मेरे व मेरे पुत्र की ओर देख सकते हो। माता पार्वती की बातों को सुनकर शनि अपने हृदय में सोचने लगे, यदि मैं इस अबोध बालक की ओर देखूँगा तो निःसन्देह इसका अनिष्ट हो जाएगा। किन्तु संसार की जननी माता पार्वती की आज्ञा को कैसे टालूँ। इस प्रकार विचार करते हुए शनि ने धर्म को साक्षी रखकर माता पार्वती की ओर तो नहीं देखा, किन्तु उनके पुत्र की ओर देखने का दृढ़ निश्चय कर लिया। पूर्व से ही शनि के कंठ व तालु शुष्क हो चुके थे, फिर भी उन्होंने अपने बायें नेत्र के कोने से माता पार्वती के पुत्र की ओर दृष्टि डाली। पत्नी से शापित शनि की दृष्टि पड़ते ही इस संसार के माता-पिता शिव एवं पार्वती के प्राणों से प्रिय पुत्र गणेश का मस्तक धड़ से अलग होकर गोलोक में जाकर अपने अभीष्ट देव भगवान् श्रीकृष्ण में प्रवेश कर गया। अपने द्वारा यह कृत्य किये जाने पर शनि अत्यन्त दुःखी हुए। उन्होंने अपनी आँखें घुमा ली और मस्तक झुका कर वही खड़े हो गए।

अपनी गोद में अपने पुत्र का कटा हुआ कंठ जो रक्त से पूर्णतः लथपथ था उसे देखकर माता पार्वती चिल्ला उठी। अब वे बालक का धड़ अपने वक्षःस्थल से सटाये रोती बिलखती तथा विलाप करती हुई अर्धविक्षिप्त की तरह सभी ओर घूमती हुई पृथ्वी पर मूर्च्छित होकर गिर पड़ी। इस आश्चर्यजनक दृश्य को देखकर वहाँ उपस्थित समस्त देव, देवियाँ, पर्वत, गन्धर्व, शिव और सम्पूर्ण कैलाशवासी अवसन्न हो गए। वे सभी बिना प्राण के प्रतीत हो रहे थे। यह कथा ब्रह्मवैवर्त्तपुराण से ली गई है।

शनैश्चर-व्रत के प्रसंग में महामुनि पिप्पलाद का आख्यान

शनि के पैर टूटने की कथा

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा—हे राजन्! एक बार त्रेतायुग में अनावृष्टि के कारण भयंकर दुर्भिक्ष पड़ गया। उस घोर अकाल में कौशिकमुनि अपनी पत्नी और पुत्रों के साथ अपना निवास स्थान छोड़कर दूसरे प्रदेश में रहने के लिए चल पड़े। कुटुम्ब का भरण-पोषण दूभर हो जाने के कारण अत्यन्त कष्ट से उन्होंने अपने एक बालक को रास्ते में ही छोड़ दिया। वह बालक अकेला एकान्त में भूख-प्यास से बिलबिलाता हुआ विलाप करने लगा। उसे अचानक एक पीपल का पेड़ दिखाई दिया। उसके समीप ही एक बावड़ी भी थी। बालक ने पीपल के फलों को खाकर बावड़ी का ठण्डा जल पीया। अपने को स्वस्थ पाकर उसी स्थान पर वह कठिन तपस्या करने लगा और प्रतिदिन पीपल के फलों को खाकर वह समय व्यतीत करने लगा।

अचानक वहाँ एक दिन मुनि नारद आये। उन्हें देखकर बालक ने प्रणाम किया और आदरपूर्वक बैठाया। दयावान् नारदजी उसकी बाल्यावस्था, विनय और नम्रता को देखकर अत्यधिक प्रसन्न हुए। अतः उन्होंने बालक का मौंजीबन्धन आदि सभी संस्कार कर पद-क्रम-रहस्य सहित वेद का अध्ययन कराया और साथ ही साथ द्वादशाक्षर वैष्णो मन्त्र 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' का उपदेश दिया। अब तो वह बालक प्रतिदिन भगवान् विष्णु का ध्यान करके इस मन्त्र का जाप करने लगा। देवर्षि नारदजी भी वहीं रहे। अल्प समय में ही बालक के तप से प्रसन्न होकर पद्म-शंख-चक्र-गदा को धारण किए हुए अपने वाहन गरुड़ पर सवार होकर स्वयं भगवान् विष्णु वहाँ आ पहुँचे। देवर्षि नारद के वचन से बालक ने उन्हें पहचान लिया, तब उसने भगवान् में दृढ़ भक्ति की माँग की। भगवान् विष्णु ने प्रसन्न होकर उसे ज्ञान और योग का उपदेश प्रदत्त किया और अपने में भक्ति होने का आशीर्वाद देकर वे वहीं अन्तर्धान हो गए।

विश्व के रक्षक भगवान् विष्णु के उपदेश से वह बालक महाज्ञानी महर्षि हो गया। एक दिन उस बालक ने नारदजी से पूछा—हे देवर्षि! यह किस कर्म का फल है, जो मुझे छोटी अवस्था से ही इतना उठाना पड़ रहा है। इतनी छोटी अवस्था में भी मैं क्यों ग्रहों के द्वारा कष्ट पा रहा हूँ। मेरे माता-पिता का कुछ भी पता नहीं, वे कहाँ हैं? और किस अवस्था में हैं? फिर भी मैं अत्यधिक कष्ट से जी रहा हूँ।

हे द्विजोत्तम! सौभाग्यवश आपने दया करके मेरा संस्कार किया और मुझे ब्राह्मणत्व भी प्रदान किया। नारदजी उस बालक के वचन को सुनकर बोले—बालक! शनिग्रह ने तुम्हें बहुत पीड़ा पहुँचाई है और आज यह सम्पूर्ण देश उसके मन्दगति से चलने के कारण उत्पीड़ित है। अरे—देखो, वह अभिमान में चूर शनिग्रह आकाश में प्रज्वलित दिखाई पड़ रहा है। यह सुनकर बालक क्रोध से अग्नि के तुल्य जल उठा। उसने उग्र दृष्टि से शनि को आकाश से भूमि पर गिरा दिया। शनि एक पर्वत पर गिरे और उनका पैर टूट गया, जिससे वे पंगु हो गए। देवर्षि नारद भूमि पर गिरे हुए सूर्यपुत्र शनि को देखकर अति प्रसन्नता से नृत्य करने लगे। उन्होंने समस्त देवताओं को बुलाया। ब्रह्मा, रुद्र, इन्द्र, अग्नि आदि देवता वहाँ आए और नारदजी ने शनि की दुर्गति उन सभी को दिखाई।

ब्रह्माजी ने बालक से कहा—महाभाग! तुमने पीपल के फल का भक्षण कर अत्यधिक कठिन तप किया है। इसलिए महर्षि नारदजी ने तुम्हारा नाम पिप्पलाद रखा है। इसलिए तुम आज से इसी नाम से संसार में विख्यात होगे। जो कोई भी शनिवार को तुम्हारा भक्तिभाव से पूजन करेंगे या 'पिप्पलाद' इस नाम का स्मरण करेंगे, उन्हें सात जन्म तक शनि की पीड़ा सहन नहीं करनी पड़ेगी और वे पुत्र-पौत्र से युक्त होंगे। अब तुम शनि को पूर्व की भाँति आकाश में स्थापित कर दो, क्योंकि इनका वास्तव में कोई अपराध नहीं है।

ग्रहों की पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए नैवेद्य निवेदन, हवन, नमस्कार आदि करना चाहिए। ग्रहों का अनादर नहीं करना चाहिए। जब ये पूजित होते हैं तो शान्ति प्रदान करते हैं। शनि की ग्रहजन्य पीड़ा की निवृत्ति के लिए शनिवार को स्वयं तैलाभ्यंग करके ब्राह्मणों को अभ्यङ्ग के लिए तैल देना चाहिए। शनि की लोहे की प्रतिमा बनाकर तैलयुक्त लोह-पात्र में रखकर एक वर्ष तक प्रति शनिवार को पूजन करने के बाद कृष्ण पुष्प (शमीपुष्प), दो कृष्ण वस्त्र, कसार, काला तिल, भात आदि से उनका पूजन कर काली गाय, काला कम्बल, काला वस्त्र, तिल का तेल और दक्षिणा सहित सभी पदार्थ ब्राह्मण को प्रदान करना चाहिए। जो भी व्यक्ति प्रत्येक शनिवार को एक वर्ष तक इस व्रत को करता है और इस विधि से इसका उद्यापन करता है, उसे कभी भी शनि से कष्ट नहीं भोगना पड़ता। यह कहकर चतुर्मुख ब्रह्माजी समस्त देवताओं के साथ अपने परमधाम को चले गए तथा पिप्पलाद मुनि ने भी ब्रह्माजी की आज्ञानुसार शनि को उनके स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया। स्वयं महामुनि पिप्पलाद ने शनिग्रह की निम्न श्लोक से प्रार्थना की—

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः प्रियतां मे ग्रहोत्तमः॥

जो भी मनुष्य इस शनैश्चरोपाख्यान को भक्ति व श्रद्धापूर्वक श्रवण करता है और शनि की लोहे की प्रतिमा बनाकर तेल से भरे लोहे के कलश में रखकर ब्राह्मण को दक्षिणा सहित प्रदत्त करता है उसको कभी भी शनि की पीड़ा नहीं होती।

नवग्रहयागन्यासा:

विनियोग:—आ कृष्णेनेति हिरण्यस्तूप ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सविता देवता, इमन्देवा इति वरुण ऋषिः अत्यष्टिश्छन्दः सोमो देवता, अग्निर्मूर्धेति विरूपाक्ष ऋषिः गायत्रीछन्दः भौमो देवता, उद्बुध्यस्वेति परमेष्ठी ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः बुधो देवता, बृहस्पत इति गृत्समद ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः बृहस्पतिर्देवता, अन्नात्परिस्त्रुत इति प्रजापत्यश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयः अतिजगतीछन्दः शुक्रो देवता, शन्नो देवीरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिर्गायत्रीछन्दः शनिर्देवता, कया नश्चित्र इति वामदेव ऋषिः गायत्रीछन्दः राहुर्देवता, केतुं कृण्वन्निति मधुच्छन्दा ऋषि गायत्रीछन्दः केतुर्देवता, सूर्यादिनवग्रहाणां जपे होमे च विनियोग:।

१. ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतञ्चमर्त्त्यंच। हिरण्ययेन सविता रथे ना देवो याति भुवनानि पश्यन्—हृदये। २. ॐ इमं देवा असपत्नर्ठ० सुवघ्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ० राजा—उदरे। ३. ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ०सि जिन्वति—नाभौ। ४. ॐ उद्बुध्यास्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसर्ठ० सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत—कट्याम्। ५. ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋृतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्—ऊर्वोः। ६. ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानर्ठ० शुक्रमन्धसऽइन्द्र स्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु—जान्वोः। ७. ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः—जङ्घयोः। ८. ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता—पादयोः। ९. ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः—सर्वाङ्गेषु।

पुनः—१. ॐ उद्बुध्यास्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसर्ठ० सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत—हृदयाय नमः। २. ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्—शिरसे स्वाहा। ३. ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानर्ठ० शुक्रमन्धसऽइन्द्र स्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु—शिखायै वषट्। ४. ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः—कवचाय हुम्। ५. ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता—नेत्रत्रयाय वौषट्। ६. ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः—अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

नवग्रहयागहवनमन्त्राः

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतञ्चमर्त्त्यंच। हिरण्ययेन सविता रथे ना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा॥ १॥

इमं देवा असपत्नर्ठ० सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ० राजा स्वाहा॥ २॥

अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति स्वाहा ॥ ३ ॥

उद्बुध्यास्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा ॥ ४ ॥

बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा ॥ ५ ॥

अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा ॥ ६ ॥

शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः स्वाहा ॥ ७ ॥

कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा ॥ ८ ॥

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः स्वाहा ॥ ९ ॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा ॥ १ ॥

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण स्वाहा ॥ २ ॥

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन् स्वाहा॥ ३॥

विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्त्वा स्वाहा॥ ४॥

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा॥ ५॥

सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिव वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँ१ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा॥ ६॥

यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे स्वाहा॥ ७॥

कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषथीः स्वाहा॥ ८॥

चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा॥ ९॥

अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह॥ १॥

आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे स्वाहा॥ २॥

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः स्वाहा॥ ३॥

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पार्ठ०सुरे स्वाहा ॥ ४॥

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा॥ ५॥

आदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि धर्माय दीष्व स्वाहा॥ ६॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु व्यर्ठ० स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा॥ ७॥

नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यो नमः स्वाहा॥ ८॥

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा॥ ९॥

सूर्ययागन्यासः

विनियोगः—विभ्राडित्यस्य विभ्राट्सौर्य ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, उदुत्यमिति तिसृणां प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता, तं प्रत्नथेत्यस्य काश्यपवत्सावृषी त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता, अयं वेन इत्यस्य वेन ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता, चित्रमित्यस्य कुत्साङ्गिरस ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, आन इत्यस्य अगस्त्य ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, यदद्येत्यस्य श्रुतकक्षसुतकक्षावृषी गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता, तरणिरित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता, तत्सूर्यस्येति द्वयोः कुत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, बण्महानिति द्वयोर्जमदग्निऋषिः आद्यस्य बृहतीछन्दः द्वितीयस्य सतोबृहतीछन्दः सूर्यो देवता श्रायन्त इवेत्यस्य नृमेध ऋषिः बृहतीछन्दः सूर्यो देवता, अद्या देवा इत्यस्य कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, आ कृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरसावृषी त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, न्यासे होमे च विनियोगः।

न्यासः—१. ॐ बिभ्राड्बृहत्० वामकरे। २. ॐ उदुत्यम्० दक्षिणकरे। ३. ॐ येना पावक चक्षसा० वामपादे। ४. ॐ दैव्यावद्ध्वर्यू० दक्षिणपादे। ५. ॐ तं प्रत्नथा० वामजानौ। ६. ॐ अयं वेनः० दक्षिणजानौ। ७. ॐ चित्रं देवानाम्० वामकट्याम्। ८. ॐ आन ऽइडाभिः० दक्षिणकट्याम्। ९. ॐ यदद्य कच्च० नाभौ। १०. ॐ तरणिर्विश्व० हृदये। ११. ॐ तत्सूर्यस्य० वामबाहौ। १२. ॐ तन्मित्रस्य० दक्षिणबाहौ। १३. ॐ बण्महान्० कण्ठे। १४. ॐ बट्सूर्य श्रवसा० मुखे। १५. ॐ श्रायन्त ऽइव० अक्ष्णोः। १६. ॐ अद्या देवाः० शिरसि। १७. ॐ आ कृष्णेन० सर्वाङ्गे।

पुनः—१. ॐ तन्मित्रस्य० हृदयाय स्वाहा। २. ॐ बग्महान्० शिरसे स्वाहा। ३. ॐ बट्सूर्य श्रवसा० शिखायै वषट्। ४. ॐ श्रायन्त ऽइव कवचाय हुम्। ५. ॐ अद्यादेवा० नेत्रत्रयाय वौषट्। ६. ॐ आ कृष्णेन० अस्त्राय फट्।

पडङ्गकरन्यासः—ॐ विभ्राडिति अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ दैव्यावद्ध्वर्य्विति तर्जनीभ्यां नमः। ॐ चित्रन्देवानामिति मध्यमाभ्यां नमः। ॐ तरणिर्विश्वेति अनामिकाभ्यां नमः। ॐ बट्सूर्य्येति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ आ कृष्णेनेति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

ध्यानम्

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान्मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः॥

सूर्ययागहवनमन्त्राः

ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्। वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति सूर्याय स्वाहा॥ १॥

उदु त्त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यठ० सूर्याय स्वाहा॥ २॥

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ२ऽ अनु। त्वं वरुण पश्यसि सूर्याय स्वाहा॥ ३॥

दैव्यावध्वर्यू आ गतर्ठ० रथेन सूर्यत्वचा। मध्वा यज्ञर्ठ० समञ्जाथे। तं प्रत्नथायं वेनश्चित्र देवानाम् सूर्याय स्वाहा॥ ४॥

तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदर्ठ० स्वर्विदम्। प्रतीचीनं वृजनं दोहसे धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु वर्द्धसे सूर्याय स्वाहा॥ ५॥

अयं वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायू रजसो विमाने। इममपार्ठ०सङ्गमे सूर्यस्य शिशुंन विद्रा मतिभी रिहन्ति सूर्याय स्वाहा॥ ६॥

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च सूर्याय स्वाहा॥ ७॥

आ न इडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु। अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा सूर्याय स्वाहा॥ ८॥

यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य। सर्वं तदिन्द्र ते वशे सूर्याय स्वाहा॥ ९॥

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमा भासि रोचनम् सूर्याय स्वाहा॥ १०॥

तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततꣳ संजभार। यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै सूर्याय स्वाहा॥ ११॥

तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे। अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः संभरन्ति सूर्याय स्वाहा॥ १२॥

बण्महाँ२॥ असि सूर्य बडादित्य महाँ२॥ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ२॥ असि सूर्याय स्वाहा॥ १३॥

बट्सूर्य श्रवसा महाँ२॥ असि सत्रा देव महाँ२॥ असि। मह्ना देवानामसुर्य्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् सूर्याय स्वाहा॥ १४॥

श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत। वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम सूर्याय स्वाहा॥ १५॥

अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निरꣳ हसः पिपृता निरवद्यात्। तन्नोमित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः सूर्याय स्वाहा॥ १६॥

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् सूर्याय स्वाहा॥ १७॥

महामृत्युञ्जययागन्यासः

रुद्रसूक्तेन न्यासः

विनियोगः-नमस्त इति षोडशर्चस्य परमेष्ठी ऋषिः, नमस्त इत्यस्य गायत्रीछन्दः, यात इति त्रयाणामनुष्टुप्छन्दः, अध्यवोचदिति त्रयाणां पङ्क्ति-श्छन्दः, नमोऽस्तु नीलग्रीवायेति सप्तानामनुष्टुप्छन्दः, मा नो महान्तमिति द्वयोः कुत्स ऋषिःर्जगतीछन्दः, सर्वेषामेको शिवो देवता, न्यासे हवने च विनियोगः।

१. ॐ नमस्ते०—वामकरे। २. ॐ याते रुद्र शिवा०—दक्षिणकरे। ३. ॐ यामिषुं गिरिशन्त०—वामपादे। ४. ॐ शिवेन वचसा०— दक्षिणपादे। ५. ॐ अध्यवोचदधिवक्ता०—वामजानौ। ६. ॐ असौ यस्ताम्रः०—दक्षिणजानौ। ७. ॐ असौ योऽवसर्पति०—वामकट्याम्। ८. ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय०—दक्षिणकट्याम्। ९. ॐ प्रमुञ्च०— नाभौ। १०. ॐ विज्यन्धनु०—हृदये। ११. ॐ या ते हेतिः०—वामबाहौ। १२. ॐ परि ते धन्वनः०—दक्षिणबाहौ। १३. ॐ अवतत्त्य-धनुष्ट्वम्०—कण्ठे। १४. ॐ नमस्त आयुधाय०—मुखे। १५. ॐ मा नो महान्तम्०—नेत्रयोः। १६. ॐ मा नस्तोके०—मूर्ध्नि।

पुनः— १. या ते हेतिः०—हृदयाय नमः। २. परि ते धन्वनः०—शिरसे स्वाहा। ३. अवतत्त्य धनुष्ट्वम्०—शिखायै वषट्। ४. नमस्त आयुधाय०—कवचाय हुम्। ५. मा नो महान्तम्०—नेत्राभ्यां वौषट्। ६. मा नस्तोके०—अस्त्राय फट्।

हस्ताम्भोज-युगस्थ-कुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के स-कुम्भौ करौ।
अक्ष-स्त्रग्-मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रं स्त्रवत्
पीयूषोऽन्न तनुं भजे स-गिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम्॥ १॥
चन्द्रोद्भासित-मूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्,
हस्ताब्जेन दधत् सुदिव्यममलं हास्याय-पङ्केरुहम्।
सुर्येन्द्वग्नि-विलोचनं करतले पाशा-ऽक्षसूत्रा-ऽङ्कुशा-
म्भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरे॥ २॥

महामृत्युञ्जययागहवनमन्त्राः

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः स्वाहा॥ १॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा॥ २॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिꣳसीः पुरुषं जगत् स्वाहा॥ ३॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छा-वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमना असत् स्वाहा॥ ४॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहीꣳश्च सर्वान् जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव स्वाहा॥ ५॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषाꣳ हेड ईमहे स्वाहा॥ ६॥ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं

गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः स्वाहा॥ ७॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः स्वाहा॥ ८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप स्वाहा॥ ९॥ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२। उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा॥ १०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज स्वाहा॥ ११॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम् स्वाहा॥ १२॥ अवतत्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा॥ १३॥ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने स्वाहा॥ १४॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः स्वाहा॥ १५॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषुमा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा॥ १६॥ (शु.य.सं. १६/१-१६)

अथवा

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः स्वाहा॥ १॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा॥ २॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिर्ठ०सीः पुरुषं जगत् स्वाहा॥ ३॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छा-

वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठ० सुमना असत् स्वाहा॥ ४॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहीर्ठ०श्च सर्वान् जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव स्वाहा॥ ५॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनर्ठ० रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषार्ठ० हेड ईमहे स्वाहा॥ ६॥ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः स्वाहा॥ ७॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः स्वाहा॥ ८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप स्वाहा॥ ९॥ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२। उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा॥ १०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज स्वाहा॥ ११॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम् स्वाहा॥ १२॥ अवतत्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा॥ १३॥ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने स्वाहा॥ १४॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः स्वाहा॥ १५॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषुमा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः

सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा॥ १६॥ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशाञ्च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमः स्वाहा॥ १७॥ नमो बभ्लुशाय व्याधिनेनानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमो रुद्रातुतायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमो सूतायाहन्त्यै वनानां पतये नमः स्वाहा॥ १८॥ नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायोषधीनां पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो नमऽ उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पतीनां पतये नमः स्वाहा॥ १९॥ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचे रवे परिचरायारण्यानां पतये नमः स्वाहा॥ २०॥ नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघार्ठ०सद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमोऽसिमद्भ्योनक्तंचरद्भयो विकृन्तानां पतये नमः स्वाहा॥ २१॥ नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नम इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम आयच्छद्भ्योऽद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥ २२॥ नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भयश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः शयानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो

धावद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥२३॥ नमः सभाभ्यः
सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नम
आव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम उगणाभ्य-स्तृठ॰हतीभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥२४॥ नमो गणेभ्यो
गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो
गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च
वो नमः स्वाहा॥२५॥ नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो
रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमो नमः क्षत्तृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो
नमो नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥२६॥
नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः
कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः
श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥२७॥ नमः श्वभ्यः
श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय
च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च
स्वाहा॥२८॥ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः
सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय
च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च स्वाहा॥२९॥ नमो ह्रस्वाय च
वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च
नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च स्वाहा॥३०॥ नम आशवे चाजिराय
च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नम ऊर्म्याय चावस्वन्याय च
नमो नादेयाय च द्वीप्याय च स्वाहा॥३१॥ नमो ज्येष्ठाय च
कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय

चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च स्वाहा॥ ३२॥ नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चाव सान्याय च नम उर्वर्याय च खल्याय च स्वाहा॥ ३३॥ नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा॥ ३४॥ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च स्वाहा॥ ३५॥ नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च स्वाहा॥ ३६॥ नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च स्वाहा॥ ३७॥ नमः कूप्याय चाऽवट्याय च नमो वीध्र्याय चातप्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च स्वाहा॥ ३८॥ नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च स्वाहा॥ ३९॥ नमः शंगवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय स्वाहा॥ ४०॥ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा॥ ४१॥ नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय

चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च स्वाहा॥ ४२ ॥ नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः किर्ठ०शिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च स्वाहा॥ ४३॥ नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च स्वाहा ॥ ४४ ॥ नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पार्ठ०सव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्व्याय च स्वाहा ॥ ४५ ॥ नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आखिदते च प्रखिदते च नम इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानार्ठ०हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः स्वाहा॥ ४६ ॥ द्रापेअन्धसस्पते दरिद्रं नीललोहित। आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ्म्यो च नः किञ्चनाममत् स्वाहा॥ ४७॥ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा ॥ ४८ ॥ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी। शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे स्वाहा॥ ४९ ॥ परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मति रघायोः। अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड स्वाहा॥ ५०॥ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्तिं वसान आचर पिनाकं बिभ्रदागहि स्वाहा ॥ ५१ ॥ विकिरिद्र विलोहित

नमस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्त्रर्ठ०हेतयोन्यमस्मन्निवपन्तु ताः स्वाहा॥५२॥ सहस्त्राणि सहस्त्रशो बाह्वोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि स्वाहा॥५३॥ असंख्याता सहस्त्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥५४॥ अस्मिन्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि। तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥५५॥ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्ठ०रुद्रा उपश्रिताः। तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥५६॥ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः। तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥५७॥ ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः। तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥५८॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥५९॥ ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा आयुर्युधः। तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥६०॥ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥६१॥ येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्। तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥६२॥ य एतावन्तश्च भूयार्ठ०सश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे। तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥६३॥ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो

नमो अस्तु ते नोऽवन्तु तेनो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा॥ ६४॥ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा॥ ६५॥ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवस्तेभ्यो अन्नमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा॥ ६६॥

पुनः आचार्य **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥** (शु.य.सं. ३/६०) इस महामृत्युञ्जय मन्त्र की ग्यारह माला से अथवा एक माला से प्रातःकाल और सायंकाल हवन करावे।

हनुमद्यागन्यासः

विनियोगः-नमस्त इति षोडशर्चस्य परमेष्ठी ऋषिः, नमस्त इत्यस्य गायत्रीछन्दः, यात इति त्रयाणामनुष्टुप्छन्दः, अध्यवोचदिति त्रयाणां पङ्क्तिश्छन्दः, नमोऽस्तु नीलग्रीवायेति सप्तानामनुष्टुप्छन्दः, मा नो महान्तमिति द्वयोः कुत्स ऋषिर्जगतीछन्दः, सर्वेषामेको रुद्रो (हनुमद्) देवता, न्यासे हवने च विनियोगः।

१. ॐ नमस्ते० वामकरे। २. ॐ याते रुद्र शिवा० दक्षिणकरे। ३. ॐ यामिषुं गिरिशन्त० वामपादे। ४. ॐ शिवेन वचसा० दक्षिणपादे। ५. ॐ अध्यवोचदधिवक्ता० वामजानौ। ६. ॐ असौ यस्ताम्रः० दक्षिणजानौ। ७. ॐ असौ योऽवसर्पति० वामकट्याम्। ८. ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय० दक्षिणकट्याम्। ९. ॐ प्रमुञ्च० नाभौ। १०. ॐ विज्यन्धनु० हृदये। ११. ॐ या ते हेतिः० वामबाहौ। १२. ॐ परि ते धन्वनः० दक्षिणबाहौ। १३. ॐ अवतत्त्यधनुष्ट्वम्० कण्ठे। १४. ॐ नमस्ते ऽआयुधाय० मुखे। १५. ॐ मा नो महान्तम्० नेत्रयोः। १६. ॐ मा नस्तोके० मूर्ध्नि।

पुनः—१. या ते हेतिः० हृदयाय नमः। २. परि ते धन्वनः० शिरसे स्वाहा। ३. अवतत्त्य धनुष्ट्वम्० शिखायै वषट्। ४. नमस्ते ऽआयुधाय० कवचाय हुम्। ५. मा नो महान्तम्० नेत्राभ्यां वौषट्। ६. मा नस्तोके० अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥
कर्णिकारसुवर्णाभं वर्णनीयं गुणोत्तमम्।
अर्णवोल्लङ्घनोद्युक्तं तूर्णं ध्यायामि मारुतिम्॥

हनुमद्यागहवनमन्त्राः

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः हनुमते स्वाहा॥ १॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि हनुमते स्वाहा॥ २॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिर्ठ०सीः पुरुषं जगत् हनुमते स्वाहा॥ ३॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिजगदयक्ष्मर्ठ० सुमना असत् हनुमते स्वाहा॥ ४॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहीर्ठ०श्च सर्वान् जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव हनुमते स्वाहा॥ ५॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनर्ठ० रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषार्ठ० हेड ईमहे हनुमते स्वाहा॥ ६॥

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः हनुमते स्वाहा॥ ७॥

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः हनुमते स्वाहा॥ ८॥

प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप हनुमते स्वाहा॥ ९॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२। उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः हनुमते स्वाहा॥ १०॥

या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज हनुमते स्वाहा॥ ११॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम् हनुमते स्वाहा॥ १२॥

अवतत्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव हनुमते स्वाहा॥ १३॥

नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने हनुमते स्वाहा॥ १४॥

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः हनुमते स्वाहा॥ १५॥

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषुमा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे हनुमते स्वाहा॥ १६॥

मनो न्वाह्वामहे नाराशर्ठ०सेन स्तोमेन। पितृणां च मन्मभिः हनुमते स्वाहा॥ १७॥

मनो न येषु हवनेषु तिग्मं विपः शच्या वनुथो द्रवन्ता। आ यः शर्याभिस्तुविनृम्णो अस्याऽश्रीणीताऽऽदिशं गभस्तौ। एष ते योनिः प्रजाः पाह्ययपमृष्टो मर्को देवास्त्वा मन्थिताः प्रणयन्त्वनाधृष्टासि हनुमते स्वाहा॥ १८॥

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वेदेवास आगत। दाश्वार्ठ०सो दाशुषः सुतम्। उपयामगृहीतोऽसि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः हनुमते स्वाहा॥ १९॥

मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यर्ठ०शासमिन्द्रम। विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रर्ठ०सहोदामिह तर्ठ०हुवेम। उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वत एष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते। उपयामगृहीतोऽसि मरुतां त्वौजसे हनुमते स्वाहा॥ २०॥

सोममनुष्वधम्मदाय। आसिञ्चस्वजठरेमद्धऽऊर्मिन्त्वर्ठ० राजासिप्रतिपत्सुतानाम् हनुमते स्वाहा॥ २१॥

मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवोविमहसः। स सुगोपातमो जनः हनुमते स्वाहा॥ २२॥

हर्ठ०सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसद्दतसव्द्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् हनुमते स्वाहा॥ २३॥

ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेङ्गानि च मेस्थीनि च मे परूर्ठ०षि च मे शरीराणि च म आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् हनुमते स्वाहा॥ २४॥

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकर्ठ०सर्ठ०शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व हनुमते स्वाहा॥ २५॥

आतिथ्यरूपं मासरं महावीरस्य नग्नहुः। रूपमुपसदामेतत्तिस्त्रो रात्रीः सुरासुता हनुमते स्वाहा॥ २६॥

मरुतार्ठ०स्कन्धा विश्वेषां देवानां प्रथमा कीकसा रुद्राणां द्वितीयादित्यानां तृतीया वायोः पुच्छमग्नीषोमयोर्भासदौ क्रुञ्चौ श्रोणिभ्यामिन्द्राबृहस्पती ऊरुभ्यां मित्रावरुणा वल्गाभ्यामाक्रमणर्ठ० स्थूराभ्यां बलं कुष्ठाभ्याम् हनुमते स्वाहा॥ २७॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम हनुमते स्वाहा॥ २८॥

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रꣳ रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम हनुमते स्वाहा॥ २९॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम हनुमते स्वाहा॥ ३०॥

उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा हनुमते स्वाहा॥ ३१॥

ॐ अग्निꣳ हृदयेनाशनिꣳ हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना। शर्वं मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रं देवं वनिष्ठुना वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम् हनुमते स्वाहा॥ ३२॥

शनिविषये विशेषविचारः

१. जिस किसी मनुष्य पर शनि की दशा या महादशा अथवा साढ़ेसाती आदि चल रही हो तो उसे सबसे पहले शनिवार के दिन नमक का त्याग कर देना चाहिए। यदि सम्भव हो तो एक समय ही भोजन करे।

२. शनि की कुछ पीड़ा होने पर शनिग्रह के रत्न को धारण कर शनिवार के दिन छायापात्र व तिलदान करना चाहिए। किन्तु यदि शनि से अत्यधिक कष्ट हो तो ऐसी स्थिति में आठ दिवसीय शनिशान्तिअनुष्ठान सुयोग्य वैदिकों के द्वारा करवाना चाहिए। इससे पूर्णतः लाभ होता है।

३. जिस मनुष्य पर शनि की दशा चल रही हो, उसे प्रत्येक शनिवार को पीपल वृक्ष की सात फेरी मध्याह्न काल के अन्दर करनी चाहिए। फेरी के उपरान्त पीपल वृक्ष के समक्ष सरसों तेल का दीप जलाकर उसमें काला तिल भी छोड़ना चाहिए। इससे शनि की पीड़ा में कमी होती है।

४. शनि ग्रह से कष्ट प्राप्त करने वाले मनुष्य को शनिवार के दिन संकल्प पूर्वक मध्याह्न काल के अन्दर काले घोड़े की नाल या नौका के कांटे से निर्मित लोहे के छल्ले को अपनी मध्यमा अंगुली में शनि के मूलमन्त्र का ग्यारह बार उच्चारण करके और एक माला जप 'ॐ शनैश्चराय नमः' इस मन्त्र द्वारा करना चाहिए। इससे भी शनि की पीड़ा में कमी होना स्वाभाविक है।

५. शनि के विशेष कष्ट देने पर शनिग्रह का स्थापन व शनिकुण्ड का निर्माण करवाकर उस कुण्ड में शनि के वैदिक मन्त्र 'ॐ शन्नोदेवी०' और शनिसहस्रनामावली से हवन करवाना चाहिए। इससे भी मनुष्य को शनिग्रह के द्वारा दिए गए कष्टों में कमी होगी।

६. शनि से सम्बन्धित सभी दान की वस्तुओं को शनिवार के दिन मध्याह्न काल के अन्दर संकल्प पूर्वक शनि के ब्राह्मण को दान देना चाहिए। यह दान लेने का अधिकार शनि की उपासना करने वाले ब्राह्मण को ही है।

७. शनियन्त्र की पूजा करने से पूर्व शनियन्त्र की प्राणप्रतिष्ठा करवाना अत्यधिक आवश्यक है। इसके लिए कुशल विद्वान् का होना अति आवश्यक है। जो लोग बाजार में उपलब्ध शनियन्त्र की पूजा करते हैं, उन्हें कदापि लाभ नहीं हो सकता। शास्त्रों के मतानुसार जिन यन्त्रों की प्राणप्रतिष्ठा न की जाए ऐसे यन्त्र अपना फल नहीं देते।

८. शनि हवन का पूर्ण फल तभी प्राप्त हो सकता है, जब शनि के कुण्ड का निर्माण हो और सुयोग्य विद्वान् द्वारा यजमान से उसमें हवन करवाया जाए।

९. शास्त्रों के मतानुसार शनिदेव के पिता का नाम सूर्य है, किन्तु सूर्य और शनि का सम्बन्ध जन्मकाल से ही मैत्रीपूर्ण नहीं है। इसलिए जब सूर्य की महादशा में शनि का समावेश होता है, तो जातक अत्यधिक कष्ट प्राप्त करता है।

१०. हनुमानजी के द्वारा शनि को मल्लयुद्ध में पराजित कर देने के उपरान्त जब शनि के पूरे अंगों में अत्यधिक चोटें लग गई थीं तब उन्होंने तेल माँगा था, यही कारण है कि प्रत्येक शनिवार को शनि मन्दिर में तेल चढ़ाना व तेल का दीपक जलाना चाहिए।

११. जब जातक की जन्मराशि से ३, ६ और ११वें स्थान में शनि हो तो उसे शुभ समझना चाहिए। उसका फल नवीन उद्योग, मनोरथ सिद्धि और सम्मान देना है किन्तु जब जातक की राशि से गोचर का शनि १, २, ३, ४, ५, ७, ८, ९, १० और १२ इन स्थानों में होता है, तो वह अशुभ फल देता है। उस अवस्था में आपसी लोगों से विरोध, द्रव्य का अभाव, जीविका का न होना, कार्यों का पूर्ण न होना और अशुभ फलों की प्राप्ति का योग होता है।

शनिशान्त्यनुष्ठान सामग्री

रोली एक पाव, मौली एक बड़ी लच्छी, अबीर (गुलाब), बुक्का (अभ्रक), धूपबत्ती पाँच पैकेट, केसर छह मासा, कर्पूर चार तोला, सिन्दूर दो तोला, पीसी हलदी एक पाव, यज्ञोपवीत पचास, रूई एक पाव, चावल पाँच किलो, काला तिल एक किलो, काला उड़द एक किलो, सरसों का तेल अभिषेक व छायापात्र दान हेतु ४ किलो, पान पचास प्रतिदिन, सुपारी पाँच किलो, उड़द की दाल से निर्मित मिष्ठान्न व विविध मिष्ठान्न प्रतिदिन, ऋतुफल एक दर्जन प्रतिदिन, बतासा डेढ़ किलो, पंचमेवा डेढ़ किलो, मिश्री डेढ़ किलो, छोटी इलायची दो तोला, जावित्री दो तोला, लवंग दो तोला, जायफल पन्द्रह, अतर की शीशी एक, गुलाबजल की शीशी एक, कस्तूरी की शीशी एक, शक्कर एक पाव प्रतिदिन, दूध आधा लीटर प्रतिदिन, दही एक पाव प्रतिदिन, गो घृत दो टिन, शहद एक पाव, गाय का गोबर, गोमूत्र, पीली सरसों, कच्चा सूत एक बड़ी लच्छी शमीपुष्पमाला एक दर्जन, गुलाब के पुष्पों की माला और शमीपुष्प, गुलाबपुष्प, दूर्वा, तुलसीपत्र, सुगन्धित पुष्पों की माला प्रतिदिन, कुशा, गंगाजल प्रतिदिन, नारियल जटादार पच्चीस, गिरि के गोले ग्यारह, चन्दन का मुट्ठा, हरसा एक, रुद्राक्ष की माला एक, लाल रंग, हरा रंग, पीला रंग, काला रंग दो-दो रुपये का, पंचरत्न की पुड़िया सात।

पंचपल्लव—आम्रपत्र, गूलरपत्र, पाकरपत्र वटपत्र, पीपलपत्र।

सप्तमृत्तिका—हाथी के स्थान की मिट्टी, घोड़े के स्थान की मिट्टी, बिल (दीमक) की मिट्टी, नदी संगम की मिट्टी, तालाब की मिट्टी, राजद्वार (चतुष्पथ) की मिट्टी, गोशाला की मिट्टी।

सप्तधान्य—यव, गेहूँ, धान, चना, तिल डेढ़-डेढ़ किलो, ककुनी एक पाव, सावाँ आधा किलो।

सर्वौषधि—५ रुपये का मुरा, ५ रुपये का जटामासी, ५ रुपये का वच, ५ रुपये का कूट, ५ रुपये का शिलाजीत, ५ रुपये का आंवाहलदी और दारू-हलदी, ५ रुपये का सठी (कचूर), ५ रुपये का चंपा, ५ रुपये का नागरमोथा।

नवग्रहकाष्ठ—मदार की लकड़ी १०८, पलाश की लकड़ी १०८, खैर की लकड़ी १०८, अपामार्ग की लकड़ी १०८, पीपल की लकड़ी १०८, गूलर की लकड़ी १०८, शमी की लकड़ी १०८, दूर्वा १०८, कुशा १०८।

मृगचर्म १, कम्बल १, सूत की डोरी १० हाथ की, लोहे की कटिया ४, ताँबे का तार २५ हाथ, काष्ठ की चौकी २, काष्ठ का पीढ़ा ४, काला उड़द १॥ सेर।

यज्ञपात्र— प्रणीता, प्रोक्षणी, स्रुवा, स्रुचि, स्फय, वसोर्धारा, अरणीमन्था। शंख १, घण्टा १, आरतीदानी १, प्रधान कलश चाँदी या ताम्र का १, वास्तुकलश ताम्र का १, क्षेत्रपाल कलश ताम्र का १, योगिनीकलश ताम्र का ३, रुद्रकलश ताम्र का १, प्रवेशकलश ताम्र का १, कलश ताम्र के १८, पूर्णपात्र १, प्रधानकुण्ड का कलश

ताम्र का १, आज्यस्थाली बड़ी १, चरुस्थाली १, अभिषेकपात्र १, कांसे की थाली १, कलछुल १, सड़सी १, छायापात्र लोहे का १, तिलपात्र दान के लिए ताम्बे का टोपिया एक, कटोरी पूजन के लिए ११, बाल्टी १, गंगासागर १।

शनिदेवता को चढ़ाने के लिए वस्त्र—शनिदेवता के लिए रेशमी काले या नीले वस्त्र व रेशमी पीला पीताम्बर एक, काला या नीला दुशाला अथवा काली ऊनी चादर एक, धोती पन्द्रह या ग्यारह, दुपट्टा पन्द्रह अथवा ग्यारह, अँगोछा पन्द्रह अथवा ग्यारह।

ध्वजा-पताका तथा वेदी के लिये वस्त्र

सफेद कपड़ा पचीस मीटर
लाल कपड़ा पन्द्रह मीटर
हरा कपड़ा पन्द्रह मीटर
काला कपड़ा पन्द्रह मीटर
पीला कपड़ा पन्द्रह मीटर
चंदवा पचरंगा बड़ा एक
मण्डपाच्छादनार्थ वस्त्र सफेद थान दो।

शनिदेवता की लोहे की प्रतिमा एक, वास्तुकी प्रतिमा सुवर्ण की छह, क्षेत्रपाल, योगिनी, नवग्रह की प्रतिमा सुवर्ण की, स्वर्ण की शलाका एक, स्वर्ण की जिह्वा एक, सुवर्ण खण्ड इक्यावन, चाँदी का सिंहासन एक, चाँदी का छत्र एक, चाँदी का चंवर एक, चाँदी के सभी भोजन पात्र, चाँदी का पंचपात्र एक, चाँदी की धूपदानी एक, चाँदी की आरतीदानी एक, चाँदी का चौकोरपत्र एक।

आचार्यवरण-सामग्री—पीताम्वर रेशमी एक, दुशाला एक, सिल्क रेशमी एक, एक स्वर्ण की अंगूठी, अंगोछा एक, लोटा एक, गिलास एक, पंचपात्र एक, आचमनी एक, अर्घा एक, तष्टा एक, रुद्राक्ष की माला एक, ऊनी आसन एक, गोमुखी माला एक, खड़ाऊँ एक, यज्ञोपवीत एक।

ब्राह्मणों की वरण-सामग्री—

धोती रेशमी तथा सूती, डुपट्टा ऊनी, रेशमी अथवा सूती, अंगोछा एक, लोटा एक, गिलास एक, पंचपात्र एक, आचमनी एक, गोमुखीमाला एक, खड़ाऊँ एक, यज्ञोपवीत एक, आसन एक (जितने ब्राह्मणों का वरण किया जाय उन सभी को उपरोक्त सामग्री देनी चाहिए)।

शय्यादानसामग्री—

पलंग नेवार का एक, दरी एक, गद्दा एक, चांदनी एक, चदरा एक, सुजनी एक, रजाई एक, कम्वल एक, तकिया एक. धोती एक, दुशाला एक, पीताम्वर एक, भोजन के सभी पात्र, गीता की पुस्तक एक, वेद और पुराण की पुस्तकें, घृत टीन एक, सौभाग्यपिटारी एक, स्वर्ण के आभूषण (शक्ति के अनुसार)।

शनिहवनसामग्री—

तिल ८ मन, चावल ४ मन यव २ मन, चीनी १ मन घृत २ टीन, कमलगट्टा १ सेर, चन्दन का चूरा २ सेर गुग्गुल १ सेर, पञ्चमेवा १ सेर, भोजपत्र २ पाव, आम की लकड़ी २० मन।

प्रतिष्ठा, यज्ञादि के लिए सम्पर्क करें
पं० अशोक कुमार गौड़ वेदाचार्य
पुत्र-स्व० दौलतराम गौड़ वेदाचार्य
भारतीय कर्मकाण्ड मण्डल
डी. ७/१४, सकरकन्द गली
वाराणसी (उ० प्र०)
दूरभाष : ६५३४९८६
९७९२३५३७४५

लेखक की लेखनी से

यज्ञमन्त्रसं [illegible]
हरिहर [illegible]
त्रिपिण्डीश्राद्धप [illegible] ।
गयाश्राद्ध [illegible]
सर्वदेवप्रति [illegible]
दुर्गायाग [illegible]
सन्तानगोपाल [illegible] ।
शुक्लयजुर्वेदीय [illegible] ।
गायत्रीयागरहस्य ।
लक्ष्मीनारायणप्रतिष्ठा [illegible] ।
सूर्यप्रतिष्ठाप्रयोग ।
व्यवस्थासंग्रह । श्री विद्याधर गौड़
अम्बायागपद्धति ।
दुर्गापूजाहवनपद्धति ।
महामृत्युञ्जययागरहस्य ।
भुवनेश्वरीरहस्य ।
कालभैरवरहस्य ।
पञ्चदेवप्रतिष्ठारहस्य
वेदीपूजारहस्य ।
शिवशक्तियागरहस्य ।
श्यामा (खाटूबाबा) रहस्य ।

लक्ष्मीयागरहस्य ।
गणपतियागरहस्य ।
सूर्ययागरहस्य ।
अन्नपूर्णारहस्य ।
[illegible]
रुद्रयाग [illegible] ।
हनुमान [illegible] ।
गायत्री [illegible]
बटुक [illegible] ।
विष्णुयाग [illegible] अर्थात् विष्णुयागपद्धति।
गंगारहस्य ।
नृसिंहरहस्य ।
सरस्वतीरहस्य ।
लक्ष्मीरहस्य ।
राधारहस्य ।
दुर्गारहस्य ।
गणपतिरहस्य ।
पूजारहस्य ।
विष्णुरहस्य ।
शिवरहस्य ।
कालीरहस्य ।

चौखम्बा विद्याभवन
वाराणसी